पत्राचार पाठ्यक्रम
माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

(द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित)

डिप्लोमा इन एज्युकेशन
द्वितीय वर्ष

प्रश्न पत्र – नवां

सामाजिक विज्ञान एवं उसका शिक्षण
इकाई क्र. 1 से 10 तक

डी.एड. द्वितीय वर्ष
नवां प्रश्न पत्र
विषय – सामाजिक विज्ञान एवं उसका शिक्षण

इकाई क्र.	इकाई का नाम	अंक	कालखण्ड
1	सामान्य भूगोल	5	10
2	भौगोलिक घटनायें	5	10
3	विश्व का भूगोल	10	20
4	मानव सभ्यता एवं प्राचीन भारतीय इतिहास का क्रमिक विकास	6	12
5	मध्यकालीन भारत	8	16
6	भारत का स्वतंत्रता आन्दोलन	8	16
7	भारतीय संविधान	8	16
8	नागरिकता	10	20
9	राष्ट्रीय विकास एवं अन्तर्राष्ट्रीय सदभावनाएं	5	10
10	सामाजिक विज्ञान एवं शिक्षण विधियां	10	20
	सैद्धांतिक	**75**	**150**
	सत्रगत कार्य	**25**	**–**
	कुल योग	**100**	**150**

डी.एड. द्वितीय वर्ष
नवां प्रश्न पत्र
विषय – सामाजिक विज्ञान एवं उसका शिक्षण

विषयांश इकाईवार –

इकाई 1. सामान्य भूगोल

1.1 मानव भूगोल की अवधारणा एवं विषय क्षेत्र
1.2 ग्लोब अध्ययन एवं भौगोलिक शब्दावली
1.3 पृथ्वी की गतियां, दैनिक व वार्षिक गति के प्रमुख प्रभाव

इकाई 2. भौगोलिक घटनाएं

2.1 मौसम : जलवायु एवं जलवायु को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों का अध्ययन
2.2 स्थायी एवं स्थानीय हवाएं
2.3 धरातल पर परिवर्तनकारी शक्तियां – आंतरिक शक्तियां (ज्वालामुखी भूकम्प) बाह्य शक्तियां – नदी, हिमनदी, वायु, समुद्रीजल के कार्य एवं उससे निर्मित प्रमुख भू आकृतियों का अध्ययन।

इकाई 3. विश्व भूगोल

3.1 विश्व के महाद्वीपों का भौगोलिक अध्ययन – महाद्वीपों की स्थिति, विस्तार, भूरचना, जलवायु, वनस्पति, प्रवाह तन्त्र, मिट्टी कृषि, खनिज, उद्योग, परिवहन, व्यापार एवं प्रमुख नगर
3.2 भारत का भौगोलिक अध्ययन – (उपरोक्तानुसार शीर्षकों में)
3.3 मध्यप्रदेश का भौगोलिक अध्ययन – (उपरोक्तानुसार शीर्षकों में)
3.4 मानचित्र, आशय एवं अंकन व पठन, प्रमुख संकेत रूढ़चिन्ह

इतिहास

इकाई 4. मानव सभ्यता एवं प्राचीन भारतीय इतिहास का क्रमिक विकास

4.1 प्रागैतिहासिक युग की भारतीय संदर्भ में जानकारी
4.2 सरस्वती सिंधु (हड़प्पा) संस्कृति एवं वैदिक युग
4.3 भारतीय इतिहास की प्रमुख घटनाएं (क) प्रमुख प्राचीन राजवंश
(ख) उत्तर एवं दक्षिण भारत के प्रमुख राजवंश
4.4 विश्व की महत्वपूर्ण औद्योगिक एवं राजनैतिक क्रांतियां (भारत के विशेष संदर्भ में)

इकाई 5. मध्यकालीन भारत

5.1 मुगलकालीन भारत के राजवंश तथा मुगलों के विरूद्ध भारतीय प्रतिरोध (महाराणा प्रताप रानी दुर्गावती, मराठा, सिक्ख, बुदेंला, जाट)
5.2 मराठा शक्ति का उदय – शिवाजी का उत्कृर्ष तथा शासन प्रबंध एवं उपलब्धियां
5.3 यूरोप की व्यापारिक कम्पनियां, ब्रिटिश कम्पनी की सफलता के कारण, प्रभुसत्ता, प्रशासनिक ढांचा, नीतियां एवं उनका प्रभाव
5.4 ब्रिटिश शासन की नीतियां एवं प्रशासन
5.5 धार्मिक, सांस्कृतिक व सामाजिक जागृति एवं सुधार आंदोलन (आर्य समाज ब्रम्ह समाज) तथा साहित्य, कला, विज्ञान का विकास

इकाई 6. भारत का स्वतंत्रता आन्दोलन

6.1 ब्रिटिश शासन के प्रति असंतोष, 1857 का प्रथम स्वतंत्रता आन्दोलन, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना गरम एवं नरम दल बंगभंग आंदोलन तथा क्रांतिकारियों का योगदान
6.2 मुस्लिम लीग की स्थापना खिलाफत आंदोलन गांधी युग असहयोग आंदोलन भारतीय सुधार अधिनियम 1935

6.3 राष्ट्रीय आंदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन, क्रीप्स व केबिनेट मिशन, स्वतंत्र भारत का निर्माण

6.4 मध्यप्रदेश का स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान

नागरिक शास्त्र

इकाई 7. भारतीय संविधान

7.1 भारतीय संविधान की प्रस्तावना एवं विशेषताएं

7.2 केन्द्रीय शासन, राज्य शासन (कार्यपालिका व्यवस्थापिका एवं न्यायपालिका)

7.3 स्थानीय स्वशासन एवं त्रिस्तरीय पंचायती राज, (ग्राम पंचायत, जनपद पंचायत, जिला पंचायत) नगर पंचायत, नगरपालिका नगर निगम एवं विकास प्राधिकरण

इकाई 8. नागरिकता

8.1 नागरिकता का अर्थ प्रकार, कार्य। परिवार, समाज एवं कानून, नागरिकों के लिए अधिकार एवं कर्त्तव्य राष्ट्रीय प्रतीक चिन्ह, अच्छे नागरिक के गुण

8.2 मानव अधिकार का अर्थ, स्वरूप एवं संरक्षण की आवश्यकता, मानवाधिकार आयोग म.प्र. का संक्षिप्त परिचय

8.3 लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्ष एवं समाजवादी समाज की स्थापना के लिए किये जा रहे प्रयास पंचवर्षीय योजनाओं से आर्थिक एवं सामाजिक विकास।

इकाई 9. राष्ट्रीय विकास एवं अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावनाएं

9.1 राष्ट्रीय एकीकरण से आशय, बाधक तत्व व उन्हें दूर करने के उपाय। जनसंख्या समस्या एवं निवारण गरीबी उन्मूलन ग्रामीण विकास में बाधक तत्व एवं उपाय।

9.2 संयुक्त राष्ट्र संघ – गठन, प्रमुख अंग कार्य, प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय समस्याएं तथा इसमें भारत का योगदान

इकाई 10. सामाजिक विज्ञान शिक्षण की विधियां

10.1 सामाजिक विज्ञान अर्थ, परिभाषा एवं क्षेत्र, शिक्षण के सामान्य उद्देश्य, महत्व

10.2 प्रारंभिक शिक्षा में सामाजिक विज्ञान का पाठ्यक्रम एवं नवीन प्रवृत्तियां

10.3 सामाजिक विज्ञान शिक्षण की विधियां

10.4 सामाजिक विज्ञान में सहायक सामग्री एवं आदर्श पाठ योजना (हर्बट्स की पंचपदीय पाठ योजना एवं बालकेन्द्रित पाठ योजना)

10.5 सामाजिक विज्ञान में मूल्यांकन – ब्लूप्रिन्ट प्रश्न पत्र निर्माण, आदर्श उत्तर, मूल्यांकन – विश्लेषण, कठिन अंश एवं उपचारात्मक शिक्षण।

संदर्भ ग्रन्थ –

1. सामाजिक अध्ययन का शिक्षण – डॉ. गुरूसरनदास त्यागी
2. मूल्यांकन प्रक्रिया – राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल

i=kpkj ikB;Øe
ek/;fed f'k{kk e.My] e/;izns'k] Hkksiky
¼}kjk lokf/kdkj lqjf{kr½
fMIyksek bu ,T;qds'ku
fo"k;& lkekftd foKku ,oa mldk f'k{k.k
f}rh; o"kZ
iz’u i= & uokWa

---

fo"k;%& lkekU; Hkwxksy
05

---

fo"k;oLrq &
1- ekuo Hkwxksy dh vo/kkj.kk ,oa fo"k; {ks=A
2- Xyksc v/;;u ,oa HkkSxksfyd 'kCnkoyhA
3- i`Foh dh xfr;ka] fnu&jkr ,oa _rq ifjorZu ,oa okf"kZd xfr ds izeq[k izHkkoA

---

fiz; Nk=k/;kid!

सामाजिक विज्ञान (सामाजिक पर्यावरण) एवं उसका शिक्षण मानवीय संबंधो का, व्यक्ति और उसके पर्यावरण का संस्थाओं पर उपलब्धियों के परिप्रेक्ष्य में व्यवस्थित तथा विश्लेषणात्मक अध्ययन है।

यह एक ऐसा व्यापक विषय है जो एक ओर तो प्राकृतिक पर्यावरण द्वारा मानव और उसके सामाजिक पर्यावरण पर होने वाले प्रभावों को उद्घाटित कर प्रस्तुत करता है, तो वही दूसरी ओर वह मानव द्वारा अपने हित संवर्द्धन के लिए किये गये विभिन्न प्रयासों को भी रेखांकित करता है। उसके इस प्रयास में मानव के पारस्परिक सहयोग से उत्पन्न नागरिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियां सम्मिलित की जाती है, वहीं उसकी आर्थिक गतिविधियों तथा विकासात्मक प्रयासों का समावेश भी उसमें किया जाता है। इन सभी तथ्यों के फलस्वरूप भावी शिक्षको को उनके भावी शिक्षण के लिए तत्पर सभी सामाजिक उद्देश्यों की पूर्ति होती है।

lkekU; Hkwxksy ds f'k{k.k dk mn~ns'; gS%&

1. छात्राध्यापक को सामाजिक पर्यावरण की जानकारी देना।
2. छायाध्यापक को प्राकृतिक पर्यावरण की संबंधित सामान्य तथ्यों की जानकारी प्रस्तुत करनां

प्रस्तुत इकाई क्र. 1 को अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से हम तीन उपइकाईयों में बांट कर अध्ययन करते है।

1
ekuo Hkxky dh vo/kkj.kk ,o fo"k; {k=

1-1 ekuo Hkxky dh vo/kkj.kk %&

आधुनिक भूगोल पृथ्वी और पृथ्वी से संबंधित तथ्यों का अध्ययन कराता है। मानव भूगोल, भूगोल शास्त्र की एक प्रमुख शाखा है। जिसमें मानव पक्ष को केन्द्र मानकर आर्थिक एवं प्राकृतिक वातावरण का अध्ययन किया जाता है। यह सत्य है कि मानव का प्राकृतिक वातावरण से घनिष्ट संबंध होता है। किसी स्थान की भौगोलिक परिस्थितियां भूसंरचना, जलवायु, मिट्टी, वनस्पति, जल संसाधन, खनिज संसाधन व जीवजंतु आदि का मानव के रहन सहन, क्रियाशील होने और आचार विचारों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। एक ओर मानव के क्रियाकलाप और आचार विचार प्राकृतिक वातावरण से प्रभावित होते है वहीं दूसरी ओर मानव भी अपने क्रियाकलापों द्वारा प्राकृतिक वातावरण को एक सीमा तक प्रभावित करता है साथ ही आवश्यकतानुसार उनमें परिमार्जन एवं परिवर्तन करता है। इस प्रकार वह सांस्कृतिक वातावरण का भी निर्माण करता है।

ekuo Hkxky dh ifjHkk"kk %&

सामान्य परिभाषा :– ''मानव तथा प्राकृतिक वातावरण के पारस्परिक परिवर्तनशील संबंध का विस्तृत अध्ययन ही मानव भूगोल है।''

19वीं शदी के अंतिम चरण में जर्मनी के प्रख्यात भूगोलवेत्ता फ्रेडरिक रेटजेल (को मानव भूगोल का जनक कहा जाता है) ने सन 1882 में एन्थ्रोपोजियोग्राफी (Anthropogeogrephy) नामक ग्रंथ प्रकाशित कर मानव भूगोल का प्रारंभ किया।

''रेटजेल के अनुसार ''मानव सर्वत्र वातावरण से संबंधित होता है जो स्वयं भौतिक दशाओं का योग है।''

अमेरिकी भूगोल विदुषी कुमारी ई.सी. सेम्पुल अनुसार ''क्रियाशील मानव एवं गतिशील पृथ्वी के परिवर्तनशील संबंधों का अध्ययन ही मानव भूगोल है।''

फ्रांसीसी मानव भूगोलवेत्ता विडाल डी.ला. ब्लाश अनुसार ''मानव जाति एवं मानव समाज भूगोल इसके अध्ययन का मार्ग प्रशस्त करता है।''

फ्रांसीसी विद्वान जीन्स–ब्रून्श के अनुसार उन्होने ''प्राकृतिक भूगोल और मानव क्रियाओं के संबंध को मानव भूगोल माना है।''

अमेरिकी विद्वान हटिंगटन अनुसार ''मानव भूगोल को भौतिक वातावरण तथा मानवीय क्रियाकलापों एवं गुणों के पारस्परिक संबंधों के स्वरूप तथा वितरण का अध्ययन माना है।''

उपरोक्त सभी परिभाषाओं के आधार पर मानव भूगोल के विषय में एक ही विचारधारा स्पष्ट रूप से प्राप्त होती है कि ''मानव भूगोल वह विज्ञान है जिसके अध्ययन का एक पक्ष मानव और दूसरा पक्ष उसके प्राकृतिक वातावरण की शक्तियां एवं उनका प्रभाव है।''

इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि मानव भूगोल के अन्तर्गत किसी प्रदेश के मानव समुदाय एवं उनके प्राकृतिक वातावरण की शक्त्यिों, प्रभावों तथा दोनों पक्षों की पारस्परिक प्रतिक्रियाओं का अध्ययन किया जाता है, क्योंकि किसी भी प्रदेश में निवास करने वाले मानव समुदायों तथा वहां के प्राकृतिक और सांस्कृतिक वातावरण में परस्पर कार्यात्मक संबंध होता है। इस संबंध का अध्ययन ही मानव भूगोल की प्रकृति है।

1-2 ekuo Hkxksy dk fo"k; {ks=%&

जैसा कि सर्वविदित है कि भूपटल पर मिलने वाले समस्त प्राणी जगत में मानव सबसे अधिक विकसित क्रियाशील प्राणी है। भौगोलिक शक्तियां सदैव मानवीय क्रियाकलापों को प्रभावित करती रही है तथा अपने लाभ ओर कल्याण के लिए मानव भी प्रकृतिक वातावरण में परिवर्तन करके सांस्कृतिक वातावरण का निर्माण करता रहा है, इस निर्माण से मानव की स्थिति केन्द्रीय हो गई है। जिसके एक ओर प्राकृतिक वातावरण होता है तथा दूसरी ओर सांस्कृतिक वातावरण।

इस प्रकार मानव भूगोल के विषय क्षेत्र के प्रमुख रूप से तीन पहलू होते है।

1. प्राकृतिक वातावरण के तत्व,
2. सांस्कृतिक वातावरण के तत्व,
3. वातावरण समायोजन का अध्ययन।

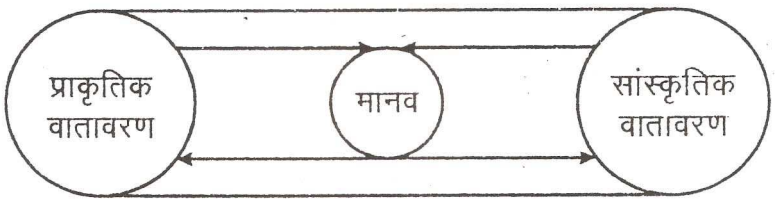

चित्र 1·1.

1- *izkd`frd okrkoj.k ds rRo %&* प्राकृतिक वातावरण के अन्तर्गत दो तत्वों का समावेश होता है।

   1- *tM+ rRo%&* जड़ तत्वों में स्थलाकृतियां, जलराशियां, जलवायु, मिट्‌टी तथा खनिज सम्पदा सम्मिलित है।

2- pru rRo ¼& चेतन तत्वों में प्राकृतिक वातावरण की जैविक दशाएं सम्मिलित हैं, जिनमें प्राकृतिक वनस्पति, जीव जन्तु एवं पशु पक्षी सम्मिलित है।

2- lkLdfrd okrkoj.k d rRo ¼& सांस्कृतिक वातावरण का जन्म मानव तथा प्राकृतिक वातावरण की क्रियाओं, प्रतिक्रियाओं के फलस्वरूप होता है। इसके निर्माण में जहां एक ओर प्राकृतिक तत्वों का हाथ रहता है, वहीं दूसरी ओर मानव की सामूहिक शक्ति का भी योगदान है। प्रो. पी.डब्ल्यू. ब्रायन के अनुसार, ''सांस्कृतिक वातावरण मानीवय क्रियाओं तथा भौतिक वातावरण के पारस्परिक संबंधों की अभिव्यक्ति होता है।'' प्रो. ब्रायन ने सांस्कृतिक वातावरण के तत्वों को तीन पक्षों में विभक्त किया हैः–

1- foU;kl :i ¼& इसमें मानव द्वारा निर्मित खेत, खान, मकान तथा व्यावसायिक स्थल आदि सम्मिलित है।

2- py :i ¼& इसमें मानव द्वारा निर्मित यातायात के विभन्न साधन सम्मिलित किये गये है।

3- fØ;k :i ¼& इसमें विभिन्न मानवीय व्यवसाय, यथा– कृषि, आखेट, पशुचारण, शिक्षा, सरकार, स्वास्थ्य, उद्योग, व्यापार, धर्म तथा विज्ञान आदि सांस्कृतिक तत्वों को सम्मिलित किया गया है।

मानव द्वारा अपने प्राकृतिक वातावरण के सहयोग से जीविकोपार्जन करने के क्रियाकलापों से लेकर उसकी उच्चतम आवयकताओं की पूर्ति के लिये किये गये प्रयत्नों तक का अध्ययन मानव भूगोल के अध्ययन क्षेत्र में आता है। अतः पृथ्वी पर जो भी दृश्य मनुष्य की क्रियाओं द्वारा बने हुए दिखाई पड़ते हैं, वे सभी मानव भूगोल के अध्ययन में सम्मिलित है।

3- okrkoj.k lek;ktu dk v/;;u ¼& मानव भूगोल के अध्ययन में उन विभिन्नताओं को सम्मिलित किया जाता है जो संसार के विभिन्न प्रदेशों में रहने वाली जनसंख्याओं की शारीरिक आकृतियों में, वेशभूषा में, भोज्य पदार्थों में, मकानों के बनाने की सामग्री और शैली में, आर्थिक व्यवसायों में तथा जीवन के तरीकों और आदर्शों में पाई जाती हैं। विश्व के विभिन्न प्रदेशों में मिलने वाली भाषा, शिक्षा, धार्मिक विश्वास तथा शासन प्रणालियों में भी भिन्नताएं मिलती है। इनमें से कुछ विभिन्नताएं मानव को जन्म से ही प्राप्त होती है, जबकि अन्य विभिन्नताएं प्रकृतिक वातावरण की विभिन्नता के कारण होती है। मानव भूगोल के अध्ययन क्षेत्र में यह देखना भी सम्मिलित है कि मानवीय क्रियाकलापों में विभिन्नताएं किस प्रकार संसार में वितरित हैं तथा प्राकृतिक वातावरण इन विभिन्नताओं के वितरण को कहां तक प्रभावित करता है। साथ ही मानव ने स्वयं को प्राकृतिक वातावरण की इन भिन्नताओं से किस प्रकार समायोजित किया है।

इस प्रकार मानव भूगोल का विषय क्षेत्र अत्यंत ही व्यापक है एवं इसकी व्याख्या करना अत्यंत ही कठिन है। अनेक भूगोलवेत्ताओं ने मानव भूगोल के विषय क्षेत्र की व्याख्या अपने अपने ढंग से की है।

प्रो. हंटिंगटन के अनुसार मानव भूगोल का विषय क्षेत्र
[SUBJECT MATTER OF HUMAN GEOGRAPHY BY PROF. HUNTINGTON]

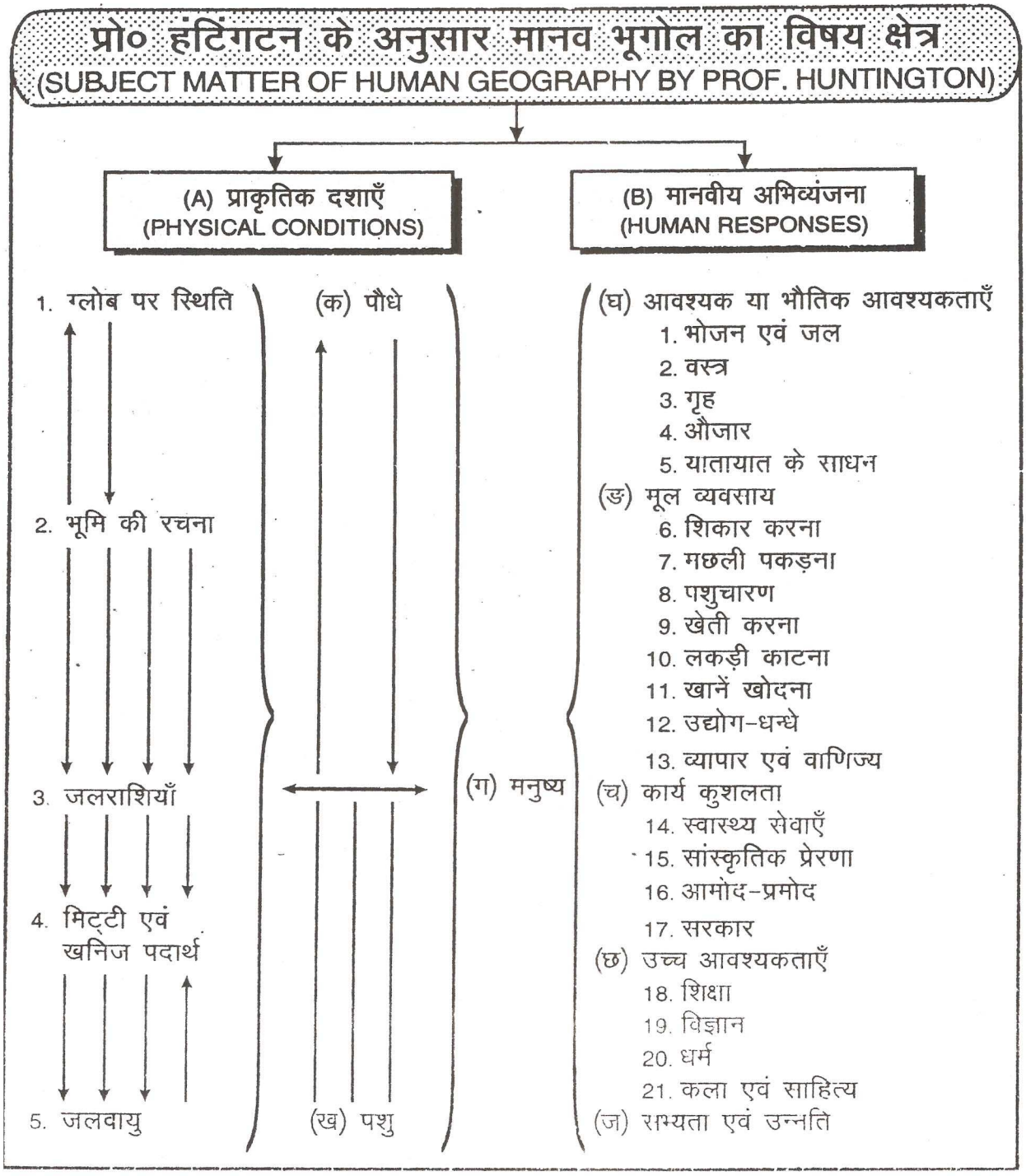

चित्र 1.2

2

Xykc v/;;u ,oa Hkkxkfyd 'kCnkoyh

पृथ्वी हमारे सौर परिवार का सबसे महत्वपूर्ण ग्रह है। यह सूर्य की परिक्रमा करती है साथ ही अपनी धूरी पर भी 24 घंटे में एक अक्षीय गति पूर्ण करती है पृथ्वी के अलावा सौर परिवार के अन्य (ग्रह) सदस्य है– बुध, गुरू, मंगल, बृहस्पति, शनि, अरूण, वरूण तथा यम।

1-3 Xykc i`Foh dk ,d ueuk@ekMy@okLrfod ifr:i g%&

भूगोल चूंकि पृथ्वी से संबंधित विषय है अतः इसमें पृथ्वी की संपूर्ण सतह धरातल (उच्चवच्च), भौतिक लक्षण जल थल वितरण आदि अनेकोनेक तथ्यों की जानकारी अत्यंत आवश्यक है। इन सभी तथ्यों की जानकारी हमें ग्लोब एवं मानचित्र (एटलस) द्वारा प्राप्त होती है।

Xykc %& ग्लोब पृथ्वी का एक गोलाकार स्वरूप (प्रतिरूप/मॉडल) है जो पृथ्वी पर स्थित अनेकोनेक तथ्यों एवं सूचनाओं को एक दृष्टि में वास्तविकता के साथ आपके सम्मुख प्रस्तुत करता है।

ekufp= %& मानचित्र, भूगोल की भाषा एवं एक प्रकार की शीघ्र लिपि है जो पृथ्वी या उसके किसी भाग को निश्चित पैमाने व नियमानुसार समतल कागज पर प्रदर्शित करता है।

वास्तव में ग्लोब व मानचित्र भूगोल विषय के दो आधार स्तंभ है ये दोनों एक दूसरे के विरोधी न होकर एक दूसरे के पूरक है। ग्लोब जहां पृथ्वी का आदर्श गोलाकार स्वरूप है वहीं मानचित्र समतल पृष्ठ (कागज पर) पर उसी गोलाकार स्वरूप की अभिव्यक्ति है। दोनों सूचना स्तंभ मिलकर ही भूगोल विषय को संपूर्णता प्रदान करते है।

Xykc dh lkekU; fo'k"krk,%&

1. ग्लोब मानचित्र की अपेक्षा पृथ्वी का अधिक वास्तविक व आदर्श प्रतिरूप (माडल) है।
2. ग्लोब द्वारा पृथ्वी की दोनों गतियो, परिभ्रमण गति एवं परिक्रमण गति को समझने में अधिक मदद करता है।
3. पृथ्वी का कक्षीय तथा अक्षीय झुकाव भी ग्लोब द्वारा आसानी से समझा जा सकता है।
4. पृथ्वी पर दिन–रात छोटे बड़े होना अन्तर्राष्ट्रीय तिथि रेखा, स्थानीय/प्रमाणिक समय को अभिरूचिपूर्ण ढंग से यह समझने में मददगार है।
5. पृथ्वी पर मौसम, ऋतु परिवर्तन आदि क्रियाएं समझने में अत्यंत उपयोगी है।
6. पृथ्वी के दोनों ध्रुव, अक्षांश, देशांतर रेखाए भूमध्य रेखा, कर्क व मकर रेखाओं आदि की जानकारी अधिक सुस्पष्टता से समझी जा सकती है।

7. पृथ्वी के ध्रुवों पर पृथ्वी गोलीय स्वरूप शून्य है यह जानकारी अधिक सटीकता से प्रदान की जाती है।
8. हमारी पृथ्वी का जल थल अनुपात वितरण, महाद्वीपों की सापेक्ष स्थिति का ज्ञान ग्लोब द्वारा अधिक व्यवहारिकता से समझा जा सकता है।

1-4 Hkkxksfyd 'kCnkoyh%&

पृथ्वी केन्द्रित भौगोलिक शब्दावली सागर (समुद्र) जैसी विशालकाय है। इसे एक लघु इकाई में समझना अत्यंत कठिन है तथापि पृथ्वी से जुड़ी हुई प्रारंभिक (प्राथमिक) तथा महत्वपूर्ण भौगोलिक शब्दावली यहां प्रस्तुत की जाती है:—

1- i`Foh dk v{k %& पृथ्वी की कीली/धुरी जिस पर वह पश्चिम से पूर्व दिशा में घूमते हुए दैनिक परिभ्रमण गति 24 घंटे में पूर्ण करती है। यह धुरी ही पृथ्वी का अक्ष कहलाती है। यह पृथ्वी का अक्ष $23\frac{1}{2}^0$ पृथ्वी की परिक्रमा कक्ष की ओर सदैव झुका रहता है।

2- i`Foh dh d{kk %& पृथ्वी अपने कक्ष पर $66\frac{1}{2}^0$ का कोण बनाते हुए अपनी धुरी (अक्ष) पर झुकी हुई 365¼ दिवस में सूर्य की एक परिक्रमा पूर्ण करती है। इसी के फलस्वरूप सूर्यातप की भिन्न—भिन्न मात्रा पृथ्वी को प्राप्त होती है जिसके कारण ही मौसम व ऋतुएं परिवर्तनशील होती है।

3- i`Foh dh nSfud@ifjHkze.k xfr %& पृथ्वी अपनी कीली/धुरी पर 24 घंटे में एक परिक्रमा पूर्ण करती है। इस दैनिक गति को ही परिभ्रमण गति भी कहा जाता है।

4- i`Foh dh ifjØe.k xfr %& पृथ्वी अपनी कीली पर दैनिक गति के साथ—साथ दूसरी गति भी सूर्य के चारों ओर 1 वर्ष में या 365 दिन 6 घंटे में पूर्ण करती है। इस वार्षिक गति को परिक्रमण गति कहा जाता है।

5- i`Foh ij fdlh LFkku dk lgh fLFkfr ¼vFkkZr½ v{kk'k& n'kkrj j[kk dk i.k Kku %& गोलाकार पृथ्वी पर किसी स्थान विशेष को ढूंढना अत्यंत कठिन कार्य है। इसी कठिन कार्य को सरलता प्रदान करने के लिए भूगोल विदों व वैज्ञानिकों ने मिलकर ग्लोब/मानचित्र पर काल्पनिक आड़ी व खड़ी रेखाओं की खोज की है। इन्हीं काल्पनिक आड़ी रेखाओं को अक्षांश रेखा कहते है। इसी प्रकार काल्पनिक खड़ी रेखाओं को देशांतर रेखा कहा जाता है।

¼v½ v{kk'k j[kk %&

ग्लोब या मानचित्र पर दर्शाई जाने वाली आड़ी (क्षैतिज) रेखाओं (वृत्त) को अक्षांश रेखा (अक्षांश वृत्त) कहा जाता है।

1- Hke/; j[kk %& पृथ्वी (ग्लोब) के उत्तरी एवं दक्षिणी ध्रुव दो निश्चित स्थल है, इन दोनों बिन्दुओं (ध्रुवो) को मिलाने वाली कल्पित अक्ष रेखा का मध्य बिन्दु ही भूमध्य है। पृथ्वी के इसी भूमध्य के मिलाने से शून्य डिग्री अक्षांश रेखा ही भूमध्य रेखा (विषुवत्त रेखा) कहलाती है।

2- ddZ j[kk %& 23½^0 उत्तरी अक्षांश को कर्क रेखा कहा जाता है। यह उत्तरी गोलार्द्ध की महत्वपूर्ण अक्षांश रेखा है।

3- edj j[kk %& 23½^0 दक्षिणी अक्षांश को मकर रेखा कहते है। यह दक्षिणी गोलार्द्ध की एक महत्वपूर्ण अक्षांश रेखा है।

4- mRrjh /kqo %& पृथ्वी का शीर्ष अक्षांश उत्तरी गोलार्द्ध में 90^0 उत्तरी अक्षांश को ही उत्तरी ध्रुव कहा जाता है। यह उत्तरी गोलार्द्ध का अंतिम शीर्ष बिन्दु है।

5- nf{k.kh /kqo %& पृथ्वी का दक्षिणी गोलार्द्ध में शीर्ष अक्षांश 90^0 अक्षांश को दक्षिणी ध्रुव कहा जाता है। इस प्रकार कुल 180^0 अक्षांश रेखाएं खींची जाती है।

6- mRrjh o nf{k.kh vkdZfVd oRr %& 66½ उत्तरी अक्षांश को उत्तरी आर्कटिक वृत्त तथा 66½ दक्षिणी अक्षांश को दक्षिणी आर्कटिक वृत्त कहा जाता है।

¼c½ ns'kkUrj j[kk %&

पृथ्वी के दोनों उत्तरी ध्रुव व दक्षिणी ध्रुव को मिलाने वाली खड़ी रेखाओं को देशान्तर रेखा कहा जाता है। एक देशान्तर रेखा पर संपूर्ण पृथ्वी पर एक साथ दोपहर (मध्यान्ह) का समय पाया जाता है। इसी कारण देशांतर रेखाएं, मध्यान्ह रेखाएं भी कहलाती है। पृथ्वी 180^0 पू. देशांतर तथा 180^0 प. देशान्तर इस प्रकार कुल 360^0 देशांतर रेखाएं खींची गई हैं।

iepk ns'kkrj j[kk, %&

1- i/kku e/;kUg j[kk@xhufop j[kk %& लंदन की ग्रीनविच वेधशाला से गुजरने वाली शून्य डिग्री (0^0) देशान्तर रेखा को प्रधान मध्यान्तर रेखा या ग्रीनविच रेखा भी कहा जाता है।

2- 180^0 iw- ns'kkUrj j[kk %& शून्य डिग्री देशांतर रेखा के पूर्व में स्थित अंतिम देशांतर रेखा 180^0 पू. देशान्तर कही जाती है।

3- 180^0 i- ns'kkUrj j[kk %& शून्य डिग्री देशांतर रेखा पश्चिम में स्थित अंतिम देशांतर रेखा को 180^0 प. देशान्तर रेखा कहा जाता है।

यहां उल्लेखनीय है कि 180^0 पू. देशांतर तथ 180^0 प. देशान्तर दो अलग–अलग रेखा न होकर एक ही देशांतर रेखा है। एक देशांतर रेखा से दूसरी देशांतर रेखा पर 4 मिनिट का समय अंतर होता है।

6- LFkkuh; le; ,o ikekf.kd le; %&

1- *LFkkuh; le;%&* पृथ्वी पर किसी विशेष स्थान का सूर्य की स्थिति से परिकलित समय स्थानीय समय कहा जाता है।
2- *ikekf.kd le;%&* किसी भी देश के ठीक मध्य से गुजरने वाले प्रामाणिक देशांतर (भारत के लिए 82½^0 पू. देशांतर इलाहबाद को माना जाता है) के स्थानीय समय को संपूर्ण देश का प्रामाणिक समय (लंदन ग्रीनविच रेखा की सापेक्षता के साथ) माना जाता है। (जैसे भारत की मध्य देशांतर रेखा जो 82½^0 पू. देशांतर रेखा है का स्थानीय समय लंदन की घड़ियों से 5½ घंटे सदैव (+) आगे रहता है, को संपूर्ण देश भारत का प्रामाणिक समय माना जाता है। अर्थात लंदन में जब दोपहर के 12.00 बजते है तब भारत की संपूर्ण देश का समय शाम के 5.30 के बराबर होता है या यहां शाम के 5.30 बजते है।)

7- Hke/; j[kk l iFoh d 2 xkyk) cur g%&

1- *mRrjh xkyk) %&* भूमध्य रेखा (विषुवत रेखा) से 90^0 उ. अक्षांश (उत्तरी ध्रुव) तक का भाग उत्तरी गोलार्द्ध कहलाता है।
2- *nf{k.kh xkyk) %&* भूमध्य रेखा से दक्षिण की ओर स्थित 90^0 दक्षिणी अक्षांश (दक्षिणी ध्रुव) तक का भाग दक्षिणी गोलार्द्ध कहलाता है।

8- 'kU; fMxh n'kkUrj ;k xhu fop j[kk ;k i/kku e/;kUg j[kk l Hkh iFoh d [kM e ¼m/o fn'kk e½ nk xkyk) cur g%&

1. पूर्वी गोलार्द्ध
2. पश्चिमी गोलार्द्ध

3

1-5 iFoh dh xfr;k] nfud ,o okf"kd xfr d ie[k iHkko

हमारी पृथ्वी सौर परिवार की एक महत्वपूर्ण सदस्य है। सौर परिवार में पृथ्वी ही एक ऐसा ग्रह है जहां जल और जीवन है। पृथ्वी ही हमारी सभ्यता और संस्कृति की अभिवृत्ति है। पृथ्वी अपने स्थान पर स्थिर नहीं है। यह सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है। इसके साथ ही यह अपनी कल्पित धुरी पर हमेशा पश्चिम से पूर्व की तरफ घूमती रहती है। सूर्य का चक्कर लगाने तथा लट्टू की तरह अपने अक्ष पर घूमने को इसकी गतियां कहा जाता है। पृथ्वी की इस तरह दो गतियां है (1) दैनिक गति– जिसे परिभ्रमण कहते है और (2) वार्षिक गति जिसे परिक्रमण कहा जाता है।

1- *nfud xfr %&* जैसा कि आपको ज्ञात है कि पृथ्वी अपनी धुरी पर पश्चिम से पूर्व की ओर घूमती है और 24 घंटे में एक चक्कर लगा लेती है। इसे हम पृथ्वी की दैनिक गति या परिभ्रमण कहते है। पृथ्वी की धुरी का उत्तरी सिरा उत्तरी ध्रुव तथा दक्षिणी सिरा दक्षिण ध्रुव कहलाता है। चूंकि पृथ्वी पश्चिम से पूर्व की ओर घूमती है। इसलिए पृथ्वी पर हमें सूर्य रोजाना पूर्व से

निकलकर आकाश में ऊपर जाकर फिर नीचे की ओर आकर, पश्चिम में डूबता हुआ दिखाई पड़ता है। हमेशा घूमते रहने के कारण पृथ्वी दोनों ध्रुवों पर चपटी तथा भूमध्य रेखा के पास उभरी हुई है। पृथ्वी की ध्रुवों के पास गति शून्य है। भूमध्य रेखा पर इसकी घूमने की परिभ्रमण गति अधिकतम 1671 किलोमीटर प्रति घंटे है।

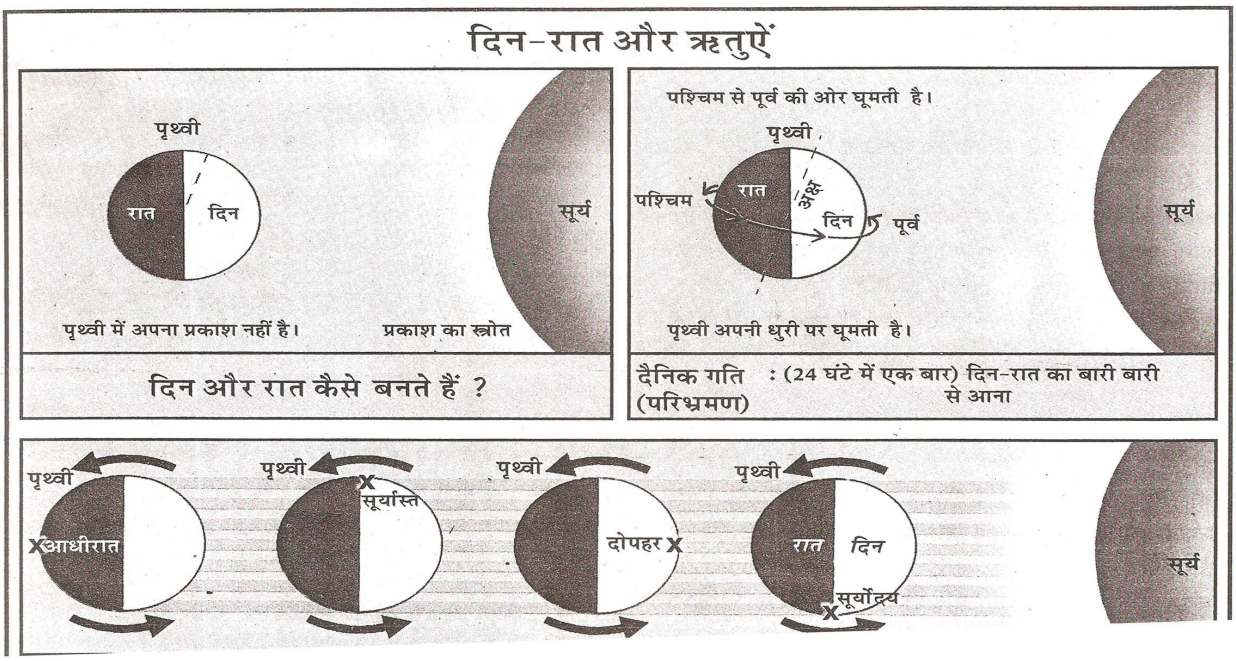

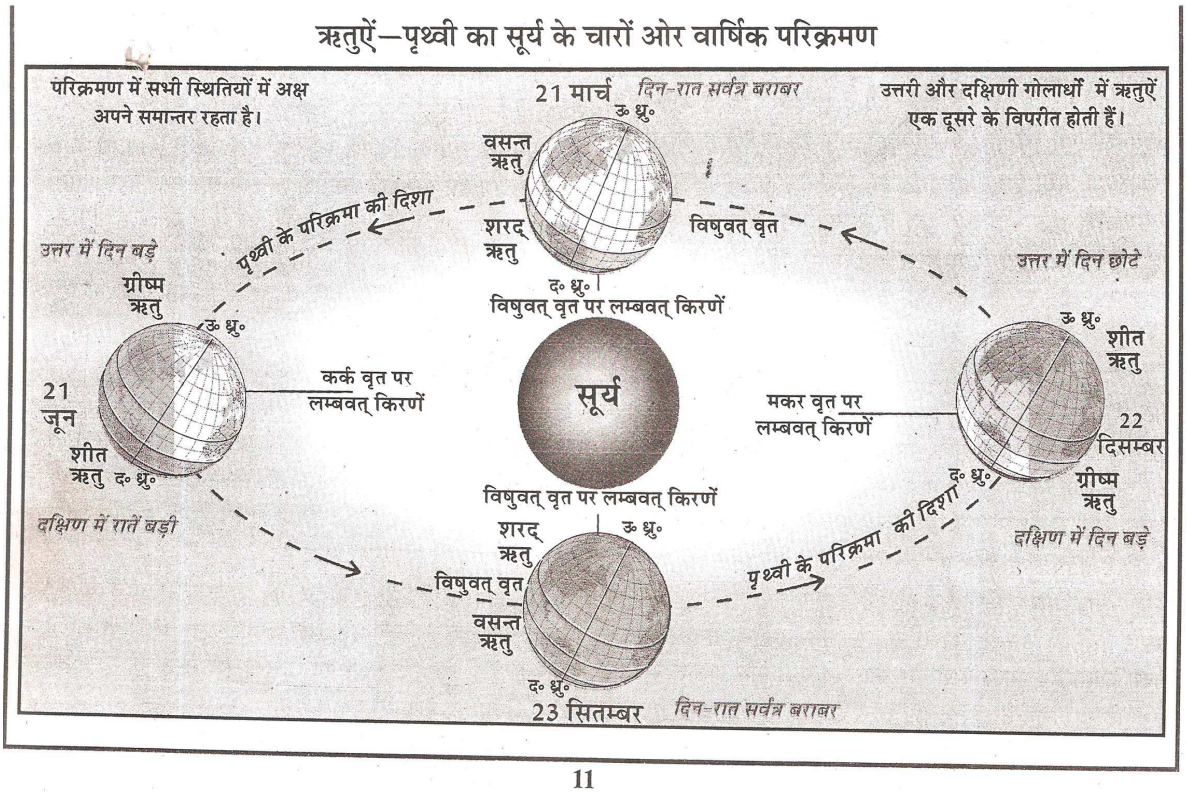

2- *okf"kd xfr* %& पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमने के साथ–साथ सूर्य की भी परिक्रमा करती है। इसे पृथ्वी की वार्षिक गति कहते हैं। पृथ्वी को एक परिक्रमा करने में 365 दिन 5 घंटे 48 मिनट 46 सेकण्ड अर्था 365¼ दिन का समय लगता है। पृथ्वी की परिक्रमा का मार्ग निश्चित है। इस मार्ग को कक्ष (Orbit) कहते हैं यह दीर्घ अण्डाकार है। सूर्य इस कक्ष के ठीक केन्द्र में नहीं, वरन एक ओर कुछ हटकर स्थित दिखता है, जिसके परिणामस्वरूप परिक्रमा करते समय सूर्य से पृथ्वी की दूरी हमेशा बराबर नहीं रहती। जून के महीने में पृथ्वी की दूरी सूर्य से सबसे अधिक अर्थात 15 करोड़ 21 लाख किलोमीटर होती है। जबकि दिसम्बर के महीने में इसकी सूर्य से दूरी सबसे कम अर्थात 14 करोड़ 70 लाख किलोमीटर ही होती है।

आप जानते है कि पृथ्वी अपने कक्ष पर $66\frac{1}{2}^0$ का कोण बनाते हुए अपनी धुरी (अक्ष) पर झुकी हुई है। इस झुकाव से ही यह सूर्य के चारों ओर भी चक्कर लगा रही है। इसका परिणाम यह होता है कि पृथ्वी की बदलती स्थितियां के अनुसार उसके अलग–अलग भागों में सूर्योताप पाने की मात्रा में परिवर्तन होता रहता है। इससे पृथ्वी के विभिन्न हिस्सों में अलग–अलग प्रकार के मौसम व ऋतुएं होती रहती है।

_r %& पृथ्वी के अक्ष पर झुके होने तथा उसकी परिक्रमण गति से ऋतुएं होती है। सूर्य की किरणें जब काफी समय तक पृथ्वी पर सीधी पड़ती है तो वहां उस भाग में गर्मी का मौसम होता है और जब सूर्य की किरणें तिरछी और कम समय के लिये पड़ती है तो उस भाग में पृथ्वी पर सर्दी की ऋतु होती है।

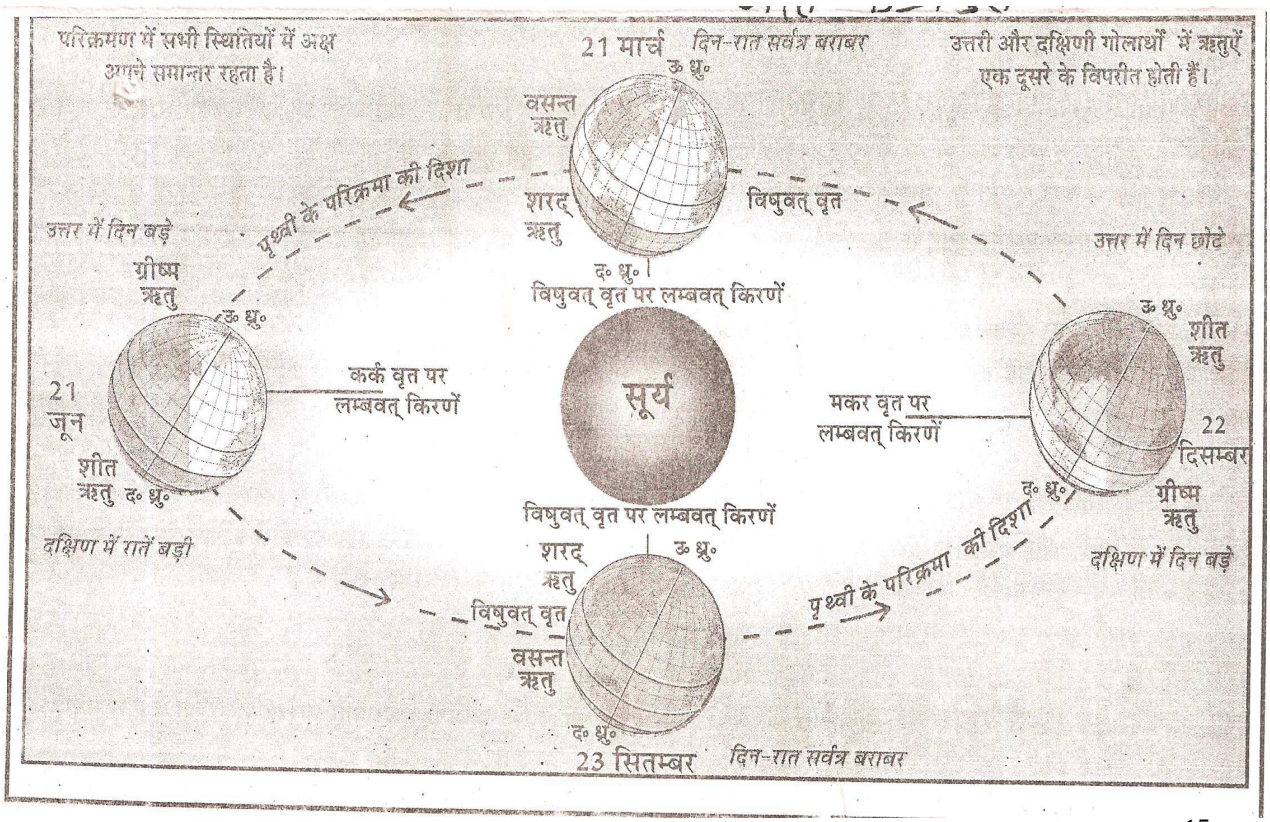

1-6 iFoh dh nfud ,o okf"kd xfr d iej[k iHkko %&

पृथ्वी की वार्षिक गति के चित्र को देखने पर उसकी चार प्रमुख स्थितियां दिखाई देती है। (1) 21 मार्च (2) 21 जून (3) 23 सितम्बर (4) 22 दिसंबर। 21 मार्च और 23 सितम्बर को पृथ्वी पर दिन–रात समान अवधि के रहते है। इसलिए पृथ्वी पर लगभग समान मौसम रहता है किन्तु 21 जून उत्तरी गोलार्द्ध में गर्मी को बढ़ाती है तो दक्षिण गोलार्द्ध में सर्दी बढ़ती है। इसके विपरीत 22 दिसम्बर की स्थिति होती है तब उत्तरी गोलार्द्ध में शीत व दक्षिणी गोलार्द्ध में गर्मी होती है। इस तरह पृथ्वी वार्षिक गति का परिणाम है। पृथ्वी के विभिन्न भागों में दिन–रात का छोटा–बड़ा होना और इसके कारण कभी गर्मी तो कभी ठण्ड की अधिकता होते हुए मौसम या ऋतुओं का बदलना। प्रभाव अब हमारे लिए यह स्पष्ट हो गया है कि पृथ्वी अपने अक्ष पर घूमती है। इसका एक चक्कर 24 घंटों में पूरा हो जाता है और इसके कारण दिन रात होते है। अपने अक्ष पर 23½ झुकी हुई पृथ्वी अपने कक्ष पर बढ़ते हुए सूर्य के चारों ओर भी चक्कर लगाती है जिससे पृथ्वी पर ऋतुओं का परिवर्तन होता रहता है। दिन–रातों का छोटे बड़े होना सर्दी–गर्मी का घटना बढ़ना, हवाओं का चलना और दिशाएं बदलना, वर्षा का होना बर्फ गिरना या चक्रवातों का चलना आदि वायुमण्डलीय बदलाव पृथ्वी की वार्षिक गति के परिणाम है।

bdkb dk lkjka'k%&

1. मानव भूगोल की एक महत्वपूर्ण शाखा है जिसमें मानव को केन्द्रीय स्थान पर रखकर आर्थिक एवं प्राकृतिक वातावरण का अध्ययन किया जाता है।
2. प्रख्यात जर्मन भूगोलवेत्ता रेटजेल अनुसार ''मानव सर्वत्र वातावरण से संबंधित होता है जो स्वयं भौतिक दशाओं का योग है।''
3. मानव भूगोल के विषय क्षेत्र में मुख्य रूप से तीन पक्ष शामिल किये जाते हैः–
   1. प्राकृतिक वातावरण के तत्व
   2. सांस्कृतिक वातावरण के तत्व
   3. वातावरण समायोजन।
4. अमेरिकी भूगोलवेत्ता प्रो. ह्नटिंगटन ने मानव भूगोल के विषय क्षेत्र में कुल दो पक्ष (1) प्राकृतिक दशाएं (2) मानवीय क्रियाएं बतलाते है। प्रथम पक्ष को पुनः कुल 5 उपवर्गों में तथा द्वितीय पक्ष को कुल 21 मानवीय क्रियाओं में विभक्त किया है।

5. ग्लोब पृथ्वी का एक वास्तविक माडल या प्रतिरूप है जो मानचित्र की अपेक्षा अधिक सटीक एवं व्यवाहारिक तथ्य प्रस्तुत करता है।

6. पृथ्वी का अपने अक्ष पर $23\frac{1}{2}^0$ का झुकाव तथा कक्ष पर $66\frac{1}{2}^0$ का झुकाव सदैव बना रहता है। इसी झुकाव के कारण दिन–रात छोटे बड़े होना, मौसम (ऋतु) परिवर्तन आदि की घटनाओं में विभिन्नताएं पाई जाती है।
7. पृथ्वी पर किसी भी स्थान की सही स्थिति का ज्ञान करने हेतु कल्पित रेखाएं अक्षांश व देशान्तर रेखाएं बनाई गई है।
8. पृथ्वी ग्लोब/मानचित्र पर खींची गई आड़ी (क्षैतिज) रेखाओं को अक्षांश रेखाए कहते है। 90^0 उ. अक्षांश व 90^0 द. अक्षांश इस प्रकार कुल 180^0 अक्षांश रेखाएं बनाई (खींची) गई है।
9. शून्य डिग्री अक्षांश को भूमध्य रेखा (विषुवत रेखा) कहते है। कर्क रेखा, मकर रेखा, उ. आर्कटिक (ध्रुवीय), वृत्त, द. आर्कटिक वृत, उ. ध्रुव, व द. ध्रुव महत्वपूर्ण अक्षांश रेखाएं है।
10. पृथ्वी ग्लोब/मानचित्र पर खींची गई खड़ी (उर्ध्व) रेखाएं जो उ. ध्रुव को द. ध्रुव से जोड़ती है। देशांतर रेखाए (मध्यान्ह रेखाएं) कहलाती हें
11. प्रधान मध्यान्ह रेखा शून्य डिग्री देशांतर को कहा जाता है इसे ग्रीनविच रेखा भी कहा जाता है।
12. 180^0 पू. देशांतर तथा 180^0 प. देशांतर इस प्रकार पृथ्वी पर कुल 360^0 देशांतर रेखाएं खींची गई है।
13. पृथ्वी के दैनिक घूर्णन के कारण प्रति देशांतर 4 मिनिट का समय अंतराल पाया जाता है।
14. स्थानीय समय प्रत्येक देशांतर पर सूर्य की स्थिति के अनुसार ज्ञात किया जाता है यह केवल सैद्धांतिक समय है।
15. प्रामाणिक समय वह अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त समय है जो प्रत्येक देश के मध्य से गुजरे हुए प्रमाणित देशांतर के आधार पर ग्रीनविच टाइम से निर्धारण कर बनाया जाता है।
16. पृथ्वी अपनी कीली (धुरी) या अक्ष पर प्रतिदिन 24 घंटे में एक परिभ्रमण गति को पूर्ण करती है। यह दैनिक गति कहलाती है।
17. पृथ्वी अपनी धुरी या अक्ष पर दैनिक परिभ्रमण गति के साथ–साथ सूर्य की परिक्रमा भी करती है। यह परिक्रमण गति पृथ्वी की सूर्य के परिक्रमा कक्ष पर 365½ दिवस (1 वर्ष) में पूर्ण होती है। यह पृथ्वी की गति वार्षिक या परिक्रमण गति कहलाती है।
18. यह स्मरणीय है कि पृथ्वी अपने अक्ष पर $23\frac{1}{2}^0$ सदैव एक ही दिशा में झुककर संपूर्ण प्रकार की गतियां पूर्ण करती है।
19. इसी प्रकार पृथ्वी अपने अक्ष पर $66\frac{1}{2}^0$ का कोण बनाते हुए अपनी धुरी पर झूकी हुई है। इसी झुकाव के कारण पृथ्वी अपनी सूर्य की परिक्रमण गति पूर्ण करती है।
20. पृथ्वी की दैनिक गति के फलस्वरूप पृथ्वी पर दिन–रात होते हैं।

21. पृथ्वी की वार्षिक गति (परिक्रमण गति) के फलस्वरूप पृथ्वी पर मौसम (ऋतु) परिवर्तन सूर्यातप की मात्रा में परिवर्तन के कारण होता है। दिन रात छोट बड़े होना, चक्रवात, तुफान, वर्षा आदि की उत्पत्ति भी इसी कारण होती है।

bdkbl vk/kkfjr i'u %&

प्रश्न 1. मानव भूगोल क्या है? स्पष्ट करें।

प्रश्न 2. मानव भूगोल की एक उपयुक्त परिभाषा दीजिए।

प्रश्न 3. ग्लोब व मानचित्र में अंतर बतलाइए।

प्रश्न 4. अक्षांश व देशांतर रेखाओं में अंतर बताइये।

प्रश्न 5. पृथ्वी पर दैनिक गति का प्रभाव बतलाइए?

& & & &

i=kpkj ikB;Øe
ek/;fed f'k{kk e.My] e/;in'k] Hkkiky
¼}kjk lokf/kdkj lqjf{kr½
fMIykek bu ,T;qds'ku
fo"k;& lkekftd foKku ,oa mldk f'k{k.k
f}rh; o"k
i'u i= & uok

fo"k;%& vad	Hkkxkfyd ?kVuk,A	5

1- eklle% tyok;q ,oa tyok;q dk iHkkfor djus okys iep[k dkjdk dk v/;;uA
LFkk;h ,oa LFkkuh; gok,A
2- /kjkry ij ifjorudkjh 'kfDr;k& vkrfjd ,oa ckã 'kfDr;k] unh] fgeunh] ok;q] lepnh ty dh dk;l ,oa mlls fufeir iep[k Hkvkd`fr;ka dk v/;;uA

fiz; Nk=k/;kid!

सामाजिक विज्ञान एवं उसका शिक्षण एक व्यापक एवं नागरिकता से परिपूर्ण विषय है। यह विषय प्राकृतिक पर्यावरण का मानव के परिप्रेक्ष्य में विस्तृत अध्ययन एवं विश्लेषण प्रस्तुत करता है। वहीं मानव द्वारा अपने हितों के संरक्षणार्थ किये गये प्रयासों को बिन्दुवार रेखांकित भी करता है। प्रस्तुत इकाई को सुविधा की दृष्टि से तीन उप इकाई में विभाजित किया गया है।

1

2-1 eklle% tyok;q ,oa tyok;q dk iHkkfor djus okys dkjd%&

हमारी पृथ्वी को काफी ऊंचाई तक गैसों की एक परत घेरे हुए हैं जिसे वायुमण्डल कहा जाता है। इस वायुमण्डल की दशाएं सदैव एक समान नहीं रहती है। वे सूर्य से प्राप्त होने वाली गर्मी की मात्रा आदि से बदलती रहती है। वायुमण्डल की इन्हीं दशाओं को मौसम और जलवायु के रूप में माना जाता है। आइए इनके बारे में कुछ और जाने–

1- *ekSle%&* वायुमण्डल की थोड़े समय की सर्दी, गर्मी, हवा–पानी, बादल बरसात की बदलती स्थिति को मौसम कहते है। यह अवधि कुछ घण्टों कुछ दिनों और कुछ सप्ताह तक हो सकती है। सुबह आसमान साफ या दोपहर होते–होते बादल छाने लगे, हवा की गति तेज हो गई, बिजली चमकने, अंधकार और बादल गरजने लगे। तीसरे पहर तक भारी बरसात हो गई। वायुमण्डल की इस तरह की थोड़े से समय की दशाओं को ही मौसम कहा जाता है। मौसम की लगभग एक समान दशाएं जब दो चार महीनों तक चलती रहती है तो उसे ऋतु कहा जाता हैं। जैसे बरसात में बादल का गरजना, बिजली का चमकना आदि की लगातार चार महीनों तक चलने वाली स्थिति के कारण इस संपूर्ण अवधि को वर्षा ऋतु कहते है। इस तरह एक दिन से लगातार चार महीनों तक की वायुमण्डलीय दशाएं ऋतु कही जाती है।

2- *tyok;q%&* किसी स्थान विशेष अथवा क्षेत्र विशेष के लम्बे समय के वर्षा के मौसमों के समुच्चय के आधार पर उस स्थल के वायुमण्डल की औसत दशाओं का उल्लेख करना जलवायु कहा जाता है। जैसे राजस्थान में वर्ष के अधिकांश महीनों में कड़ी गर्मी पड़ती है। तेज हवाएं चलती है वर्षा बहुत कम और अनिश्चित होती है यह स्थिति वर्षों तक निरंतर बनी रहती है वहां की जलवायु को उष्ण या रेगिस्तानी जलवायु के नाम से पुकारा जाता है।

अब आप मौसम और जलवायु के संबंध में जान चुके है। इन दोनों का अन्तर मुख्यतः समयावधि का ही है। मौसम अल्पकालिक वायुमण्डलीय दशाएं होती है, वहीं जलवायु दीर्घकालीन मौसमों के परिवर्तन का आधार सूर्यताप है किन्तु प्रचलित हवाएं भी इसमें महत्वपूर्ण योगदान करती है, वायुमंडलीय दशाएं होती है। मौसमों के परिवर्तन का आधार सूर्यताप है किंतु प्रचलित हवायें भी इसमें महत्वपूर्ण योगदान करती है। आइए ऐसी महत्वपूर्ण हवाओं के बारे में कुछ जाने जो पृथ्वी के विभिन्न भू–भागों को समय समय पर प्रभावित करती रहती है।

विभिन्न गैसों से घिरी हमारी पृथ्वी तेजी से पश्चिम से पूर्व की ओर घूम रही है। पृथ्वी की गति के घर्षण और बदलते सूर्यताप के कारण वायुमंडल की गैसे तेज गति से एक दिशा विशेष की ओर प्रवाहित होने लगती है। इनको ही हवा या पवन के नाम से पुकारा जाता है।

ekSle o tyok;q esa vUrj

Ø-	*ekSle*	*tyok;q*
1	किसी स्थान की विशेष समय की वायुमंडलीय दशाओं को मौसम कहते है।	किसी स्थान की लम्बी अवधि के मौसम की दशाओं की औसत अवस्था को जलवायु कहते है।
2	मौसम समय–समय पर बदलता रहता है।	जलवायु लगभग स्थाई अवस्था है।
3	एक ही स्थान पर मौसम में कई प्रकार का	जलवायु एक स्थान पर एक ही प्रकार की

	परिवर्तन देखा जाता है।	होती है।
4	मौसम की अवधि कुछ घंटों से लेकर कुछ दिवस तक रहती है।	जलवायु की दशाएं वर्षभर एक समान रहती है।
5	मौसम का क्षेत्र सीमित दायरे में रहता है।	जलवायु का क्षेत्र बड़ा व्यापक रहता है।

ekSle vkSj tyok;q dks izHkkfor djus okys izeq[k rRo%&

छात्राध्यापक हम यह बात भली–भांति जानते है कि पृथ्वी की गतियां आंतरिक और बाह्म शक्तियां हमारे पर्यावरण और उसके जीवन को किसी न किसी रूप में अवश्य प्रभावित करते है। इस सबका मौसम और जलवायु पर प्रभाव पड़ता है तथा मौसम और जलवायु का मानव जीवन पर। अतः हम समझे कि ये कौन–कौन से तत्व है जो मौसम और जलवायु को तथा मानव जीवन और उसकी गतिविधियों को प्रभावित करते हैं। वास्तव में ये तत्व हैः–

1- *Hkw/; js[kk ls nwjh%&* स्मरण रहे कि भूमध्य रेखा के समीप वाले स्थान दूर वाले स्थान की अपेक्षा गर्म होते है, अतः भूमध्य रेखा की दूरी का प्रभाव पड़ता है।

2- *leqnz ry ls Å¡pkbZ%&* जो स्थान समुद्र तल से जितने अधिक ऊंचे स्थित होते हैं उनकी जलवायु उतनी ही ठण्डी होती है क्योंकि प्रति 165 मीटर की ऊंचाई पर 1 डिग्री से. तापमान कम हो जाता है।

3- *leqnz rV ls nwjh%&* समुद्र तटीय क्षेत्रों में दिन में जल समीर और रात में थल समीर चलते है जिससे पास के प्रदेश गर्मियों में अधिक गर्म और जाड़ों में अधिक ठण्डे रहते है।

4- *gok,¡%&* समुद्र से आने वाली हवाएं अपने समकारी प्रभावों से जलवायु को सम बनाती है। इसके विपरीत स्थल से आने वाली शुष्क हवाएं शुष्क होने के कारण जलवायु को विषम बना देती है।

5- *leqnzh /kkjk,¡%&* समुद्र में बहने वाली धाराएं समीप के क्षेत्र से शील प्रकोप को रोककर जलवायु को प्रभावित करती है। जैसे इंग्लैण्ड की जलवायु गल्फस्ट्रीम से प्रभावित है।

6- *igkM+ksa dh fLFkfr ,oa Hkwfe dk <ky%&* हिमालय पर्वत शीतल काल में मध्य एशिया से आने वाली ठण्डी हवाओं को रोककर भारत की जलवायु को ठण्डा होने से बचाता है। सूर्य के सामने ढाल वाले प्रदेश विमुख ढाल वाले प्रदेशों की अपेक्षा अधिक गर्म रहते है।

7- *o"kkZ dh fLFkfr%&* जिन क्षेत्रों में पर्याप्त वर्षा होती है उसकी जलवायु उन क्षेत्रों से जिनमें वर्षा बहुत कम होती है, अधिक सुहावनी होती है।

8- *ouLifr%&* जिन क्षेत्रों में वनस्पति सघन रहती है, उन स्थानों पर जलवायु सम रहती है। वनस्पति विहीन क्षेत्रों की जलवायु कम से कम दिन में गर्म रहती है।

9- *Hkfe ds idfr%&* रेतीतली व पथरीली भूमि अधिक गर्म और अधिक ठण्डी हो जाती है। इसलिए वहां अधिक गर्मी और ठण्ड पड़ती है।

2-3 LFkkbl ,o LFkkuh; gok,

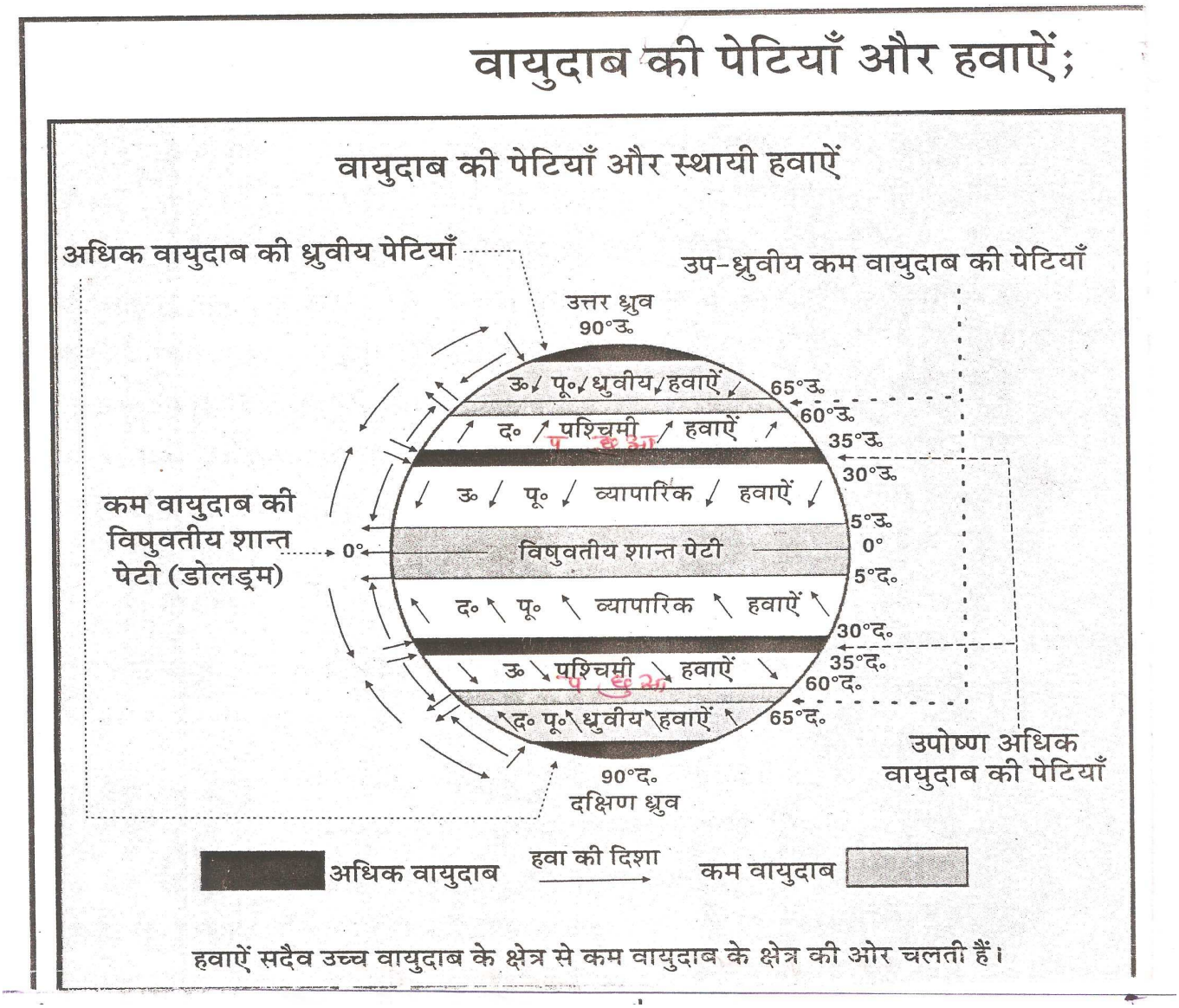

स्थाई हवाएं	स्थानीय हवाएं
वर्षभर एक ही दिशा में चलने वाली हवाएं: 1. व्यापारिक हवाएं (उ.पू. एवं द.पू.) 2. पछुआ हवाएं (द.प. एवं उ.प.) 3. ध्रुवीय हवाएं (उ.पू. एवं द.पू.)	इन्हें मौसमी हवाएं, आवृत्ति हवाएं या दैनिक हवाएं भी कहा जाता है ये दिन या मौसम अनुसार दिशा बदलती है। 1. मानसून हवाएं। 2. चक्रवात प्रतिचक्रवात। 3. थल समीर, जल समीर आदि।

पृथ्वी पर प्रवाहित होने वाली हवाएं दो प्रकार की है (1) स्थाई हवाएं (2) प्रचलित हवाएं (स्थानीय हवाएं)।

1- *LFkkbZ gok,a %&* पृथ्वी के घर्षण के कारण विषुवत रेखा पर विस्तार की अधिकता होने से पृथ्वी घुमने की गति तेज होती है किन्तु उच्च अक्षांशों में जहां पृथ्वी का आकार कम होता जाता है, वहां वायु की गति पृथ्वी की गति से अधिक होती जाती है। दिए हुए रेखाचित्र को देखिए इसमें विषुवत रेखा के निकट ही हवाएं पश्चिम की ओर मुड़ी है। जबकि मध्यवर्ती भागों की हवाएं पूर्व की ओर मुड़ी हुई है।

2-4 *gekjh i`Foh ij rhu LFkkbZ gok,a ekuh tkrh g%&*

1- *0;kikfjd gok,a %&* व्यापारिक हवाएं भूमध्य रेखा पर सूर्य की वर्ष भर सीधी किरणें गिरते रहने के कारण वहां की हवाएं गर्म और हल्की होकर निरंतर ऊपर उठती रहती है। जिसमें वायुमण्डल में रिक्तता आती रहती है। इसी रिक्तता की पूर्ति करने के लिए उत्तर और दक्षिण से हवाएं विषुवत रेखा की ओर बहने लगती है। पृथ्वी की गति से पिछड़ जाने के कारण वे पश्चिम की ओर मुड़ जाती है। ये हवाएं सालभर इसी तरह दिशा में (उत्तरी गोलार्द्ध में उत्तर–पूर्व से दक्षिण–पश्चिम दक्षिण गोलार्द्ध से दक्षिण पूर्व से उत्तर–पश्चिम) चलती रहती है। यह हवाएं मध्यकाल में चलने वाले व्यापारिक मालदार जहाजों के खो जाने में सहायक होती थी, इसलिए उन्हें व्यापारिक हवाओं के नाम से जाना जाता है। जल भागों से गुजरकर ये हवा जब महाद्वीपों के पूर्वी तटीय भागों पर पहुंचती है तो वहां पर्याप्त वर्षा करती है किन्तु जैसे–जैसे पश्चिम की ओर बढ़ती जाती है वर्षा की मात्रा कम होती जाती है। यहां तक कि पश्चिमी भाग तक पहुंचते–पहुंचते तो ये इतनी शुष्क हो जाती है कि वे भाग बिल्कुल भी वर्षा प्राप्त नहीं कर पाते है इसलिए महाद्वीपों के पश्चिमी भाग गर्म और सूखे रेगिस्तान बने रहते है।

2- *iNqvk gok,a %&* विषुवत रेखा के निकटवर्ती भाग में हवाएं गर्म और हल्की होकर ऊपर उठती है वहीं ऊपर की ठण्डक पाकर ठंडी होती हैं और ध्रुवों की ओर ऊपर ही ऊपर बहने लगती है। ये ही हवाएं अयन रेखाओं के आसपास ऊपर से नीचे उतरती है, कुछ हवाएं तो भूमध्य रेखा की ओर बहकर आने वाली व्यापारिक हवाओं से मिल जाती है किन्तु शेष हवाएं ध्रुवों की ओर बढ़ने लगती है।

मध्वर्ती अक्षांशों में ये हवाएं उत्तरी गोलार्द्ध दक्षिण पश्चिम में उत्तर पूर्व की ओर तथा दक्षिणी गोलार्द्ध में उत्तर पश्चिम से दक्षिण पूर्व की ओर बहती है चूंकि ये हवाएं पश्चिम दिशा से चलती है इसलिए इन्हें पछुआ हवाएं कहते है।

ये हवाएं भी समुद्रों से गुजरने पर जल वाष्प धारण कर लेती है और मध्यवर्ती अक्षांशां (30 डिग्री से 35 डिग्री) डिग्री के बीच महाद्वीपों के पश्चिमी भागों में तट के निकटवर्ती भागो में वर्षा करती है। चूंकि ये हवाएं वर्षभर चलती रहती है। इसलिए इन क्षेत्रों में भी

लगभग वर्षभर ही वर्षा होती रहती है जैसे पश्चिम यूरोप के ग्रेट ब्रिटेन, हालैण्ड, पश्चिम जर्मनी आदि देशों में। ये हवाएं भी महाद्वीपों के पश्चिमी भागों में तो पर्याप्त वर्षाकर देती है किन्तु जैसे–जैसे पूर्व की ओर बढ़ती है। वर्षा की मात्रा कम होती जाती है। ये हवाएं गर्म समुद्री जल धाराओं से ठण्डे थल भागों की ओर चलती है। इसलिए तट के निकट के भागों की जलवायु सुखद हो जाती है। वातावरण सालभर स्फूर्तिदायक बना रहता है। व्यक्ति परिश्रमी और साहसी बना रहता है। यही कारण है कि एक समय पश्चिम यूरोप के निवासियों ने सारे विश्व को अपने अधीन बना लिया था।

3- */kqoh; gok;sa %&* ये पवने दोनों गोलार्द्ध में ध्रुवीय उच्च दाब की पेटियों में उपध्रुवीय निम्न दाब की पेटियों की ओर चलती है। इनकी दिशा तर पूर्व से दक्षिण पश्चिम की ओर तथा दक्षिणी गोलार्द्धों की ओर होती है।

2- *ipfyr gok,a ¼LFkkuh; gok,½ vko'fRr gok,a%&*

1- *ekulwuh gok,a %&* पृथ्वी के कुछ भागों में विशेषतः कर्क और मकर रेखाओं के मध्यवर्ती भागों में ग्रीष्मकाल और शीतकाल में महाद्वीपों के मध्यवर्ती थल भागों के तापमान में बहुत अन्तर हो जाता है। यही अन्तर इन हवाओं के चलने का कारण बनाता है।

ekulwuh gok,a _rq vuqlkj nks izdkj dh gksrh gSA

1- *xzh"e dkyhu ekulwu %&* गर्मियों में महाद्वीपों में विशेषकर एशिया महाद्वीपों का मध्य भाग बहुत गर्म हो जाता है और भारत तथा मध्य एशिया में न्यून वायु दाब का क्षेत्र बन जाता है। वहां की हवाएं गर्म तथा हल्की होकर ऊपर उठती है। इस कमी की पूर्ति के लिए प्रशांत और हिन्द महासागर की अपेक्षाकृत ठण्डी और भाप भरी हवाएं तेजी से चलती है। इसी के साथ वर्षा करती हुए ये हवाएं न्यून वायु क्षेत्रों की ओर पहुंचने लगती है। मानसूनी पवने ही घनघोर वर्षा करती है। ये गड़गड़ाहट बिजली की चमक–दमक से भरपूर भी होती है।

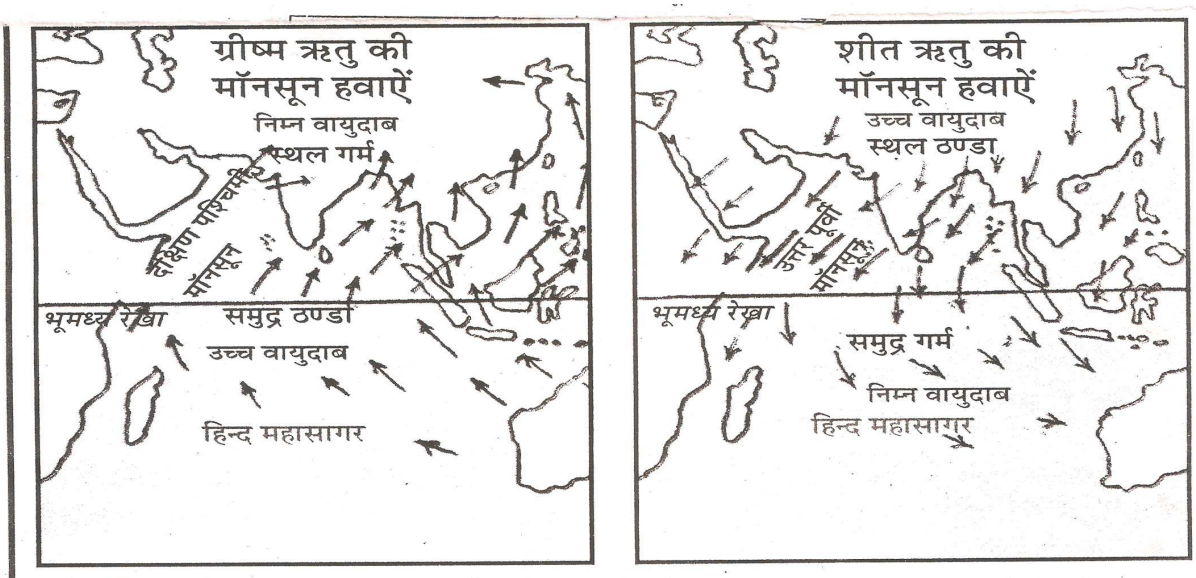

समुद्र में भारत का जल–प्रदेश उपयुक्त आधार रेखा से मापे गये बारह समुद्री मील की दूरी तक है।

2- *'khr dkyhu ekulwu* %& शीत ऋतु में जो मानसूनी हवाएं स्थल भाग से (शुष्क हवाएं) समुद्र भाग की ओर चलती है, शीतकालीन मानसून कहा जाता है।

2- *pØokr o izfrpØokr* %& चक्रवात प्रतिचक्रवात दोनों अस्थाई या समसामयिक पवने है। इनकी गति तीव्र होने पर ये जन, धन की हानि का कारण बनते है।

1- *pØokr* %& ये हवाएं हवा के वे समूह है जो कि चक्कर काटकर चला करते हैं। जिस तरह किसी नदी में भंवर उठते हैं और उसके आसपास पानी बड़ी तेजी से आता है ठीक उसी तरह हमारे वायुमण्डल में भंवर पैदा होते रहते है। इन्हीं को हम चक्रवात कहते है। इनकी गति 96 किमी से 2000 किमी प्रतिघंटे तक होती है। चक्रवात के केन्द्र में न्यून वायुदाब तथा बाहरी क्षेत्र में अधिक वायु दाब विकसित होता है। इसी कारण हवाएं नदी के भंवर की भांति तेजी से बाहर से केन्द्र की ओर तूफान की गति से चलती है। इन चक्रवाती हवाओं से तूफानी वर्षा होती है।

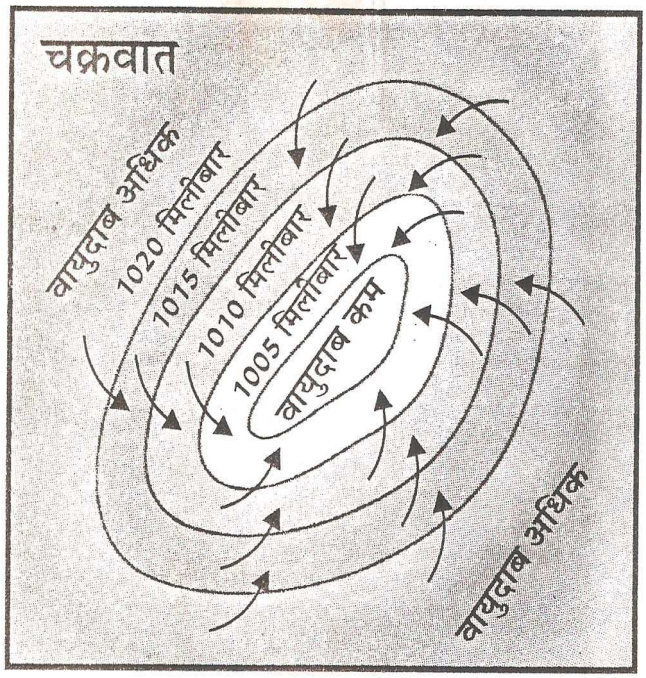

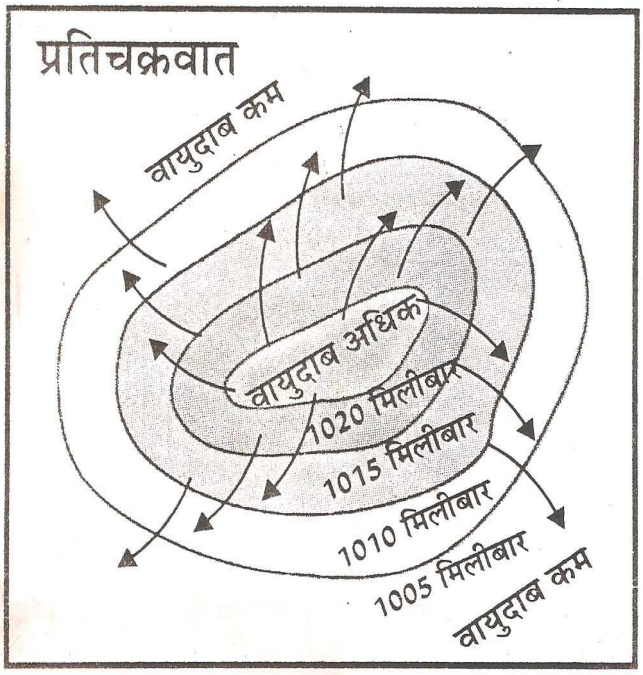

LFkkbZ ,oa LFkkuh; gok,a&

2- *izfrpØokr* %& चक्रवात के विपरीत यदि पृथ्वी के किसी स्थान पर केन्द्र में अधिक वायुदाब तथा बाहरी क्षेत्र में न्यून वायुदाब यदि विकसित होता है तब यह हवाओं

की स्थिति प्रतिचक्रवात कहलाती है। इस अवस्था में हवाएं केन्द्र से बाहर की ओर चलती है। अतः इस प्रतिचक्रवात में इस स्थान का मौसम प्रायः साफ रहता है।

3- *nfud gok,a %&*

1- *t y lehj%&* समुद्र तटीय क्षेत्र में दिन के समय समुद्र पर अधिक वायुदाब जबकि थल पर न्यून वायु दाब विकसित रहता है। इस कारण दिन में समुद्री हवाएं समुद्र से थल क्षेत्र को चला करती है। इन्हीं हवाओं को जल समीर कहा जाता है। ये हवाएं गर्मी में राहत देती है।

2- *Fky lehj %&* समुद्र तटीय क्षेत्र में रात्रि के समय दिन के विपरीत परिस्थितियां होती है इसी कारण थल पर अधिक वायु दाब से समुद्र (जल) पर न्यून वायुदाब की ओर हवाएं चलती है। इन हवाओं को थल समीर कहते है। इन हवाओं से मौसम सुहावना बना रहता है।

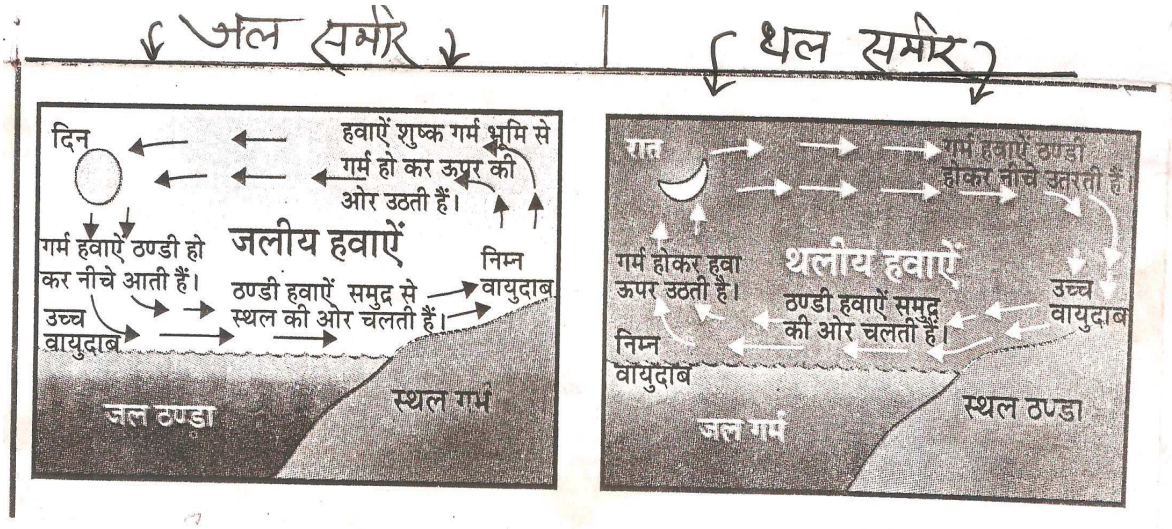

4- *vU; LFkkuh; iou %&* उल्लेखनीय है कि स्थाई पवने विश्व में केवल 3 पृष्ठ 5 एवं 6 पर वर्णित मानी गई है जबकि स्थानीय (अस्थाई) हवाओं के विषय में भिन्न–भिन्न विद्वान भिन्न राय प्रकट करते है तथापि मौसमी हवाएं, दैनिक हवाएं आदि सभी अस्थाई पवनों को एक साथ प्रकट किया गया है तथा उन्हें स्थानीय पवनों में ही सम्मिलित कर प्रस्तुत किया गया है। अतः भाषा शब्दावली में जाकर अर्थपूर्ण व्याख्या ही समझकर अध्ययन करें। कुछ भूगोलवेत्ता विद्वान स्थानीय पवनों में केवल निम्न हवाओं को ही सम्बोधित करते है दैनिक एवं मौसमी हवाओं को नहीं।

Ø-	vU; LFkkuh; iouk d uke	dgk pyrh g	fo'k"k
1	लू	ग्रीष्म ऋतु में उत्तरी भारत एवं पाकिस्तान के मैदानी क्षेत्रों में।	गर्म व थपेड़ोदार हवाएं कष्टदाई।
2	हरमाटन	सहारा मरूस्थल से गिमी तट की ओर अफ्रीका महाद्वीप में।	हवाओं को डॉक्टर भी कहते है।
3	चिनूक	राकी पवर्त पर (उ. अमेरिका) प. ढाल से पूर्वी ढाल की ओर।	उ. अमेरिका में अत्यंत महत्वपूर्ण।
4	फोहन	आल्प्स पर्वत (यूरोप में) की ऊंची श्रेणियों से उतरकर घाटियों में चलने वाली हवाएं।	विशेषकर स्विटजरलेण्ड के मौसम को सुखदायक बनाती है।
5	सिमूम	सहारा (अफ्रीका) एवं अरब (प. ऐशिया) के मरूस्थलों में गर्मी एवं बसंत ऋतु में चलने वाली हवाएं।	कठोर एवं तूफानी खतरनाक हवाएं।
6	बोरा	द.यूरोप के एड्रियाटिक सागर के पूर्वी किनारे पर एवं इटली के उत्तरी भाग में शीत ऋतु में चलने वाली हवाएं।	ठंडी हवाए मौसम सुहावना।

2

2-5 /kjkry ij ifjorZudkjh 'kfDr;k
¼vkarfjd ,oa ckã 'kfDr;k½

अभी तक आपने पृथ्वी की गतियों, मौसम आदि के बारे में अध्ययन किया। अब हम इस उपइाकई में पृथ्वी की आंतरिक एवं बाह्म शक्तियों का अध्ययन करेंगे। हम जानेंगे कि पृथ्वी की आंतरिक शक्तियों जो पर्वत व महाद्वीप निर्माण का कार्य पृथ्वी पर दीर्घकाल में निरंतर करती रहती है। वहीं बहिर्जात (बाह्म) शक्तियां नदी, जल, हिमानी, वायु व समुद्र लहरे आदि निरंत प्रतिक्षण उन निर्माणकारी शक्तियों से उत्पन्न उच्चावच्च धरातल को समतलभूत करती रहती है। पृथ्वी की चमत्कारिक एवं अजूबा प्राकृतिक घटनाएं चलते रहने का संदेश मानव जाति को प्रदान करती है।

आइए देखे, ये आंतरिक एवं बाह्म शक्तियां पृथ्वी पर किस प्रकार परिवर्तन करती है?

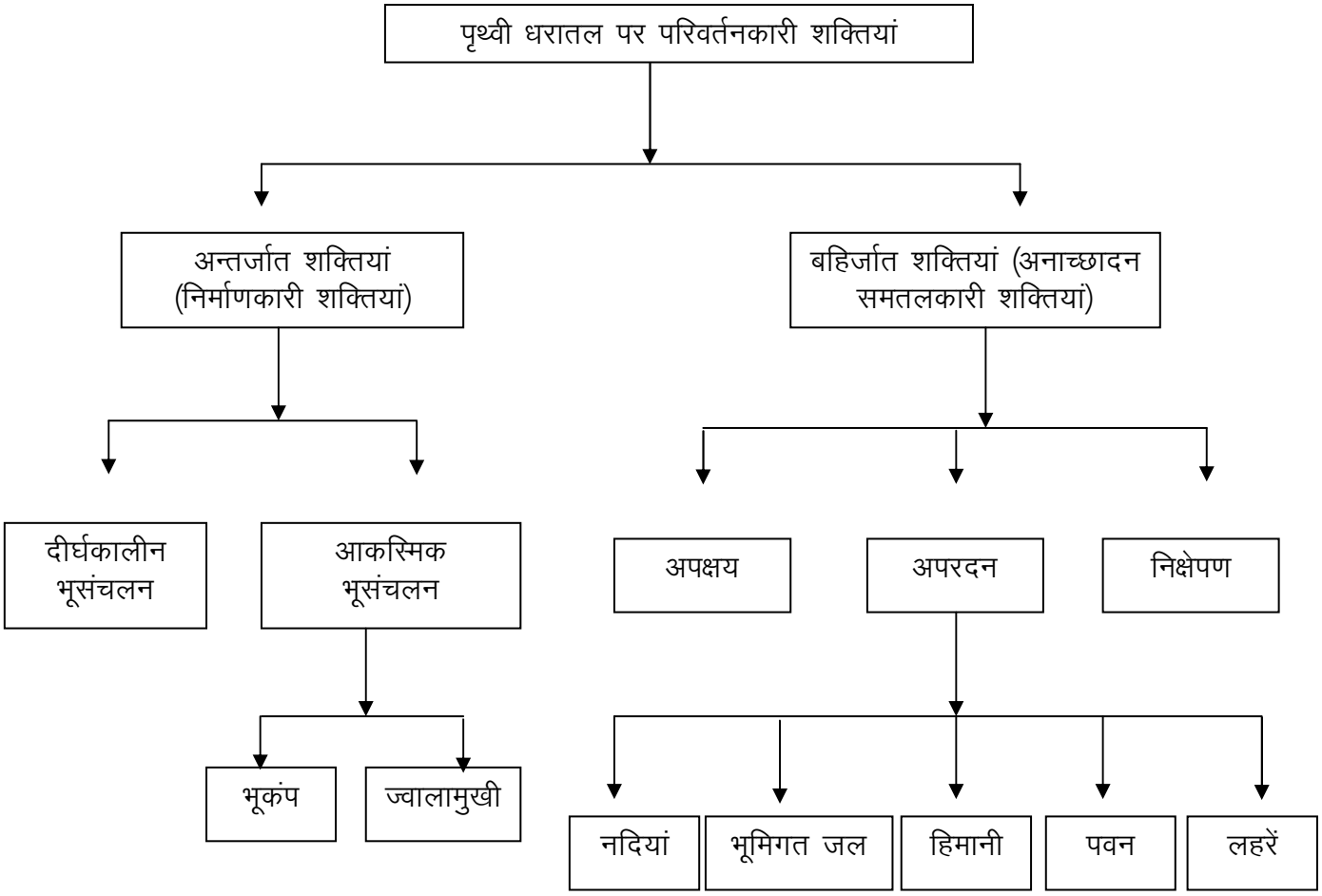

2-6 vkrfjd Hk&'kfDr;k %&

पृथ्वी पर संचालित आंतरिक भू शक्तियां द्वारा दो प्रकार की भूसंचलन गतियां पाई जाती हैः–

1. *nh?kZdkyhu Hkkxfr;k %&* ये वे दीर्घ काल में पूर्ण होने वाली पृथ्वी की आंतरिक गतिविधियां है, जो लाखों/करोड़ों वर्षों में (जैसे महाद्वीप एवं पर्वन नर्माण क्रियाएं) पूर्ण होते है।
2. *vkdfLed Hkw lapyu xfr;k %&* ये पृथ्वी के आंतरिक भूगर्म में संचालित होने वाली वे आकस्मिक प्रक्रियाएं है जो पृथ्वी के धरातल पर चंद सेकंडो/मिनिटों में अचानक प्रगट होकर पृथ्वी के धरातल पर एक भयानक व डरावनी भूदृश्यावली प्रकट करती है। जैसे ज्वालामुखी एवं भूकंप क्रियाएं।

2-7 Tokyke[kh %&

ज्वालामुखी भूपर्पटी में वह छिद्र या द्वार होता है जिसके द्वारा पिछले शैल पदार्थ, शैल के टुकड़े, राख, जलवाष्प तथा अन्य गर्म गैसे धीरे–धीरे अथवा तेजी से उदगार के समय निकलते है। ये

पदार्थ पृथ्वी के आंतरिक गर्म भागों से भूपृष्ठ पर फैंके जाते है। इस प्रकार के छिद्र या भू पृष्ठ के उन भागों में पाये जाते है, जहां शैल संस्तर अपेक्षाकृत कमजोर होते हैं।

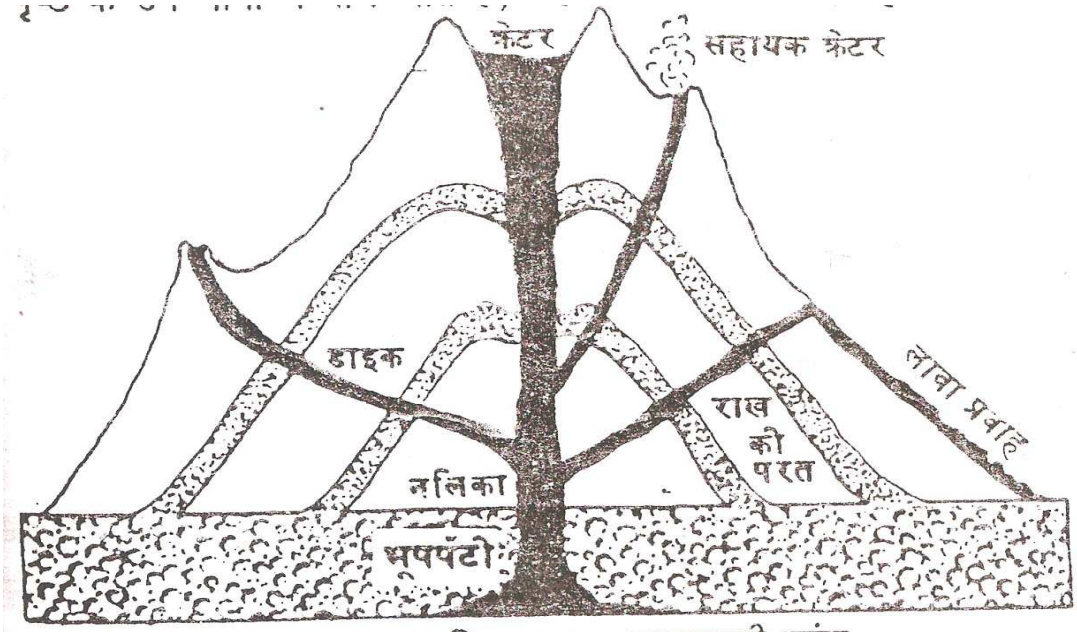

चित्र 8.5 ज्वालामुखी शंकु

शायद आपको आश्चर्य हो रहा हो कि ये उद्‌गार होते ही क्यों हैं। वास्तव में ज्वालामुखी इस तथ्य के प्रमाण है कि पृथ्वी के आन्तरिक भागों में अत्यधिक गर्मी व दबाव विद्यमान है। पृथ्वी की बाह्य ठोस परत के नीचे पिघले शैल पदार्थ जिन्हें मैग्मा कहते है, अत्यधिक दबाव में होते हैं। जब यह मैग्मा छिद्र या दरार द्वारा मैग्मा चेम्बर से बाहर धरातल पर जमा हो जाता है, तब इसे लावा कहते है।

मैग्मा तथा गैसे जो भूपर्पटी के नीचे जमा है, वे बाहर आने का प्रयास करती रहती है। जब ये अपने दबाव से भूपर्पटी में कोई कमजोर रेखा या छिद्र बनाने में सफल हो जाती है तो ये गैसे, पिघले शैल तथा गैसे पृथ्वी के आंतरिक भागों से निकलकर धरातल पर आती है तो यह प्रक्रिया ज्वालामुखी प्रक्रिया कहलाती है।

ज्वालामुखी उद्‌गार का मुख्य कारण मैग्मा और गर्म गैसों द्वारा भूपर्पटी पर डाला गया अत्यधिक दबाव है। वह प्रक्रिया जिसके द्वारा ठोस, पिघले शैल पृथ्वी के आंतरिक भागों से मुक्त होकर उसके धरातल पर आती है, ज्वालामुखी प्रक्रिया कहते है।

ज्वालामुखी पदार्थ छिद्र या द्वार के बाहर होकर प्रायः शंकु का आकार ग्रहण करते है। शंकु के ऊपर कीप के आकार का एक गढ्‌ढा होता है जिसे क्रेटर कहते है।

2-8 Hkdei %&

भूपृष्ठ के हिलने या कांपने को भूकंप कहते है। ये अक्सर आंतरिक बलों व ज्वालामुखी प्रक्रिया का परिणाम होते हैं।

सभी भूकंप समान तीव्रता वाले नहीं होते। इनमें से कुछ भूकंप बहुत भयंकर होते हैं, कुछ हल्के होते हैं तथ शेष कुछ का तो पता ही नहीं चल पाता। भयंकर या अधिक तीव्रता वाले भूकंप गिने चुने होते है। यद्यपि हमारी पृथ्वी पर प्रतिदिन भूकंप आते रहते है, लेकिन उनकी बारम्बारता में स्थान–स्थान पर बहुत अंतर पाया जाता हे। सारे संसार में फैला भूकम्प मापी केन्द्रों का जाल प्रतिदिन दर्जनों भूकम्पों को आलेखित करता है, लेकिन भयंकर भूकंप कुछ ही होते है। भूकम्प मापने वाले यंत्र को भूकम्प मापी यंत्र कहते है। सीस्मोस ग्रीक भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है भूकम्प।

1. आंतरिक बलों द्वारा हुये भूपृष्ठ के कम्पन को भूकम्प कहते है।
2. भूकम्पमापी एक यंत्र है जो भूपृष्ठ के कंपन को आलेखित करता है।

भूपृष्ठ में स्थित बिन्दु जहां से भूकम्प प्रारंभ होता है उसे भूकम्प केन्द्र कहते है। सामान्यता यह केन्द्र भूपृष्ठ में 60 किलोमीटर की गहराई के आसपास स्थित होता है।

भूकम्प केन्द्र के ठीक ऊपर पृथ्वी के धरातल पर जो स्थान होता है उसे अधिकेन्द्र कहते है। भूकम्प का प्रभाव उसके उद्‌गम बिन्दु से तरंगों द्वारा ले जाया जाता हे। ये भूकम्पीय तरंगें भूकम्प केन्द्र से पैदा होकर सभी दिशाओं की ओर चलती है। लेकिन उनकी तीव्रता अधिकेन्द्र पर सबसे अधिक होती है। यही कारण है कि अधिकेन्द्र के चारों ओर फैले क्षेत्र पर विनाश सर्वाधिक होता है। कम्पन्न की तीव्रता अधिकेन्द्र के चारों ओर दूर जाने पर क्रमशः कम होती जाती है।

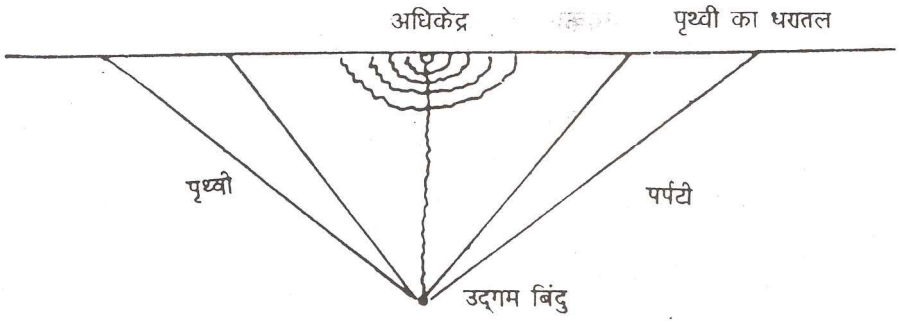

चित्र एक भूकम्प का भूकम्प-केन्द्र तथा अधिकेन्द्र

2-9 cfg tkr ¼ckg;½ Hk 'kfDr;k %&

पृष्ठ 12 पर पूर्व में पृथ्वी पर संचालित होने वाली आंतरिक भूशक्तियां जो पृथ्वी के भूगर्म से शक्ति प्राप्त कर पृथ्वी के ऊपरी भूपृष्ठ पर महाद्वीप/पर्वत निर्माण प्रक्रिया पूर्ण करती है साथ ही भूकंप

एवं ज्वालामुखी जैसी विनाशकारी क्रियाएं भी सम्मिलित करती है। अर्थात समस्त प्रकार की आंतरिक शक्तियां पृथ्वी के भूपृष्ठ पर उच्चावच्च का निर्माण करती है।

चूंकि पृथ्वी के संपूर्ण संचालन में विचित्र व अनोखा भूसंतुलन पाया जाता है अतः दूसरे प्रकार की बाह्म या (बहिर्जात) भूशक्तियां जैसे नदी, भूमिगत जल, हिमानी, वायु व समुद्री लहरें पृथ्वी की अपनी भूपृष्ठ या आंतरिक भाग में अपरदन व निक्षेपण कार्यों द्वारा प्रथम प्रकार की शक्तियो द्वारा निर्मित ऊंचे पृथ्वी के भूपृष्ठीय भाग को उत्वान के प्रथम दिन से ही निम्नीकरण का कार्य प्रारंभ कर देती है। अर्थात पृथ्वी पर प्रथम एवं द्वितीय प्रकार भू–गतियां (शक्तियां) जो कि एक दूसरे के सर्वथा विपरीत कार्य करते हुए भी पृथ्वी पर भूसंतुलन कायम करने का महत्वपूर्ण कार्य भी करती है।

पृथ्वी के भूपृष्ठ पर निम्नीकरण के महत्वपूर्ण कारको में नदी सबसे महत्वपूर्ण कारक का अध्ययन सर्वप्रथम करेंगे।

2-10 cgrk gqvk ty ¼ufn;k½ %&

नदियां भूपटल का बड़ा ही व्यापक और विशिष्ट भौतिक रूप है। इनकी उत्पत्ति भूमि का ढाल और वर्षा के कारण होती है। धरातल पर नदी के बनने तथा उसके विकास में वर्षा जल के अतिरिक्त झीलें, भूमिगत जल, झरने और हिम नदियां भी अपना महत्वपूर्ण योग देती है। यद्यपि भूमि के ढाल, चट्टानों की संरचना और जलवायु के कारण नदियों का रूप भिन्न–भिन्न छोटी व बड़ी तथा स्थायी व अस्थायी होता है, किन्तु वे सभी जलधाराएं जो भूमि पर स्वाभाविक रूप से बहती है, नदियां कहलाती है।

unh vijnu }kjk cus Hkw&vkdkj %&

नदी की अपरदन क्रिया से कई प्रकार के भू–आकार उत्पन्न हो जाते है, जिनमें से प्रमुख भू–आकार निम्नलिखित है:–

1- *oh&vkdkj dh ?kkVh %&* भूतल पर बहने वाली नदियां सर्वत्र ही घाटियों का निर्माण करती है। नदी निर्मित इन घाटियों की आकृति सामान्यतः V आकार की होती है। पर्वतीय भागों अथवा नदी की ऊपरी घाटी में घाटी की भुजाएं तीव्र ढाल वाली होती है, क्योंकि यहां लम्बवत अपरदन अधिक होता है जबकि मैदानी भागों में घाटी भुजाएं मन्द ढाल वाली होती है क्योंकि यहां पार्श्विक अपरदन की अधिकता रहती है।

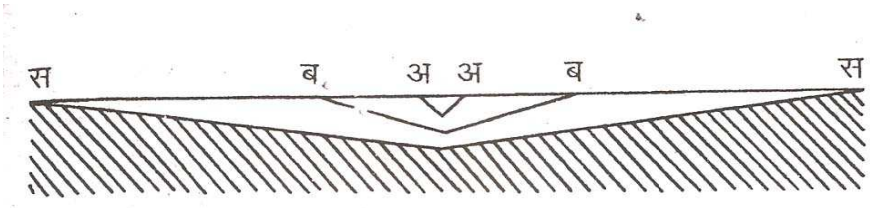

चित्र 3·23. नदी घाटी की परिच्छेदिका

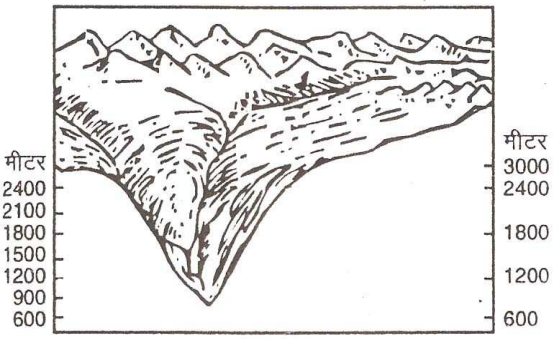

चित्र 3·24. वी-आकार की घाटी

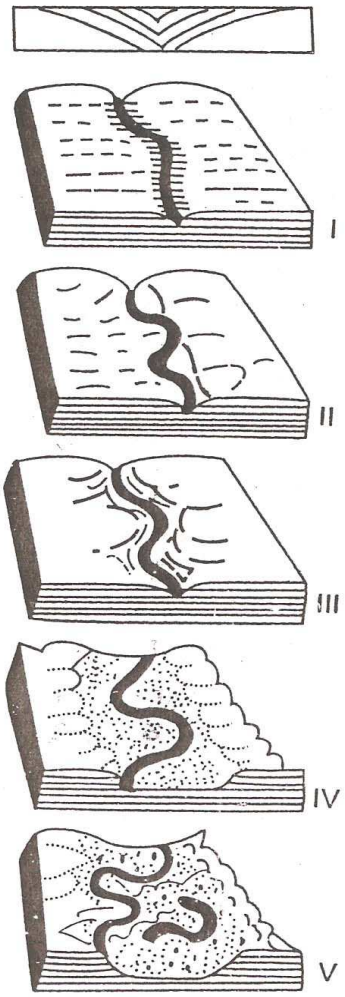

चित्र 3·25. नदी-घाटी का विकास

2- *tyt xfrdk* %& इनकी रचना नदी घाटी में ऐसे स्थानों पर होती है जहां नदी तल में ठोस चट्टाने बिछी होती हैं। ठोस चट्टानी तल पर लुढ़कते हुए कंकड़ और रोड़े तलहटी में गड्डे बना देते हैं। ऐसे ही गड्डों में पड़ी बालू और कंकड़ जब भंवर के साथ हो जाते हैं तो इनके गोल गोल घूमने से गहरे गर्त बन जाते है। नदी तल में बने ऐसे गर्तों को ही जलज गार्तिका कहा जाता है। भारत में सोन, दामोदर एवं चम्बल आदि नदियों की घाटियों में कई स्थानों पर ऐसी जलज गर्तिकाएं देखी जा सकती है।

3- *xkt* % & सामान्यतः नदी की गहरी एवं संकरी घाटियों को गार्ज अथवा कन्दरा कहा जाता है। ऐसी नदी घाटियों के पार्श्व अत्यंत ढालू होते है। सामान्यतः गार्ज की रचना कठोर चट्टानी भागों में होती है। भारत में नर्मदा, चम्बल, कृष्णा, सतलज, सिन्धु आदि नदियां कई स्थानों पर गार्ज बनाती है।

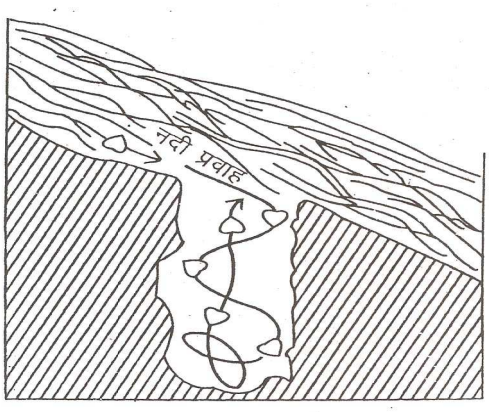

चित्र 3·26. नदी के तल में जलज गर्तिका (pot holes) इसमें छेदक की गति पर ध्यान दीजिए।

4- *dfu;u* %& वस्तुतः कैनियन गार्ज का ही बड़ा रूप है। शुष्क जलवायु वाले पहाड़ी ऊंचे और पठारी भागों में जब नदी घाटी के चौड़े होने की अपेक्षा गहरे होने की क्रिया तेज होती है तो इससे कैनियन की रचना होती

है। संयुक्त राज्य अमेरिका में कोलोरेडो नदी की कैनियन संसार प्रसिद्ध है। यहा 480 किलोमीटर से भी अधिक लम्बी 1828 मीटर गहरी और 12 से 16 किलोमीटर चौड़ी है। हमारे देश में सिंधु नदी ने गिलगित में 20000 फुट गहरे कैनियन की रचना की है।

5- *ty irki* %& ऊंचे शैल शिखरों से जब नदी बहती हुई आती है तो धरातल की प्रारंभिक असमानता के कारण उसके मार्ग में जल प्रपात बन जाते हैं। कभी–कभी नदी के प्रवाह मार्ग में जब कठोर चट्टानों की परत बिछी हुई होती है तो जल प्रवाह उसे काट नहीं पाता और उसके ऊपर से यकायक नीचे गिरने लगता है। अतः प्रवाह की उस असमानता को जिसमें जल ऊपर से नीचे गिरता है, जल प्रपात कहते है। जल प्रपात की रचना, भूमि की असमानता, अपरदन, भूकम्प, ज्वालामुखी तथा अन्य भूगतियों आदि अनेक कारणों से होती है। जो प्रपात मूलतः अपरदन की भिन्नता के परिणामस्वरूप बनते है, वे साधारण जल प्रपात कहलाते है।

6- *f{kfi.dk* %& घाटी के किसी–किसी भाग में नदी के वेगपूर्ण बहाव को क्षिप्रिका कहते है। ये नदी की तलहटी के ढाल के यकायक तीव्र हो जाने पर बन जाते है। इनके बनने का मुख्य कारण नदी की तलहटी में कठोर चट्टानों का आड़े–तिरछे रूप में स्थित होना है। जल प्रवाह का ढाल अधिक खड़ा होता है तो इसे महाप्रपाती कहते है। महाप्रपाती में सीढ़ीदार उछालें होती है और जल की मात्रा अधिक होती है।

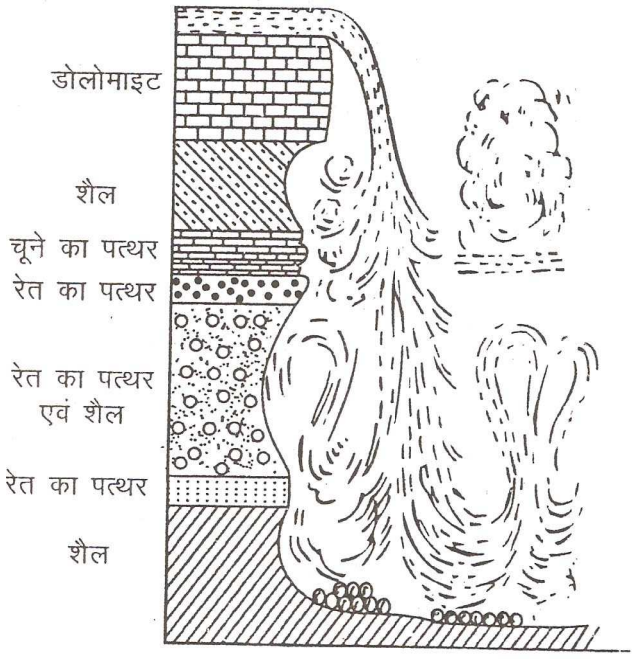

चित्र 3·27. नियाग्रा जल-प्रपात का पार्श्व-चित्र

2-11 fgekuh dk dk;Z %&

हिमपात के कारण जब किसी हिमक्षेत्र में हिम की राशि बहुत बढ़ जाती है तो फिर उसका स्थिर रहना कठिन हो जाता है। ऐसी अवस्था में थोड़ा सा भी दबाव बढ़ने पर हिम गुरूत्वाकर्ष्ज्ञण के प्रभाव से ढाल की ओर खिसकने लगता है। हिम क्षेत्र में इस प्रकार खिसकती हुई हिम राशि को ही हिमानी या हिम नदी कहा जाता है।

इन हिमानियों के कई रूप होते हैः–

1- *io|rh; vFkok ?kkVh fgekuh %&* पर्वतीय ढालों अथवा घाटियों में होकर बहने वाली हिमानियों को पर्वतीय अथवा घाटी हिमानी कहा जाता है।

2- *io|rinh; fgekuh %&* पर्वतीय तलहटी पर घाटी हिमानियों के मिलने से बनी विशाल हिमानी को पर्वतपदीय हिमानी कहते है।

3- *egk}hih; fgekuh %&* जो प्रदेश या क्षेत्र पूरी तरह हिम से ढक जाता है और वहां से सभी दिशाओं की ओर हिम खिसकने लगता है तो उसे महाद्वीपीय हिमानी कहा जाता है।

fgekuh vijnu }kjk Hk&vkdkj %&

1- *fxjh J|x %&* जब किसी पर्वत के चारों ओर समान उंचाई पर हिमगहर बन जाते हैं तो वे अपनी शीर्ष की दीवार को तीव्रता से काटते है। फलस्वरूप इनके मध्य में एक ठोस पिरामिड की आकृति की चोटी बन जाती है। पर्वत शिखर के इस चोटीनुमा रूप को ही श्रृंग कहा जाता है। स्विजरलैण्ड में आल्पस पर्वत श्रेणी का मैटरहार्न इसका सर्वोत्तम उदाहरण है। भारत में हिमालय के अन्दर भी ऐसे श्रृंग पाये जाते है।

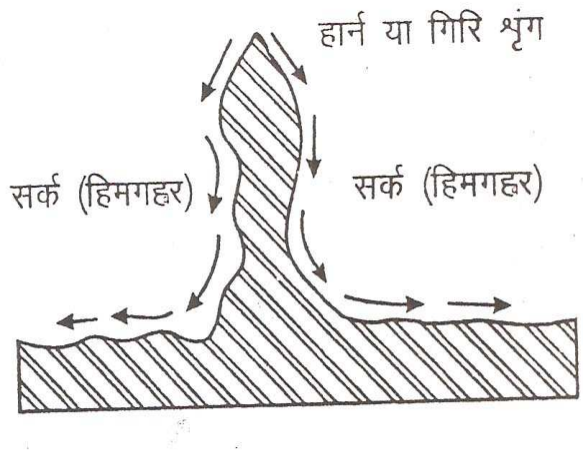

चित्र 3-35. गिरि शृंग : सामान्य

2- *fgexgj ;k l d%&* जब ऊंचे पर्वतीय भागों से हिम पिद्यलकर नीचे आती है तो वह ढालों पर गड्डे बना देती है। धीरे–धीरे ये गड्डे हिमखोदाव की क्रिया से काफी चौड़े तथा गहरे हो जाते है। पर्वतीय ढालों पर बने विशाल गर्तों को ही हिमगहर कहा जाता है। इसकी आकृति कटोरे की भांति होती है। हिमानियों का जन्म प्रायः इन्हीं से होता है।

3- *;&vkdkj dh ?kkVh %&* हिमानी जब किसी घाटी में कोकर बहती है तो वह घाटी को अधिक चौड़ा व गहरा करती है। घाटी का तल व किनारे इस प्रकार घिसते रहने से घाटी शनैःशनैः चौड़ी व गहरी होती जाती है। इस तरह हिम नदी की घाटी U आकार की बन जाती है। इसके किनारों का ढाल अति तीव्र होता है और तलहटी लगभग समतल होती है।

4- *yVdrh ?kkfV;k %&* मुख्य हिम नदी की अपरदन क्षमता सहायक हिम नदी की अपेक्षा अधिक होती है। अतः मुख्य हिम नदी अपनी घाटी को सहायक हिम नदी घाटी की अपेक्षा अधिक गहरा कर देती है। फलस्वरूप मुख्य हिम नदी और सहायक हिम नदियों के घाटी तल में बड़ा अन्तर पैदा हो जाता है। इनके संगम स्थलों पर तीव्र ढाल उत्पन्न हो जाता है। अतः जब इन घाटियों से हिम पिघल जाता है तो सहायक हिम नदियां हिमनदी की घाटी में लटकती हुई प्रतीत होती है। हिम के प्रभाव से मुक्त होने पर घाटियों के स्थान पर जल प्रपात बन जाते है। ऐसी लटकती घाटियों के सर्वोत्तम उदाहरण कैलिफोर्निया के सियरानिवेदा पर्वत की योसेमाइट घाटी में देखे जाते हैं।

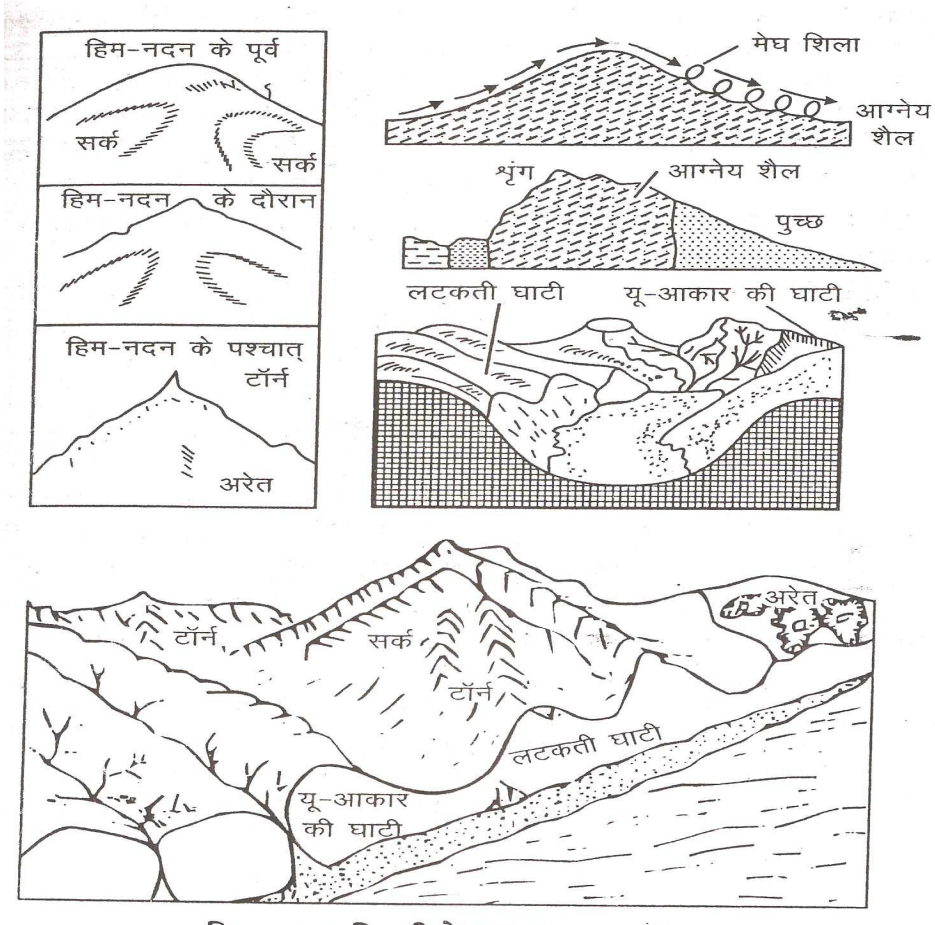

चित्र 3·36. हिमानी के अपरदनात्मक स्थलरूप

5- *f'kykxr %&* यह हिम अपरदन की एक महत्वपूर्ण रचना है जो हिमगहर के नीचे घाटी में पायी जाती है। हिम गहर से निकलकर जब हिमानी अपनी घाटी से आगे बढ़ती है तो वह अपने मार्ग में स्थित कोमल चट्टानों को शीघ्र काट देती है जिससे शिलागर्त बन जाते है। धीरे–धीरे ये शिलागर्त हिम अपरदन के फलस्वरूप हिम सोपान में बदल जाते है।

6- *jk'k eVku %&* जब हिमानी अपनी घाटी में आगे बढ़ती है तो वह मार्ग में पड़ने वाले पहाडी टीलों एवं कठोर शैलखण्डों को काट–पीटकर एवं घिसकर घर्षण द्वारा घिसकर

चिकने, चौरस एवं सपाट टीलों में बदल जाती है। ये टीले दूर से देखने पर भेड़ की पीठ की तरह दिखायी पड़ते है। अतः सीसर ने इन टीलों को भेड़ पीठ शैल अर्थात रॉश मूटोने नाम दिया। फ्रांसीसी भाषा में रॉश मूटोने का अर्थ भेड़ के आकार की शैल से होता है।

2-12 iou dk dk;l %&

पवन भूपटल पर अनाच्छादन का महत्वपूर्ण साधन है। जिस प्रकार आर्द्र प्रदेशों में बहते हुए जल और उच्च अक्षांशों एवं उच्च पवर्ततीय प्रदेशों में चलते हुए हिम का कार्य अत्यंत प्रभावकारी होता है उसी प्रकार शुष्क एवं अर्द्धशुष्क प्रदेशों में पवन का प्रभाव होता है। पृथ्वी के धरातल के लगभग एक तिहाई भाग में मरूस्थली एवं अर्द्ध मरूस्थली दशाएं पायी जाती है।

iou }kjk vijfnr Hk&vkdfr;k %&

पवन के अपरदन कार्य के फलस्वरूप शुष्क एवं अर्द्धशुष्क प्रदेशों में विचित्र भू–आकृतियों का आविर्भाव हो जाता है। कुछ प्रमुख भू–आकृतियां निम्नलिखित हैः–

1- *N=d ;k xkjk %&* मरूस्थलीय प्रदेशों में बालू से लदी हुई हवा चट्टानों के निचले भाग को तीव्रता से घिसती रहती है। हवा के इस अपघर्षण से ऊपर उठे हुए चट्टानी भागों में विशेष आकृतियां बन जाती हैं। चारों ओर से हवा के सतत प्रहार से चट्टानों का निचला भाग कटकर संकीर्ण हो जाता है और उसके ऊपर का भाग विशाल मेज की भांति सपाट तथा चौड़ा बना रहता है। कभी–कभी ऊपरी भाग वर्षा के कारण गोलाकार एवं चिकना भी हो जाता है। इस प्रकार ये चट्टाने कुकुरमुत्ता नामक पौधे के सदृश प्रतीत होने लगती है। ऐसी चट्टानों को छत्रक कहा जाता है।

2- *T;wxu %&* जिन मरूस्थली प्रदेशों में कठोर चट्टानों की परत कोमल चट्टानों के ऊपर क्षैतिज रूप में बिछी हुई पायी जाती है, वहां ज्यूगेन नामक भू–आकार प्रकट होता है। सर्वप्रथम अपक्षय के कारण ऊपर कठोर चट्टानों की संधें चौड़ी होती है। जब धीरे–धीरे संधे काफी चौड़ी हो जाती हैं तो नीचे की कोमल चट्टानी परत निकल आती है इस कोमल चट्टानी परत को हवा शीघ्रता से काट देती है, इससे चट्टानों के बीच–बीच में घाटियां सी बन जाती है। इस प्रकार कठोर चट्टानी भाग कोमल चट्टानों के ऊपर टोपी की तरह अवस्थित रहता है। सहारा में चट्टानों की ऐसी आकृतियों को ज्यूगेन कहा जाता है।

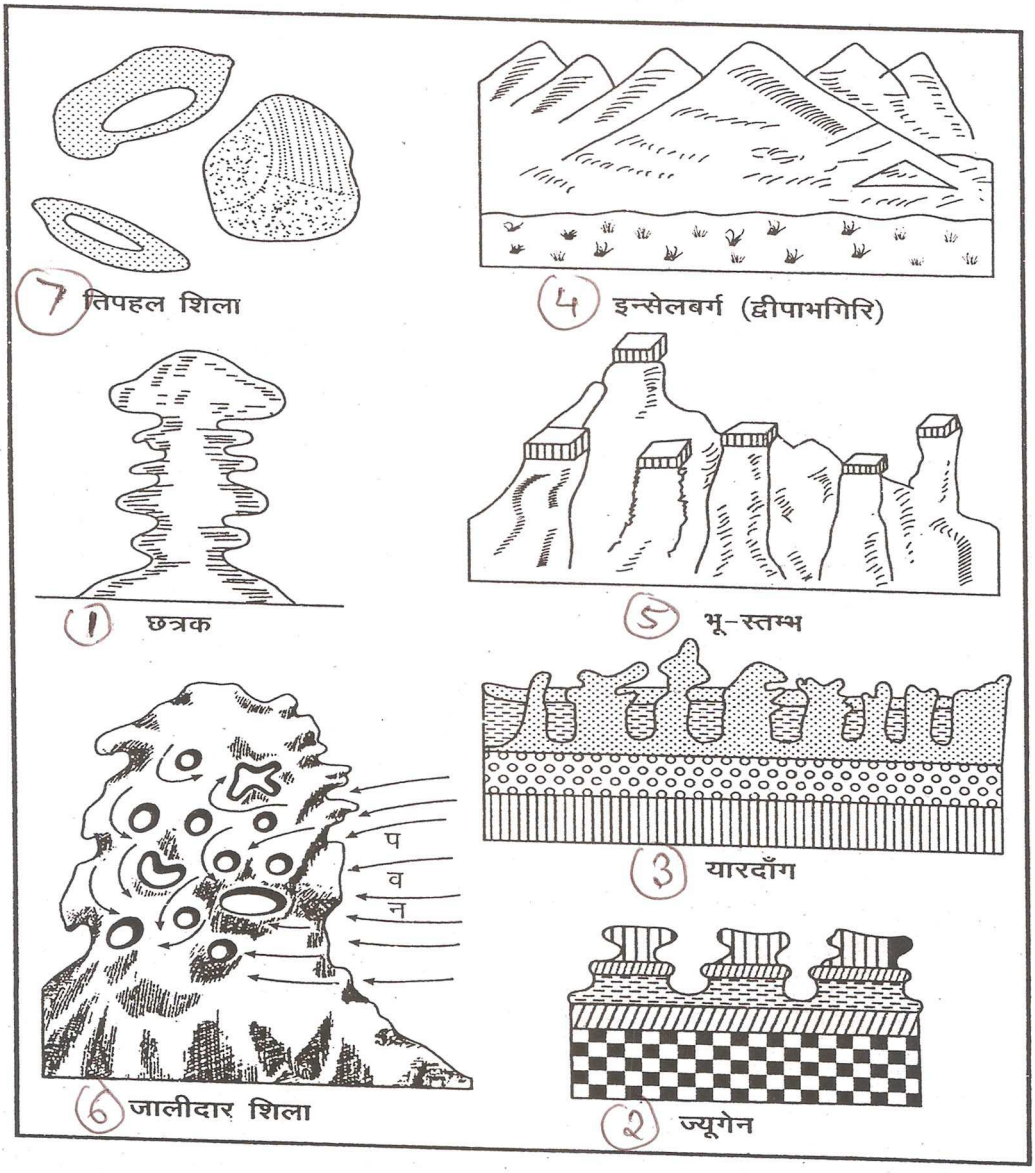

चित्र 3·41. पवन के अपरदनात्मक स्थलरूप

3- *;kjnkx %&* जब कठोर और कोमल शैलों की पट्टियां प्रचलित हवा की दिशा के अनुरूप फैली हुई पायी जाती है तो वहां कटक और खांचे का भू–दृश्य उत्पन्न हो जाता है। वस्तुतः हवा के निरंतर एक ही दिशा में चलने से कोमल चट्टानें शीघ्र अपरदित हो जाती है और कठोर चट्आने सामान्य धरातल के ऊपर उठी हुई दिखाई पड़ने लगती हैं। हवा के अपघर्षण से कटकों के पवनाभिमुख अग्र सुघड़ एवं गोलाकार तथा उनके शिखर सुई के समान नुकीले बन जाते हैं, ये शिखर संकीर्ण खांचों द्वारा एक दूसरे से अलग रहते हैं। मध्य एशिया के मरूस्थलों में हवा के अपघर्षण द्वारा निर्मित खम्भों की भांति अधिक कटे हुए और असमान आकार के खड़े किनारों वाले भू–आकार यारदांग कहलाते है।

4- *bUlycxl %&* शुष्क और अर्द्धशुष्क प्रदेशों में जहां धरातल पर नग्न चट्टानें बिछ़ी हुई पायी जाती है, वहां हवा के अपघर्षण और अपवाहन के कारण चट्टानों का बड़ी मात्रा में घिसाव होता है। हवा के इस घिसाव से यहां धीरे–धीरे सभी प्रकार के गड्डे नष्ट हो जाते हैं और समूचा प्रदेश एक समतल मैदान में परिणत हो जाता है। केवल कठोर चट्ाने धरातल के ऊपर टीलों के रूप में खड़ी रहती है। वस्तुतः ये टीले मरूस्थलों के बीच तीव्र ढाल वाली छोटी–छोटी पहाडियां है, जिनका आकार गुम्बद अथवा पिरामिड के समान होता है। जर्मन भू–गर्भवेत्ताओं ने कालाहारी मरूस्थल में पाये जाने वाले ऐसे पहाड़ी टीलों को इन्सेलबर्ग अर्थात् द्विपाभगिरि नाम दिया है, क्योंकि दूर से ये टीले रेत के विस्तृत सागर में द्वीप के सदृश प्रतीत होते हैं।

5- *Hk&LrEHk %&* शुष्क मरूस्थलों में प्रायः ऐसे स्थानों पर भू–स्तम्भों की रचना होती है जहां असंगठित मलवे से युक्त चट्टानों के ऊपर कठोर चट्टानें बिछी हुई पायी जाती है। यहां हवा के सतत् प्रवाह और अपहवान से संगठित चट्टाने घिस जाती हैं कई ऊंचे–ऊचे टीले बन जाते है। जिन स्तम्भों के शिखर पर कठोर पत्थर रखा रहता है, उन्हें भू–स्तम्भ कहा जाता है। दूरी से देखने पर ये भू–स्तम्भ कटी हुई चिमनी की तरह दिखाई पड़ते हैं।

6- *tkyhnkj f'kyk %&* जब धूल कणों से लदी हुई हवा के मार्ग में विभिन्न विचित्र कठोरता वाली चट्टान आ जाती है तो उसके प्रहार से चट्टान के कोमल भाग कटकर उड़ जाते है। फलस्वरूप चट्टान जालीनुमा हो जाती है। इन जालीनुमा चट्टानों को ही जालीदार शिला कहते है। रॉकी पर्वतीय क्षेत्र में बालुका प्रस्तर की जालीदार शिलाओं के दृश्य देखे जा सकते हैं।

7- *f=dksfVdk ;k frigy %&* मरूस्थली प्रदेशों में बालू से लदी हुई वहा धरती पर बिखरे हुए चट्टानी टुकड़ों पर प्रहार करती है, जिससे वे घिसकर चिकने हो जाते है। पत्थरों के ऊपरी तल चिकने और कई पहल वाले हो जाते है। ऐसे चट्टानी टुकड़ों को त्रिकोटिका या तिपहल कहते हैं। ये सहारा मरूस्थल मे अधिक पाये जाते है।

lenzh ygjksa dk dk;Z %&

समुद्री लहरों का कार्य केवल समुद्रतटीय भाग तक सीमित होता है। ये तटीय चट्टानों पर

चित्र 3·45. लहरों का कार्य

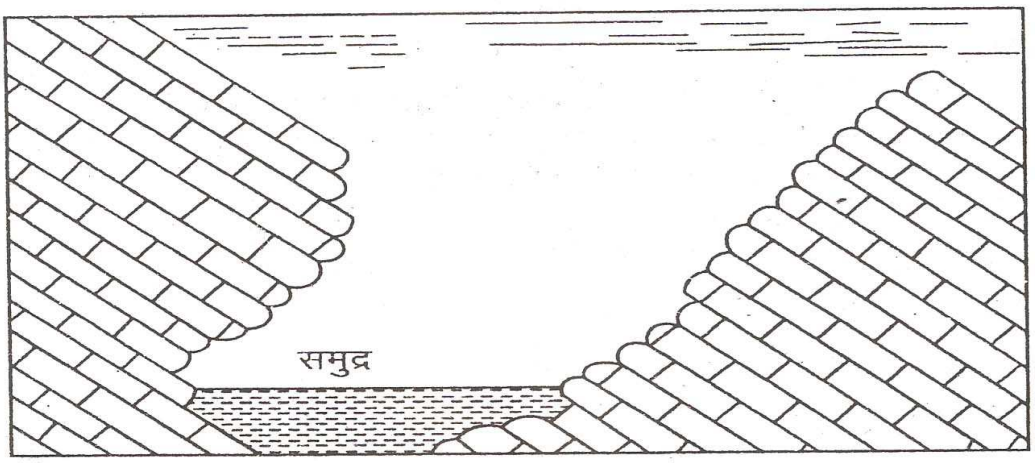

अत्यधिक दबाव डालती हैं। इनके साथ कंकड़–पत्थर, रोड़े व शिलाखण्ड भी रहते है जो तट पर लहरों द्वारा होने वाला अपरदन कार्य लहरों की तीव्रता, तट की रचना, तटीय शिलाओं की संरचना, शैलों का स्तरक्रम तथा उनका झुकाव और लहरों के भार आदि पर निर्भर करता है। जब समुद्री लहरें बराबर तट भूमि से टकराती रहती है तो जिससे तट भूमि कटती जाती है। इससे न केवल तट रेखा ही पीछे हटती जाती है वरन तट के समीप अनेक प्रकार के भू आकार बन जाते है। कुछ प्रमुख भू आकारों का विवरण नीचे दिया जा रहा है।

चित्र 3·46. सागर जलीय अपरदनात्मक स्थलरूप

1- *Hkx| %&* समुद्रतट पर लहरों के आक्रमण का सबसे अधिक आघात आधार वाली चट्टानें अपने आधार से कट जाती है। फलस्वरूप चट्टानों का ऊपरी भाग धीरे–धीरे आगे निकला हुआ या लटकने लगता है। कालान्तर में यह निकला हुआ भाग अपने भार से टूटकर गिर जाता है। इससे तटों पर खड़े किनारों की रचना हो जाती है, जिनको भृगु कहा जाता है।

2- *[kkfM;k vkj dxkj %&* कोमल और कठोर चट्टानों के स्तर लम्ब रूप में साथ–साथ स्थित होते हैं तो लहरों के थपेड़ों से कोमल चट्टाने कम घिसती है। फलस्वरूप कोमल चट्टानों में खाड़ियां बन जाती हैं और कठोर चट्टाने कंगारों के रूप में समुद्र में निकली रहती है।

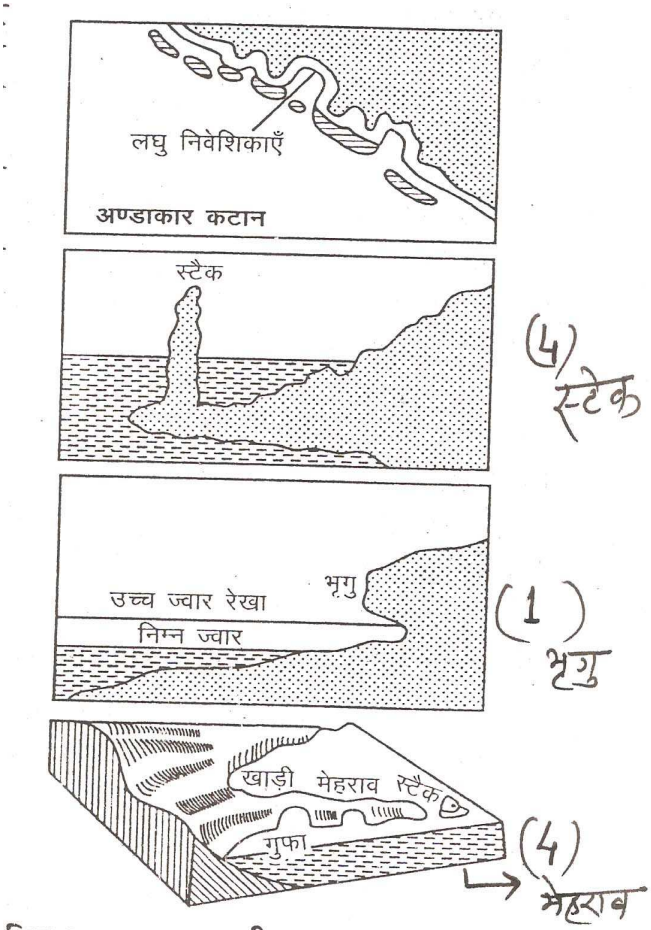

3- *lenhrVh; xgk, %&* लहरों द्वारा तटीय शैलों का अपरदन नीचे के भाग में अधिक होता है। अतः यदि किसी तटीय कगार की निचली शैले कोमल होती है तो लहरें उसे काटकर खोखला कर देती है जिससे वह धीरे–धीरे समुद्री गुहा का रूप ले लेता है।

4- *egjkc vkj vyXu LrEHk %&* जब तटीय शैलों का कुछ भाग समुद्र के भीतर फैला हुआ हो और उसके बीच में कोमल चट्टानें आ गई हों तो लहरें कोमल चट्टानों वाले अंश को काटकर उसके आरपार छिद्र बना देती है। यह छिद्र कालांतर में बड़े होकर मेहराब का रूप ले लेते है। जब कभी लहरों के अपरदन अथवा अन्य कारणों से मेहराबों की छत टूटकर गिर

पड़ती है तो मुख्य चट्टान से उसका एक भाग स्तम्भ की भांति अलग खड़ा रह जाता है, जिसे अलग्न स्तम्भ या स्टेक कहा जाता है।

bdkbl lkjk'k&

1. वायुमंडलीय अल्पकालीन दशा को उस स्थान का मौसम कहते है।
2. जबकि वायुमडल की दीर्घकालीन औसत दशा को उस स्थान की जलवायु कहा जाता है।
3. मौसम व जलवायु का सबसे महत्वपूर्ण अंतर समय के अल्पकालीन तथा दीर्घकालीन वायुमंडलीय दशाएं है।
4. मौसम पल–पल में परिवर्तनशील है परंतु जलवायु नहीं।
5. पृथ्वी पर सर्वत्र वर्षभर एक निश्चित दिशा में चलने वाली हवाएं स्थाई हवाएं कहलाती है।
6. विश्व में स्थाई हवाएं केवल तीन है (1) व्यापारिक हवाए, (2) पछुआ हवाएं (3) ध्रुवीय हवाएं।
7. स्थानीय पवनों को अस्थाई पवने भी कहा जाता है क्योंकि वे वर्षभर स्थाई न होकर दिन प्रतिदिन या मौसम अनुसार अपनी दिशा बदलती है।
8. मानसूनी हवाए, चक्रवात, प्रतिचक्रवात, थल समीर, जल समीर एवं अन्य स्थानीय हवाएं स्थानीय पवनों की श्रेणी में रखी जाती है।

bdkbl vk/kkfjr i'u %&

प्रश्न 1. मौसम को परिभाषित कीजिए।

प्रश्न 2. जलवायु की व्याख्या करें।

प्रश्न 3. स्थाई एवं स्थानीय पवनों का शब्दिक अर्थ बतलाइए?

प्रश्न 4. नदी के अपरदन कार्य द्वारा बनी प्रमुख चार भूआकृतियों के नाम दीजिए।

प्रश्न 5. हिम नदी द्वारा अपरदन से बनाई गई प्रमुख चार भूआकृतियों के नाम बलाइये।

i=kpkj ikB~;Øe
ek/;fed f'k{kk e.My] e/;izns'k] Hkksiky
¼}kjk lokf/kdkj lqjf{kr½
fMIyksek bu ,T;qds'ku
fo"k;& lkekftd foKku ,oa mldk f'k{k.k
f}rh; o"kZ
iz'u i= & uoka

---

fo"k;%& fo'o HkkxksyA vad
10

1- fo'o ds egk}hiksa dk HkkSxksfyd v/;;u& egk}hiksa dh fLFkfr foLrkj Hkkjpuk] tyok;q ouLifr] iokg rU= feV~Vh] d`f"k [kfut m|ksx] ifjogu] O;kikj ,oa izeq[k uxjA
2- Hkkjr dk HkkSxksfyd v/;;u & ¼mijksDrkuqlkj 'kh"kZdksa esa½
3- e/;izns'k dk HkkSxksfyd v/;;u ¼mijksDrkuqlkj 'kh"kZdksa esa½
4- ekufp=] vk'k; ,oa vadu o iBu izeq[k ladsr :<+fp=gA

---

fiz; Nk=k/;kid!

सामाजिक विज्ञान (सामाजिक पर्यावरण) एवं उसका शिक्षण एक व्यापक एवं उसका शिक्षण एक व्यापक विषय है, जहां एक ओर वह प्राकृतिक पर्यावरण द्वारा मानव पर होने वाले प्रभावों को उद्घाटित करता है वहां दूसरी ओर वह मानव द्वारा अपने हित संरक्षणार्थ किए गये प्रयासोंको भी रेखांकित करता है। इसके इस प्रयास में मानव के पारस्परिक सहयोग से उत्पन्न नागरिक एवं सांस्कृतिक उपलधियां जहां समाहित होती है वहीं गतिविधियों का आंकलन भी उसमें होता है। इसलिए इस विषय शिक्षण से आपकी सामान्य उद्देश्य की उपलब्धि हो सकेगी। प्रस्तुत इकाई को सुविधा की दृष्टि से पांच उप इकाई में विभाजित किया गया है।

1

fo'o ds egk}hiksa dk HkkSxksfyd v/;;u

1. छात्राध्यापक को अपने सामाजिक पर्यावरण की जानकारी देना। संबंधित क्षेत्रों समुदायों और व्यक्तियों की सामाजिक समृद्धि के योगदान से परिचित कराना ताकि उसमें देश सेवा व त्याग की भावना जागृत हो सके।
2. प्राकृतिक वातावरण का ज्ञान देना ताकि भौगोलिक वातावरण की क्रिया प्रतिक्रिया आर्थिक प्रगति हेतु उत्पन्न समस्याओं के निदान की क्षमता उनमें उत्पन्न हो सके।
3. आधुनिक वैज्ञानिक व तकनीकी प्रगति के युग में गरीब व अमीर छोटे व बड़े सभी राष्ट्रों को एक दूसरे पर आश्रित बना दिया है। ऐसी परिस्थिति में प्रशिक्षणार्थी में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग की सद्भावना और विश्व बन्धुत्व की भावना का विकास करना।
4. सामाजिक विज्ञान के सफल समन्वय द्वारा अध्यापन की उपर्युक्त पद्धतियों व विधियों का ज्ञान देना जिससे वांछित अभिरूचियां एवं वृत्तियों का विकास हो सके।
5. एटलस में विभिन्न नक्शों में स्थान एवं वस्तुओं की स्थिति ज्ञात करना।

सामान्य भूगोल के अन्तर्गत इकाई दो में उप इकाई एक से छः तक एशिया, यूरोप, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, अफ्रिका और आस्ट्रेलिया महाद्विपों का सामान्य अध्ययन निम्न बिन्दुओं के आधार पर करेंगे।

1. सिंचाई एवं विद्युत।
2. कृषि।
3. उद्योग धन्धें।
4. व्यापार।
5. यातायात के साधन।
6. जनसंख्या व उसका वितरण तथा घनत्व।
7. रहन–सहन तथा प्रमुख नगर।

3-1 ,f'k;k% lkekU; ifjp; %&

एशिया पृथ्वी के सातों महाद्वीप में सबसे बड़ा महाद्वीप है। संसार की समस्त भूमि का एक तिहाई भाग एशिया में ही है। विश्व की आधे से अधिक जनसंख्या लगभग 60% इसी महाद्वीप में है।

एशिया को विषमताओं का महाद्वीप कहते हे। एकओर इस महाद्वीप में पृथ्वी का सबसे ऊंचा स्थान माउन्ट एवरेस्ट है तो दूसरी ओर स्थल भाग का सबसे नीचा स्थान मृत सागर है। पृथ्वी का सबसे ठण्डा स्थान बर्खोयास्क तथा सबसे गर्म स्थान जैकोवाबाद (पाकिस्तान) इसी महाद्वीप में स्थित है। संसार में सबसे अधिक वर्षा (134.5 सेमी) वाला स्थान मोचिनराम (मेघालय) एशिया में ही है। संसार का सबसे कम वर्षा वाला स्थान भी यही है।

एशिया प्राकृतिक सम्पदाओं में बहुत धनी है। यहां कृषि में ज्वार, बाजरा, पटसन, चाय, कच्चा रेशम, रबर, मसाले, तिलहन, गन्ना, नारियल अन्य महाद्वीपों की अपेक्षा अधिक प्राप्त होता है।

यहां खनिज तेल, लोह इस्पात, कोयला, बाक्साइड, मैग्नीज, टिन तथा अभ्रक के विशाल भंडार भी है। सूती, रेशम कपड़ों और जूट के सामान के उत्पादन में भी अग्रणी है।

संसार के प्राचीन सभ्यताओं और प्रमुख धर्मो का जन्म एशिया में हुआ है। हिन्दू, मुसलमान, ईसाई और बौद्व धर्मों का जन्म और विस्तार इसी महाद्वीप में हुआ है। इसका संसार में एक विशिष्ट स्थान है।

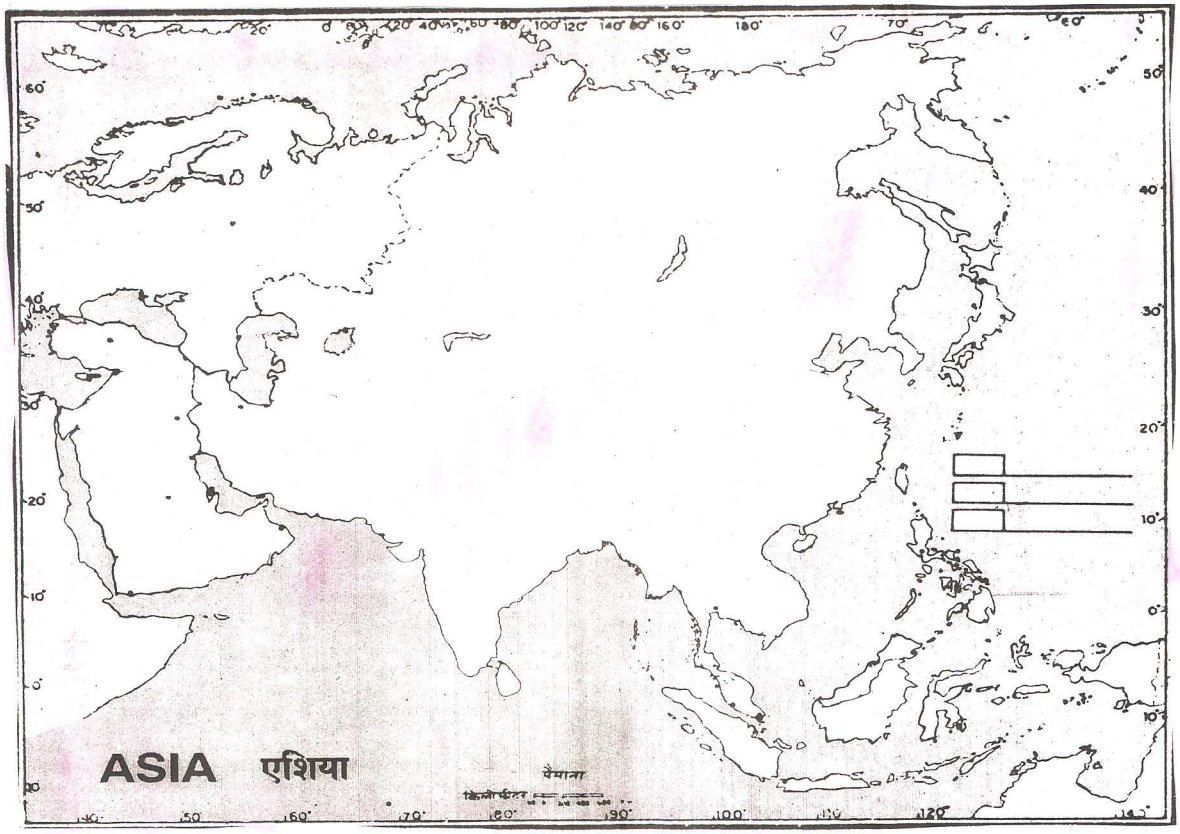

3-2 egk}hi dh fLFkfr ,o foLrkj %&

एशिया महाद्वीप पूर्णतः उत्तरी गोलार्द्ध में स्थित है। यह 10^0 दक्षिणी अक्षांश से 80^0 उत्तरी अक्षांश तथा 25^0 पूर्वी देशांतर से 180^0 पूर्वी देशांतर के मध्य फैला हुआ है। 90^0 पूर्वी देशांतर रेखा इसके मध्य से गुजरती है। उत्तर से दक्षिण इसकी लम्बाई 8500 किमी है तथा पश्चिम से पूर्व में यह लगभग 10000 किमी चौड़ा है। एशिया का क्षेत्रफल 44.5 वर्ग किमी है जो पृथ्वी के धरातल के कुल क्षेत्रफल का लगभग एक तिहाई है।

fl|pkbZ ,o fo|qr %&

एशिया की अधिकांश नदियों पर बांध बनाकर जल संग्रह कर नहरों के द्वारा सिंचाई की जाती है। दजला और फरात से निकाली गई नहरों से ईराक में सिंचाई की जाती है। सिंधु नदी से पाकिस्तान के पंजाब और सिंध प्रांत में सिंचाई होती है। भारत में पंजाब, हरियाणा तथा उत्तरप्रदेश में सतलज और गंगा तथा उनकी सहायक नदियों से नहरें निकालकर बहुत सिंचाई की जाती है। दक्षिण के पठार में चम्बल, दामोदर, महानदी, कावेरी आदि नदियों पर बड़े बांध बनाकर सिंचाई के लिये जल प्राप्त किया जाता है तथा विद्युत उत्पन्न की जाती है। बर्मा में इरावदी, थाइलैण्ड में मीनाग, कम्पूचिया तथा वियतनाम में मीकांग तथा रेड नदी सिंचाई के लिए बहुत उपयोगी है।

चीन में यागटिसीक्यांग, हांगटो के जल का उपयोग सिंचाई के लिए किया जाता है। उत्तरी एशिया की नदियां साल में 5 से 8 माह तक वर्षा से ढकी रहने के कारण सिंचाई के लिए उपयोगी नहीं है। मध्य एशिया व मरूस्थली प्रदेश में सर और आम दरिया के द्वारा सिंचाई होने से कपास तथा फलों की खेती में बहुत प्रगति हुई है।

df"k %&

कृषि एशिया के लोगों के जीवन निर्वाह का सबसे बड़ा साधन है। इस महाद्वीप के तीन चौथाई लोग कृषि पर निर्भर है। समतल भूमि, उपजाऊ मिट्टी, पर्याप्त वर्षा तथा नदियों से सिंचाई की सुविधा के कारण इन मैदानों में प्राचीन काल से ही अच्छी खेती हो रही है। जापान, फिलीपाइन, हिन्देशिया तथा दक्षिणी पूर्वी एशिया के देशों में उत्तम खेती होती है। यहां की मुख्य कृषि उपजें चावल, गेहूं, ज्वार, बाजरा, मक्का, दालें, तिलहन, कपास, पटसन, गन्ना, चाय तथा रबर है।

pkoy %& एशिया में चावल पैदा करने वाले प्रमुख देश– भारत, बांग्लादेश, बर्मा, थाईलैण्ड, कम्बोडिया का उत्तरी भाग, ईराक तथा तुर्की में अधिक होता है।

xsgw %& एशिया में गेहूं की खेती प. साइबेरिया, उ. चीन, भारत तथा जापान के मध्य तथा उत्तरी भाग, पाकिस्तान, ईराक तथा तुर्की में अधिक होता है।

Tokj] cktjk %& भारत तथा चीन के मध्य भाग में कम वर्षा वाले क्षेत्रों में यह फसल उगाई जाती है।

pk; %& चाय का उत्पादन जापान, चीन, बांग्लादेश, हिन्देशिया, श्रीलंका तथा भारत का पूर्वी भाग एवं नीलगिरी पहाड़ियों पर होता है।

dikl %& एशिया में कपास का उत्पादन मुख्यतः चीन और भारत में होता है। चीन के विशाल मैदान तथा भारत के पश्चिम व उत्तरी भाग में कपास की खेती अधिक होती है। रूस, तुर्कीस्तान, पाकिस्तान, टर्की, सीरिया, ईरान में सिंचाई द्वारा कपास पैदा की जाती है।

Qy %& एशिया में कई प्रकार के फल उगाए जाते है।

3-3 m|ksx /kU/ks %&

एशिया महाद्वीप कृषि, वन और खनिज संपत्ति से धनी होते हुए भी उद्योग धंधे में वह पिछड़ा हुआ है।

1- *ykgk rFkk bLikr m|kx %&* इस उद्योग का सबसे अधिक विकास जापान में हुआ है। चीन, भारत तथा साइबेरिया इस्पात के बड़े कारखाने है। जापान में उत्तरी क्यूशु तथा मध्य टांशू द्वीपों में, चीन में मंचूरिया और भारत में छोटा नागपुर का पठार इस्पात उद्योग के लिये प्रसिद्ध है। इन कारखानों के पास रेल इंजन, रेल सामग्री मोटर गाड़ियां, बिजली के यंत्र कृषि औजार और भारी मशीन के कारखाने है।

2- *eSxuht %&* विश्व का 20% मैगनीज एशिया में निकाला जाता है। मैगनीज के क्षेत्र में विश्व में भारत का स्थान द्वितीय है तथा चीन का तृतीय है।

3- *fVu %&* विश्व का 70% टिन एशिया में निकाला जाता है।

4- *lwrh diMk %&* उद्योग चीन, जापान, भारत और मध्य एशिया में अधिक विकसित है। चीन में सूती कपड़ा संघाई, सिंगटावा, टिटसीन, हांगची, नानकिंग में बनता है। भारत में गुजरात, अहमदाबाद, महाराष्ट्र में मुम्बई, शोलापुर, दिल्ली, कानपुर तथा मदुराई प्रमुख है।

5- *j'keh diM %&* चीन तथा जापान में सबसे अधिक रेशमी वस्त्र बनाए जाते है। चीन में सिमताओं तथा शंघाई और जापान में टोकियों तथा ओसाका प्रमुख केन्द्र है। भारत, इजराइल तथा टर्की में कुछ रेशमी वस्त्र बनाए जाते है।

6- *'kDdj %&* शक्कर गन्ना अथवा चुकन्दर से बनाई जाती है। भारत, हिन्देशिया फिलिपाइन्स तथा फारमोसा में गन्ने से तथा चीन, जापान और सोटियल एशिया में चुकन्दर से शक्कर बनाई जाती है।

7- *dkxt %&* बांस, घास, और नरम लकड़ी से कागज बनाया जाता है। इसका उत्पादन जापान, चीन, भारत, बांग्लादेश और टर्की में होता है।

8- *lheSV %&* सीमेंट बनाने में चूने का पत्थर, चाक, जिप्सम और कोयले का उपयोग होता है। जापान, भारत, पाकिस्तान तथा टर्की में सीमेंट के कारखाने अधिक है।

9- *iVlu %&* गंगा, ब्रम्हपुत्र के डेल्टा भाग में जूट की खेती अधिक होती है। अतः भारत और बांग्लादेश में जूट की अधिकांश मिले है।

3-4 'kfDr dh lk/ku

0;kikj %&

एशिया का उत्तरी भाग जंगलों, दलदलों, पहाड़ों और बर्फीले प्रदेशों वाला है। अतः व्यापार कम होता है। अनाज, लकड़ी और कुछ खनिज इन प्रदेशों से भेजे जाते है।

दक्षिणी पाश्चिमी एशिया के देश अधिकतम पठारी और रेगिस्तानी है। इसलिए इनका निर्यात कम और आयात अधिक होता है। यहां से फल, अन, खनिज तेल और खनिज तेल का निर्यात होता है। ये देश गेहूं, तिलहन, वस्त्र, मशीनें, दवाईयां, वाहन, विद्युत व खेती के उपकरण आयात करते है।

दक्षिणी एशिया के देशों में भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश और श्रीलंका से चाय, कपास, पटसन, रबर, तिलहन, चमड़ा निर्यात किया जाता है।

दक्षिणी पूर्वी एशिया के देश चावल, लकड़ी, टिन, रबर, गरम मसाले, नारियल, चाय, दवाईयां, चांदी, खनिज, रासायनिक पदार्थ, शक्कर, तम्बाकू का निर्यात करते है। लोहा इस्पात का सामान, मशीनें, औजार, रेल का सामान, खिलौने, घटियां आदि का आयात करते है।

चीन सूती, रेशमी वस्त्र, यंत्र, चाय आदि का निर्यात करता है तथा तैयार माल, रासायनिक पदार्थ मशीनें आदि मंगवाता है। जापान से लोहा इस्पात का सामान, मशीनें, मोटरें, खेती के औजार, रेल का सामान, खिलौने आदि का निर्यात तथा लोहा, कपास, शक्कर, जूट, रबर, अन और चमड़ा आयात करता है।

3-5 ;krk;kr d lk/ku %&

यातायात के साधन मानव को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचाने में मदद करते है। इससे दूर–दूर स्थित देशों के बीच की दूरी कम हो गई है। आज मानव समुदाय के बीच मित्रता एवं भाईचारे की भावना पैदा हुई है। त्वारित, सुलभ और तीव्रगामी यातायात के साधनों से विश्वबन्धुत्व का वातावरण बनाने में सहायता मिली है। वस्तुओं का आदान–प्रदान करके वस्तुओं का अभाव दूर कर दिया जाता है। धरातल की विषमता तथा जलवायु की कठोरता के कारण एशिया के पश्चिमी मध्य और उत्तरी भाग के बहुत बड़े हिस्से पर जनसंख्या तथा यातायात के साधन कम है। जैसे टुण्ड्रा तथा टैंगा में स्लेज गाड़ी में रेनडियर, कुत्ते, मरूस्थलों में ऊंट, गधा पर्वतों और पहाड़ी भागों में घोड़े खच्चर तथा याक का उपयोग किया जाता है। इसके विपरित जापान, चीन, भारत, पाकिस्तान में सड़कों तथा रेल मार्गों की अधिकता है। प्रमुख स्थान इस प्रकार है–

स्थल मार्ग : सड़क और रेलमार्ग।

,f'k;k d iei[k vUrjk"Vh; ekxl bl idkj g%&

lMd ekxl %&

1. चीन का रेशम मार्ग – पीकिंग से लाचों, काशगर होते हुए रूसी तुर्कीस्तान को जाता है।
2. पीकिंग से सियानकू चेंगटू होते हुए ल्हासा को जाने वाला मार्ग।
3. इस्तबूल अंकाश, एलप्पी बगदाद, तेहरान, केंट, लाहौर, दिल्ली होते हुए कलकत्ता तक जाती है।

jy ekx% &

1. ट्रांस साइबेरिया रेल मार्ग – एशिया का यह सबसे लम्बा रेलमार्ग है। यह मास्को से वलाडीबोस्टक तक जाता है।
2. दक्षिण साइबेरिया रेलमार्ग – यह रेलमार्ग मास्को से सायतोव तथा मध्य एशिया के मरूस्थल से होता हुआ ताशकन्द तक जाता है।
3. ट्रांसकेस्पियन रेलमार्ग ताशकन्द से बुखारा व अश्काबाद होता हुआ यह रेलमार्ग केस्पियन सागर के पूर्वी तट पर क्रस्त्रवोडस्क तक जाता है। ये रेलमार्ग सायगांव बैंकाक होता हुआ सिंगापुर तक गया है।

t yekx% &

स्वेज नहर, भूमध्य सागर और लाल सागर को जोड़ती है। एशिया समुद्री मार्गों द्वारा संसार के अन्य मार्गों से जुड़ा है। जिससे कई बन्दरगाहों का विकास हुआ है। जैसे– करांची, कांडला, मुम्बई, चैन्नई, कोलकाता, रंगून, हांगकांग, टोकियों आदि।

ok;ekx% &

एशिया के सबसे अधिक व्यस्त अन्तर्राष्ट्रीय वायुमार्ग रोम से काहिरा होता हुआ मुम्बई, कोलकाता, रंगून, बैंकाक हांगकांग से टोकियों जाता है। रोम सेइसकी शाखा बेरूत, करांची, दिल्ली होती हुई कोलकाता पहुंचती है।

3-6 tul[;k ,o mldk forj.k %&

tul[;k%& एशिया महाद्वीप क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा महाद्वीप है। इसकी जनसंख्या भी सबसे अधिक है। इसकी जनसंख्या लगभग 267 करोड़ है। इसके दक्षिण पूर्वी भाग अत्यधिक घने बसे है। परंतु मध्य पश्चिम और अत्तर के विशाल भू–भाग में जनसंख्या अत्यंत कम है। यहां जन घनत्व 87 व्यक्ति प्रति किमी है।

forj.k%& एशिया की अधिकांश जनसंख्या भारत उप महाद्वीप और चीन में है। भारत उपमहाद्वीप में भारत, बांग्लादेश तथा नेपाल सम्मिलित है। चीन की जनसंख्या एक अरब बीस करोड़े के लगभग है। इसके अतिरिक्त जापान, इण्डोनेशिया और दक्षिण पूर्वी एशिया के देश घने बसे है। एशिया में जनसंख्या के वितरण पर जलवायु धरातल की बनावट का गहरा प्रभाव पड़ता है।

jgu&lgu %&

एशिया के उत्तरी भाग में टुण्ड्रा प्रदेश में सोमायड़स तथा याकृत रेनडियर पालते है तथा मछली मारकर जीवन निर्वाह करते है। गर्मियों में चमड़े के तम्बुओं और जाड़ों में बर्फ के घरों में रहते है।

पश्चिमी साइबेरिया के रूसी लोग कृषि वन तथा खनिज पदार्थों के विकास में लगे है। स्टेप्स प्रदेश पशुपालन करते है और घुड़सवार होते है।

भारतीय उपमहाद्वीप के लोग खेती, पशुपालन, उद्योग, हस्तकला का कार्य करते है।

,f'k;k d i e[k uxj %&

एशिया के प्रमुख नगर निम्नानुसार हैः—

टोकियो — जापान की राजधानी तथा संसार का बड़ा नगर है। जनसंख्या एक करोड़ से अधिक है।

ओसाका — जापान का महानगर। सूती, रेशमी कपड़ों का केन्द्र।

बीजिंग — चीन की राजधानी। दूसरे नम्बर का बड़ा नगर।

शंघाई — चीन का सबसे बड़ा बन्दरगाह चीन की यांगटिसी क्यांग नदी के मुहाने पर बसा है।

बैंकाक — थाइलैण्ड की राजधानी तथा प्रमुख बन्दरगाह।

सिंगापुर — एशिया का बड़ा और महत्वपूर्ण बन्दरगाह।

जकार्ता — इंडोनेशिया की राजधानी।

रंगून — बर्मा की राजधानी तथा प्रमुख बन्दरगाह।

अन्य नगरों में ढाका, करांची, बगदाद, जेरूसलम, ताशकन्द, कोलकाला, मुम्बई, दिल्ली, चैन्नई प्रमुख है।

3-7 ;jki lkekU; ifjp;

यूरोप महाद्वीप छोटा होते हुए भी स्थिति के कारण महत्वपूर्ण महाद्वीप है। सघन जनसंख्या होते हुए भी सम्पन्न है। इसका मुख्य कारण यहां की उत्तम जलवायु तथा कुशल और परिक्रमी जनता है। इस महाद्वीप के फ्रांस, जर्मनी तथा इंग्लैण्ड पिछली कई शताब्दियों से आगे रहे है। सभ्यता, संस्कृति एवं उद्योग धंधों की दृष्टि से यूरोप महाद्वीप विश्व का सबसे प्रगतिशील माहद्वीप है। यह महाद्वीप पश्चिमी

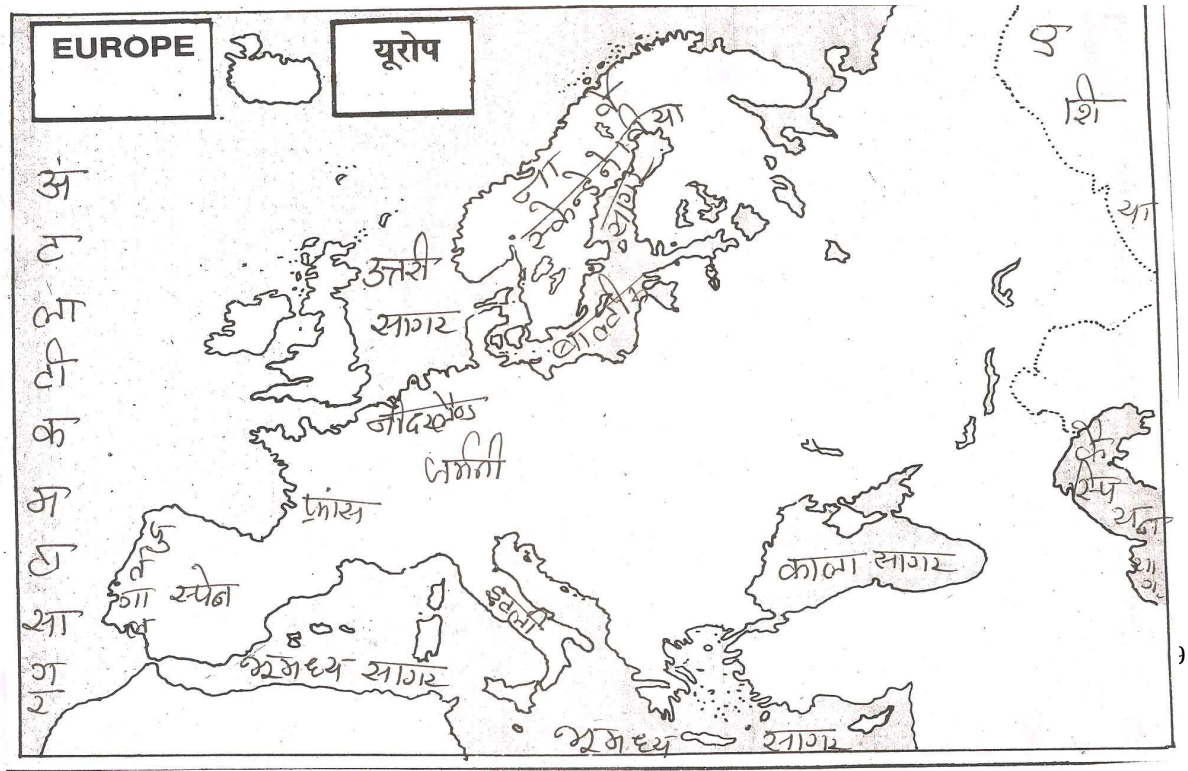

गोलार्द्ध के मध्य स्थित है तथा अन्य महाद्वीप के साथ समुद्री और वायुमार्गों द्वारा यूरोप वासियों के विचार, आन्दोलन और आविष्कार संसार के दूसरे भागों में पहुंचे और उन्हें प्रभावित किया।

fl pkbl %&

यूरोप महाद्वीप में औद्योगिकीकरण अधिक होते हुए भी सघन जनसंख्या के कारण कृषि में प्रगति हुई है। यूरोप महाद्वीप में नदियां अधिक है। जिनमें सालभर जल प्रवाहित होता है। अतः नदियों पर बांध बनाकर नहरें निकाली गई है, जिनसे कृषि हेतु सिंचाई की जाती है।

fo|qr %&

यूरोप महाद्वीप में कोयला पर्याप्त मात्रा में निकाला जाता है। इसलिए कोयले से बिजली बनाई जाती है तथा नदियों पर बांध बनाकर जल विद्युत बनाई जाती है। सौर ऊर्जा तथा वन चक्कियों से भी विद्युत का उपयोग किया जाता है। यही कारण है कि यूरोप उद्योग धंधों में उन्नतिशील है। यूरोप विद्युत उत्पन्न में अग्रणी है।

d`f"k %&

यूरोप में कुल क्षेत्रफल के लगभग एक तिहाई भू भाग पर खेती होती है। यूरोप की सबसे प्रमुख फसल गेहूं है। गेहूं के प्रमुख उत्पादन क्षेत्र सोवियत संघ में थूक्रेन, फ्रांस में पेरिस बेसिन यूरोप विशाल मैदान। कम उपजाऊ वाली भूमि पर जौ, राई की खेती होती है। चुकन्दर और आलू की जड़वाली फसलें भी अधिक मात्रा में होती है। यहां मुख्यतः चुकन्दर से चीनी बनाई जाती है।

यूरोप की भूमध्य सागरीय जलवायु वाले क्षेत्र में रसीले फलों सेब, जैतून, अंजीर, अंगूर, आलू और संतरे बड़ी मात्रा में उगाए जाते है।

m|ksx %&

उद्योग की दृष्टि से यूरोप महाद्वीप बहुत ही उन्नतिशील है। यहां भारी उद्योग और लघु उद्योगों में बड़ी मात्रा में जनसंख्या को रोजगार मिला हुआ है। भारी उद्योग में लोहा इस्पात इंग्लैण्ड, फ्रांस, जर्मनी, सोवियत संघ में तथा इटली बेल्जियम, चेकोस्लोवाकिया, पोलैण्ड में स्पात बनता है। रेल इंजन, डिब्बों, मोटर गाड़िया जलयानों अन्य मशीनों का निर्माण होता है।

0;kikj %&

यूरोपीय देशों से अधिकतर तैयार माल का निर्यात किया जाता है। जैसे मशीनों के कलपूर्जे, बड़ी–बड़ी मशीने, दवाईयां आदि तथा कच्चा माल खाद्य पदार्थ, चार्य, काफी, जूट आदि आयात किया जाता है।

;krk;kr d lk/ku %&

यूरोप महाद्वीप में यातायात के तीन प्रकार के साधन प्रचलित है।

LFky ekx %&

स्थल मार्ग के अन्तर्गत यहां सड़क यातायात तथा रेल यातायात का जाल बिछा है।

t yekx %&

जल यातायात यहां आन्तरिक जलमार्ग मुख्यतः राइन एवं डेन्यूब नदियों द्वारा होता है।

ckg; ekx %&

समुद्री जलमार्ग से यूरोप महाद्वीप विश्व के सभी देशों से जुड़ा हुआ है। गल्फ स्फीम गर्म जलधारा के कारण सभी बन्दरगाह वर्ष भर यातायात के लिये खुले रहते है।

gokb ekx %&

यूरोप से होकर उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, आस्ट्रेलिया, अफ्रिका तथा एशिया को वायुमार्ग जाता है। यातायात की इन सुविधाओं ने यूरोप को विश्व के सभी महाद्वीपों से जोड़ दिया है जिससे इसका विश्व में अपना विशिष्ट स्थान है।

t u l[;k %&

यूरोप में जनसंख्या का घनत्व सबसे अधिक है। परंतु विश्व की 13 प्रतिशत जनसंख्या ही निवास करती है। इसका विशाल मैदान घना बसा है जबकि उत्तरी यूरोप के अधिक घनत्व वाले छः देश है नीदरलैण्ड, बेल्जियम, जर्मन संघीय गणराज्य, यूनाइटेड किंगडम, इटली तथा जर्मन।

jgu lgu %&

यूरोपवासियों का रहन सहन उच्च स्तर का है क्योंकि इस महाद्वीप का विकास बहुत ही अग्रणी है।

ie[k uxj %&

यूरोप महाद्वीप के प्रमुख नगरों में लंदन, पेरिस, बर्लिन, रोम, मैड्रिड, वारसा, विय, ओसलों, हेल्सिकी, लेनिनग्रेड, बुडापेस्ट, स्टाकहोम, बेलग्रेड, मेनचेस्टर, बर्मिघम, बोन आदि है।

3-8 mRrjh vefjdk %&

यह महाद्वीप यूरोप का ढाई गुना और एशिया का लगभग आधा है। इसका कुल क्षेत्रफल 2 करोड़ 49 लाख वर्ग किमी है। उत्तरी अमेरिका 1^0 से 80^0 उत्तरी अक्षांश के मध्य मैला है। इसके उत्तर में उत्तरी ध्रुव महासागर पूर्व में अटलांटिक दक्षिण में लैटिन अमेरिका और पश्चिम में प्रशांत महासागर स्थित है।

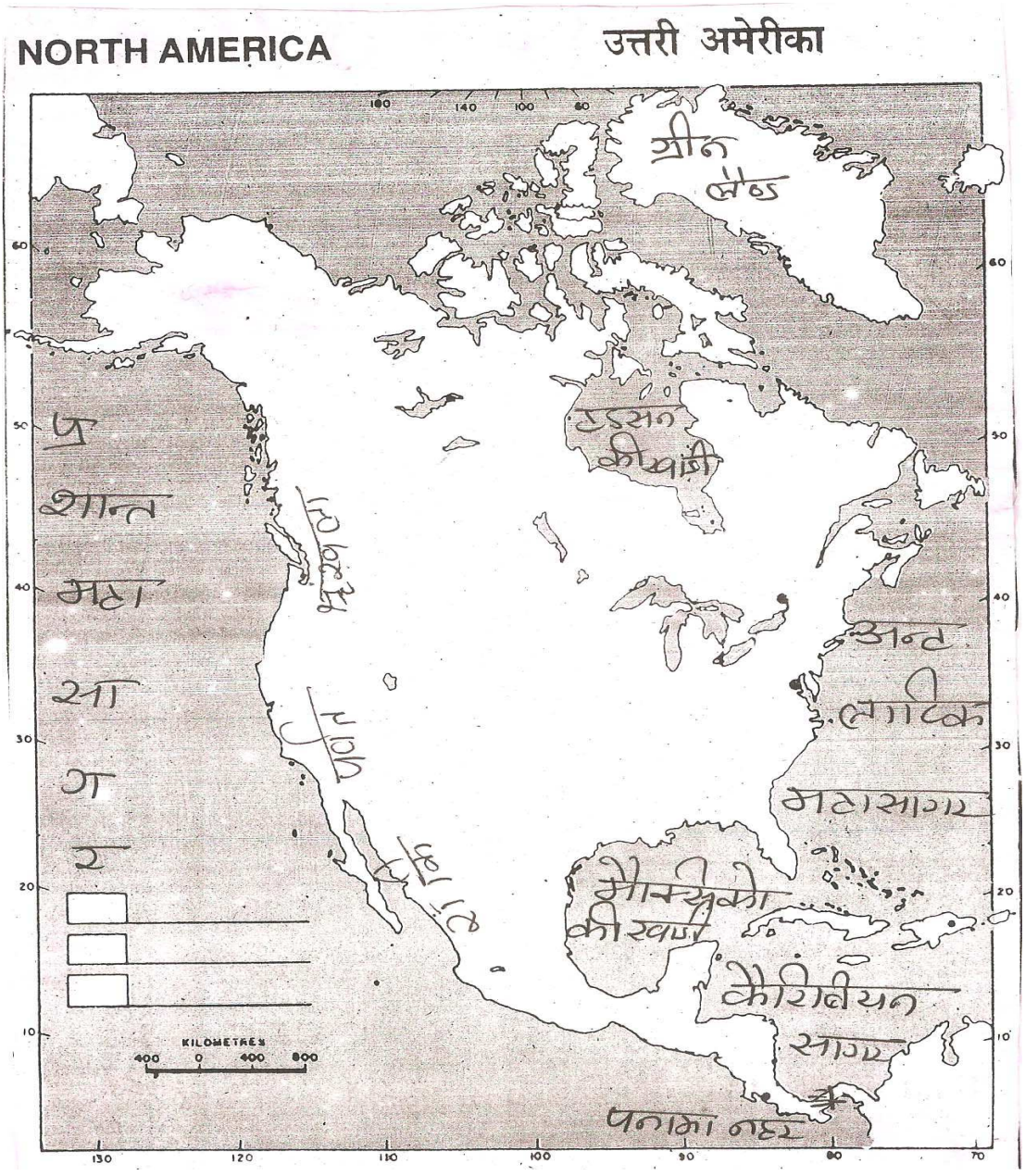

flapkbZ %&

अधिकांश कृषि सिंचाई द्वारा की जाती है। बड़े–बड़े फार्म होने के कारण मशीनों का उपयोग अधिकाअधिक किया जाता है।

fo|qr %&

विद्युत उत्पादन की दृष्टि से उत्तरी अमेरिका विश्व का सबसे बड़ा विद्युत उत्पादक महाद्वीप है। जहां जल विद्युत, कोयला से निर्मित विद्युत, सौर ऊर्जा और ऐटांमिक शक्ति का अपार भण्डार होने से उत्तरी अमेरिका विश्व का सर्वशक्तिमान महाद्वीप है।

df"k %&

कृषि की दृष्टि से भी उत्तरी अमेरिका का विश्व में प्रथम स्थान है। संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाड़ा मिलकर कृषि फसलों का सर्वाधिक उत्पादन करते है। यहां गेहूं, मक्का, कपास विश्व में सबसे अधिक उगाया जाता है। मक्का का उत्पादन सुअरों को खिलाकर मोट करने के लिए किया जाता है। जिससे अधिक से अधिक मांस का उत्पादन किया जा सके।

m|kx /kU/ks %&

उत्तरी अमेरिका में निम्न उद्योग मिलते है– लोह स्पात उद्योगः– संयुक्त राज्य अमेरिका में लोहा इस्पात उद्योग बहुत उन्नतिशील है। पिट्सवर्ग होला इस्पात निर्माण का विश्व का सबसे बड़ा केन्द्र है। डेट्रायट विश्व का मोटर बनाने का सबसे बड़ा केन्द्र है। शिकागों में इंजन व कृषि के औजार बनते है। शिकागों विश्व प्रसिद्ध मांस की मंडी है। यहां कपड़ा उद्योग, रासायनिक उद्योग, कागज उद्योग, चमड़ा उद्योग प्रमुख है।

0;kikj %&

उत्तरी अमेरिका विश्व के समस्त देशों के साथ व्यापार करता है। संयुक्त राज्य अमेरिका बड़ी–बड़ी मशीनों, मोटर, कार, जलयान, वायुयान, रेल, रेलों के डिब्बे, युद्ध की सामग्रीयां तथा दवाइयों आदि का निर्यात करता है। खाद्यान्न, कपड़े, मांस, कागज आदि का भी निर्यात करता है।

;krk;kr ds lk/ku %&

उत्तरी अमेरिका में रेलों, सड़कों का जाल बिछा है। यहां का प्रत्येक नगर, सड़क और रेलमार्ग द्वारा एक दूसरे से जुड़ा है। युनियन पैसेफिक रेलमार्ग तथा कनैडियन पैसेफिक रेलमार्ग उत्तरी अमेरिका को पूर्व से पश्चिम तक आर पार गई है। आंतरिक भागों में नदियों और झीलों को नहरों द्वारा एक दूसरे से जोड़ दिया गया है। जहां का संपूर्ण व्यापार इन्हीं रेलों, सड़को, नदियों तथा बड़े–बड़े बन्दरगारों द्वारा किया जाता है।

tu l[;k %&

उत्तरी अमेरिका का दक्षिणी पूर्वी भाग घनी जनसंख्या वाला है तथा पश्चिमी रांकी पर्वत श्रृंखलाओं वाला क्षेत्र तथा उत्तरी टुण्ड्रा प्रदेश कम जनसंख्या वाला क्षेत्र है। यहां के लोगों की प्रतिव्यक्ति आय विश्व में सबसे अधिक होने से रहन–सहन का स्तर ऊंचा है।

ie[k uxj %&

उत्तरी अमेरिका के निम्नलिखित प्रमुख नगर हैः– न्यूयार्क, वाशिंगटन, बोस्टन, पिटसबर्ग, शिकागों, न्यूआर्लियन्स, सेनफ्रांसिसको, लांस एंजिल्स, ओटावा, विनिपेग, बैंकूवर, मैक्सिको, मांट्रियल।

3-9 nf{k.kh vesfjdk %&

दक्षिणी अमेरिका संसार का चौथा बड़ा महाद्वीप है। इसका लगभग दो तिहाई भाग विषुवत वृत्त क दक्षिण में उष्ण कटिबंध में फैला है।

दक्षिणी अमेरिका, मध्य अमेरिका, मैक्सिको और वेस्टंडीज को मिलाकर लेटिन अमेरिका कहते है।

दक्षिणी अमेरिका के उत्तर में उत्तरी अमेरिका, पूर्व में अंटलाटिक महासागर, पश्चिम में प्रशांत महासागर और दक्षिण में अंटार्कटिक महासागर है।

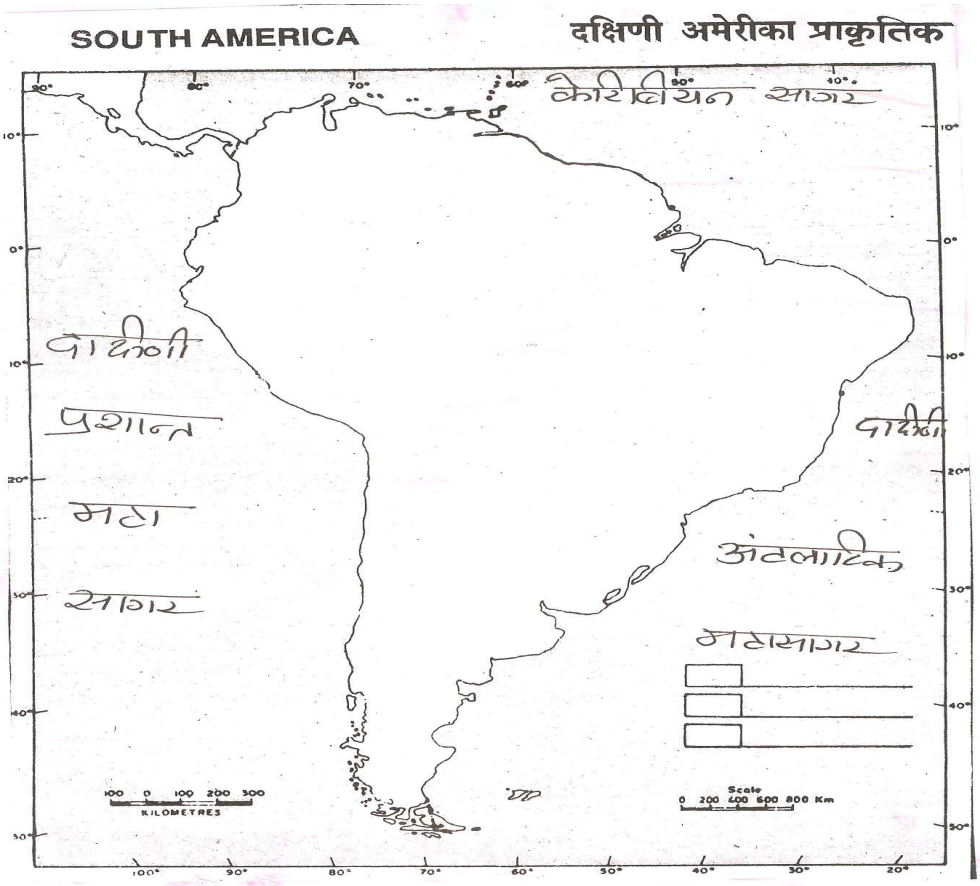

fl pkbl %&

दक्षिणी अमेरिका में सिंचाई के साधनों का अभाव है। ओरोनिको, अमेजन, पुराना, पराग्वे नदियों के जल को सिंचाई के उपयोग में लिया जाता है।

fo|r %&

जल विद्युत का उत्पादन कुछ वर्षों से दक्षिणी अमेरिका में अधिक हो रहा है। ब्राजील, अर्जेन्टीन, पराग्वे और वेनेजुला में कई बड़े–बड़े जल विद्युत केन्द्र बनाये गये है। विशेष रूप से ब्राजील में कई जल विद्युत योजनाओं का विकास हुआ है।

d`f"k %&

दक्षिणी अमेरिका का कुल क्षेत्रफल का 10 प्रतिशत भाग ही खेती योग्य है। अधिकत्तर खेती योग्य भूमि अर्जेन्टाइना और उरूग्वे में पाई जाती है।

गेहूं और मक्का दक्षिणी अमेरिका की मुख्य फसल है। पप्पास के मैदान इसके उत्पादन के लिये योग्य है। गेहूं की खेती अर्जेन्टाइना और चिली में होती है। मक्का सबसे अधिक ब्राजील में होती है। मूल रूप से मक्का और कहवा दक्षिण अमेरिका की फसल है।

कहवा, गन्ना, कोको और केला इस महाद्वीप की प्रमुख नगद फसलें है। कहवा और गन्ना के बड़े–बड़ें रोपड़ क्षेत्र है।

m|kx /k/k %&

दक्षिणी अमेरिका से खनिजों का बहुत बड़ा भाग निर्यात कर दिया जाता है। क्योंकि इनकी खपत करने वाले उद्योग धन्धों की अभी कमी है।

0;kikj %&

अर्जेन्टाइना में मांस, गेहूं, अलसी तथा ऊन निर्यात किया जाता है। मशीने, मोटरे, लोहा तथा इस्पात, रसायन, दवाईयां आदि आयात की जाती है। ब्राजील से कहवा प्रमुखता से निर्यात किया जाता है। मशीनी उपकरण आयात करता है। वेनेजुएला खनिज तेल का निर्यात करता है।

;krk;kr d lk/ku %&

दक्षिणी अमेरिका में यातायात के साधनों का विकास नहीं हुआ है। विस्तृत विषुवतीय वन, एंडीज की ऊंची–ऊंची पर्वत मालाएं और पूर्वी उच्च भूमि, अमेजन नदी की दलदली भूमि रेल मार्गों एवं सड़कों के विकास में बाधक है। केवल अमेजन द्रोणी और नदियों यातायात के सस्ते साधन है। अर्जेन्टीना और ब्राजील के मैदानों में रेल मार्गों और सड़कों का विकास हुआ है।

tul[;k %&

दक्षिणी अमेरिका में मुख्यतः तीन प्रजातियों के लोग रहते है। इंडियन, अश्वेत, यूरोपीय। दक्षिणी अमेरिका की कुल जनसंख्या 30 करोड़ है। यहां जनसंख्या का औसत घनत्व 16 व्यक्ति प्रति किलोमीटर है। लगभग आधे महाद्वीप में जनसंख्या का औसत 21 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर से भी कम हे। दक्षिणी अमेरिका में सबसे अधिक आबादी वाला क्षेत्र तटों के पास है। बड़ी संख्या में लोग गावों में रहते है और खेती करते है। शहरी क्षेत्रों तथा बन्दरगाहों तथा राजधानियों में लोगो की संख्या बहुत बढ़ गई है।

ie[k uxj %&

रियोडिजेनरो, ब्यूनसआयर्स, सेन्टियागों, वालपरेजो, लांपाज, एन्टोफागस्टा आदि है।

3-10 vÝhdk %&

एशिया महाद्वीप के बाद सबसे बड़ा महाद्वीप अफ्रीका है। संपूर्ण स्थल का लगभग 20 प्रतिशत भाग अफ्रीका में है। इसकी जनसंख्या भारत की जनसंख्या से लगभग 3/5 भाग है।

यह महाद्वीप पर्वतों, पठारों, वनों तथा दलदलों के कारण विश्व का सबसे पिछड़ा महाद्वीप कहलाता है। सहारा मरूस्थल बड़े क्षेत्र में फैला है। यहां सिंचाई के साधन नहीं के बराबर है। केवल नील नदी पर बड़े–बड़े बांध बनाकर नहरें निकाली गई है और मिश्र के मरूस्थलीय भाग की सिंचाई द्वारा हरा–भरा बना दिया गया है। इसलिए नील नदी को मिश्र का वरदान कहा जाता है।

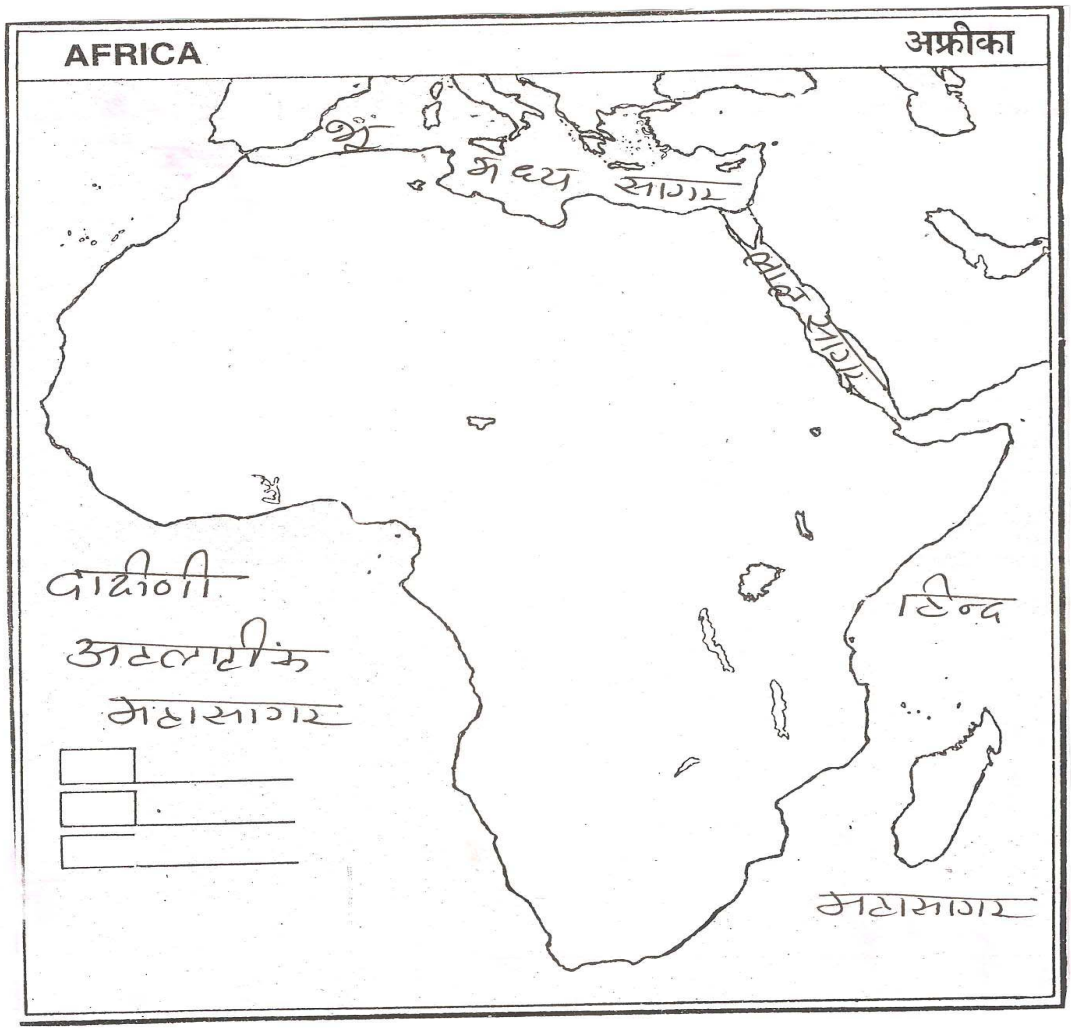

fl|pkb| %&

अफ्रीका महाद्वीप का अधिकांश भाग सूखा है लेकिन वर्षा भर बहने वाली नदियों का जल सिंचाई के काम आता है, जैसे नील नीद। नील नदी पर बांध बनाकर सिंचाई की जाती है। नाइजर नदी का जल भी सिंचाई के लिए उपयोग में आता है।

fo|r %&

नील, नाइजर, जेम्बेजी नदियों पर बांध बनाकर विद्युत पैदा की जाती है।

df"k %&

यहांकृषि में विभिन्न फसलें उगाई जाती है। मक्का, गेहूं, चावल, और ज्वार की पैदावार होती है। नकदी फसलों में ताढ़ का तेल, मूंगफली, कोको, कहवा, कपास महत्वपूर्ण है। कपास नील नदी की घाटी में उत्तम किस्म का होता है।

m|kx /kU/k %&

उद्योगों की दृष्टि से अफ्रीका एक पिछड़ा महाद्वीप है। पहाड़ी, पठारी तथा मरूस्थली भूमि है। कहीं दलदल है तो कहीं सघन वन है। जलवायु अस्वास्थ्यकर है। यातायात के साधनों का अभाव होने से उद्योगों का विकास नहीं हुआ है।

0;kikj %&

अफ्रीका महाद्वीप अधिकतर तैयार माल ही आयात करता है। कच्चा माल यहां के देशों से निर्यात किया जाता है।

;krk;kr %&

अफ्रीका में यातायात के पर्याप्त साधन नहीं है। विस्तृत मरूस्थल और घने वन सड़कों और रेलमार्गों क विकास में नील और नाइजर नदियां केवल स्थानीय यातायात के लिए ही उपयोगी है। उनके मार्गों में जल अपर्याप्त है। अतः नावें नहीं चलाई जाती है। यहां केवल केप काहिरा रेलमार्ग ही महत्वपूर्ण है। जो कि 8800 कि.मी. लम्बा है।

tul[;k %&

अफ्रीका महाद्वीप विरल जनसंख्या वाला महाद्वीप है। यहां जनसंख्या का घनत्व औसतन 18 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। इतनी कम जनसंख्या कारण भौगोलिक परिस्थितियां है, उत्तर में सहारा, दक्षिण में काहारी मरूस्थल और घने वन तथा दलदली भूमि बाधक है। दक्षिण अफ्रीका तथा मिश्र में नील नदी की घाटी की जनसंख्या अधिक है।

ie[k uxj %&

प्रमुख नगर में काहिरा, केपटाउन, सिकंदरिया, त्रिपोली, ट्यूनिस, अदिस, अबाबा, किम्बरले, जोहन्सबर्ग, नेरौबी, हसरे, खार्तून प्रमुख है।

1.

3-11 vkLVªfy;k %&

आस्ट्रेलिया सबसे छोटा महाद्वीप है। यह महाद्वीप पूरी तरह से दक्षिणी गोलार्द्ध में स्थित है। आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड तथा आसपास के द्वीपों को मिलाकर आस्ट्रेलिया कहा जाता है।

fl|pkbZ %&

आस्ट्रेलिया में बहुत बड़े भाग मे बहुत कम वर्षा होती है। केवल 4 प्रतिशत भूमि में खेती होती है। लेकिन यहां के लोगों ने अपनी सीमित भूमि और जल साधनों का अच्छा उपयोग किया है। बड़ी

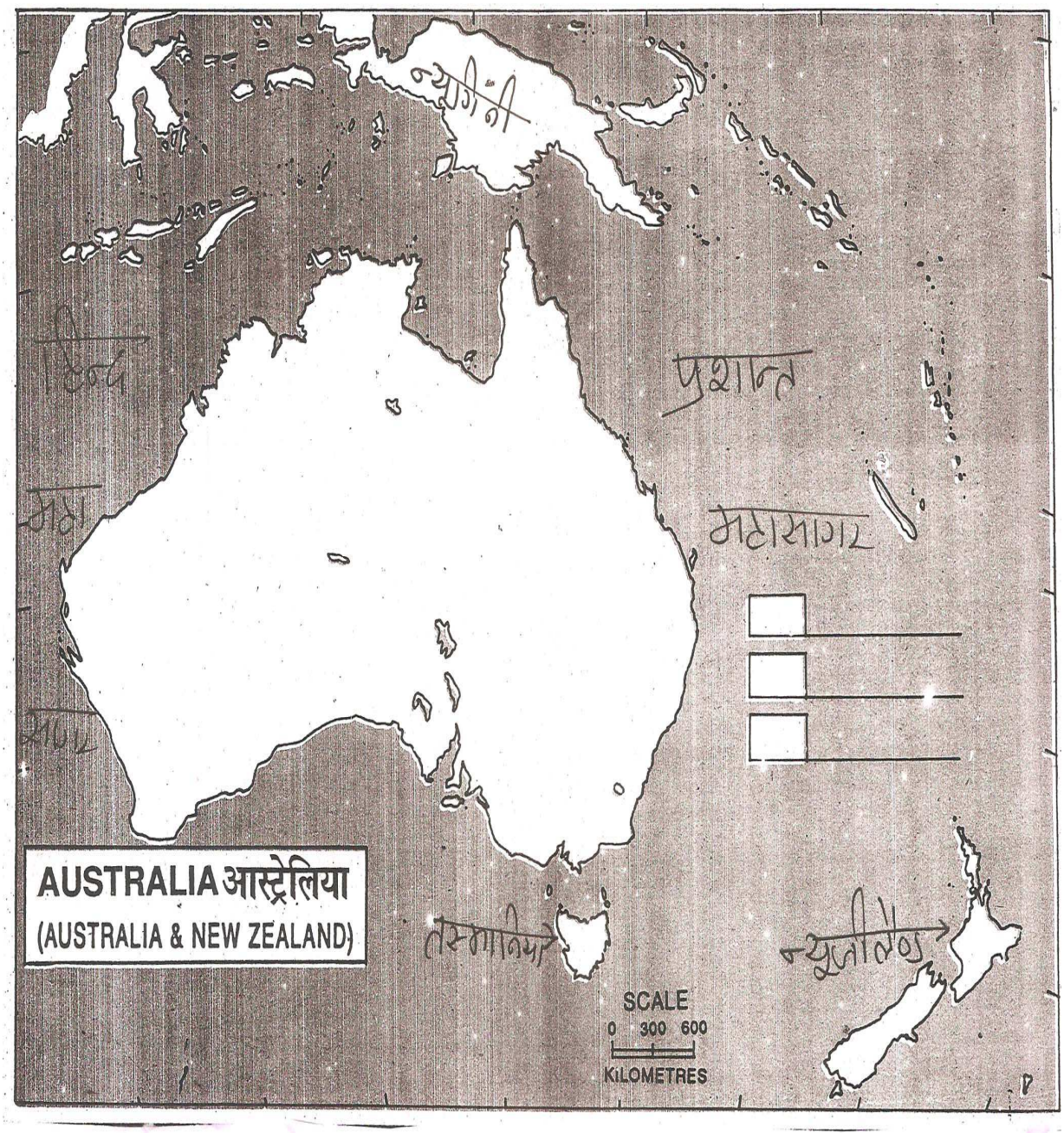

नदियों पर अनेक बांध बनाए गये है। इनसे पानी नहरों द्वारा खेतों तक पहुंचाया जाता है। नदियों पर बांध बनाकर जल विद्युत तैयार की जाती है।

d`f"k %&

आस्ट्रेलिया भारत की तरह कृषि प्रधान देश है। यहां अति आधुनिक और वैज्ञानिक तरीके से खेती की जाती है। खेत बड़े–बड़े है जिनमें मशीनों का उपयोग किया जाता है। यहां जनसंख्या कम है इसलिए मशीनीकृत कृषि की जाती है। मुख्य फसलों में गेहूं है। इस देश से गेहूं बड़ी मात्रा में निर्यात किया जाता है। यहां डाउन्स के मैदान में जौ, जई, और मक्का का बड़ी मात्रा में उत्पादन होता है तथा यहां की खाद्य फसलें है। चावल सिंचित क्षेत्र में उगाया जाता है। गन्ना, तम्बाकू तथा कपास क्वीसलैण्ड में पैदा होते है। फलों में अन्नास, केला, पपीता, सेब, अंगूर, संतरे दक्षिण के शीतोष्ण कटिबंधों क्षेत्रों में पैदा किए जाते है।

m|kx %&

आस्ट्रेलिया प्रमुख औद्योगिकी देशों में से एक है। यहां के उद्योगों में लोहा इस्पात, कृषि संबंधी मशीने, मोटर गाड़ियां, बिजली का सामान, रसायन, कागज, जलयान, मशीनी उपकरण और परिष्कृत तेल के कारखाने है।

0;kikj %&

आस्ट्रेलिया के सभी प्रान्तों की राजधानियां समुद्र तट पर स्थित है। वे अच्छे बन्दरगाह भी है। व्यापार के कारण सिड़नी और मेलबोर्न नगरों का तेजी से विकास हुआ है। ऊन के निर्यात में आस्ट्रेलिया का पहला स्थान है। अन्य में गेहूं, दूध के उत्पाद, मांस, मशीनें तथा खनिज।

;krk;kr %&

आस्ट्रेलिया में यातायात का मुख्य साधन रेल है। इस महाद्वीप का एक मात्र अंतरमाहद्वीप रेलमार्ग (ट्रान्स आस्ट्रेलियन रेल्वे) है। यह रेल मार्ग सिड़नी से पर्थ तक जाता है। इसकी कुल लम्बाई चार हजार किलोमीटर है। आस्ट्रेलिया के राज्यों की सभी राजधानियां और मुख्य नगर एक दूसरे से जुड़े है।

tul[;k %&

यद्यपि आस्ट्रेलिया का क्षेत्रफल भारत के क्षेत्रफल के दुगने से भी अधिक है किन्तु इसकी जनसंख्या भारत की जनंसख्या से बहुत ही कम है। इसकी जनसंख्या लगभग दो करोड़ है। यहां जनसंख्या का औसत घनत्व प्रतिवर्ग किमी है। श्वेत नीति के कारण आस्ट्रेलिया से बाहर के लोगों को यहां बसने नहीं दिया गया है। यहां कि अधिकांश जनसंख्या नगरों में निवास करती है।

i`e[k uxj %&

सिड़नी आस्ट्रेलिया का सबसे बड़ा नगर है। प्रथम श्रेणी का बंदरगाह है। यह न्यू साउथ वेल्स की राजधानी है। अन्य नगरों में पर्थ, केनबरा, एडीलेड, मेलबोर्न, कालगूर्ली, कूलकार्डी, डर्बिन प्रमुख है।

2

भारत का भौगोलिक अध्ययन

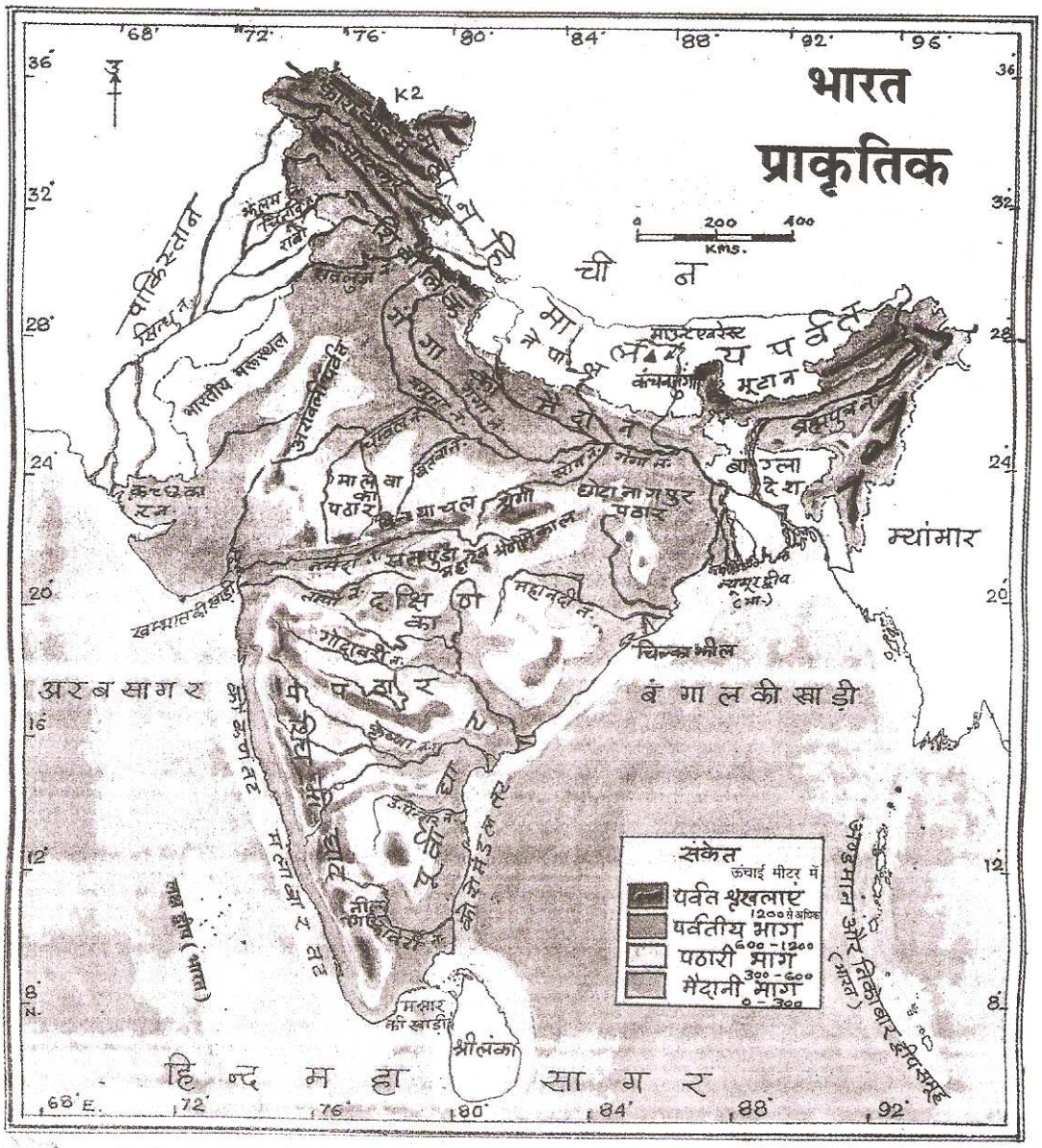

भारत की बाह्य सीमाएँ तथा समुद्र तटीय रेखाएँ भारतीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा सत्यापित अभिलेख/ प्रधान प्रति से मेल खाती हैं
© भारत सरकार का प्रतिलिप्याधिकार 2009
समुद्र में भारत के जलप्रदेश उपयुक्त आधार रेखा से मापे गए बारह समुद्री मील की दूरी तक है।
आन्तरिक विवरणों को सही दर्शाने का दायित्व प्रकाशक का है।

हमारा देश भारत

3.12 स्थिति

भारत की स्थिति जानने के लिए सीामवर्ती पड़ोसी देशों की स्थिति मानचित्र में देखिए। भारत के उत्तर पश्चिम में पाकिस्तान है। उत्तर में तिब्बत का ऊंचा पठार है, जो चीन देश के अन्तर्गत है। इसी ओर नेपाल और भूटान भी हमारे पड़ोसी देश है। पूर्व में बांग्लादेश है। भारत के दक्षिणी सिरे के पास श्रीलंका देश है जो भारत के पाक–जल संधि के द्वारा अलग है। दक्षिण में हमारा देश तीनों ओर समुद्र से घिरा है, भारत प्रायद्वीप कहलाता है। इसके पश्चिम में अरब सागर, पूर्व में बंगाल की खाड़ी तथा दक्षिण में हिन्द महासागर है। ध्यान दीजिए, अरब सागर के लक्षद्वीप और उसके द्वीप समूह भारत के भाग है। इसी तरह बंगाल की खाड़ी के अंडमान और निकोबार द्वीप समूह भारत देश के अभिन्न अंग है।

विस्तार

अपना देश भारत एक विशाल देश ह। उत्तर में काश्मीर के उत्तरी छोर के दक्षिण में कन्याकुमारी तक इसकी अंतरीय लम्बाई लगभग 320 किमी है। पश्चिम में गुजरात से पूर्व में आसाम तक इसकी दूरी लगभग 3000 किमी है। भारत की मुख्य भूमि 8 डिग्री उत्तरी अक्षांश से 37 डिग्री उत्तरी तक फैली है। पूर्व–पश्चिम में दक्षिणी पूर्वी देशांतर से 97 डिग्री पूर्वी देशांतर के बीच फैली है। कर्क रेखा देश के लगभग बीच से पूर्व पश्चिम गुजरती है। इसी तरह 80 डिग्री पूर्वी देशांतर भी देश के बीच से उत्तर दक्षिण गुजरती है। इन दोनों रेखाओं को मानचित्र में देखिए। भारत देश का क्षेत्रफल 3280483 वर्ग किमी है।

भू–रचना

देश का धरातल सभी जगह एक समान नहीं है। यहां अनेक ऊंचे और समतल मैदान मिलते हैं। पर्वत, पठार और मैदान, नदियों और भूमि के उतार चढ़ाव को भू–रचना कहते हैं। भू–रचना के विचार से भारत को चार प्रमुख प्राकृतिक विभागों में बांट सकते है।

1. हिमालय का पर्वतीय विभाग।
2. उत्तरी भारत का विशाल मैदान।
3. दक्षिण का पठारी विभाग।
4. पूर्वी व पश्चिमी समुद्र तटीय विभाग।

3.13 हिमालय का पर्वतीय समुद्र तटीय विभाग

देश की उत्तरी सीमा पर हिमालय पर्वत की पर्वत श्रेणियां पश्चिम से पूर्व तक फैली है। इस पर्वत की अनेक चोटियां सदैव बर्फ से ढकी रहती है। इसलिए इसे ''हिम का घर'' अर्थात हिमालय कहते हैं। हिमालय पर्वत श्रेणियां कश्मीर से असम तक लगभग 2400 किलोमीटर में फैली है। इनकी चौड़ाई पूर्व में 160 किलोमीटर और पश्चिम में 400 किमी तक है।

हिमालय की उत्तर श्रेणी संसार की सबसे ऊंची पर्वत चोटी माउंट एवरेस्ट (8846 मीटर) है। इसके अतिरिक्त आस्टिन या K-2 (8611 मीटर) कंचनजंगा (8585 मीटर) नन्दगिरी, धौलागिरी, नंगा पर्वत आदि ऊंची चोटियां हे। इसी उत्तरीय पर्वत श्रेणी को यहां हिमालय कहते है। यह 6000 मीटर से अधिक ऊंची है। इसकी चोटियां सदैव बर्फ से ढकी रहती है।

हिमालय की मध्य श्रेणी जिसे लघु हिमालय कहते हैं। 4500 से 5000 मीटर ऊंची है। शिवालिक श्रेणी इसकी प्रसिद्ध श्रेणी है। शिमला, मसूरी, नैनीताल और दार्जिलिंग नगर इसी लघु हिमालय के बीच में बसे हैं।

असम की ओर से पूर्वी हिमालय के पटकोई, गारो, खासी, जैयनवीया एवं लुशाई की पहाड़िया हैं। इतने ऊंचे होते हुए भी श्रेणियों के बीच मे कहीं कहीं सकरे मार्ग हैं जिन्हें दर्रा कहते हैं। काराकोरम, जौजीला, शिपकीला दर्रे इमारतें है।

हिमालय के दक्षिणी निचले भागों में कुछ प्रसिद्ध तीर्थ स्थान हैं– जैसे गंगोत्री, यमुनोत्री और केदारनाथ व बद्रीनाथ हैं।

इस पर्तत श्रेणियों से भारत की प्रसिद्ध नदियां नदियां सिंधु, गंगा, यमुना, घाघरा, गंडक और ब्रम्हपुत्र निकली हैं जो साल भर पानी से भरी रहती है।

3.14 उत्तरी भारत का विशाल मैदान (सतलज, गंगा, ब्रम्हपुत्र का मैदान)

महान हिमालय के दक्षिण में एक लम्बा चौड़ा और उपजाऊ मैदान है। पंजाब राज्य से असम राज्य तक फैले इस मैदान का विस्तार लगभग 2400 किमी लम्बाई में है। इस लम्बे चौड़े मैदान में अनेक नदियां बहती हैं। इन नदियों में साल भर पानी रहता है इन नदियों द्वारा बहाकर लाई मिट्टी और रेत से यह उपजाऊ मैदान बना ह। इस मैदान की मुख्य नदियां, सतलज, व्यास, गंगा, यमुना, गोमती, घाघरा, गडक, कोसी और ब्रम्हपुत्र है।

दक्षिण के पठार से बहकर आने वाली चम्बल, बेतवा, सोन और दामोदर नदियां इसी मैदान की नदियों में मिल जाती है।

इस मैदान को ढाल उत्तर पश्चिम से दक्षिण पूर्व की ओर है। गंगा अपनी सहायक नदियों के पानी के साथ बंगाल की खाड़ी में गिरती है। गंगा का डेल्टा विश्व प्रसिद्ध है।

देश की प्राचीन सभ्यता इसी मैदान में फली फूली है। यहां की समतल उपजाऊ भूमि गेहूं कृषि के उपयुक्त है। सड़कों, रेलों और नहरों का जाल बिछा है। देश की अधिकांश जनसंख्या यहां निवास करती है। देश के प्राचीन एवं नवीन प्रसिद्ध नगर वाराणसी, प्रयाग, अयोध्या, मथुरा, दिल्ली, कानपुर और कलकत्ता इसी मैदान में है।

दक्षिण का पठारी भाग

यह गंगा यमुना मैदान के दक्षिण में है। इसे दक्षिण का पठार कहते हैं। इस पठार के धरातल में कम ऊंचाई के पर्वत, ऊंचे–नीचे पठार, नदी, घाटियां और उनके छोटे मैदान पाए जाते हैं। इसकी औसत ऊंचाई 600 मीटर है। इसकी आकृति उल्टे त्रिभुज के समान हैं। पश्चिमी सिरे पर अरावती पर्वत पूर्वी छोर पर बिहार की राजमहल की पहाड़ियां और दक्षिणी छोर पर नीलगिरि पर्वत है। इस पठार के उत्तर पश्चिम में पर्वत एवं थार का मरूस्थल है।

अरावती और विंध्याचल पर्वत के बीच मालवा का पठार हे। मालवा प्रदेश की मुख्य नदियां चम्बल, काली सिंध और बेतवा हैं जो उत्तर पूर्व की ओर बहकर यमुना नदी में मिल जाती है। विंध्याचल और सतपुड़ा के बीच नर्मदा नदी बहती है। नर्मदा और ताप्ती नदी गहरी घाटी बनाती है। ये नदियां पश्चिम की ओर बहकर अरब सागर में गिरती हैं। मानचित्र में इन नदियों को देखो। छत्तीसगढ़ के मैदान में महानदी का ऊपरी मैदान है।

छोटा नागपुर का पठार बिहार राज्य में है। इस पठार में कोयला, लोहा, तांबा, अभ्रक आदि के भण्डार है। दक्षिण में मैसूर के पठार की मुख्य नदियां गोदावरी, कृष्णा और पेरियार है। इन नदियों का बहाव उत्तर पश्चिम से दक्षिण पूर्व दिशा में है। ये सभी नदियां पश्चिमी घाट से निकलती है और बंगाल की खाड़ी में गिरती हैं। पठार के सबसे दक्षिणी सिरे पर नीलगिरी तथा इलायची की पहाड़ियां है।

पश्चिमी तथा पूर्वी समुद्र तटीय मैदान

दक्षिण के पठार के पश्चिम और वूं में संकरे समुद्र तटीय मैदान है। पूर्वी तटीय मैदान पश्चिमी तटीय मैदान की अपेक्षा चौड़ा हे।

पश्चिम समुद्र तटीय मैदान – पश्चिम घाट पर्वत और अरब सागर के बीच बहुत संकरा मैदान है। यह गुजरात राज्य से कन्याकुमारी तक फैला है। इसके उत्तरी भाग को कोंकण तट तथा दक्षिणी भाग को मालावार तट कहते है। मालावार तट उपजाऊ है। इसमे समुद्र तट के किनारे अनेक 'अनूप' (खारे पानी की झीलें) बन गई हैं।

पूर्वी समुद्र तटीय मैदान – यह पूर्वी घाट पूर्व और बंगाल की खाड़ी के बीच फैली है। इस मैदान में महानदी गोदावरी, कृष्णा नदी के उपजाऊ डेल्टाई भाग है। पूर्वी तट के दक्षिणी भाग को कारोमण्डल तट कहते है। यह तट विशेष कटा फटा नहीं है। पूर्व तटीय भाग में चिल्का, कोलेरू और पुलिकत नाम की अनूप झीले है। जिनमें समुद्र का खारा पानी भरा रहता है।

3.15 जलवायु

भारत की जलवायु पर उसकी उष्ण एवं समशीतोष्ण अक्षांशों में स्थिति, विस्तार, हिमालय तथा अन्य पर्वतों की दिशा और धरातल की बनावट का बहुत प्रभाव पड़ता है। देश के आधे से अधिक भाग कर्क रेखा के उत्तर में है। दक्षिणी भाग तीनों ओर से समुद्र जल से घिरा है। समुद्र की निकटता और पठारी भूमि होने के कारण वहां अधिक गर्मी नहीं पड़ती ह। जलवायु सम है हालांकि यह भाग भूमध्य रेखा के निकट है।

उपर्युक्त कारणों से हमारे देश के अलग–अलग भागों में गर्मी और वर्षा की मात्रा कम या अधिक होती है। भारत की जलवायु मौसमी हवाओं का प्रभाव भी बहुत है इसलिए

यहां की जलवायु को मौसमी या मानसूनी जलवायु कहते है। मौसम या ऋतुओं के अनुसार मानसून हवाओं की दिशा बदलती रहती है।

वर्षा ऋतु में मौसमी हवाये दक्षिण–पश्चिम दिशा से अरब सागर और बंगाल की खाड़ी से स्थल की ओर चलती है। वर्षा का वितरण इन हवाओं की दिशा एवं पर्ततों की दिशा के अनुसार होता है। सबसे अधिक वर्षा पश्चिमी तट तथा देश के पूर्वी भाग में होती है। इसके विपरीत गुजरात के उत्तरी, राजस्थान के पश्चिमी भाग में वर्षा सबसे कम होती है। देश के शेष भागों में कहीं सामान्य तथा कहीं सन्तोषजनक वर्षा होती है।

शीत ऋतु में यही मानसूनी हवाये उत्तर–पूर्व से दक्षिण–पश्चिम की ओर, स्थल से समुद्र की ओर चलती है। स्थल से चलने के कारण सूखी होती है। बंगाल की खाड़ी से गुजरने पर इनमें जलवाष्प की मात्रा बढ जाती है और ये तमिलनाडु के पूर्वी तट पर वर्षा करती है। इन दिनों में उत्तरी भारत में तेज ठण्ड पड़ती है। उत्तर के मैदान में हल्की वर्षा भी होती है। कभी ओले के रूप में भी वर्षा हो जाती है।

गर्मी की ऋतु में पूरे भारत में धूल भरी आंधियां चलती है। दोपहर को गर्म व सूखी हवायें चलती है। जिन्हें लू कहते है। दक्षिणी भारत समुद्र के निकट होने से अधिक गर्म नहीं रहता है।

(भारत का वर्षा, के मानचित्र में मानसूनी हवाओं की दिशा तथा वर्षा की मात्रा देखिए)

3.16 वनस्पति

अपने आप उगने वाले वृक्ष, झांड़ियों, लताओं, घास आदि के समूह को प्राकृतिक वनस्पति कहते है। यह वनस्पति वनों में पाई जाती है। भारत में 23 प्रतिशत भू–भाग पर वन पाये जाते है। इनका कुल क्षेत्रफल 746 लाख हेक्टेयर भूमि है। वर्तमान में वनों का विनाश काफी पैमाने पर हो रहा है। प्रकृति के संतुलन के लिए वनों आरोपण करते रहना चाहए। देश क विभिन्न भागों में वर्षा, जलवायु मिट्टी में विभिन्नता है। इसलिए वन भी कई प्रकार के पाये जाते है। वनों के प्रकार निम्न है।

1. सदाबहार वन
2. पतझड या मानसूनी वन

3. शुष्क वनों के कटीले वृक्ष एवं झाड़ियां
4. मरूस्थलीय वन
5. दलदली या डेल्टाई वन
6. पर्वतीय वन

(प्राकृतिक वन स्पति के मानचित्र में इन वनों का विवरण देखिए)

1. **सदाबहार वन** – वे वन सदा हरे भरे रहते है। इसलिए इन्हें सदाबहार वन कहते है। 200 से.मी.मी. वर्षा से अधिक वर्षा वाले उष्ण प्रदेशों में ये उगते है। ये वन पश्चिमीघाट, मेद्यालय और असम की पहाड़ियों पर पाए जाते है। मुख्य वृक्ष, रबर, महोगनी, बांस, बेत, आवनुस, रोजवुड आदि है।
2. **पतझड़ यामानसूनी वन** – इन वनों के वृक्षगर्मी के प्रारंभ में पत्ते गिरा देते है। इसलिए इन्हें पतझड़ वाले वन कहते है। ये 100 से 160 से.मी. वर्षा प्रदेशों में अधिक पाए जाते है। ये वनमध्यप्रदेश, बिहार, उड़ीसा, पं. बंगाल में अधिक है। इनके मुख्य वृक्ष सागोन, शीशम, साल, हर्रा, वहेड़ा, नीम आंवला ग्राम व पीपल है। यहां छोटी–छोटी वनोपजें भी मिलती है।
3. **कटीले वृक्ष एवं झाड़ियां** – ये वन उन क्षेत्रों में पाए जाते है जहां वर्षा की मात्रा 50 से 70 से.मी. के बीच है। ये वन राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, गुजरात, महाराष्ट्र के शुष्क भाग एवं पं. मध्यप्रदेश में पाए जाते है इनक मुख्य वृक्ष बबूल, कीकर, खेजड़ा जंगली खजूर है।
4. **मरूस्थलीय वन** – राजस्थान के पश्चिमी भाग में जहां वर्षा बहुत कम होती है। वहां पेड़ पौधे नहीं उग पाते। केवल कटीली झाड़िया और नागफनी और घास उगती है कई पौधों, पत्तियों में कांटेहाते है।
5. **डेल्टाई वन** – नदियों के मुहानों पर डेल्टा प्रदेशों में समुद्री ज्वार का पानी आता है। वहां गंगा गोदावरी कृष्णा नदी के डेल्टाओं में पाये जाने वाले वनों जैसे वन पाये जाते है जैसे– बंगाल प्रान्त का सुंदर वन ऐसे वनों का उदाहरण है। इनमें मेन्ग्रोव और पाम जाति क वृक्ष पाये जाते है।

6. **पर्वतीय वन –** हिमालय के पर्वतीय भागों में वनस्पति के ऊंचाई के अनुसार अन्तर होता है। ज्यों–ज्यों हम ऊंचे भागों की ओर जाते है। तापक्रम और वर्षा की मात्रा कम होती जाती है। फलस्वरूप वनस्पति में भी अन्तर आता है।

हिमालय की तलहटी में 1500 मीटर की ऊंचाई पर ओक, चेस्टनट पाये जाते है। 3000 मीटर से 3500 मीटर तक नुकीली पत्ती के नरम लकड़ी के वन पाये जाते है।

देश के वनों से हमें कई प्रकार की वस्तुएं प्राप्त होती है। जैसे– इमारती लकड़ी, जलाऊ लकड़ी, बांस, घास बहेड़ी लाख, महुआ, गोंद, जड़ी–बूटी, फल, कन्दमूल, शहद, आंवला चिरोंजी आदि। वन भूमि केकटाव को भी रोकता है।

हमारे देश में अनेक प्रकार के खनिज पाये जाते है। हमारे बहुत से उद्योग धन्धे खनिज पदार्थों की मदद से चलती है।

भारत के मध्य दक्षिणी भाग में खनिज पदार्थों की अधिकता है। यहां प्राचीन रवेदार चट्टाने मिलती है। जिनमें खनिज की अधिकता है। उत्तर का मैदान नवीन चट्टानों द्वारा बना है। अतः वहां खनिज का अभाव है।

भारत में खनिज पदार्थों के तीन प्रमुख क्षेत्र है।

1. बिहार, मध्यप्रदेश और उड़ीसा छोटा नागपुर का पठार। यहां देश के लगभग 80 प्रतिशत खनिज मिलते है।
2. आंध्र, कर्नाटक और तमिलनाडु का दक्षिणी पठारी भाग।
3. पूर्व में असम प्रदेश का भाग।

3.17 देश मे मिलने वाले कुछ प्रमुख खनिज पदार्थ निम्न प्रकार से है –

कोयला – देश का प्रमुख कोयला भण्डार मुख्यतः दामोदर, महानदी, सोन और गोदावरी नदियों की घाटियों में है। जहां से देश का 98 प्रतिशत कोयला निकाला जाता है। कुछ प्रमुख कोयला खदानों के नाम रानीगंज, झरिया, बोकारों, डालटन गंज, गिरड़िह, सिगरेनी, सिंगरौली आदि है। दूसरा कोयला क्षेत्र कम महत्व का असम और राजस्थान में पाया जाता है।

खनिज तेल (पेट्रोलियम) हमारे दैनिक जीवन में खनिज तेल का बहुत महत्व है। वायुयान और परिवहन के साधनों में अधिक उपोग होता है। देश में खनिज तेल का उत्पादन कम होता है। अतः विदेशों से आयात करना पड़ता है।

लोहा – भारत का लोहा उत्पादक देशों में महत्वपूर्ण स्थान है। झारखंड और उड़ीसा राज्यों से देश का 85 प्रतिशत लोहा निकाला जाता है। सिंह भूमि मयूर भंज, बोनाई खदानें प्रसिद्ध है। इसके अतिरिक्त मध्यप्रदेश, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश तमिलनाडू आदि प्रान्तों में भी खनिज लोहा पाया जाता है।

खनिज तेल – खनिज तेल भूमि के अन्दर से कुओं को गहरा खोदकर निकाला जाता है। हमारे असम और गुजरात राज्य में खनिज तेल के कुएं है। खम्भात की खाड़ी में (समुद्र तटीय जल में) समुद्र के नीचे से भी तेल निकाला जाने लगा है। तेल को देश के अन्य स्थानों पर पाइप लाइन की सहायता से भेजा जाता है।

मैंगनीज – इसका अधिक उपयोग लोहा से इस्पात बनाने में होता है। कई प्रकार के रासायनिक पदार्थ भी बनाये जाते है। भारत प्रमुख मैंगनीज निर्यातक देश है। मैंगनीज– मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार, उड़ीसा, आन्ध्र और कर्नाटक राज्यों से निकाला जाता है।

अभ्रक – यह परतदार हल्का और चमकीला खनिज है। इसका उपयोग अधिकतर विद्युत उपकरण और वायुयान में किा जाता है। अभ्रक का अधिकांश भाग बिहार, राजस्थान, आन्ध्र प्रदेश से प्राप्त होता है। आंध्र का अभ्रक हरे रंग का होता है। बिहार मे देश का 60 प्रतिशत अभ्रक प्राप्त होता है। आज भारत विदेशों को अभ्रक निर्यात करने की स्थिति में है।

तांबा – बिहार के सिंह भूमि जिले में भारत का अधिकांश तांबा प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त राजस्थान के खेतड़ी और मध्यप्रदेश के बालाघाट जिले में तांबे के भण्डार है।

बाक्साइड – बिहार और मध्यप्रदेश की खदानों से देश का तीन चौथाई बाक्साइड निकाला जाता है। उड़ीसा, महाराष्ट्र में भी कुछ मात्रा में पाया जाता है।

सोना – कर्नाटक राज्य की कोलार खान से सोना मिलता है।

हीरा – मध्यप्रदेश राज्य के पन्ना जिले की खान से हीरा मिलता है।

3.18 सिंचाई

भारत देश एक कृषि प्रधान देश है। अच्छी उपज पाने के लिए फसलों को समय पर पानी मिलना बहुत आवश्यक है। देश में वर्षा का वितरण मानसूनी से होता है जो समान नहीं है। वर्षा जाड़े में बहुत कम होती हैं कुछ फसलों, (जैसे– गन्ना और ध्यान की खेती) को पानी अधिक चाहिए। हमारे देश में सिंचाई के मुख्य साधन निम्नलिखित है–

1. कुएं एवं नलकूप (ट्यूबवेल)
2. तालाब
3. नहरें

कृषि

भारत कृषि प्रधान देश है जिसकी लगभग आधी भूमि पर खेती है और शेष आधी भूमि भाग परिवर्तन, वन, रेगिस्तान, नदी नहर मार्ग आदि है। नदियों के मैदान में अधिक फसले उगाई जाती है। सतलज–गंगा का मैदानी समतल के उपजाऊ भाग है। देश के पूर्वी–पश्चिमी तटवर्ती प्रदेश खेती के लिए प्रसिद्ध है।

देश के विभिन्न भागों में (तापक्रम, वर्षा, सिंचाई की सुविधा और अच्छी मिट्टी के अनुसार) कई प्रकार की फसलें उगाई जाती है। भारत की प्रमुख फसले निम्नलिखित है।

धान, गेहूं, दालें, गन्ना, कपास, जूट, चाय भारत की तीन चौथाई जनसंख्या की जीविका कृषि पर निर्भर करती है इसलिए भारत की उन्नति खेती पर निर्भर करती है।

उद्योग धन्धे

स्वतंत्रता के पश्चात भारत के उद्योगों का विकास बहुत तेजी से हुआ है। राष्ट्रीय सरकार ने पंचवर्षीय योजनाओं द्वारा औद्योगिक लक्ष्य निर्धारित किए है। यहां के कारखानों में जिस प्रकार का कच्चा माल उपयोग में लाया जाता है।

3.19 यातायात के साधन

भारत एक विशाल देश है। थोड़ी–थोड़ी जगह पर एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचने में आधुनिक यातायात से मदद मिलती है। पक्की सड़कों पर बसों, ट्रक द्वारा, रेलगाड़ी द्वारा सवारी और सामान ढोया जाता है। देश की सीमाओं तक लड़ाई के समय सेना, तोप गोला बारूद आदि भेजा जाता है।

हमारे देश में यातायात के मार्गों के चार प्रमुख साधन है –

1. सड़के
2. रेलमार्ग
3. जलमार्ग
4. वायुमार्ग

मानचित्र में भारत में सड़क और रेलमार्ग को देखों। रेल तथा पक्की सड़कों का जाल समुद्रवर्ती मैदानों तथा सतलज, गंगा के समतल मैदानों में बिछा हुआ है। भारत के कुछ प्रसिद्ध नगरों में पक्की सड़कों एवं रेलों का जाल बिछा हुआ है रेलों और सड़कों के प्रमुख मार्ग लगभग एक समान ही है।

3

मध्यप्रदेश का भौगोलिक अध्ययन

3.20 आपने भारत के भौतिक पक्ष, मानवीय पक्ष तथा भारतीय और उसकी विशेषताओं के संबंध में अध्ययन किया। इस उप इकाई में मध्यप्रदेश के भौतिक पक्ष, जनसंख्या और उसकी विशेषताओं का अध्ययन करेंगे।

मध्यप्रदेश भारत के बीचों–बीच बसा है। इसीलिए इसे मध्यप्रदेश कहते है। भारत के पुर्नगठन के साथ ही राज्य का नवम्बर 1956 को पुनर्गठन हुआ। भारत के राजनैतिक मानचित्र को देखो। इसमें मध्यप्रदेश के उत्तर में राजस्थान और उत्तर प्रदेश के कुछ भाग मध्य प्रदेश तक घूसे है। वर्ष 2001 में म.प्र. का पूर्वी भाग छत्तीसगढ़ राज्य बनाया गया।

विस्तार

यह राज्य लगभग 21^0 उत्तरी अक्षांश से 27^0 उत्तरी अक्षांश तक उत्तर–दक्षिण में 74^0 पू. देशांतर से 83^0 पू. देशांतर तक पूर्व पश्चिम में फैला है। इसका क्षेत्रफल 308 हजार वर्ग किलोमीटर है। इस राज्य के लगभग बीच में कर्क रेखा होकर पूर्व पश्चिम तक गई है। राज्य के लगभग बीच में 78^0 पूर्वी देशांतर उत्तर–दक्षिण होकर गई है। क्षेत्रफल की दृष्टि से मध्यप्रदेश सबसे बड़ा राज्य है।

भू–रचना

मध्यप्रदेश एक विषय भू–खण्ड है। जिस प्रकार गंगा नदी उत्तर भाग के मैदान को सींचती है। उसी प्रकार नर्मदा नदी मध्यप्रदेश की जीवन रेखा है। जिस प्रकार भारत के उत्तर में हिमालय है उसी प्रकार मध्यप्रदेश के मध्य में विन्ध्याचल पर्वत तथा दक्षिण में सतपुड़ा पर्वत माला है। नर्मदा नदी, विन्ध्य और सतपुड़ा को मानचित्र में देखों।

मध्यप्रदेश का मध्यवर्ती ऊंचा भाग उन सैकड़ों छोटी–बड़ी नदियों का जल विभाजक है, नदी उत्तर पश्चिम पूर्व की ओर बहकर जमुना में तथा सोन नदी उत्तर–पश्चिम पूर्व की ओर बहकर गंगा में मिल जाती है। अंत में गंगा के पानी के साथ बंगाल की खाड़ी में गिरती है।

नर्मदा और ताप्ती पश्चिम की ओर बहकर अरब सागर में गिरती है। बाणगंगा, इन्द्रावती, शबरी, दक्षिण पूर्व की ओर बहकर गोदावरी नदी में मिलती है। छत्तीसगढ़ मैदान की नदियों हसदों, शोंढ शिवनाथ कर महानदी दक्षिण–पूर्व में बहकर गोदावरी की तरह बंगाल की खाड़ी में गिरती है।

मध्यप्रदेश के बीच में दक्षिण पश्चिम में उत्तर पूर्व की ओर विन्ध्याचल और सतपुड़ा पर्वत फैले है। सतपुड़ा पर्वत में महादेव और मैकल पर्वत श्रेणियां मुख्य है। सतपुड़ा की प्रमुख चोटियां अमरकंटक, धूपगढ़ और असीरघाट विन्ध्याचल की श्रेणियां मांडेर और कैमूर है। नर्मदा नदी एक तंट घाटी (रिफ्ट घाटी) में बहती है। घाटी विन्ध्याचल पर्वत और सतपुड़ा के बीच है। नर्मदा नदी अमरकंटक से निकलकर अरब सागर में गिरती है। यह घाटी बहुत उपजाऊ है।

जलवायु

इस राज्य के मध्य से कर्क रेखा होकर गुजरती है। अतः यहां की जलवायु सामान्यतः उष्ण कटिबंधीय है। राज्य का विस्तार अधिक होने के कारण विभिन्न भागों की जलवायु में अंतर आ जाता है। राज्य का उत्तर पश्चिमी भाग शुष्क है। गर्मी और सर्दी दोनों अधिक पड़ती है। सतपुड़ा के पचमढ़ी स्थान की जलवायु शीतल और स्वास्थ्य वर्धक है।

दिए गए भारत के नक्शे को देखिए और उसमें मध्यप्रदेश को ढूँढिए।

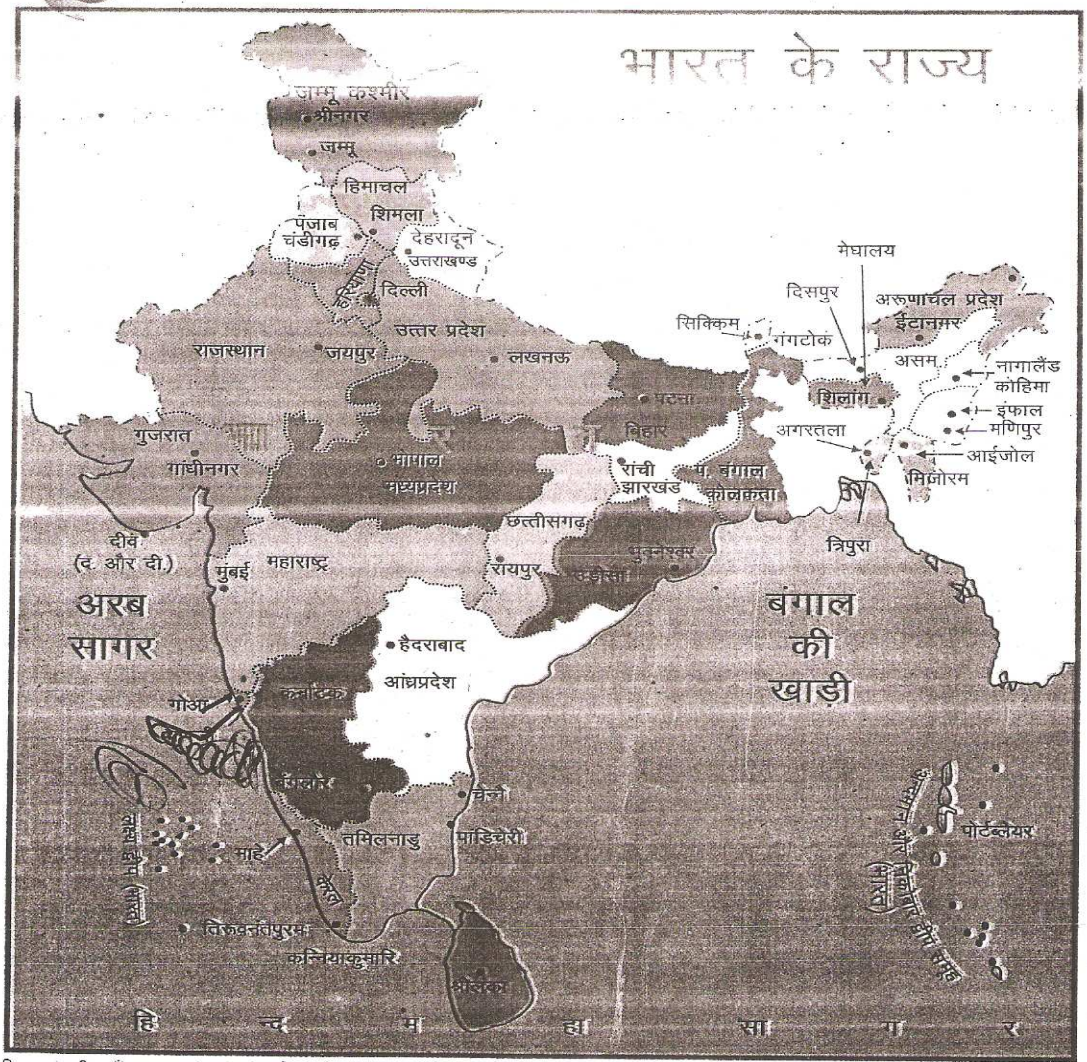

भारत की बाह्य सीमाएँ तथा समुद्र तटीय रेखाएँ भारतीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा सत्यापित अभिलेख/प्रधान प्रति से मेल खाती हैं। ©भारत सरकार का प्रतिलिप्याधिकार 2009, इस मानचित्र में उत्तरप्रदेश एवं उत्तराखंड, झारखंड एवं बिहार, छत्तीसगढ़ एवं मध्यप्रदेश के बीच की राज्य सीमाएँ संबंधित सरकारों द्वारा सत्यापित नहीं की गई हैं। चण्डीगढ़, पंजाब और हरियाणा के प्रशासी मुख्यालय चण्डीगढ़ में हैं। समुद्र में भारत का जलप्रदेश, उपयुक्त आधार रेखा से मापे गए बारह समुद्री मील की दूरी तक है। इस मानचित्र में अरूणाचल प्रदेश, असम और मेघालय के मध्य में दर्शायी गयी अन्तर्राज्य सीमा, उत्तर पूर्वी क्षेत्र (पुनर्गठन) अधिनियम 1971 के निर्वाचनानुसार दर्शित है परन्तु अभी सत्यापित होनी है। आंतरिकविवरणों को सही दर्शाने का दायित्व प्रकाशक का है।

मध्यप्रदेश तो नाम से ही लगता है कि यह देश के मध्यभाग में स्थित है। अभी आपने जाना कि देश में हमारा प्रदेश कहाँ स्थित है। अब हमारे पड़ोसी राज्यों की बात करते हैं। प्रदेश की सीमा से लगे हुए राज्य पड़ोसी राज्य कहलाते हैं। नक्शा देखकर पड़ोसी राज्यों की सूची बनाइए।

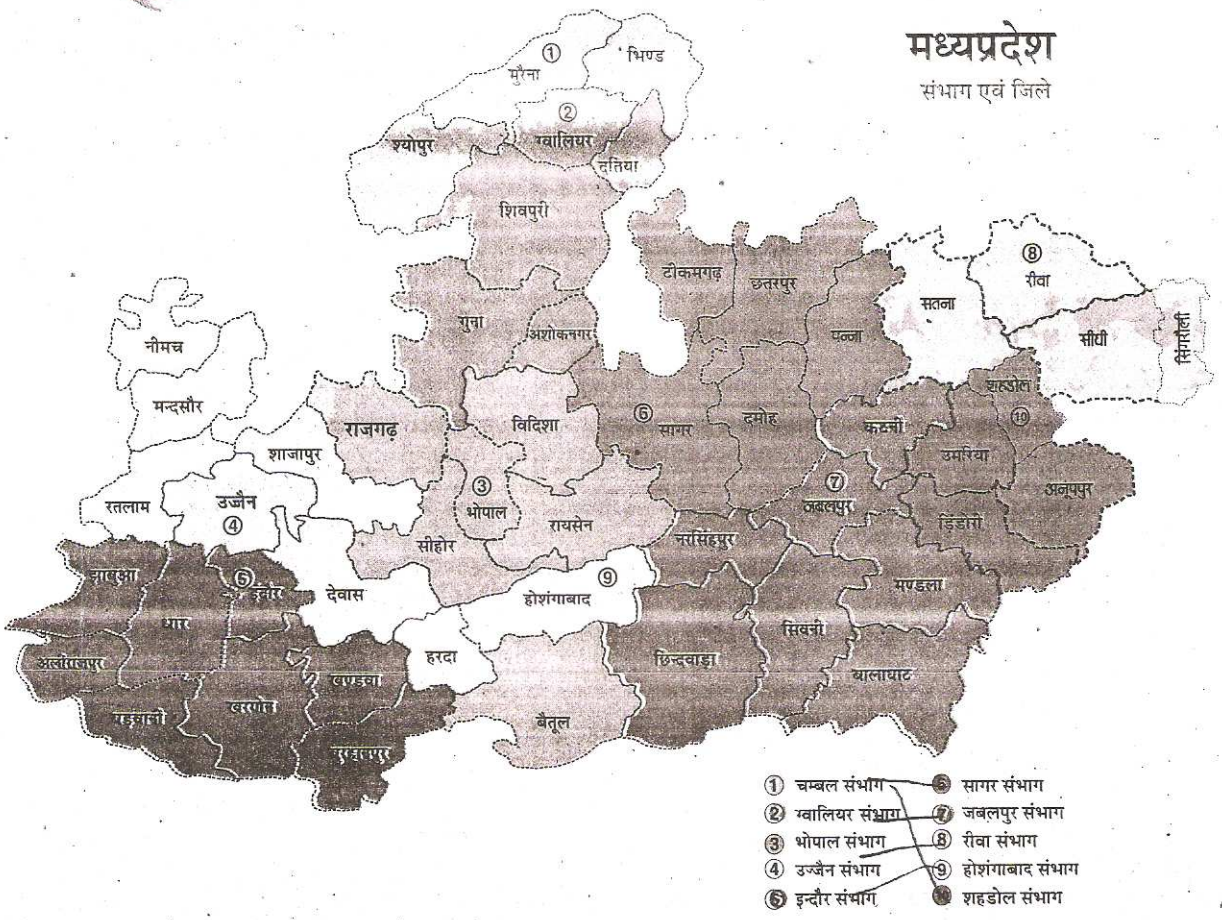

वर्ष 2009 से शहडोल संभाग को 10वें संभाग के रूप में बनाया गया है।
अब सूची में से पढ़कर बताइए कि आपका जिला कौन से संभाग में आता है।

भोपाल
भोपाल
विदिशा
सीहोर
राजगढ़
रायसेन

उज्जैन संभाग
उज्जैन
देवास
रतलाम
मंदसौर
नीमच
शाजापुर

इंदौर संभाग
इंदौर
धार
खरगोन
बड़वानी
झाबुआ
खंडवा
अलीराजपुर
बुरहानपुर

ग्वालियर संभाग
ग्वालियर
शिवपुरी
गुना
दतिया
अशोकनगर

सागर संभाग
सागर
दमोह
पन्ना
टीकमगढ़
छतरपुर

चंबल संभाग
मुरैना
श्योपुर
भिंड

रीवा संभाग
रीवा
सतना
सीधी
सिंगरौली

जबलपुर संभाग
जबलपुर
कटनी
सिवनी
मंडला
बालाघाट
नरसिंहपुर
छिंदवाड़ा

नर्मदापुरम
होशंगाबाद
हरदा
बैतूल

शहडोल संभाग
शहडोल
अनूपपुर
उमरिया
डिंडोरी

अब आप जान गए होंगे कि आपका संभाग कौन-सा है। अब जरा गिनिए कि दी गई सूची में कुल कितने जिले और संभाग हैं।

आओ बताएँ

- जिलों की संख्या _____
- संभागों की संख्या _____

मध्यप्रदेश में 50 जिले व 10 संभाग हैं।

आइए अब जानें कि मध्यप्रदेश कहाँ है?

3.21 मध्यप्रदेश मे प्रमुख तीन ऋतुएं होती है :–

ग्रीष्म ऋतु–

इस ऋतु में तापमान मार्च से जून तक लगातार बढ़ता जाता है। वायुमण्डल मे नमी कम होती है। आकाश में बादल नहीं होते। धूल भरी आधियां चलती है। ऐसे मौसम के कारण मानसूनी हवाये समुद्र से थल की ओर चलने लगती है।

वर्षा ऋतु–

जून के अंतिम सप्ताह में मानसूनी हवाओं से वर्षा होती है। सबसे अधिक वर्षा जुलाई–अगस्त माह में होती है। प्रदेश में वर्षा की मात्रा सब जगह समान नहीं होती है। अधिक वर्षा होने पर नदियों में बाढ़ आ जाती है। कम वर्षा होने पर फसलें सूखने लगती है। पूर्वी भागों में वर्षा 120 से 260 से.मी. तक होती है।

शीत ऋतु–

शीत ऋतु में वर्षा की स्थिति भूमध्य रेखा के दक्षिण में होती है। मानसूनी हवायें उत्तर–पूर्व से चलने लगती है। जिससे मध्यप्रदेश का तापमान कम होने लगता है। कभी–कभी कोहरा भी पड़ता है।

वनस्पति–

मध्यप्रदेश के वन, प्राकृतिक सम्पत्ति के अगाध भण्डार है। लगभग 14000 लाख हेक्टेयर भूमि में वन फैले है। राज्य की कुल भूमि के 30 प्रतिशत भाग पर वन फैले है। पूर्व की ओर के जिलों में वनों का प्रतिशत और अधिक है। मध्यप्रदेश के वनों को दो वर्गों में बांटा जा सकता है।

1. **पतझड़ वाले वन –**

इस प्रकार के वन बैतूल, खरगोन, खंडवा, सागर और होशंगाबाद जिलों में मिलते है। इन वनों के मुख्य पेड़ सागौन, वाल, बीचो, हल्दू, तेंदू, धवा आदि है। ये वृक्ष गर्मियों के शुरू में अपनी पत्तियां गिरा देते है इसलिए पतझड़ वाले वन कहते है। इन वनों की लकड़ी इमारती लकड़ी के रूप में प्रयोग की जाती है।

2. कटीले वन –

कम वर्षा वाले भागों में कटीले वन पाये जाते है। इनमें खेर, बबूल, आंवला, करोंदा आदि मुख्य वृक्ष और झाड़ी है। इन वनों में गोंद, लाख, कत्था आदि मिलता है।

बॉस–बिलासपुर, शहडोल, सीधी, सरगुजा, दुर्ग, मण्डला, बालाघाट, होशंगाबाद और बैतूल जिलों में मुख्यतः पाये जाते है। बॉस का उपयोग कागज बनाने कृत्रिम धागे (रेयन) बनाने में होता है।

मध्यप्रदेश के वनों में कान्हा किसली (मण्डल) शिवपुरी और बांधवगढ़ (रीवा) में राष्ट्रीय उद्यान बनाये गये है। अन्य वनों में शेर, चीता, सांभर, चीतल, बारहसिंहा, भालू, सुअल, जंगली भैसे पाये जाते है। वनों में 339 करोड़ रूपयों का राजस्व मिलता है। तेंदू पत्तों से 41 करोड़ रूपयों का तथा इमारती लकड़ी से 217 करोड़ रूपये का राजस्व प्राप्त हुआ।

खनिज पदार्थ

देश में मध्यप्रदेश का खनिज पदार्थों के उत्पादन में तीसरा स्थान है। यहां के प्रमुख खनिज पदार्थ ये हैं –

मैंगनीज– मध्यप्रदेश का मैंगनीज उत्पादन में एकाधिकारी है। यहां उच्चकोटि का मैंजनीज अधिक मात्रा में निकाला जाता है।

मैंजनीज के मुख्य जिले– बालाघाट, छिंदवाड़ा, झाबुआ और जबलपुर है। यह लोहे में मिलकर इस्पात बनाने के काम में आता है।

लोहा– जबलपुर, झाबुआ, धार में लोहा निकाला जाता है।

बाक्साइड– बाक्साइड के क्षेत्र में मुख्य उत्पादक जिले जबलपुर, बिलासपुर, बालाघाट शहडोल है।

तांबा– इसके नये भण्डार बालाघाट जिले के मलाजखण्ड स्थान मे मिले है।

कोयला– मध्यप्रदेश का अधिकांश कोयला छिन्दवाड़ा, शहडोल, सीधी में प्राप्त होता है।

चीनी मिट्टी– ग्वालियर, सतना, शहडोल, जबलपुर में मिलता है।

3.22 सिंचाई

मध्यप्रदेश से नदियां नहरे, तालाब, कुएं और नलकूप सिंचाई के साधन है तथा क्षेत्र की सुविधा के अनुसार विधियां नहीं दी गई है। प्रदेश के मैदानी भागों में छोड़कर छोटे तालाब बनाकर सिंचाई की जाती है।

डीजल या बिजली से चलने वाली पम्पों का प्रयोग भी सिंचाई में होने लगा है। कुछ क्षेत्रों में नलकूप भी खोदे जाने लगे है।

विद्युत– प्रदेश में कोयले के क्षेत्र में कई बिजली घर स्थापित किये गये है। शहडोल जिले में अमरकंटक, बैतूल जिले में सतपुड़ा और सारणी ताप बिजली घर संचालित है। इसके अतिरिक्त सिगरोली और चांदनी में भी बिजली घर है।

चम्बल नदी पर स्थित गांधी सागर बांध पर जल विद्युत केन्द्र स्थापित है। जबलपुर जिले में बरगी बांध से बिजली प्राप्त की जा रही है तथा बारना नयी सिंचाई योजना है।

कृषि की उपजें–

मध्यप्रदेश भारत का कृषि प्रधान राज्य है। राज्य की 75 प्रतिशत जनसंख्या खेती पर निर्भर है। राज्य की फसले में ज्वार, गेहूं, चना, तिलहन और कपास मुख्य है।

उद्योग धन्धे –

मध्यप्रदेश उद्योग की दृष्टि से विकास की ओर बढ़ रहा है तथा भविष्य में विस्तार की संभावनाएं है। मुख्य उद्योग निम्नलिखित हैः–

1. बिजली की भारी सामान बनाने का कारखाना– प्रदेश में यह कारखाना भोपाल में स्थापित है।
2. सीमेंट के कारखाने– केमोर, सतना, कटनी, बानमोर में है।
3. नेपा नगर में अखबारी कागज का तथा अमबाई में कागज का कारखाना है। इसे बांस और घास, कच्चे माल के रूप में प्रयोग में लाई जाता है।
4. कृत्रिम रेशे के कपड़े ग्वालियर, नागदा, इन्दौर में बनाया जाता है।
5. शक्कर चीनी के कारखाने– डबरा, बालोद, सारंगपुर, महीदपुर, झाबुआ और सीहोर में है।

6. सूत्री वस्त्र– इराकीमिले इन्दौर, रायपुर, उज्जैन, देवास, ग्वालियर, राजनाद गांव में है।

इसके अतिरिक्त भी रेजरब्लेड, दियासलाई, अल्कोहल, वनस्पति कार्ड बोर्ड लाख बनाने के कारखाने है।

कुटीर उद्योग– मन्दसौर में लाख और लकड़ी की वस्तएं जबलपुर, ग्वालियर में बीड़ी बनाने के कारखाने गोदिया, जबलपुर, दमोह, सागर, भोपाल और सीहोर में है। खड़िया मिट्टी की वस्तुएं छतरपुर और जबलपुर में बनाई जाती है।

व्यापार–आयात–निर्यात

मध्यप्रदेश राज्य की अर्थव्यवस्था में खनिज तेल और कृषि का योदान अधिक है। अतः यहां से दूसरे राज्यों की ओर जाने वाले पदार्थ इन्हीं पर निर्भर होंगे।

निर्यातक वस्तुएं–

1. कोयला, सीमेंट।
2. पशुओं की खाले, हड्डिया, चमड़ा, लाख, हरर्ड, बास इमारती लकड़ी, जलाऊ लकड़ी, कृत्रिम रेशे के धागे, वस्त्र।
3. कपास, सूती वस्त्र, मूंगफली वनस्पति, घी, तम्बाकू, खली मुख्य है।

लोहे की मशीनें, जूट का सामान, यातायात के उपकरण सूती कपड़े में उपकरण, खाद्यानों में गेहूं, दालें, बाजरा, वनस्पति, तेल घी मुख्य है।

3.23 यातायात के साधन

क्षेत्रफल के अनुपात में मध्यप्रदेश देश का सबसे बड़ा राज्य है। इससे परिवहन के साधनों के विकास की बड़ी आवश्यकता है। राज्य में यातायात के प्रमुख साधन सड़के और रेल मार्ग ही है। वायु मार्ग बहुत कम है। कुछ क्षेत्र ऐसे है जहां पक्की और कच्ची सड़के और रेलमार्ग का अभाव है। यह अभाव दूर करने में ही प्रदेश का विकास संभव है।

सड़क मार्ग

सड़कों की दृष्टि से मध्यप्रदेश की स्थिति संतोषजनक नहीं है। इसका प्रमुख कारण यहां का प्राकृतिक ढांचा है। विन्ध्याचल और सतपुड़ा के पहाड़ी भाग, पठार और घने

अगम्य वनों के कारण सड़क बनने के काम में मुश्किले आती है। प्रदेश में पक्की और कच्ची दोनों प्रकार की सड़कें है। कुछ राष्ट्रीय मार्ग इस प्रदेश से होकर गुजरते है। जो निम्नलिखित है–

1. आगरा से ग्वालियर, इन्दौर होता है बम्बई जाता है।
2. रीवा, जबलपुर, सिवनी से नागपुर जाता है।
3. (बम्बई से कलकत्ता मार्ग) राजनादगांव, दुर्ग, रायपुर जिलों से होकर जाता है।
4. लखनादौन–सागर से झांसी जाता है।

रेल मार्ग–

मानचित्र देखने से ज्ञात होता है कि मध्यप्रदेश देश के मध्य में स्थित होने से देश के प्रमुख रेल मार्ग मध्यप्रदेश से होकर जाते है। ऐरो रेल मार्ग रेल्वे पश्चिम रेल्वे और दक्षिण पूर्वी रेल्वे के अन्तर्गत आते है।

मध्य रेल्वे– इसकी लम्बाई प्रदेश से होकर 1777 कि.मी. है। यह राज्य के अधिकांश उत्तरी और दक्षिणी भाग में फैला है। मुख्य स्टेशन ग्वालियर भोपाल इटारसी है। इन्दौर क्षेत्र और रीवा भी मध्य रेल्वे के क्षेत्र में आता है।

पश्चिम रेल्वे– इसकी लम्बाई प्रदेश से होकर 908 कि.मी. इसके अन्तर्गत राज्य के पश्चिमी भाग में यातायात होता है। रतलाम, नागदा, मंदसौर, उज्जैन, शाजापुर, सीहोर, देवास, गुना, मऊ आदि प्रसिद्ध स्टेशन है।

दक्षिण पूर्वी रेल्वे– ये रेल मार्ग 1480 कि.मी. लम्बा फैला है राज्य का दक्षिणी पूर्वी भाग इससे लाभ उठाता है। शहडोल जिलों में यातायात रेल मार्ग से होता है।

वायु मार्ग–

राज्य में इन्दौर, भोपाल और ग्वालियर में हवाई अड्डे है जो देश के विभिन्न महत्वपूर्ण नगरों को वायु मार्ग द्वारा जोड़ते है।

मध्यप्रदेश डाक सेवा टेलीफोन रेडियों, टेलीविजन द्वारा भी संचारसाधनों से जुड़ा है।

जनसंख्या

सन् 2001 की जनगणना के अनुसार मध्यप्रदेश की जनसंख्या 60348023 है। प्रदेश में औसतन 196 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर में बसते हैं। प्रदेश के समस्त मैदानी भाग तथा नदियों की घाटियों में जनसंख्या संघन है। सबसे घनी जनसंख्या वाले जिले इन्दौर, भोपाल, जबलपुर, रीवा, ग्वालियर और भिण्ड है।

दूसरी ओर बघेल खण्ड के पठार और सतपुड़ा मैकल की श्रेणियों वाले भागों में जनसंख्या विरल है। प्रदेश की तीन चौथाई जनसंख्या गांवों में रहती है तथा खेती करती है। लोग शांतिप्रिय और इमानदार है।

प्रदेश की जनजातियों की जनसंख्या अधिक है। मोटे तौर पर प्रदेश में हरपॉच में से एक व्यक्ति आविासी है। आदिवासी झाबुआ मण्डला सरगुजा शहडोल और धार जिलों में अधिक है।

रहन–सहन

प्रदेश में सभी धर्मों के लोग मिलजुल कर जीवन बिताते है। बैसाखी, रक्षाबंधन, ईद, दशहरा, दीपावली, होली, क्रिसमस त्यौहार मिलजुलकर मनाते है। गांव के निवासियों का पहनावा धोती बंडी और कमीज है। स्त्रियों के पहनावें में भिन्नता है। मालवा में रहने वाली स्त्रियां सिर गले हाथ और पैर में चांदी के गहने पहनती है। क्षेत्र के अनुसार भोजन में भी भिन्नता है। तीज त्यौहार शादी विवाह के मौकों पर लोग गीत गाने की प्रथा है।

प्रसिद्ध नगर

मध्यप्रदेश में कई बड़े जनसंख्या नगर है। कुछ तो धार्मिक ऐतिहासिक कारणों से प्रसिद्ध है तो कुछ प्राकृतिक सौन्दर्य एवं पर्यटन के कारणों से। औद्योगिक तथा व्यापारिक महत्व के नगर बहुत कम है।

1. धार्मिक स्थलों से उज्जैन, सांची है।
2. ऐतिहासिक केन्द्र– ग्वालियर, महोबा, धार है।
3. शिक्षा के केन्द्र– सागर, उज्जैन, जबलपुर, इन्दौर, भोपाल है।
4. व्यापारिक केन्द्र– विदिशा, इन्दौर, भोपाल है।

5. औद्योगिक केन्द्र– नेपानगर, इन्दौर है।
6. पर्यटन स्थल– जबलपुर, माडू, खजुराहो, ग्वालियर, शिवपुरी, कान्हा, किसली, पचमढ़ी, भोजपुर है।

भोपाल– यह मध्यप्रदेश की राजधानी है। यहां का तालाब प्रसिद्ध है। राजा भोज ने इस नगर की स्थापना की थी। इसका प्राचीन नाम भोजपाल था। नगर के कुछ दर्शनीय स्थल इस प्रकार है। बिजली के सामान बनाने का कारखाना (भेल), ताजुल मस्जिद, बिड़ला मंदिर, भारत भवन, मछली घर, सचिवालय, विन्ध्याचल भवन। आज का भोपाल तेजी से बनता हुआ एक आधुनिक नगर है। भोपाल देश के प्रायः हर भाग रेल, बस, वायु सेवा से जुड़ा है। विमान तल का नाम बैरागढ़ है।

bdkbZ lkjk'k&

1. पृथ्वी पर प्रत्येक समय दो प्रकार की शक्तियां कार्यरत रहती है, 1. आंतरिक शक्तियां, 2. बाह्म शक्तियां।
2. आंतरिक शक्तियां पृथ्वी के भूगर्भ के अंदर दीर्घकालीन कार्यो जैसे महाद्वीप एवं पर्वत निर्माण क्रियाओं में लगी रहती है। लम्बे समय (लाखो करोड़ों वर्ष) पश्चात इनकी प्रतिक्रियाएं भूपटल पर दृष्टिगोचर होती है।
3. आंतरिक शक्तियों का एक भाग आकस्मिक भूगतियां (जैसे ज्वालामुखी/भूकम्प) उत्पन्न करता है। ये क्रियाएं अकस्मात या अचानक संपन्न होती है तथा पल भर में ही पृथ्वी तल पर विनाश लीला पूर्ण करता है।
4. बहर्जात शक्तियां एक प्रकार की बाह्म शक्तियां है जैसे नदियां, हिमानी, पवने व लहरे आदि। ये बाहय शक्तियों के महत्वपूर्ण कारक है जो पृथ्वी के भूपृष्ठ (भूपटल) पर विभिन्न भूआकृतियों का निर्माण करती है।
5. पृथ्वी धरातल की परिवर्तनकारी शक्तियां जो कि मुख्य रूप से आंतरिक व बाह्म शक्तियों में विभाजित की गई है एक दूसरे के सर्वथा विपरीत कार्य करती है तथापि वे एक दूसरे की पूरक के समान कार्य करती है।
6. आंतरिक शक्तियां जहां महाद्वीपों व पर्वत निर्माण का कार्य कर पृथ्वी तल पर उत्थान का कार्य करती है वहीं बाह्म शक्तियां उसी निर्माण को उसी समय से ही उस भूआकृति (निर्मित का) को ध्वस्त (नष्ट) करना प्रारंभ कर देती है यही प्रकृति का नियम है।
7. आस्ट्रेलिया विश्व का सबसे छोटा महाद्वीप है।

8. यहां बहुत बड़े भाग में बहुत कम वर्षा होती है किन्तु खेती उन्नत है।
9. सिंचाई और विद्युत के साधन उपलब्ध है। नदियों पर बांध बनाए गए है।
10. आस्ट्रेलिया भी भारत की तरह कृषि प्रधान है, किन्तु यहां वैज्ञानिक तरीकों से कृषि होती है।
11. यहां की मुख्य फसलों में गेहूं है जिसका बड़ी मात्रा में निर्यात होता है।
12. यहां उद्योग धंधे विकसित है किन्तु अमेरिका और यूरोप की तुलना में कम।
13. आस्ट्रेलिया में यातायात का मुख्य साधन रेले है। सड़के भी विकसित है।
14. यहां के व्यापार अभिवृद्धि के कारण सिड़नी और मेलबोर्न नगरों का बड़ी तेजी से विकास हुआ है।
15. जनसंख्या की दृष्टि से आस्ट्रेलिया पिछड़ा है। यहां की जनसंख्या लगभग दो करोड़ तथा जन घनत्व औसतन दो व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर है।
16. यहां के प्रमुख नगर सिडनी, मेलबोर्न, पर्थ, केनबरा आदि है।
17. यह विश्व का सबसे बड़ा महाद्वीप है। यहां 268 करोड़ से भी अधिक लोग रहते है। यहां का घनत्व 87 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर है।
18. यहां विश्व का सर्वोच्च शिखर माउंट एवरेस्ट (8848 मीटर) ऊंचा है तथा सबसे नीचा भाग मृत सागर समुद्र तल से 390 मीटर नीचा है।
19. एशिया में ही गंगा व सिंधु का विशाल मैदान है तो दूसरी ओर गोबी और थार का मरूस्थल भी है।
20. यहां विश्व का सर्वाधिक वर्षा वाला स्थान मोनसिराम व चेरापूंजी (भारत 1014 सेमी वार्षिक) तथा सबसे न्यूनतम वर्षा वाला क्षेत्र स्थल अदन (5 सेमी वार्षिक) है।
21. यहां सदाबहार वनों से लेकर टुण्ड्रा जैसी वनस्पति पाई जाती है।
22. यहां उष्ण कटीबंधीय से लेकर शीत कटिबंधीय फसलें होती है।
23. एशिया में ही भारत और चीन जैसे विशालतम जनसंख्या वाले देश है तथा थार मरूस्थल व टुण्ड्रा प्रदेश भी है जहां की आबादी न के बराबर है।
24. एशिया में ही विश्व के सभी धर्मों का उदय एवं विकास हुआ।
25. यहां विश्व की प्राचीनतम संस्कृतिया फली और फूली। जैसे सिंधु घाटी बेनीलोनियन, दजला फयत, असीरियन, सुमेरियन, आर्य, द्रविड़ और चीनी सभ्यता आदि।
26. यहां का यश, ज्ञान और गौरव विश्व के चारों ओर फैला है।
27. यूरोप महाद्वीप के क्षेत्रफल का विस्तार कम होते हुए भी सघन संपन्न है। इसका मुख्य कारण उत्तरी जलवायु और कुशल श्रम है।
28. जहां कृषि हेतु सिंचाई साधन उपलब्ध है तथा यह महाद्वीप विद्युत उत्पादन मे अग्रणी है जिसके फलस्वरूप उद्योग धंधे उन्नतशील है।
29. यूरोप में एक तिहाई भूभाग पर कृषि होती है। यूरोप की सबसे प्रमुख फसल गेहूं की है।

30. सभी प्रकार के उद्योगों की दृष्टि से यूरोप बहुत उन्नत एवं संपन्न है।
31. यूरोप अधिकतर मशीनें, कलपूर्जे, दवाईयों का निर्यात और कच्चे माल, चाय आदि का आयात व्यापार करता है।
32. यहां यातायात के साधन स्थल, जल, वायु सभी पर्याप्त एवं उन्नतिशील है। सभी वायुमार्ग यहां से अन्य महाद्वीपों को जाती है।
33. यद्यपि यहां जनसंख्या का घनत्व सर्वाधिक है फिर भी विश्व की मात्र 20 प्रशित आबादी यूरोप में निवास करती है। सभी का रहन सहन उच्च स्तर का है।
34. उत्तरी अमेरिका यूरोप की तरह संपन्न है। यहां मशीनों से खेती होती है।
35. विद्युत उत्पादन की दृष्टि से उत्तरी अमेरिका विश्व का सबसे बड़ा विद्युत उत्पादक महाद्वीप है।
36. यहां उद्योग धंधे विकसित और उन्नतिशील है। लोहा इस्पात उद्योग उन्नतशील है। शिकागों लोहा इस्पात और विश्व प्रसिद्ध मांस की मण्डी के लिये विख्यात है।
37. यहां व्यापार प्रगतिशील और यातायात के साधन उन्नतशील है।
38. उत्तरी अमेरिका महाद्वीप का उत्तरी पूर्वी भाग घनी आबादी वाला है। जबकि रांकी और टुण्ड्रा क्षेत्र कम जनसंख्या वाला है।
39. यहां के व्यक्तियों की प्रतिव्यक्ति आय विश्व में अधिक होने से रहन सहन का स्तर ऊंचा है।
40. न्यूयार्क, शिकागों, सेनाफ्रासिसको, लांड एञ्लिस और मांट्रियल नाम के नगर विश्व प्रसिद्ध है।
41. यहां सिंचाई और जल विद्युत की कमी है तथा महाद्वीप का मात्र 10 प्रतिशत भू–भाग ही कृषि योग्य है।
42. गेहूं और मक्का दक्षिणी अमेरिका की मुख्य फसले है।
43. इस महाद्वीप से खनिज निर्यात किया जाता है, क्योंकि यहां उद्योग पिछडे हुए है।
44. दक्षिणी अमेरिका के सभी देशों में यातायात के साधन अभी अविकसित है।
45. यहां की आबादी लगभग 37 करोड़ 18 लाख है तथा जन घनत्व 21 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर है।
46. यहां के प्रमुख नगर रियोडिजेनरों, ब्यूनसआयर्स और सेन्टीयागों है।
47. विकास की दृष्टि से अभी यह महाद्वीप पिछड़ा हुआ है।
48. अफ्रीका महाद्वीप एशिया के बाद विश्व का सबसे बड़ा महाद्वीप है।
49. यहां विश्व की संपूर्ण आबादी का 2/3 भाग निवास करता है।
50. इस महाद्वीप का अधिकांश भू भाग सूखा है। सिंचाई के साधनों व विद्युत का अभाव है।
51. जल विद्युत नील, नाइजर तथ जेम्बोजी नदियों के जल को बांध बनाकर पैदा की जाती है।
52. यहां कृषि पिछड़ी है। मक्का, गेहूं, चावल और ज्वार के अलावा कपास, मूंगफली, कहवा व कोको की फसले प्रमुख है।

53. उद्योगों की दृष्टि से अफ्रीका बहुत पिछड़ा महाद्वीप है। यहां की जलवायु अस्वास्थकर है इसलिए उद्योग, यातायात अविकसित है।
54. व्यापक दृष्टि से यह कच्चे माल का निर्यातक और बनी हुई वस्तुओं का आयातक महाद्वीप है।
55. यद्यपि खनिज सम्पन्न है फिर भी पिछड़ा है। यहां विश्व प्रसिद्ध सोने की खाने है।
56. यहां की कुल जनसंख्या लगभग 105 करोड़ है तथा जनघनत्व औसतम 18 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है।

bdkbl vk/kfkjr iz'u %&

प्रश्न 1. एशिया महाद्वीप में लोहा इस्पात उद्योग मुख्यतः कहां केन्द्रित है?

प्रश्न 2. यूरोप महाद्वीप में कौन–कौन से उद्योग धंधे महत्वपूर्ण है?

प्रश्न 3. उत्तरी अमेरिका के उद्योग धंधों के नाम लिखिए?

प्रश्न 4. दक्षिणी अमेरिका की जनसंख्या कितनी है?

प्रश्न 5. अफ्रीका की प्रमुख कृषि उपजे लिखिए?

पत्राचार पाठ्यक्रम
माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल
(द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित)
डिप्लोमा इन एज्युकेशन
fo"k;& lkekftd foKku ,oa mldk f'k{k.k
द्वितीय वर्ष
प्रश्न पत्र – नवां

विषयः– मानव सभ्यता एवं प्राचीन भारतीय इतिहास का क्रमिक विकास। अंक 06

1. प्रागैतिहासिक युग की भारतीय संदर्भ में जानकारी।
2. सरस्वती सिन्धु (हड़प्पा) संस्कृति एवं वैदिक युग।
3. भारतीय इतिहास की प्रमुख घटनाएं (क) प्रमुख प्राचीन राजवंश (ख) उत्तर एवं दक्षिण भारत के प्रमुख राजवंश।
4. विश्व की महत्वपूर्ण औद्योगिक एवं राजनैतिक क्रांतियां (भारत के विशेष संदर्भ में)

प्रिय छात्राध्यापकों!

सामाजिक विज्ञान के अभी तक पढ़े पाठों से आपने सामान्य भूगोल, भौगोलिक घटनाएं एवं विश्व का भूगोल विषय का अध्ययन किया। आईए इस इकाई में हम मानव सभ्यता एवं प्राचीन भारतीय इतिहास के क्रमिक विकास का अध्ययन करें।

स्मरण रहे कि मानव के उद्‌भव विकास और सभ्यता के प्रारंभिक दौर में प्रकृति से सामन्जस्य करते हुए मानव ने सभ्यता का विकास किया। पूर्व पाषण काल, उत्तर पाषण काल के बाद सिन्धु घाटी क्षेत्र में एक सभ्यता का विकास हुआ यह सभ्यतानगरीय व उच्च स्तर की थी। इस सभ्यता ने भारतीय इतिहास में अपना महत्वपूर्ण स्थान निर्धारित किया। इसके बाद आर्यों की वैदिक सभ्यता का उद्‌भव एवं विकास हुआ। इस पाठ की प्रथम उप इकाई में हम सिन्धु घाटी एवं वैदिक सभ्यता का अध्ययन करेंगे।

इसके अध्ययन के पूर्व हम सामाजिक विज्ञान के महत्वपूर्ण विषय इतिहास के अध्ययन एवं शिक्षण के उद्‌देश्यों को संक्षेप में समझने का प्रयास करेंगे ताकि हमारा अध्ययन परिणामोन्मुखी हो सकें।

सामाजिक विज्ञान के उद्‌देश्यः–

1. इतिहास के प्रति छात्रों की रूचि जाग्रत करना।
2. छात्रों के ऐतिहासिक कल्पना जाग्रत करना।
3. छात्रों को इस बात से परिचित कराना कि हमारे दैनिक जीवन पर अतीत का प्रभाव पड़ता है।
4. छात्रों में देश प्रेम की भावना का विकास करना जिससे भविष्य में उनमें उन्होंने राष्ट्रीय चरित्र निर्मित हो सके।

आपके अध्ययन की सुविधा को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत पाठ को दो उप इकाईयों में बांटा गया है उपइकाई एक में प्रागैतिहासिक युग की भारतीय संदर्भ में जानकारी। सरस्वती सिन्धु (हड़प्पा) संस्कृति एवं वैदिक युग। भारतीय इतिहास की प्रमुख घटनाएं (क) प्रमुख प्राचीन राजवंश (ख) उत्तर एवं दक्षिण भारत के प्रमुख राजवंश एवं उपइकाई दो में विश्व की महत्वपूर्ण औद्योगिक एवं राजनैतिक क्रांतियां (भारत के विशेष संदर्भ में) के बारे में अध्ययन करेंगे।

1

4.1 प्रागैहितासिक युग की भारतीय संदर्भ में जानकारीः–

किसी भी देश का इतिहास उसी समय से आरंभ होता है जबसे इसका लिखित विवरण उपलब्ध हो। जो अवधि इस अवधि से पहले आती है उसे प्रागैतिहासिक युग कहा जाता है। क्योंकि हमारे पास प्रागैतिहासिक युग के लिखित विवरण उपलब्ध नहीं है, इस युग की संस्कृति का हमारा ज्ञान खुदाई से प्राप्त सामग्री पर आधारित है। मनुष्य के बीते जीवन के बारे में उसके सामान से पता लगाने के विज्ञान को पुरातत्व कहा जाता है इसके लिए पुरातत्वज्ञ छान बीन करते है और खुदाई से प्राप्त स्मारकों, शिलालेखों, सिक्कों आदि का अध्ययन करते है। भारत में कई स्थानों पर प्रागैतिहासिक मानव द्वारा बनाये गये कई तरह के औजार प्राप्त हुए है। आरंभ में मनुष्य पत्थर के औजार बनाता था क्योंकि पत्थर उसे अपने आसपास ही आसानी से मिल जाते थे। वह प्राकृतिक पदार्थों का रूप बदल कर तरह तरह के औजार व हथियार बनाता था और अपनी दैनिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उनका उपयोग करता था। मानव की पहली आवश्यकता थी अपनी भूख मिटाने के लिए शिकार करना और भोजन एकत्र करना, बाद में अपने जीवन स्तर को सुधारने के लिए मनुष्य ने पत्थर के औजारों का उपयोग किया। मनुष्य इन कार्यों के लिए औजार उपयोग में लाता था इसलिए वह अन्य जन्तुओं से अलग पहचाना जाता था। क्योंकि पहले औजार पत्थर के बने हुए थे इसलिये मानव विकास के इस युग को प्रस्तर युग कहा जाता है।

इस पाठ में हम पढ़ेगे कि किस प्रकार प्रागैतिहासिक मानव शिकारी से भोजन एकत्र करने वाला और उसके बाद भोजन उपजाने वाला बना। इस विकास में सैकड़ों शताब्दियां लगी और यह उपलब्धि धीरे–धीरे कई चरणों में संभव हुई। औजारों की किस्म व उन्हें बनाने में उपयोग में लाये गये कच्चे माल के आधार पर इन युगों को पुरापाषाण युग, मध्य पाषाण युग, नवपाषाण युग और ताम्र पाषाण काल कहा जाता है।

पुरापाषाण काल –

पुरापाषाण युग का विकास अभिनूतन युग में हुआ। अभिनूतन युग एक भूवैज्ञानिक शब्द है जिसे आम भाषा में हिमकाल कहा जाता है। हिम काल के दौरान पृथ्वी पर, खासकर ऊंचे स्थानों पर बर्फ की चादरें जमीं थी। यह युग भारी वर्षाकाल का युग था। इस युग के प्राप्त पत्थर के औजारों से पता चलता है कि पहली मानव बस्तियां हिम युग के मध्य में लगभग 50000 वर्ष पूर्व आरंभ हुई।

पुरापाषाण मानव हाथ की कुल्हाड़ी और कंकड़ों के औजार उपयोग में लाता था। दक्षिण भारत में पाये गये पुरापाषाण स्थलों में हाथ की कुल्हाड़ियां मिली है। सोहन नदी की घाटी में कंकड़ों से बने हथियार व औजार मिले है। सोहन नदी सिंधु नदी की सहायक नदी है।

इस युग में मानव शिकार व भोजन एकत्र करने की अवस्था में था और इन औजारों का उपयोग शिकार मारने, काटने आदि के लिए करता था। वह खानाबदोश जीवन बिताता था और उन जगहों की तलाश में रहता था जहां खाना और पानी अधिक मात्रा में मिल सकें। मानव उन स्थानों पर रहना पसंद करता था जहां शिकार आसानी से प्राप्त हो सकता था। उसके पत्थर के औजार साधारण और खुरदरे थे।

पत्थर के औजारों और जलवायु के बदलाव के आधार पर भारत में पुरापाषाण युग का तीन अवस्थाओं में विभेदीकरण किया गया है। पहले की आरंभिक पुरापाषाण, दूसरे की पुरापाषाण और तीसरे को उच्च पुरापाषाण युग कहा जाता है।

मध्यपाषाण युग –

यह युग पुरापाषाण और नवपाषाण युग के बीच परिवर्तन की अवधि थी। वह युग उत्तर अभिनूतन युग (80000 ई.पू. से 4000 ई.पू.) में पनपा जब जलवायु ऊष्म और शुष्क हो रही थी। मौसम में परिवर्तन के साथ ही वनस्पति व जीव जन्तुओं में भी बदलाव आया। परिणामस्वरूप मानव सभ्यता का भी तेजी से विकास हुआ। मध्यवर्ती युग में मानव ने बहुत छोटे, नुकीले और पतले औजार बनाये जिन्हें लघु पाषाण भी कहा जाता है। यह औजार बाण और मत्स्य भालों के रूप में उपयोग में लाये जाते थे।

इस मध्यवर्ती युग का एक महत्वपूर्ण केन्द्र लांघनाज (गुजरात) में मिला है। यहां खुदाई में हड्डी से बने कुछ औजार भी मिले हैं। तरह–तरह की मिट्टी के बर्तन जो अच्छी तरह पके नहीं हैं इस केन्द्र में मिले है। कई मध्यवर्ती केन्द्र कृष्णा नदी के दक्षिण के भू–भाग में और छोटा नागपुर में मिले है। विंध्य के उत्तरी भाग में स्थित बेलन घाटी में पुरापाषाण युग के तीनों कालों, मध्यपाषाण युग व नवपाषाण युग के औजार अवस्थिति में पाये गये है।

नव पाषाण युग–

भारत में नवपाषाण युग के अवशेष संभवतः 60000 ई.पू. से 1000 ई.पू. के है। विकास की यह अवधि भारतीय उपमहाद्वीप में कुछ देर से आयी क्योंकि ऐसा माना जाता है कि विश्व के बड़े भू–भाग में यह युग 7000 ई.पू. के आस पास पनपा।

इस युग में मानव पत्थर की बनी हाथ की कुल्हाड़िया आदि औजार पत्थर की छील, घिस और चमका कर तैयार करता था। कई स्थानों पर हड़िडयों से बने औजार भी प्राप्त हुए है। तरह–तरह की कुल्हाड़ियों के आधार पर नवपाषाण युग के तीन क्षेत्रों को महत्व मिला है। यह उत्तरी, दक्षिणी और पूर्वी भारत है।

ताम्र पाषाणिक युग–

नव पाषाण काल की समाप्ति के बाद मानव ने ताम्र धातु का उपयोग सीख लिया था। पाषाण के साथ–साथ ताम्र का उपयोग करने के कारण इस कालखण्ड को ताम्र पाषाण काल कहा जाता है।

कालांतर में कांसाा व लोहे से सभी लोग परिचित हो गये। ऐसी संस्कृतियों को ताम्र पाषाणिक युग कहते है। समस्त धातु युग को तीन चरणें में विभक्त किया जा सकता है– ताम्र युग, कांस्य युग और लौह युग।

कास्य युगीन सभ्यता के बाद लौह युग का आरंभ होता है। लगभग 1400ईसा पूर्व के आसपास एशिया माइनर में लोहे की खोज ने मानव जीवन में एक क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया। अब कांसे के स्थान पर लोहे के उपकरण बनने लगे जो अधिक उपयोगी थे। इसी युग में चाक की सहायता से विशेष प्रकार के मिट्टी के बर्तन चित्रित धूसर मृद भाण्ड प्रमुख रूप से पाये जाते है।

2

4.2 सरस्वती सिन्धु (हड़प्पा) संस्कृति एवं वैदिक युग –

सिन्धु घाटी या हड़प्पा सभ्यता भारत में विकसित ताम्र पाषाण काल की सभ्यताओं से पुरानी, पर तकनीक व अन्य क्षेत्रों में उनसे कहीं आगे थी। इस सभ्यता को हड़प्पा नाम इसलिए दिया गया क्योंकि इसके प्रथम अवशेष सन् 1921 में पश्चिम पंजाब (अब पाकिस्तान में) के हड़प्पा क्षेत्र में पाये गये।

हड़प्पा वासी सुनियोजित नगरों में रहते थे और लेखन कला का विकास कर चुके थे। दुर्भाग्यवश हम अभी तक इस लिपि का अर्थ नहीं निकाल सके है। हड़प्पा सभ्यता के लोग कृषि और वास्तुकला के क्षेत्र में भी निपुण थे। संभवतः मेसोपोटामिया व पश्चिम एशिया के कुछ अन्य देशों के साथ उनके व्यापारिक संबंध थे। 2500 ई.पू. के लगभग मिश्र की नील नदी घाटी में, मेसोपोटामिया की टिगरिस व यूफेंटीस नदी घाटी में, चीन की हंवागहो नदी घाटी में और भूमध्य सागर और एजियन सागर के सीमावर्ती क्षेत्रों में कई सभ्यताओं का विकास हुआ। लगभग इसी समय सिन्धु घाटी भी एक विकासशील सभ्यता का केन्द्र थी।

भारत की पहली नगरीय सभ्यता का विकास लगभग 2500 ई.पू. में (लगभग 4500 वर्ष पूर्व) भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर पश्चिमी भाग में हुआ। 2500 ई.पू. से 1700 ई.पू. तक यह सभ्यता संभवतः अपने चमोत्कर्ष पर थी। इस समय उपमहाद्वीप के उत्तरी और पश्चिमी भागों की जलवायु नम और आर्द्र थी और सिन्धु और राजस्थान के क्षेत्र आज जैसे रेगिस्तानी न थे।

इस सभ्यता की शुरूआत कैसे हुई इसके बारे में हम विश्वास से कुछ नहीं कह सकते। ऐसा प्रतीत होता है कि चौथी सहस्त्राब्दी ई.पू. के मध्य के लगभग पूरे सिन्धु क्षेत्र में बस्तियों का विस्तार था। इसका कारण संभवतः सिन्धु घाटी की उन्नत कृषि और बढ़ती हुई आबादी था। सिन्धु घाटी के निचले भाग के आलमगीरपुर, कोटदीजी जैसे सभ्यता स्थलों में पूर्व हड़प्पा सभ्यताओं के अवशेष मिले हैं। मेहरगढ़ में मिली पकी मिट्टी की बनी मूर्तियों से सभ्यता के विकास के प्रमाण मिलते हैं। इसी प्रकार राजस्थान के कालीबंगा व कुछ और क्षेत्रों में बलूचिस्तान में हड़प्पा पूर्व की कृषि समुदायों की बस्तियों के प्रमाण मिलते है। ऐसा प्रतीत होता है कि हड़प्पा सभ्यता का उदभव इन्हीं बस्तियों से हुआ है। कुछ विद्वानों का यह मत है कि हड़प्पा सभ्यता की उत्पत्ति मेसोपोटामिया के प्रभाव का प्रमाण थी। परंतु हमारे पास इस बात के कोई निश्चित प्रमाण नहीं है।

वास्तव में हड़प्पा सभ्यता कई मायनों में तत्कालीन पश्चिमी एशिया की सभ्यताओं से भिन्न थी। हड़प्पा बस्तियों के नगर शतरंज के पट्ट की तरह नियोजित थे जबकि मेसोपोटामिया के नगर अव्यवस्थित रूप में बसे थे। शायद नांसिस में स्थित क्रीट सभ्यता के अलावा प्राचीन विश्व में, अन्य कहीं भी हड़प्पा जैसी श्रेष्ठ जल निकासी व्यवस्था न थी।

पश्चिम एशिया में निवासियों को मिट्टी की पकी ईंटों के उपयोग में हड़प्पा वासियों जैसी निपुणता प्राप्त नहीं थी। हड़प्पा की छोटी व बड़ी, सभी इमारतें पकी ईटों की बनी थी जबकि तत्कालीन मिश्र में धूप में सुखायी ईटों का उपयोग होता था। मेसोपोटामिया में पकी ईंटें केवल मध्य इमारतें बनाने के काम में लायी जाती थी। हड़प्पा में विशेष प्रकार के मिट्टी के बर्तन, मुहरें और मूर्तियां बनाने की कला का विकास हुआ। सबसे बड़ी बात तो यह है कि हड़प्पा सभ्यता की अपनी विशेष लिपि थी जो मिश्र व मेसोपोटामिया की लिपि से सर्वथा, भिन्न है। इन सब प्रमाणों से यह पता चलता है कि हड़प्पा सभ्यता भारतीय मूल की थी और उसके विकास पर किसी अन्य सभ्यता का प्रभाव नहीं था।

हड़प्पा सभ्यता अपनी श्रेष्ठ नगर योजना के लिए प्रसिद्ध है। सभ्यता के प्रमुख स्थलों हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, कालीबंगन आदि की विशेषता है कि वे नगर दो भागों में बसे है। एक भाग किले की तरह टीले पर चार दीवारी से घिरे ऊंचे चबूतरे पर बना है और दूसरा भाग नदी के किनारे निचले क्षेत्र में बसा है। ऐसा माना जाता है कि नगर के ऊंचे भाग में शासक वर्ग और निचले भाग में साधारण जनता का निवास था।

हड़प्पा के नगरों की सड़क प्रणाली सुव्यवस्थित थी। शतरंज के पट्ट की तरह समकोण पर काटती सड़कें नगर को खण्डों में विभाजित करती थी।

मोहनजोदड़ो का सबसे प्रमुख सार्वजनिक स्थल था दुर्ग में स्थित विशाल स्नानागार। यह स्नानागार 11.88 मी. लंबा, 7.01 मी. चौड़ा एवं 2.43 मी. गहरा है। इस स्नानागार में नीचे उतरने के लिये उत्तर एवं दक्षिण सिरों में सीढ़ियां बनी हुई थी। इसकी फर्श पक्की ईटों से बनी है। इस स्नानागार का इस्तेमाल आधुनिक स्नान के लिये होता था।

मोहनजोदड़ो की सबसे बड़ी इमारत है यहां का धान्य कोठार। सिंधु सभ्यता के निवासी मातृदेवी की उपासना करते थे। मूर्तियों से ज्ञात होता है कि वे पशु पूजा, वृक्ष पूजा आदि करते थे। इस सभ्यता के बर्तन अधिकतर चाक पर ही बने है। उन्हें भट्ठो में पकाया जाता था। आर्थिक जीवन कृषि, पशुपालन, कतई–बुनाई आदि पर आधारित तथा व्यापार वस्तुविनियम के माध्यम से होता था।

4-3 ofnd ;qx%&

वैदिक काल–प्राचीन भारतीय सभ्यता का प्रारंभ वैदिक काल से माना जाता है। इस सभ्यता के निर्माता आर्य थे।

लगभग 2000 ई.पूर्व में भारत में आर्य सभयता का विकास हुआ। उनके मुख्य व्यवसाय पशुपालन और कृषि थें और उन्हें नगर–संस्कृति का कोई अनुभव नहीं था। वे प्रकृति की शक्तियों–वर्षा और विधुत् के देवता इन्द्र, वायु के देवता मरूत् और सूर्य की पूजा करते थे। इन कार्यो का विश्वास था कि ये देवता वर्षा करते, उनकी फसलों को पकाते और शत्रुओं को पराजित करने मं उनकी सहायता करते है। इन देवताओं की प्रशंसा में लिखे हुए सूक्तों का संग्रह ऋग्वेद में है।

ऋग्वेदन के सूक्तों की रचना सिंधु नदी के पट पर हुई। पंजाब से वे पूर्व की ओर बढ़े और सारी गंगा की घाटी में फैल गए। फिर वे दक्षिण की ओर विंध्याचल तक पहुंच गए। इसके बाद में भारत के अन्य भागों में फैलें। उन्होने यहाँ अनार्य से वैवाहिक संबंध किए। इस प्रकार जिस भारतीय संस्कृति का विकास हुआ उसमें आर्य व अनार्य संस्कृतियों का समन्वय हुआ।

ऋग्वैदिक काल में सामाजिक संगठन की न्यूनतम इकाई परिवार था। परिवार पितृसत्तात्मक होता है। उत्तरवैदिककाल आते–आते समाज स्पष्टतः वर्ण व्यवस्था पर आधारित होगया तथा तारियों की स्थिति पहले की अपेक्षा ठप हो गयी।

आर्य प्रारंभ में छोटे–छोटे जनों में बटे हुये थे जो आपस में लड़ते रहते थें। कालांतर मं छोटे–छोटे राज्य स्थापित हो गए। इसमें कुछ में राजा और कुछ में अभिजात वर्ग के व्यक्ति शासन चलाते थे। छठी शती ई.पू. में ये राज्य बडे राज्यों मे परिणत हो गए, इनमें कुछ राजतंत्र और कुछ गणराज्य थें। ये सोलह राज्य महाजनपद कहलाते थे। इस समय मगध (दक्षिण बिहार) का प्रदेश बहुत महत्वपूर्ण हो गया। कुछ दिनों पश्चात् मगध इतना शक्तिशाली हो गया कि उसने साम्राज्य का रूप धारण कर लिया। इसी समय ईरानियों ने भारत पर आक्रमण किया। फलस्वरूप इन दोनों देशो में घनिष्ठ राजनैतिक व सांस्कृतिक संबंध स्थापित हो गया।

3

4-4 Hkkjrh; bfrgkl dh izeq[k ?kVuk,a ¼d½ izeq[k jktoa'k ¼[k½ mRrj ,oa nf{k.k Hkkjr ds izeq[k jktoa'k%&

मगध के राजा बिम्बिसार और अजातशत्रु ने अपनी शक्ति बढाने के लिये अन्य राज्यों से संघर्ष किया। चौथी सदी ई.पू. में नंद वंश ने मगध में राज किया। उनकी राजधानी पाटलिपुत्र थी जिसे

आजकल पटना कहते है। चौथी सदी ई.पू. के अंतिम चरण में नंद वंश के राजाओं को सिंहासन से हटाकर मौर्य वंश के राजाओं ने मगध में शासन किया। इसके दो कारण थें, एक तो सिकन्दर के आक्रमण के कारण छोटे राज्यों की शक्ति कम हो गई थी, दूसरा ईरानी साम्राज्य का पतन हो गया था। चंद्रगुप्त मौर्य ने इस अव्यवस्थित परिस्थिति का लाभ उठाया और अपने मंत्री कौटिल्य की सहायता से भारत में पहले सबसे बडे साम्राज्य की स्थापना की। चंद्रगुप्त मौर्य तथा उसके दो महान उत्तराधिकारियों बिंदुसार तथा अशोक के शासनकाल में सुदूर दक्षिण भाग के सिवाय लगभग संपूर्ण भारत मौर्य साम्राज्य के अन्तर्गत आ गया। सिंकदर के उत्तराधिकारी सैल्यूकस की पराजय के पश्चात् एरिया आरकोशिया और परोपेनिसदई के प्रदेश भी साम्राज्य के अंग बन गए। मौर्य साम्राज्य का अधिकतम विस्तार मानचित्र विस्तार में दिखाया गया है।

मौर्य काल (322 से 184 ई.पू.) में भारतीय जनता के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन में अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। बौद्व धर्म जिसका उदय पहले ही हो गया था।, इस काल सर्वत्र फैला। यही इस काल की सबसे महत्वपूर्ण घटना थी।

अशोक के राज्य काल के पश्चात् मौर्य साम्राज्य का पतन होने लगा। इस समय बहुत छोटे–छोटे राज्य स्थापित हो गए और विदेशियों के आक्रमण हुए। विदेशियों में सबसे पहले यूनानियों के आक्रमण हुए जो बैक्ट्रिया के शासक थे। यूनानियों ने पंजाब और सिंधु के कुछ भागों पर अधिकार कर लिया। यूनानी संपर्क का भारतीय संस्कृति पर स्थाई प्रभाव पडा। कला में गंधार शैली का विकास इसी संपर्क का परिणाम था। मीनाडर ने दूसरी सदी ई.पू. में राज किया। वह बौद्व धर्म का अनुयायी हो गया था। प्रसिद्व दार्शनिक द्वारा दिए गए उत्तरों के वर्णन में मिलता है।

यूनानियों के आक्रमण के बाद शकों के आक्रमण हुए जिन्होंनें बैक्ट्रिया के यूनान राज्य को समाप्त कर पश्चिमी भारत में मालवा तक अधिकार कर लिया। एक शक राजा रूद्रदमन था जो शिव का उपासक था, जैसा कि उसके नाम से पता चलता है। उसने सौराष्ट्र में सिचाई के लिये महत्वपूर्ण व्यवस्था की। दूसरे आक्रमणकारियों की भांति शकों ने भी भारतीय संस्कृति को अपना लिया।

मध्य एशिया से आने वाले आक्रमणकारियों में कुषाण भी थे जो ईसा की पहली सदी में आए। कुषाण राजाओं में सबसे महान् कनिष्क था। कुछ इतिहासकारों का मत है कि 78 ई. में उसी ने शक संवत् का प्रारंभ किया। कनिष्क ने भारत से मध्य एरिशा तक फैले हुए अपने विस्तृत साम्राज्य में पुरूषपुर (पेशावर) को राजधानी बनाकर लगभग 40 वर्ष तक राज्य किया। कनिष्क के साम्राज्य के परिणामस्वरूप ईरान, यूनान और रोम की संस्कृतियों के कुछ तत्व भारतीय संस्कृति के अंग बन गए। इसके कारण भारत और अन्य देशों बौद्व धर्म की महायान शाखा के प्रसार में योग दिया। उसी के कारण बौद्व धर्म का इस काल मे मध्य एशिया प्रसार में प्रचार हुआ और वहाँ से यह चीन, कोरिया और जापान पहुँचा। तीसरी सदी ईसवी में कुषाण साम्राज्य का पतन हो गया।

ई.पू. तीसरी शताब्दी के दौरान दक्षिण भारत में तीन राज्य थे। पाण्ड्य अपनी राजधानी मदुरा से भारत के सुदूर दक्षिण और दक्षिण–पूर्व भागों पर शासन करते थे। चोल कांरोमंडल तट पर शासन करते

थे। वर्तमान केरल के अधिकांश भाग में चेरों का शासन था। दक्कन और मध्य भारत में मौर्यो के बाद सबसे महत्वपूर्ण शासन सातवाहनों का था। गौततीपुत्र शातकर्णी के राज्यकाल (106 ई. से 130 ई.) में सातवाहन पतन वाकाटक साम्राज्य के उदय होने पर हुआ। किन्तु सातवाहन काल सांस्कृतिक परंपरा राष्ट्रकूटों, चालुक्यों और पल्लवों के राज्यकाल में चलती रहीं। पल्लव राज्य की स्थापना तीसरी शती ई. में हुई और उसी राजधानी कांची थी। इसी काल में उडीसा में खारवेल नाम का शक्तिशाली राजा हुआ।

इन राज्यों में भारत की सांस्कृतिक एकता का विकास हुआ। इस समय कांची सांस्कृतिक शिक्षा तथा बौद्ध और जैन धर्मो का मुख्य केन्द्र था। अजंता और एलोरा के गुहा–मंदिरों और चित्रों का बनाना भी सातवाहन काल मे ंप्रारंभ हुआ। इन राज्यों ने रोम के साम्राज्य, दक्षिण–पूर्व एशिया, पश्चिमी एशिया और चीन के साथ व्यापारिक संबंध का भी विकास किया। इस काल में विदेशी व्यापार का भारतीयों के आर्थिक जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पडा। चेन्नई के निकट आरिक मेडु रोम के व्यापार का मुख्य केन्द्र था। वहाँ जो उत्खनन हुए उससे प्राचीन काल में भारत और रोम के संबंधों पर पर्याप्त प्रकाश के परिणामस्वरूप वहाँ अनेक भारतीय बस्तियों भी बनी जिन्होने उन देशों के राजनीतिक और सांस्कृतिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

जब दक्षिण भारत में यह विकास हो रहा था, उस समय उत्तर भारत में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन हो रहे थे। चौथी शताब्दी के प्रारंभ में चंद्रगुप्त प्रथम ने मगध में गुप्त साम्राज्य की स्थापना की। उसके पुत्र समुद्रगुप्त ने प्रायः समस्त भारत पर आक्रमण किया और अपना प्रभुत्व स्थापित करने के लिए अश्वमेध यज्ञ किया। उसके उत्तराधिकारी चंद्रगुप्त द्वितीय ने और विजयें प्राप्त की। उसके राज्य के पश्चात् गुप्त साम्राज्य का पतन होने लगा। यद्यपि गुप्त साम्राज्य इतना विस्तृत न था जितना कि मौर्य साम्राज्य तथापि गुप्तकाल में प्राचीन भारतीय संस्कृति अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंच गई। गुप्त साम्राज्य के पतन का प्रमुख कारण पांचवी शताब्दी ईसवी में हूणों के आक्रमण थे। छठी शताब्दी के आते–आतें यह राज्य समाप्त हो चुका था।

गुप्त साम्राज्य के पतन के पश्चात् भारत फिर छोटे–छोटे राज्यों में बंट गया, जो सर्वशक्तिशाली बनने के लिए आपस में लड़ते रहते थे। दिल्ली के निकट थानेश्वर के राजा हर्ष ने उत्तर भारत के बडे भाग पर अधिकार करके इसे संगठित कर लिया किन्तु वह दक्षिण के चालुक्य राजाओं की बराबरी न कर सका। हर्ष की मृत्यु के पश्चात् उत्तर भारत में अनेक छोटे–छोटे राजपूत राज्य स्थापित हो गए। यद्यपि गुप्त राजाओं के बाद अनेक छोटे–छोटे राज्य स्थापित हुए तथापि इस काल में भी सांस्कृतिक उन्नति होती रही।

4-5 ikphu Hkkjr e i'kklu

वैदिक काल में अधिकतर राज्यों में राजतंत्र प्रणाली थी। राजा निरंकुश शासन नहीं होता था क्योंकि राज्य का स्वरूप अब भी जन–जातीय था।

जब राज्य बडे हो गए तो राजा की शक्ति भी बढ गई, किन्तु वह निरंकुश नही हुआ। राजा धर्म का सेवक समझा जाता था। धर्म का अभिप्राय उन सभी नियमों से था जिनका मूल स्त्रोत ईश्वरीय समझा जाता था और जो रीति–रिवाजों और परंपराओं पर आधारित होते थे।

जब साम्राज्य की स्थापना हुई, भारत की राजनीतिक व्यवस्था में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। गणराज्यों में पहले अधिकतर अभिजात वर्ग के व्यक्ति शासन चलाते थें। नये गणराज्य साम्राज्यों के युग में नष्ट हो गए। राजा की शक्ति और विशेषाधिकारों में वृद्वि हो गई वह शासन का सर्वोच्च अधिकारी था और समस्त शासन पद्वति का स्वयं संचालन करता था। राज्य के उच्च पदाधिकारियों की नियुक्ति भी वह स्चयं करता था। राजा के अधिकारों पर अब किसी प्रकार का अंकुश न रहा। इसी काल में संसार के विजेता अर्थात् चक्रवर्ती राजा का आदर्श भी विकसित हुआ। परंतु इस आदर्श में विश्वविजय की भावना ही निहित न थी इसका अर्थ यह थी था चक्रवर्ती राजा धर्म के अनुसार राज्य शासन चलाए।

मौर्यकाल में लगभग समस्त भारत का शासन एक राजा चलाता था। प्रांतो में जो राज्यपाल शासन चलाते वे भी साधारणतया राजकुमार होते थे। राज्यपाल की सहायता के लिए अनेक अधिकारियों का अधिक्रम था। राज्य का उददे्श्य साम्राज्य की रक्षा के लिए सुव्यवस्थित शासन चलाना ही न था, अपितु समाज–कल्याण के कार्य करना भी था। चाणक्य के अर्थशास्त्र में राजा का जो आदर्श लिखा है उसके अनुसार ''प्रजा के सुख में राजा का सुख और और प्रजा के कल्याण में उसका कल्याण निहित है।''

कुषाण का राज्य विस्तृत था। उन्होने ऐसी शासन–व्यवस्था विकसित की जिसमें प्रांतो की प्रायः स्वायत्त इकाईयां थी। वे प्रांत मिलकर एक संधीय राज्य बनाते थे जिसमें केन्द्र की शक्ति बहुत कम हो गई।

कुषाण राजा अपने को ''राजाधिराज'' कहते थे। सातवाहन राज्य में मौर्य की केन्द्र प्रधान शासन पद्वति चलती रही क्योंकि उनके प्रदेश पहले मौर्य साम्राज्य के भाग रह चुके थे। गुप्त शासन–पद्वति प्रांतो के माध्यम से पूर्णतया सुव्यवस्थित थी।

राजंवशो में बार–बार परिवर्तनों से ऊपरी प्रशासनिक व्यवस्था प्रभावित हुई परंतु गांव का प्रशासन ज्यों का त्यों बना रहा। ग्राम स्वायत्त इकाई के रूप में विकसित हुए। गांव के मुखिया और बड़े– बूढों को गांव मे शांति और व्यवस्था बनाए रखने के लिए पूर्ण अधिकार मिले थे। वे लोक–कल्याण के कार्य करते, स्थानीय पूर्ण अधिकार मिले थे। वे लोक–कल्याण के कार्य करते, स्थानीय झगडे निपटाने और राज्य के करों को इकट्ठा करते थे।

4-6 lkekftd vkj vkfFkd fLFkfr

आर्यों का मुख्य व्यवसाय पशु–पालन था। पशु ही उनके मुख्य धन थे। मनुष्यों का मूल्य भी पशुओ में आंका जाता था किन्तु धीरे–धीरे कृषि एक महत्वपूर्ण व्यवसाय हो गया। वस्तुतः ज्यों–ज्यों वे

गंगा की घाटी में फैले त्यों–त्यों उस क्षेत्र में कृषि का विस्तार हुआ। विस्तृत जंगलों को काटकर साफ किया गया। लोहे के उपयोग ने भूमि को खेती योग्य बना दिया।

कृषि के साथ–साथ अन्य व्यवसायों का भी विकास हुआ। गांव के जीवन और अर्थतंत्र में बढ़ई के कार्य का विशेष महत्व था, इसलिए बढ़ई का बडा आदर किया जाता था। तांबे, कांसें और लोहें का काम करने वालों का भी महत्व था। कुम्हार, चमडा रंगने वाले, जुलाहे आदि अन्य बहुंत से कारीगर भी गांव में थे। जब इन व्यवसायों का विकास हुआ तो कुछ व्यक्ति इन कामों में दूसरों की अपेक्षा अधिक कुशल हो गए और उनकी बनाई गई वस्तुओं की मांग गांव से बाहर भी होने लगी। इस प्रकार व्यापार का प्रारंभ हुआ।

600 ई.पू. के लगभग व्यापार और उधोगों के केन्द्र के आस–पास अनेक नगर स्थापित हुए। इनमें कुछ राजगृह, चंपा, काशी, कौशांबी, तक्षशिला, भृगृकच्छ और वैशाली थे। ईरानी, यूनानी और अन्य विदेशियों के आक्रमणों के फलस्वरूप पश्चिमी देशों और मध्य एशिया के साथ भारत के व्यापार में वृद्वि हुई। भारतीयों ने जब दक्षिण–पूर्व के देशों में उपनिवेश बनाए तो उन देशों के साथ भी व्यापार को प्रोत्साहन मिला जैसे अनेक उधोगो का विकास हुआ। जो कारीगर किसी विशेष प्रकार की वस्तुएं बनाते थें, उन्होने अपनी श्रेणियां बना ली थीं। ये श्रेणियां ही कालांतर मे उप–जातियां बन गई। बाद में दक्षिण भारत के राज्यों और रोम साम्राज्य के बीच व्यापारिक संबंधों का विकास हुआ।

गुप्त साम्राज्य के पतन और पश्चिमी रोम सामाज्य के छिन्न–छिन्न होने के पश्चात रोम के साथ व्यापार कम हो गया। किन्तु दक्षिण–पूर्व एशिया के देशों और अफ्रीका के पूर्वी तट से समुद्री व्यापार प्रारंभ हुआ भावना पलने लगी कि विदेश यात्रा से मनुष्य अपवित्र हो जाता है और जो अपनी जातीय पवित्रता बचाये रखना चाहते है उन्हें ऐसी यात्रा नहीं करनी चाहिए। इस भावना के कारण व्यापार की कुछ हानि अवश्य हुई होगी।

प्राचीन काल से अब तक भारतीय सामाजिक व्यवस्था की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता जाति प्रथा रही हैं। प्रारंभ में आर्यो ने अपना विभाजन क्षत्रिय (योद्वा), ब्राहाण (पुरोहित) और वैश्य (कृषक) वर्णों में कर लिया। भारत के अनार्य निवासियों को आर्य लोग 'दास' कहते थे। इन दासों की गणना शूद्र वर्ण में की गई। बाद में आर्य तथा दासों के विवाहों से उत्पन्न संतान भी शूद्र वर्ण में रखी गई है।

आरंभ में ब्राहाण और क्षत्रियों का समाज में समान स्तर था, बाद में जैसे–जैसे कर्मकांड का महत्व बढ़ा, कर्मकांड करने वाले ब्राम्हणों का भी समाज में स्तर ऊंचा हो गया। वैश्यों में से बहुत से खेती करना छोड़ जमींदार और व्यापारी हो गए। बाद में कृषि कार्य अधिकतर शूद्रों के द्वारा किया जाने लगा।

वैदिक साहित्य में भी समाज का जातियों में विभाजन धर्मानुकूल माना गया है। वैदिक साहित्य के अनुसार ब्राम्हण की उत्पत्ति सृष्टा (ब्रह्मा) के सिर से, क्षत्रिय की उसकी भुजाओं से, वैश्य की उसकी जंघाओं से और शूद्र की उत्पत्ति उसके पैरों से हुई। बाद में लिखे गये गृह–सूत्रों ने जाति प्रथा को पहले से भी कड़ा बना दिया। धर्मशास्त्रों ने इस कठोरता और विषमता की प्रक्रिया को और भी आगे

बढ़ाया। विभिन्न जातियों के लिए अलग–अलग नियम बनाए गए। अपराधी को जाति के अनुसार एक ही अपराध के लिए कम या अधिक दंड दिया जाता था।

धर्मशास्त्रों में जाति प्रथा को पूर्ण रूप से आध्यात्मिक पवित्रता का अंग मान लिया गया। शूद्रों के साथ व्यवहार करने के संबंध में बहुत कठोर नियम बनाए गए। किन्तु कुछ बातों में बहुत कट्टरता नहीं आई थी। उच्च वर्ग का पुरूष निम्न वर्ण की स्त्री से विवाह कर सकता था किन्तु कुछ समय बाद यह प्रथा भी लुप्त हो गई। जाति के बहिष्कृत व्यक्तियों का एक अलग वर्ण बन गया। चीनी यात्री फाह्यान गुप्तकाल में भारत आया था, उसने इसके विषय में लिखा है। वे गांव के एक अलग भाग में रहते थे और उनके दिख जाने मात्र से कुछ ऊंची जातियों के लोग अपने को अपवित्र मानते थे। उनकी दशा शूद्रों की दशा में भी बहुत गिरी हुई थी। चार जातियों वाली इस व्यवस्था में भी प्रत्येक जाति में अनेक उप–जातियां थी। उप–जातियां व्यवसायों पर आधारित थी और पीढ़ी दर पीढ़ी चलती थी। हिन्दू समाज में इन उप जातियों का महत्व बाद में बहुत बढ़ गया क्योंकि इन्हीं के द्वारा व्यवसाय और विवाह संबंधी नियम निर्धारित किए जाते थे।

जैन और बौद्ध धर्मों के उदय और आक्रमणकारी विदेशियों के भारत में बस जाने के कारण जाति प्रथा के नियमों में कुछ ढील आ गई किंतु दसवीं शताब्दी में तुर्कों के आक्रमण के समय जाति प्रथा के नियम पूर्ण कठोरता से लागू किए जाते थे। कालांतर में कुछ परिवर्तन हुए किन्तु जाति प्रथा के टूटने की प्रक्रिया केवल आधुनिक काल में प्रारंभ हुई।

जाति प्रथा ने प्राचीन भारतीय समाज को स्थायित्व प्रदान किया। उसने देशी और विदेशी–दोनों तत्वों का समावेश प्राचीन भारतीय समाज में आसानी से कर दिया क्योंकि उसके लिए यहां के जाति अधिक्रम में स्थान था। यह उल्लेखनीय है कि अनेक प्राचीन राज्यों में जो कठोर शोषण उन दिनों चल रहा था, जैसे कि गुलामी की प्रथा, वह प्राचीन भारत में नहीं थी।

प्राचीन काल में भारतीय समाज पितृ सत्तात्मक सिद्धांत पर आधारित था। सबसे बड़ी उम्र वाला पुरूष ही परिवार का मुखिया होता था। पुत्र, पुत्रवधु और उनके बालक अपने माता–पिता के साथ रहते थे। साधारणतया लोग एक ही विवाह करते थे। वैसे बहु विवाह की अनुमति थी और राजा तथा धनी व्यक्ति कई पत्नियां रखते थे। कुछ ऐसे उदाहरण भी मिलते है जिनमें एक स्त्री के कई पति होते थे। दक्षिण भारत में कुछ समाज मातृ सत्तात्मक थे।

प्रत्येक व्यक्ति का जीवन आश्रम–व्यवस्था पर आधारित था। जीवन को चार आश्रमों में बांटा गया था– (1) ब्रह्मचर्य– वह काल जब विद्यार्थी अध्यापक से धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन करता था। (2) गृहस्थ– वह काल जब व्यक्ति विवाहित जीवन बिताता था। (3) वानप्रस्थ– जब व्यक्ति त्याग का जीवन बिताता और गृहस्थी के बंधनों के मुक्त होने का प्रयत्न करता था। (4) सन्यास– जब मनुष्य अपने परिवार और समाज को छोड़कर तपस्वी के रूप में पूर्ण आत्मसंयम का जीवन बिताता था। यह आश्रम व्यवस्था निम्न वर्ग पर लागू नहीं की जाती थी क्योंकि उन्हें धार्मिक ग्रंथ पढ़ने का अधिकार न था। अन्य सबके लिए यह जीवन का नियम था।

स्त्रियां पैतृक संपत्ति की स्वामिनी नहीं हो सकती थी। वैसे बहुत सी बातों में पूर्ण स्वतंत्रता थी। विधवा को पुनर्विवाह करने का अधिकार था। साधारणतया वह देवर के साथ विवाह कर सकती थी। कुछ बातों में स्त्रियों का स्तर, बाद में शूद्रों के समान हो गया। परिवार में पुत्रियों की अपेक्षा पुत्रों का अधिक मान होने लगा।

4-7 /ke vkj n'ku

प्राचीन काल में अनेक भारतीय धर्मों और दर्शन प्रणालियों का विकास हुआ। हड़प्पा संस्कृति में धार्मिक विश्वासों, आर्यों तथा आर्येत्तर लोगों के धार्मिक विश्वास का समन्वय होने पर विविध प्रकार के धार्मिक विश्वासों तथा प्रथाओं का विकास हुआ जो सब मिलाकर हिन्दू धर्म का अंग माने जाते है। आर्यों के धार्मिक विश्वासों और प्रथाओं का वर्णन वेदों में है। प्रकृति के विभिन्न रूपों को देवता मानकर पूजा जाता था, किन्तु कोई मंदिर नहीं थे। देवताओं को प्रसन्न करने के लिए आर्य यज्ञ करते थे। यज्ञ के दौरान किए जाने वाले कर्मकांड की जटिल प्रणाली का विकास हुआ।

इस काल में दर्शन की विभिन्न शाखाओं का भी उद्भव हुआ। इनमें से वेदांत, मीमांसा, सांख्य, योग्य, न्याय और वैशेषिक कालक्रम से भारतीय दर्शन की छः शाखाएं बन गई। वेदांत दर्शन उपनिषदों पर आधारित था। उसने एक लम्बे समय तक भारतीय चिंतन को बहुत प्रभावित किया। उसने अनेक सूक्ष्म विचारों का विवेचन किया जो विश्व के स्वरूप, आत्मा के अस्तित्व और विश्व और आत्मा के संबंधों के बारे में थे। भारतीय दर्शन की कुछ शाखाएं अनीश्वरवादी थी।

ईसा पूर्व छठी शताब्दी के आस–पास नई चिंतन धाराओं ने जन्म लिया। वे यज्ञ और वैदिक धर्म के अन्य कर्मकाण्डों कृत्यों के विरूद्ध थे। वैदिक कर्मकाण्ड में अब पहले जैसी सादगी नहीं रह गई थी। इनमें जैन धर्म और बौद्ध धर्म अधिक सशक्त थे और प्रमुख धर्मों के रूप में विकसित हो चुके थे। भारतीय संस्कृति के विकास में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही।

4

4-8 fo'o dh egRoi.k vk|kfxd ,o jktufrd Økfr;k ¼Hkkjr d fo'k"k lnHk e½

iLrkouk &

लगभग चौदहवीं सदी से सत्रहवीं सदी तक के काल में आधुनिक विश्व की आधार शिला रखने वाले अनेक परस्पर संबंधित परिवर्तन दुनिया में हुए। इन परिवर्तनों में यूरोपीय देशों की भूमिका प्रमुख रही किन्तु इनका प्रभाव पूरी दूनिया पर पड़ा। मध्यकाल के अन्तिम वर्षों में यूरोप में जो प्रभावशाली

परिवर्तन हुए उनके फलस्वरूप सामंती समाज व्यवस्था कमजोर पड़ी और उसका तेजी से विघटन होने लगा। साथ ही यूरोप में नवीन सामाजिक व्यवस्था का निर्माण होने लगा। इस व्यवस्था ने जीवन के सभी पहलूओं को प्रभावित किया। इस प्रकार आधुनिक युग का आरंभ हुआ।

प्रस्तुत उपकाई दो के अन्तर्गत औद्योगिक विश्व की महत्वपूर्ण एवं राजनैतिक क्रांतियां (भारत के विशेष संदर्भ में) पर चर्चा की जाएगी।

अधिक लाभ कमाने के लिए कम लागत पर अधिक माल तैयार करने की आकांक्षा के कारण औद्योगिक क्रांति शुरू हुई और पूंजीवाद का और अधिक विकास हुआ। इंग्लैण्ड में औद्योगिक क्रांति की शुरूआत लगभग सन् 1757 में हो चुकी थी। इसके बाद ही माल और समान के उत्पादन में मनुष्यों और जानवरों द्वारा किए जाने वाले काम का कुछ भाग मशीनें करने लगी। इसीलिए हम यह कहते है कि औद्योगिक क्रांति 'मशीन युग' की शुरूआत थी। इसमें कोई संदेह नहीं कि सन 1750 से पहले भी बहुत तरह की मशीनों का इस्तेमाल किया जाता था। हल, छापने की मशीन (प्रेस), तकली–चर्खा जैसे कुछ थोड़े से नामों का उललेख यहां किया जा सकता है। सैकड़ों वर्ष की अवधि के दौरान हर सभ्यता अपने पुराने तकनीकी कौशल को अधिक पूर्णता प्रदान करने की और नए के विकास की लगातार कोशिश करती रही है। लेकिन सन 1750 के बाद बहुत तेजी से नए–नए आविष्कार किए गए और इनका स्वरूप ऐसा था कि इनके कारण लोगों की जिंदगी में बहुत तेजी से बदलाव आया। औद्योगिक क्रांति ने दुनिया भर में जीवन पद्धति और विचार पद्धति में परिवर्तन कर दिया।

घरेलू पद्धति के आते ही श्रेणी पद्धति समाप्त हो गई। अठारहवीं शताब्दी में घरेलू पद्धति पुरानी पड़ गई। इसकी जगह एक नई व्यवस्था अस्तित्व में आने लगी जिसको कारखाना पद्धति कहा जाता हे। साधारण औजारों, पशुओं और हाथ की जगह क्रमशः नई मशीनों और भाप की शक्ति का उपयोग होने लगा। कई नए नगरों का आविर्भाव हुआ। कारीगर और बेदखल किसान काम के लिए नगरों में पहुंचे। अब उत्पादन कारखानों में होने लगा (पहले यह घर की कार्यशाला में होता था) यह उत्पादन मशीनों से हो रहा था (इसके पहले मशीनों की जगह साधारण औजार काम में लाए जाते थे) उत्पादन के साधनों के मालिक और प्रबंधक पूंजीपति लोग थे, ऐसे लोग जिनके पास अधिक उत्पादन में लगाने के लिये पैसा था। उत्पादन के लिए मजदूरों को जिन चीजों की आवश्यकता होती थी उनकी व्यवस्था पूंजीपति करते थे। इन सारे मजदूरों को पूंजीपतियों ने एक ही जगह एकत्र किया। सब चीजों पर कारखाने के मालिक का अधिकार था, जो माल बनता था उसका भी वही स्वामी था। मजदूरों को मजदूरी मिलती थी। इस व्यवस्था को कारखाना पद्धति कहा जाता है। इसी पद्धति के चलते औद्योगिक क्रांति हुई। इस अवस्था में आकर उसके स्वरूप में परिवर्तन हुआ और वह औद्योगिक पूंजीवाद में रूपांतरित हो गया।

4-9 bXy.M e Økfr dk ikjHk&

अठारहवीं शताब्दी में इंग्लैण्ड में औद्योगिक क्रांति के लिए परिस्थितियां बहुत अनुकूल थीं। इंग्लैण्ड के पास लोहा और कोयला जैसे प्राकृतिक संसाधन भी काफी मात्रा में विद्यमान थे, जो उद्योगों के विकास के लिए आवश्यक थे। लोहा और कोयला दोनों आसपास ही उपलब्ध था। इससे इंग्लैण्ड बहुत सी ऐसी कठिनाइयों से बच गया जिनका सामना अन्य देशों को करना पड़ा। इंग्लैण्ड के जहाज उद्योग का भी बहुत विकास हो चुका था, इसलिए उसे वस्तुओं के लाने, ले जाने में भी कठिनाई नहीं हुई।

उस समय किसी अन्य देश में ये सब सुविधाएं प्राप्त नहीं थी। कुछ देशों में पूंजी की कमी थी या प्राकृतिक संसाधन नहीं थे और कुछ देशों में राजनीतिक शासन पद्धति अनुकूल नहीं थी। उपर्युक्त कारणों से इंग्लैण्ड में औद्योगिक क्रांति का आरंभ होना स्वाभाविक ही था।

diMk m|kx e Økfr&

अठारहवीं शताब्दी में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के समय सूती कपड़ा भारत से इंग्लैण्ड आता था। शीघ्र ही इसका परिणाम यह हुआ कि इंग्लैण्ड में कालीकेट के कपड़े, ढाका की मलमल, और कश्मीर के शालों की मांग बहुतबढ़ गई। तब इंग्लैण्ड के बुद्धिमान व्यापारी भारत से रूई मंगाने लगे और उससे कपड़ा तैयार करने लगे। जब उनके मजदूर, जो पुराने ढंग से चरखे और हाथ करघे काम में लाते थे, बढ़ती हुई मांग को पूरा न कर सके, तब कताई और बुनाई तेजी से करने के लिए अनेक आविष्कार किए गए।

हारग्रीब्ज ने एक मशीन का आविष्कार किया, जिससे तेजी से सूत कातना संभव हो गया। आर्कराइट ने इस मशीन में कुछ ऐसे परिवर्तन किए जिससे इसे पानी की शक्तिसे चलाना संभव हो गया। कुछ समय बाद क्रापटन ने ऐसी मशीन का आविष्कार किया जिमें हारग्रीब्ज और आर्कराईट दोनों को मशीनों के लाभ मिलने लगे। केवल इन्हीं तीन आविष्कारों के कारण इंग्लैण्ड के कारखाने इतना बारीक सूत इतने कम खर्च से बना सके जितना किसी अन्य देश में या पुरानी तकनीकों से बनाना संभव नहीं था। सन 1785 ई. में आर्कराइट ने शक्ति से चलने वाले करघे का आविष्कार किया। इस मशीन को घोड़े और बैल चला सकते थे। बाद में जब कारखाने नदियों या नहरों के निकट स्थापित किए गए तब इस मशीन को चलाने के लिए जलशक्ति का उपयोग किया गया।

परंतु अब भी पर्याप्त मात्रा में रूई उपलब्ध न थी, क्योंकि कपास को ओट कर रूई और बिनोले को अलग करने की प्रक्रिया काफी धीमी थी। एक मजदूर दिन भर में पांच या छः पौंड कपास हाथ से साफ कर पाता था। सन 1793 में एली हिवटनी नाम के एक अमरीकी ने कपास ओटने की मशीन का

आविष्कार किया। इस मशीन की मदद से उतने ही समय में हाथ की तुलना में तीन सौ गुना ज्यादा मात्रा में कपास ओट कर रूई तैयार की जा सकती थी।

Hkki l pyu okyk btu &

सन 1760 में इंग्लैण्ड ने लगभग 20 लाख किलोग्राम कपास का आयात किया, सन 1815 में 5 करोड़ किलोग्राम, सन 1840 में 25 करोड़ किलोग्राम कपास आयात की गई। कपास के आयात में इतनी पर्याप्त बढ़ोत्तरी संभव नहीं हुई होती, यदि सन 1769 में जेम्स वाट भाप के इंजन का आविष्कार न करते। इस मशीन के ही कारण इतनी बड़ी मात्रा में माल का उत्पादन संभव हो सका। मनुष्य के हाथ या पांव से या जानवरों की मददसे या पानी की मदद से चलने वाली मशीनें भाप के इंजन के मुकाबले में बहुत तुच्छ थी। इस आविष्कार ने उत्पादन के क्षेत्र में क्रांति कर दी।

भाप की शक्ति के उपलब्ध होने पर अधिकाधिक यंत्रों की मांग हुई। इंग्लैण्ड के पास पर्याप्त मात्रा में मशीन बनाने के लिए लोहा और कोयला था। लेकिन लोहे को उपयोगी बनाने के लिए नए और सस्त तरीके की तलाश थी। धमन भट्‌टी के विकास और बाद में घटिया किस्म के लोहे को इस्पात में बदलने की पद्धति के कारण ब्रिटिश उद्योग सस्ता इस्पात बनाने में सफल हुआ। इस प्रकार उनको अधिक संख्या में और अच्छी मशीनें मिलने लगी।

4-10 ;krk;kr e l/kkj &

सन् 1814 में जार्ज स्टीफेंसन ने भाप से चलने वाले रेल इंजन का विकास किया। इस इंजन का प्रयोग खानों से बंदरगाहोंतक रेलमार्ग से कोयले को ले जाने के लिए किया गया। सन 1830 में पहली रेलगाड़ी यात्रियों तथा सामान को लेकर लिवरपूल से मैनचेस्टर आने जाने लगी। इस घटना के बाद अमेरिका और इंग्लैण्ड में बड़ी मात्रा में रेल मार्ग के निर्माण की एक लहर सी चली। लार्ड डलहौजी के समय में 1853 ई. में भारत में पहली रेल लाइन बिछाई गई।

कच्चे माल और कारखाने में बने माल के ढोने की जरूरत के कारण इंग्लैण्ड और दूसरे देशों में नहरें बनाई गई और सड़कों का विकास किया। पक्की सड़कें बनाने की प्रणाली मैकऐडम ने निकाली। जल मार्गों से यातायात की सुविधाओं को बढ़ाने के लिए जो अपेक्षाकृत काफी सस्ता पड़ा था, इंग्लैण्ड ने नदियों और झीलों को नहरों से जोड़ना आरंभ किया। नहर स्टीमर का आविष्कार हुआ।

यातायात के साधनों में सुधार होने से मनुष्य, समान और संदेश, सबको लाने ले जाने में बहुत आसानी हो गई। रालैड हिल ने पेनी पोस्ट का विचार सरकार के सामने रखा। इससे पत्रों द्वारा जल्दी से और सस्ती दरों पर संदेश भेजना संभव हो गया। यह पद्धति उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में ही इंग्लैण्ड में काम में लाई जाने लगी। थोड़े दिनों बाद भारत तथा अन्य देशों ने इस पद्धति को अपना लिया। इस पद्धति के द्वारा मनुष्य अपने पत्र देश के अंदर किसी भी स्थान से किसी भी स्थान तक एक सी सस्ती दर पर भेज सकते थे। इसमें स्थानों की दूरी के अनुसार डाक खर्च बहुत ज्यादा नहीं लिया

जाता था। व्यावसायिक प्रतिष्ठानों ने अपने खरीद–बिक्री के कार्य में चाहे वे दूर के थे चाहे निकट के, पेनी पोस्ट का उपयोग करके बहुत फायदा उठाया।

4-11 —f"k e| Økfr&

कृषि में भी क्रांति हुई। यह स्वाभाविक ही था कि अधिक अनाज उपजाने के लिए खेती करने के तरीकों में परिवर्तन हो। खेती ने नए औजार, जैसे जमीन तोड़ने के लिए इस्पात का हल और हेंगी, बीज बोने के लिए नाली खोदने की मशीन बनाई गई, और कुदाली का स्थान घोड़े से खींची जाने वाली मशीन ने ले लिया। फसल काटने और बोनी करने के लिए भी मशीनों का आविष्कार किया गया।

किसान जमीन में पहले की अपेक्षा अधिक मात्रा में खाद का प्रयोग करने लगे और भूमि की उत्पादकता को अदल–बदल कर बोने लगे। इस पद्धति के अन्तर्गत जमीन के किसी टुकड़े पर फसलें अदल–बदल कर लगाई जाती है, जैसे कि पहले गेहूं और जौ, फिर तिनपतिया घास या मक्का, ज्वार फिर गेहूं। इसमें मध्यकाल की भांति खेत को हर तीसरे वर्ष बिना बोए नहीं छोडना पड़ता। फसल बदलना बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुआ है, क्योंकि भिन्न–भिन्न फसलें भूमि से भिन्न–भिन्न प्रकार की खुराक लेती है।

इंग्लैण्ड के भूस्वामी भी अपने फार्मों का आकार बढ़ाने लगे थे। 'बाड़ा आन्दोलन' के फलस्वरूप पहले ही बहुत सी भूमि की चकबंदी हो चुकी थी। जमींदारों ने गांव में तितर–बितर फैली हुई अपनी सारी भूमि की पट्टियों की चकबंदी इस प्रकार की कि उनकी सारी भूमि एक स्थान पर इकठ्ठी हो जाए। ऐसा करने में बड़े जमींदारों ने बेईमानी करके छोटे किसानों की छोटी टुकड़ियां भी अपनी भूमि मे मिला ली थी। जब उनके पास जीवन निर्वाह का कोई अन्य साधन हीं रहा तब वे नए औद्योगिक कस्बों और शहरों में चले गए। वहां कारखाने के मालिक जो भी मजदूरी देते उसी को उन्हें स्वीकार करना पड़ता। इस प्रकार उद्योगों की तो उन्नति हुई, किन्तु छोटे किसानों का शोषण हुआ।

4-12 vk|kfxd Økfr dk i|lkj &

मशीन का प्रयोग होने के लगभग पचास वर्ष बाद इंग्लैण्ड विश्व का प्रमुख औद्योगिक राष्ट्र बन गया। उदाहरण के लिए सन 1813 ई. में इंग्लैण्ड भारत को 50000 किलोग्राम सूती कपड़ा भेजता था। सन् 1855 ई. में यह मात्रा बढ़कर 25 लाख किलोग्राम हो गई। इन्हीं वर्षों में खानों से खोदे जाने वाले कोयले की मात्रा 150 लाख टन से बढ़कर 640 लाख टन हो गई और कोयला इंग्लैण्ड द्वारा निर्यात की जाने वाली एक महत्वपूर्ण वस्तु बन गया।

Ýkl dh Økfr &

जिस समय अमरीका में स्वतंत्रता का युद्ध लड़ा जा रहा था उसी समय फ्रांस में क्रांति के बीज बोए जा रहे थे। फ्रांस की स्थिति अमरीका से बिल्कुल भिन्न थी, किन्तु वहां भी अनेक समान क्रांतिकारी

विचार जनता पर अपना प्रभाव डाल रहे थे। अमरीका के स्वाधीनता युद्ध की अपेक्षा फ्रांस की क्रांति ने संसार को अधिक प्रभावित किया। इसके कारण संसार के अनेक देशों में उथल–पुथल हुई, जिसके प्रति कोई भी देश तटस्थ नही रह सका।

4-13 Økfr dk ikjHk &

सन् 1789 ई. में जब सोलहवें लुई को धन की आवश्यकता हुई तो विवश होकर वह पुरानी सामंती सभा स्टेट्स जनरल का अधिवेशन बुलाने के लिए सहमत हो गया। 1614 ई. से इस सभा का कोई अधिवेशन नहीं हुआ था। अब लुई नए ऋण लेने और कर लगाने के लिए इस सभा की सहमति चाहता था। इस सभा में तीनों वर्गों का प्रतिनिधित्व था, किन्तु तीनों वर्ग अपने अलग–अलग अधिवेशन करते थे। 17 जून 1789 को तीसरे वर्ग के सदस्यों ने इस आधार पर कि वे जनसंख्या के 96 प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करते हैं। अपने को राष्ट्रीय सभा घोषित किया। 20 जून को जब वे अधिवेशन करने के लिए इकट्ठे हुए तो उन्होंने देखा कि जिस हाल में उनका अधिवेशन होने वाला था, उस पर शाही अंगरक्षकों का पहरा है। वे अधिवेशन करने के लिए दृढ़ संकल्प थे। इसलिए वे पास के शाही टैनिक कोर्ट में एकत्रित हुए और वहीं उन्होंने फ्रांस का संविधान बनाना प्रारंभ किया। तब लुई ने उस सभा को भंग करने का प्रयत्न किया। सेना बुला ली गई और इस बात की अफवाह फैल गई कि शीघ्र ही सभा के प्रमुख सदस्यों को बंदी बना लिया जाएगा। इससे जनता में रोष की लहर दौड़ गई और हजारों की संख्या में लोग वहां इकट्ठा होने लगे। थोड़ी देर बाद शाही अंगरक्षक भी उनसे जा मिले। 14 जुलाई को उन्होंने वैस्टील नाम के राज्य के कारागृह को घेर लिया। चार घंटे डेरा डालने के बाद वे जेल का फाटक तोड़ने में सफल हुए और उन्होंने सभी बंदियों को मुक्त कर दिया। वैस्टील कारागृह की समाप्ति निरंकुश शासन के पतन की प्रतीक थी। फ्रांस में हर वर्ष 14 जुलाई का दिन राष्ट्रीय त्यौहार के रूप में मनाया जाता है।

14 जुलाई 1789 के पश्चात सोलहवां लुई नाममात्र के लिए राजा बना रहा। राष्ट्रीय सभा के लिए अधिनियम बनाने लगी। वैस्टील के पतन के पश्चात अन्य कस्बों, गांवों और शहरों में भी क्रांति फैल गई। राष्ट्रीय सभा ने मानव और नागरिकों के अधिकारों की घोषणा को स्वीकार किया। इस घोषणा के द्वारा कानून की दृष्टि से सब व्यक्तियों की समानता, समस्त सार्वजनिक पदों पर सब नागरिकों के नियुक्ति होने का अधिकार, बिना कारण दंड देने या बंदी बनाए जाने से मुक्ति और मापण व प्रकाशन (प्रेस) की स्वतंत्रता के सिद्धांतों को स्पष्ट रूप से स्वीकार किया गया था। मध्यवर्ग के लिए सबसे महत्वपूर्ण निश्चय वे थे जिनके अनुसार कर का भार सभी वर्गों पर बराबर डालने का निश्चय किया गया और सभी को निजी संपत्ति रखने का अधिकार दिया गया। यूरोप के लिए यह क्रांतिकारी घोषणा अत्यधिक महत्व की थी। यूरोप के सभी देशों का शासन उस समय विशेषाधिकारों पर आधारित था।

4-14 : l dh Økfr &

बीसवीं सदी के प्रारंभिक वर्षों तक आते–आते यूरोप के अनके देशों में समाजवाद के विचारों पर आधारित राजनीतिक आंदोलनों का उदय हो चुका था। 1917 में रूस में एक क्रांति हुई जो इतिहास की पहली सफल समाजवादी क्रांति थी जिसने विश्व इतिहास की दिशा को प्रभावित किया।

निरंकुशतंत्र का पतन और अभिजात (उच्च) वर्ग तथा चर्च की शक्ति का विनाश रूसी क्रांति की आरंभिक उपलब्धियां थीं। दुनिया के पहले समाजवादी समाज का निर्माण इसकी दूसरी उपलब्धि थी। जार के साम्राज्य की जगह अब सोवियत समाजवादी गणतंत्र संघ (यू.एस.एस.आर.) नाम की एक नई राजसत्ता ने ले ली। रूस के क्रांतिकारी दल जो जार के अत्याचारी शासन का अंत कर जनता का शासन लाना चाहते थे। इन्हीं दलों ने सम्पूर्ण रूस में क्रांति का बिगुल बजा दिया। इस नए राज्य की नीतियों का लक्ष्य था प्रत्येक से उसकी क्षमता के अनुसार (काम) प्रत्येक को उसके काम के अनुसार (दाम) के पुराने समाजवादी आदर्श को साकार करना।

उत्पादन में निजी संपत्ति समाप्त कर दी गई तथा उत्पादन की प्रणाली को निजी मुनाफे के लिए चलाना समाप्त हो गया। नई सरकार के सामने जो पहला कार्य था, वह था– प्रौद्योगिक दृष्टि से उन्नत एक अर्थव्यवस्था का निर्माण करना। इसके लिए आर्थिक योजना नाम की एक नई कार्यविधि अपनाई गई। 19वीं सदी में यूरोप का औद्योगिक विकास पूंजीपतियों की व्यक्तिगत पहल का परिणाम था। सोवियत संघ में औद्योगिकरण का काम राज्य ने पंचवर्षीय योजनाओं के द्वारा अपने हाथ में ले लिया। इन योजनाओं में अर्थव्यवस्था के सभी संसाधनों को आर्थिक विकास की गति को आगे बढ़ाने के लिए उपयोग में लाया गया और इसके साथ ही उनके उद्दश्यों, अर्थात सामाजिक और आर्थिक समानता को बराबर ध्यान में रखा गया। सोवियत संघ में हुए विकास की अभूतपूर्व दर ने प्रगति के साधन के रूप में योजनाबद्ध विकास की प्रभावशाली भूमिका को सिद्ध किया।

क्रांति के फलस्वरूप संघ में एक नए प्रकार की सामाजिक और आर्थिक प्रणाली का विकास हुआ। निजी संपत्ति तथा मुनाफा के उद्देश्य के उन्मूलन के कारण परस्पर विपरीत हितों वाले वर्ग समाप्त हो गए। समाज की नजर में आने वाली असमानताएं समाप्त हो गई।

काम हर व्यक्ति के जीवन का आवश्यक अंग बन गया, क्योंकि बिना काम किए खाने का कोई उपाय नहीं रहा प्रत्येक व्यक्ति को काम देना समाज और राज्य की जिम्मेदारी हो गई और रोजगार का अधिकार एक संवैधानिक अधिकार बन गया। सामाजिक आर्थिक असमानताओं की समाप्ति के साथ–साथ शिक्षा और संस्कृति के क्षेत्रों में भी विकास हुए।

जार के पुराने साम्राज्य की गैर–रूसी जातियों के लिए क्रांति के परिणामों का विशेष महत्व था। जैसा कि आप पहले पढ़ चुके है, ये सभी क्षेत्र दमन के शिकार थे। क्रांति के बाद वे गणराज्यों के रूप

में सोवियत संघ के अंग बन गए। सोवियत संघ में शामिल सभी जातियों की समानता को पहले 1923 तथा बाद में 1935 के संविधानों में एक कानूनी दर्जा प्रदान किया गया।

इकाई का सारांश :–

1. पुरापाषाण युग में मानव शिकारी और भोजन एकत्र करने वाला था। उसके पत्थर से बने औजार बहुत अच्छे गढ़े नहीं होते थे।
2. यह युग हिम–युग के मध्य के वर्षा में पड़ा।
3. उपयोग में लाये गये औजारों और बदलती जलवायु के आधार पर पुरापाषाण युग को आरंभिक, मध्य और उच्च पुरापाषाण युग में बांटा गया है।
4. पहले युग में थी हाथ की कुल्हाडियां, दूसरे में परतों या टुकड़ों से बने औजार और तीसरे युग में थे फलक व तक्षिणी औजार।
5. प्राचीन भारतीय सभ्यता का प्रारंभ वैदिक काल से माना जाता है।
6. लगभग 2000 ई.पू. में भारत में आर्य सभ्यता का विकास हुआ।
7. ऋग्वेद के सूक्तों की रचना सिन्धु नदी के तट पर हुई।
8. आर्य आरंभ में छोटे–छोटे जनों में बंटे हुए थे जो आपस में लड़ते रहते थे।
9. छठी शती ई.पू. में ये राज्य बड़े राज्यों में परिणत हो गए, इनमें कुछ राजतंत्र और कुछ गणराज्य थे।
10. यह सोलह राज्य महाजन पद कहलाए।

इकाई आधारित प्रश्न :–

प्रश्न 1. पुरापाषाण युग में मनुष्य.....था।
प्रश्न 2. इस युग में मनुष्य.....के औजारों से शिकार करता था।
प्रश्न 3. उसके औजारों में .....और .....होते थे।
प्रश्न 4. हड़प्पा सभ्यता का काल .....से.....तक माना जाता था।
प्रश्न 5. हड़प्पा स्थल के प्रथम अवशेष.....वर्ष में मिले थे।

पत्राचार पाठ्यक्रम

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

(द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित)

डिप्लोमा इन एज्युकेशन

fo"k;& lkekftd foKku ,oa mldk f'k{k.k

द्वितीय वर्ष

प्रश्न पत्र – नवां

विषयः– मध्यकालीन भारत। अंक 08

---

1. मुगलकालीन भारत के राजवंश तथा मुगलों के विरूद्ध भारतीय प्रतिरोध (महाराणा प्रताप, रानी दुर्गावती, मराठा, सिक्ख, बुन्देला, जाट)
   मराठा शक्ति का उदय–शिवाजी का उत्कृर्ष तथा शासन प्रंबध की उपलब्धियां
2. यूरोप की व्यापारिक कंपनियां, ब्रिटिश कंपनी की सफलता के कारण, प्रभुसत्ता, प्रशासनिक ढांचा, नीतियां एवं उनका प्रभाव।
   ब्रिटिश शासन की नीतियां और प्रशासन।
3. धार्मिक, सांस्कृतिक व सामाजिक जागृति एवं सुधार आंदोलन (आर्य समाज ब्रह्म समाज) तथा साहित्य, कला, विज्ञान का विकास।

प्रिय छात्राध्यापकों!

गत पाठ में आपने प्राचीन भारतीय इतिहास के मूलतत्व, प्रमुख व्यक्तित्व तथा मुख्य उपलब्धियों के विषय में अध्ययन किया। प्रस्तुत पाठ में हम मध्यकाल के विषय में अध्ययन करेंगे। पूर्व पाठ के अनुसार ही प्रस्तुत पाठ को भी अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से तीन उप इकाईयों में विभक्त किया गया है।

1

प्रस्तावना–

किसी भी देश के इतिहास का विभाजन प्रायः तीन भागों में किया जाता है– प्राचीनकाल, मध्यकाल और आधुनिक काल। भारत के इतिहास का प्राचीन काल लगभग 8वीं शताब्दी तक माना गया

है। इसके पश्चात मध्यकाल के इतिहास का आरंभ होता है। मध्यकाल में पूर्ववर्ती काल को राजपूत काल के नाम से जाना जाता है। प्राचीन भारत में अन्तिम महान सम्राट हर्षवर्धन की मृत्यु के पश्चात 12वीं शताब्दी के आरंभ तक विभिन्न राजवंशों के बीच निरंतर संघर्ष चलते रहे और अंगणित युद्ध हुए। उत्तर–दक्षिण तथा सुदूर दक्षिण में अनेक साम्राज्य बने और नष्ट हो गये किन्तु ऐसा कोई पराक्रमी राजवंश अस्तित्व में नहीं आया जो भारत के अधिकांश भाग को जीतकर राजनीतिक एकता के सूत्र में बांध सकता। अतः हम कह सकते है कि यह काल युद्ध काल रहा। इसी युद्ध काल में भारत में सर्वथा नवीन तत्व इस्लाम का प्रवेश हुआ।

5.1 मुगलकालीन भारत के राजवंश तथा मुगलों के विरूद्ध भारतीय प्रतिरोध (महाराणा प्रताप, रानी दुर्गावती, मराठा, सिक्ख, बुदला, जाट) :–

बाबर मध्य एशिया के फरगना रियासत के शासक का पुत्र और भारत में मुगलवंश का संस्थापक था। भारत पर आक्रमण करने के पूर्व ही सामरिक शिक्षा प्राप्त कर चुका था। शत्रु की सेना के दोनों पासों को तोड़ना फिर आगे तथा पीछे साथ साथ तेजी से आक्रमण करना यह तुलुगमा युद्ध नीति वह सीख चुका था और इसी के बल पर उसने पानीपत के प्रथम युद्ध (1526 ई.) में इब्राहीम लोदी को और खानवा में विजय प्राप्त की। इसके पूर्व पानीपत का युद्ध जीत कर वह दिल्ली, आगरा, धौलपुर जौनपुर तथा ग्वालियर पर अधिकार जमा चुका था।

बाबर एक शक्तिशाली व्यक्तित्व का दृढ़ निश्चय व्यक्ति था। मानवता और दयालुता उसके विशिष्ट गुण थे। वह साहित्य और कला का प्रेमी था। बाबर नामा में उसने प्रकृति के सौन्दर्य का सुन्दर वर्णन किया है। वह स्थापत्य कला का भी अनुरागी था। भोपाल में उपलब्ध एक पांडुलिपि के आधार पर कहा जा सकता है कि उसकी धार्मिक नीति सहिष्णुता की थी।

बाबर का पुत्र, मुगलवंश का दूसरा शासक। अपने पिता के द्वारा जीते गये साम्राज्य को संगठित रखने के प्रयास में उसे कई युद्ध लड़ने पड़े। सन् 1540 से 1545 तक हुमायूं को निर्वासित जीवन बिताना पड़ा। अफगान सरदार शेरशाह ने दिल्ली पर अधिकार जमा लिया। शेरशाह की मृत्यु के पश्चात हुमायूं ने पुनः दिल्ली जीतकर खोयी हुई सत्ता को प्राप्त कर लिया। हुमायूं एक कोमल हृदय साहित्य, प्रेमी विद्वान था।

मुगलवंश का तीसरा बादशाह अकबर था। वह मुगल साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक था। केवल 13 वर्ष की आयु में सिंहासनारूढ़ होने के पश्चात 1556 में उसने शेरशाह के उत्तराधिकारी के प्रधानमंत्री हेमचन्द वैश्य को परास्त किया। इस विजय से वह पंजाब दिल्ली आगरा और आस पास के क्षेत्र का स्वामी बन गया। वह निरंतर युद्ध करता रहा। न केवल पूरे उत्तर भारत बल्कि दक्षिण भारत में अहमदनगर और असीरगढ़ को भी जीत लिया। पश्चिम सीमा पर कंधार काबुल और बलूचिस्तान भी उसके अधिकार में थे इसका साम्राज्य पश्चिम में काबुल से पूर्व में बंगाल तक और उत्तर में हिमालय की तराई से दक्षिण में नर्मदा नदी के किनारे तक विस्तृत था।

अकबर के विशाल साम्राज्य की प्रशासन व्यवस्था भी उच्चकोटि की थी। साम्राज्य 15 सूबों में बंटा हुआ था। बादशाह के प्रत्येक आदेश को मनसबदार पूर्ण करते थे जिनकी 2,3 श्रेणियां थी। भूमि की नापजोप और पैमाइश के आधार पर मालगुजारी (लगान) की नयी व्यवस्था की गई। सुव्यवस्था से राजकोष समृद्ध हुआ इसका श्रेय राजा टोडरमल को था। अकबर ने समझ लिया था कि हिन्दु प्रजा के

सहयोग के बिना साम्राज्य सुदृढ़ नहीं रह सकता है। इस उद्देश्य से उसने उदार नीति अपनाई। हिन्दुओं पर लगने वाला जजिया कर समाप्त कर दिया गया। हिन्दुओं को प्रतिभा के आधार पर योग्य सम्मान दिया जाने लगा और महत्वपूर्ण पद दिये गये। उसने बिना धर्म परिवर्तन कराये हिन्दु स्त्रियों से विवाह करके राजपूतों का समर्थन प्राप्त कर लिया। सभी धर्मों की अच्छाइयों को एकत्रित करके एक समन्वित धर्म दीन ए लाही की स्थापना की गई। अकबर स्वयं कला और साहित्य का बहुत प्रेमी था उसके दरवार में तानसेन, अबुल फजल, फैजी, बीरबल, रहीम जैसे साहित्यकार थे जिन्होंने उच्चकोटि का साहित्य रचा। अकबर को कला और स्थापत्य से भी अनुराग था। उसने फतेहपुर सीकरी में सुन्दर इमारतें बनवाई। अकबर को एक राष्ट्रीय सम्राट के रूप में जाना जाता है।

महाराणा प्रताप– मेवाड़ के राणा उदयसिंह का पुत्र अत्यन्त वीर स्वाभिमानी और सच्चा देशभक्त। अकेला राजपूत शासक जिसने जीवन भर प्रतापी अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की और स्वाधीनता के लिये संघर्ष करता रहा। अप्रैल 1576 में शाही मुगल सेना के साथ हल्दी घाटी का प्रसिद्ध युद्ध हुआ। राणा प्रताप वीरता से लड़े किन्तु पराजित हुए। उनके समस्त किलों पर मुगलों की सेना ने अधिकार कर लिया फिर भी राणा कष्ट सहते हुए पहाड़ियों और जंगलों में घूमते रहे तथा स्वतंत्रता संघर्ष जारी रखा।

रानी दुर्गावती– गोंडवाना का शासक जो भारतीय इतिहास की प्रसिद्ध रानियों में से एक है। वह कालिजंर के राजा की पुत्री एवं गोंडवाना के राजा दलपतिशाह की विधवा थी। 1564 में अकबर के सेनापति आसफ खां ने गोंडवाना पर आक्रमण किया। रानी दुर्गावती ने विशाल मुगल सेना का बहादुरी से सामना किया और लड़ते हुए प्राण त्याग दिये गोंडवाना जैसा समृद्ध प्रदेश जीत लेने से मुगल साम्राज्य को बहुत लाभ मिला।

सिक्ख– पंजाब में गुरू नानक से लेकर गुरू अर्जुनदेव तक सिक्खों के पांच गुरू ईसा की 16वी सदी में हुए। इस्लाम धर्म व मुगल साम्राज्य के साथ उनका कोई विरोध नहीं था। सिक्खों ने पहली बार जहांगीर के शासनकाल में मुगल राज्य का विरोध किया। इसके पश्चात शांहजहां के काल में अमृतसर के पास संग्राना नामक स्थान पर सिक्खों एवं मुगलों में युद्ध हुआ, जिसमें सिक्खों की हार हुई। औरंगजेब के काल में गुरूतेग बहादुर को दिल्ली बुलाकर इस्लाम धर्म स्वीकार करने को बाध्य किया एवं 1675 में उनका सिर कटवा दिया। सिक्खों के दसवें गुरू गोविन्द सिंह ने अपने पिता की मृत्यु का बदला लेने की कसम खाई तथा अपने अनुयायियों को संगठित कर 'खालसा' नामक संगठन बनाया। मुगलों के विरूद्ध युद्ध में गुरू गोविन्द सिंह के दो पुत्र मारे गये, लेकिन सिक्खों ने हार नही मानी। विवश होकर सिक्खों से औरंगजेब ने संधि करना चाही लेकिन 1707 ई. में औरंगजेब की मृत्यु हो गई। मुगल साम्राज्य के पतन में सिक्खों का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

बुन्देला– छत्रसाल बुन्देंला बुन्देलखण्ड में जुझारू सेना नायक चंपतराय के पुत्र थे। उन दिनों भारत में मुगलों का राज्य था। शिवाजी के कार्यों से प्रेरित होकर छत्रसाल ने स्वतंत्रता के लिये संघर्ष आरंभ कर दिया। (सन् 1671) शीघ्र ही उन्होंने बुंदेलखण्ड के बड़े क्षेत्र को अधिकार में ले लिया और पन्ना जीत लेने पर छत्रसाल की ख्याति दूर दूर तक फैल गई। बुन्देलों के साथ संघर्ष में अपनी सेना को सफलता न मिलने के कारण औरंगजेब ने विशाल सेना भेजी। अपनी क्षमता को ध्यान में रखकर छत्रसाल ने दो तीन बार मुगलों से समझौता भी किया किन्तु अपना संघर्ष जारी रखा। सन् 1706 में मुगल सम्राट ने छत्रसाल को राजा की उपाधि प्रदान की और 4000 का मनसबदार बना दिया।

छत्रसाल एक कवि हृदय सैनिक थे। भक्ति और नीति पर रचे हुए उनके छन्द ब्रजभाषा में उपलब्ध है। छत्रसाल साहित्यकारों और कवियों के प्रशंसक और संरक्षक थे। महाकवि भूषण छत्रसाल के दरबार में थे। भूषण ने छत्रसाल दशक शिवराज भूषण और शिवा बावनी की रचना की थी।

जाट– जहांगीर तथा शाहजहां के शासन काल में जाटों के विद्रोह होते रहे। औरंगजेब के समय जाटों ने गोकुल के नेतृत्व में मथुरा क्षेत्र में विद्रोह किया। विद्रोह का स्वरूप भयंकर था। मुगलों की संगठित सेना ने जाटों को शीघ्र पराजित कर दिया। गोकुल को बन्दी बनाकर उसकी हत्या कर दी गई। उसके स्थान पर राजाराम जाट ने नेतृत्व संभाला। राजाराम की भी हत्या करवा दी गई। इसके बाद भी जाटों ने हार नहीं मानी। चूडामन जाट ने बागडोर अपने हाथ में ली, वह छुटपुट हमलों से औरंगजेब को परेशान करता रहा। चूड़ामन ने भरपुर के आसपास के क्षेत्रों में जाट प्रदेश की स्थापना की।

5.2 मराठा शक्ति का उदय– शिवाजी का उत्कर्ष तथा शासन प्रबंध एवं उपलब्धियां–

शिवाजी स्वतंत्र मराठा राज्य के संस्थापक थे। उनकी माता जीजाबाई, संरक्षक दादा कोण देव तथा गुरू रामदास ने उनके मन में यह भावना भर दी थी कि देश समाज गौ तथा ब्राम्हणों को मुसलमानों के अत्याचारों से मुक्त कराना उनका परम कर्तव्य है। मुठ्ठी भर वीर जवानों के साथ उन्होंने अपना कार्य आरंभ किया और पूना के निकट तोरण दुर्ग पर अधिकार कर लिया। शीघ्र ही शिवाजी ने बीजापुर के सुल्तान के अधिकार वाले अनेक दुर्ग जीत लिये। सुल्तान ने अपने वरिष्ठ सेना नायक अफजल खां को शिवाजी का दमन करने के लिये भेजा किन्तु शिवाजी ने बड़ी सतर्कता से अपनी जान बचाकर अफजल खान का वध कर दिया। शिवाजी की सफलताओं को देखते हुए मुगल सम्राट औरंगजेब ने शाइस्ताखां जैसे सेना नायक को दक्षिण भेजा। शइस्ताखां ने पूना पर कब्जा कर लिया किन्तु इस बार भी शिवाजी ने चतुरता से शइस्ताखां को मात दे दी। 1665 ई. में मुगल सेनाध्यक्ष मिर्जा राजा जयसिंह के आश्वासन पर शिवाजी औरंगजब के दरबार में पहुंचे। वहां शिवाजी के साथ अपमानजनक व्यवहार किया गया व उन्हे नजरबंद कर दिया गया। पुनः एक बार शिवाजी ने अपनी अनूठी सूझबूझ के बल पर कैद से निकल भागने में सफलता प्राप्त की। दक्षिण पहुंचकर शिवाजी दो वर्षों तक अपनी प्रशासन व्यवस्था को ठीक करने में लगे रहे 1674 ई. में उनका राज्याभिषेक किया गया और वे महाराष्ट्र के स्वाधीन शासक छत्रपति बन गये। शक्तिशाली मुगल बीजापुर के सुल्तान गोआ के पुर्तगाली और जंजीरा के समुद्र डाकूओं के प्रबल विरोध के बीच एक स्वतंत्र हिन्दू राज्य की स्थापना कर लेना एक महान उपलब्धि थीं।

शिवाजी केवल एक विजेता ही नहीं थे अपितु एक सुयोग्य शासक भी थे। मध्य युगीन सभी शासकों के समान निरंकुश शासक होते हुए भी शिवाजी की दृष्टि से प्रजा का हित सर्वोपरि था। उन्हें सलाह देने के लिये एक मंत्रिपरिषद थी जिसे अष्टप्रधान कहा जाता था। शिवाजी का साम्राज्य 4 प्रान्तों में बंटा हुआ था। उनकी सेना भी सुसंगठित थी। सेना का संगठन और अनुशासन बहुत अच्छा था युद्ध भूमि में स्त्रियों को साथ ले जाना मना था। चढ़ाई से लौटने पर यदि किसी सैनिक के पास अतिरिक्त वस्तुएं पाई जाती थी तो उन्हें राज्य के कोष में जमा कर दिया जाता था।

राज्य की लगान व्यवस्था अच्छी थी। पड़ोसी राज्यों से चौथ और सरदेशमुखी नामक का सनातनी हिन्दू होते हुए भी शिवाजी अन्य धर्मों का समान आदर करते थे। यदि कभी कुरान की प्रति

उनके हाथ पड़ जाती थी तो उसे वे आदर भाव सहित मुसलमान साथियों को सौंप देते थे। वे न केवल मंदिरों को बल्कि मुस्लिम धार्मिक स्थानों को भी दान देते थे। वे योग्यता को प्रोत्साहन देते समय धार्मिक भेदभाव को महत्व नहीं देते थे। उनके घोर विरोधी ख्फी खां ने भी इस विषय में उनकी प्रशंसा की है। शिवाजी ने वेदों के अध्ययन को बड़ा प्रोत्साहन दिया। समर्थ रामदास शिवाजी के गुरू थे। शिवाजी का चरित्र उच्चकोटि का था। वे अपनी बुद्धि के बल पर वे कठिन समस्याओं को हल कर लेते थे। उनका प्रशासन इतना व्यवस्थित था कि उनकी अनुपस्थिति में भी कार्य बहुत सुचारू रूप से चलता रहा।

2

5-3 ;jki dh 0;kikfjd dEifu;k] fcfV'k dEiuh dh lQyrk d dkj.k] iHkq lRrk] i'kklfud <kpk] uhfr;k ,o mudk iHkko &

आपने मध्यकालीन भारत की विरासत (अ) मूलतत्व (ब) प्रमुख व्यक्तित्व (स) मुख्य उपलब्धियां के विषय में पड़ा। आपको स्मरण होगा कि महान मुगल साम्राज्य के पतन के पश्चात विभिन्न राज्यों में स्थानीय शक्तियों का विकास हुआ। ये शक्तियां थी बंगाल, अवध, मैसूर, सिख और मराठा। केन्द्रीय सत्ता की दुर्बलता के कारण 18वीं शताब्दी में भारत में यूरोपीय व्यापारियों ने उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की।

सन् 1599 में पुर्तगालियों को भारत के व्यापार से समृद्ध होते देखकर अंग्रेज व्यापारियों के मन में व्यापार करने की बड़ी तीव्र इच्छा उत्पन्न हुई और इस हेतु उन्होंने एक कंपनी बनाई। इस कंपनी को ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी कहा जाता था और 31 सितम्बर 1600 ई. को भारत से व्यापार करने के लिए इंग्लैण्ड की महारानी एलिजावेथ से अधिकार पत्र मिला। 1602 ई. में भारत से व्यापार करने के लिये हालैण्ड के व्यापारियों ने भी अपनी एक कंपनी बनाई जिसको डच ईस्ट इंडिया कंपनी कहा जाता था। 1664 ई. में फ्रांस के सम्राट लुई चौदहवें ने भारत से व्यापार करने के लिये एक फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी बनाई। इसके बाद इन शक्तियों ने भारत में अनेक फैक्ट्रियां स्थापित कर ली और मुगलों से प्रार्थना करके बहुत सी व्यापारिक सुविधाएं प्राप्त कर ली।

17वीं शताब्दी में भारत में मुगल साम्राज्य अपने उत्कर्ष की चरम सीमा पर था। अतः उस काल में यूरोप की किसी शक्ति का देश के राजनीतिक जीवन में हस्तक्षेप करने का साहस नहीं हो सका था। ईस्ट इंडिया कंपनी ने अपने को व्यापार तक ही सीमित रखा। उन्होंने सूरत, भड़ौच, अहमदाबाद, आगरा, अजमेर, बम्बई, कलकत्ता, ढांका, मुर्शिदाबाद, मद्रास आदि अनेक स्थानों में अपनी व्यापारिक कोठियां स्थापित कर ली। मुगल सम्राटों ने कंपनी को अनेक व्यापारिक रियायतें दी थी। 1689 ई. में ईस्ट इंडिया कंपनी ने 300 रू. वार्षिक कर देकर बंगाल से व्यापार करना स्वीकार किया। 18वीं सदी के आरंभ में अंग्रेजी कंपनी के मुख्य व्यापारिक केन्द्र कलकत्ता, मद्रास और बम्बई में स्थापित थे। 1715 ई. में ईस्ट इंडिया कंपनी मुगल सम्राट के समक्ष जान सरमन की अध्यक्षता से एक शिष्ट मंडल भेजा। इसका लक्ष्य अंग्रेजी कंपनी के लिये व्यापारिक सुवधाएं प्राप्त करना था। इस शिष्ट मंडल में विलयम हेमिल्टन नाम का शल्य चिकित्सक भी था जो मुगल सम्राट फर्रूखासियर को स्वास्थ्य लाभ कराने में

सफल हुआ। प्रसन्न होकर सम्राट ने 1717 ई. में अंग्रेजों को 300 रू. वार्षिक के बदले में चुंगी और करों से मुक्त आयात निर्यात व्यापार की अनुमति दे दी और साथ ही उन्हें सूरत बन्दरगाह पर दिये जाने वाले तटकरों से 10000/– वार्षिक के बदले में मुक्त कर दिया। इस फरमान का अंग्रेजों ने बाद में दुरूपयोग किया और आयत निर्यात व्यापार की करों से छूट को व्यक्तिगत व्यापार तक बढ़ाना चाहा। यही 1760 ई. के पश्चात नवाब से झगड़े का कारण बना।

अंग्रेजों ने 1654 ई. में हालैण्ड को हराने के पश्चात वहां व्यापारियों पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया। 1620 और 1622 ई. में उन्होंने पुर्तगालियों को समुद्री युद्धों में पराजित करके उनकी शक्ति को क्षीण कर दिया था यद्यपि उन्हें 1664 ई. तक पुर्तगालियों और हालैण्ड के व्यापारियों की भारत में शक्ति को क्षीण कर दिया था तथापि उन्होंने सूरत और अन्य स्थानों में अपनी स्थिति मजबूत नहीं की थी। 1664 तथा 1670 ई. में सूरत में अंग्रेजों की कोठियों को छत्रपति शिवाजी ने लूटा और मुगल गवर्नर अंग्रेजों की कुछ सहायता न कर सका। इसलिये इसके पश्चात अंग्रेजों को अपनी फैक्ट्रियों को किले बन्दी करने की आवश्यकता अनुभव हुई। 1667 ई. में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकारों ने यह नई नीति निर्धारित की। भारत में भी ऐसी सैनिक और असैनिक शक्ति बने तथा उसके लिये काफी लगान का प्रबन्ध किया जाये जिसने भविष्य में अंग्रेजी साम्राज्य स्थापित और सुरक्षित रह सके। ब्रिटिश कंपनी के गवर्नर सर जोशुआ ने इस नीति को बहुत प्रोत्साहित किया और अंग्रेजों ने अपनी फैक्ट्रियों की किले बन्दी करने के अतिरिक्त चिटगांव पर अधिकार करने और मुगलों के जहाजों को पकड़ने के यत्न जारी कर लिये। इसका परिणाम यह हुआ कि अंग्रेजों और मुगलों में 1688 से 1690 ई. तक सम्राट औरंगजेब के समय युद्ध होता रहा जिसमें अंग्रेजों को पराजय का मुह देखना पड़ा लगभग आधी शताब्दी तक इनको भारत में अपना साम्राज्य स्थापित करने का विचार छोड़ना पड़ा।

1707 में मुगल सम्राट औरंगजेब की मृत्यु हो गई। उसके मुगल साम्राज्य का तेजी से पतन होने लगा। परिणाम यह हुआ कि अनेक प्रान्तीय सूबेदार स्वतंत्र हो गये और उन्होंने अपने स्वतंत्र राज्यों की स्थापना कर ली। मराठों ने दक्षिण से लेकर उत्तर तक एक बड़े साम्राज्य का निर्माण कर लिया। इन सबने मुगल सम्राट की शक्ति और प्रतिष्ठा को समाप्त कर दिया। कुछ बचा उसे नादिरशाह और अहमदशाह अब्दाली के आक्रमण ने धूल में मिला दिया।

इन परिस्थितियों ने ईस्ट इंडिया कंपनी को भारतीय नरेशों के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करने का अवसर दिया 18वीं शताब्दी के मध्य तक फ्रांस की व्यापारिक कंपनी ने भी इस देश में अपनी शक्ति बढ़ा ली। वे भी यहां अपनी राजनैतिक सत्ता की स्थापना का स्वप्न देखने लगे थे। इसी के परिणाम स्वरूप अंग्रेजों और फ्रांसीसियों के बीच तीन युद्ध हुए जिनमें फ्रांसीसियों की पराजय हुई। अब भारत में कोई यूरोपीय शक्ति ऐसी नहीं रह गई जो अंग्रेजों का मुकाबला कर सकती। अतः ईस्ट इंडिया कंपनी के नौकरों को इस देश में खुलकर खेलने का अवसर मिल गया।

जैसे–जैसे ईस्ट इंडिया कंपनी भारत में अपने पांव जमाती गई वैसे–वैसे उसने कारखानों का विस्तार एवं संगठन भी किया। कंपनी का हर कारखाना छोटा–मोटा किला ही होता था। परंतु आश्चर्य की बात तो यह है कि इन कारखानों में किसी भी चीज का उत्पादन नहीं होता था। कंपनी के कर्मचारियों को हम तीन श्रेणियों में बांट सकते है– क्लर्क, कारिन्दे और व्यापारी। इन सबका वेतन प्रायः कम होता था। परंतु फिर भी भारत में नौकरी करने के लिये ये सभी लोग लालायित रहते थे क्योंकि वे लोग कंपनी की अनुमति से निजी व्यापार करके अतिरिक्त आय प्राप्त कर लेते थे। आप सबकों यह

ज्ञात होगा कि उन दिनों भारत पर यूरोप के बीच व्यापार केवल कंपनी का ही एकाधिकार था इसलिये यहां आने के लिये कंपनी में नौकरी प्राप्त करना आवश्यक था।

सारे कारखानों और व्यापार का प्रबन्ध गवर्नर अपनी एक परिषद की सहायता से करता था। केवल गवर्नर किसी भी विषय पर निर्णय नहीं कर सकता था। सभी फैसले बहुमत से होते थे।

बंगाल मुगल साम्राज्य का एक प्रान्त था। औरंगजेब की मृत्यु के बाद वहां का शासन अव्यवस्थित था। 1740 में विहार के नवाब अलीवर्दी खां ने बंगाल की सूबेदारी प्राप्त कर ली और नवाब बन बैठा। वह एक योग्य और दूरदर्शी व्यक्ति था। 10 अप्रैल 1756 को जब अलीवर्दी खॉ की मृत्यु हुई तो मृत्यु से पूर्व उसने अपने उत्तराधिकारी सिराजुद्दौला (अलवर्दी खॉ की कन्या का पुत्र) को यूरोपीय व्यापारियों से दूर रहने की सलाह दी। सिराजुद्दौला कम उम्र का और उग्र स्वभाव का शासक था। उसने अंग्रेजों को किलोबन्दी खत्म करने का सुझाव दिया। अंग्रेजों को बंगाल में जो व्यापारिक सुविधाएं मिली हुई थी उनका दुरूपयोग किया जा रहा था। अंग्रेजों ने नवाब के एक शत्रु राज बल्लभ को अपने यहां शरण दी थी। नवाब ने उसे लौटा देने की मांग की परंतु अंग्रेजों ने उस पर कोई विचार नहीं किया। इन सब बातों से सिराजुद्दौला बड़ा क्रोधित हुआ। उसने कासिम बाजार और कलकत्ता की कोठी पर अधिकार कर लिया। कलकत्ता की कोठी के बहुत से लोग जहाजों पर बैठकर भाग गये। जो व्यक्ति बचे थे, उन्हें एक कोठरी में बन्द कर दिया गया, जिसमें कई व्यक्तियों की मृत्यु हो गई। इस घटना को काल कोठरी की दुर्घटना कहा जाता है।

कलकत्ता पर अधिकार करने के बाद माणिकचन्द्र नाम के व्यक्ति को वहां का प्रमुख अधिकारी बनाकर सिराजुद्दौला अपनी राजधानी मुर्शिदाबाद लौट गया। कलकत्ते के पतन का समाचार जब दक्षिण में अंग्रेजों को मिला तो उन्होंने क्लाइव और बाटसन के नेतृत्व में एक सेना बंगाल भेजी। 9 फरवरी 1757 को अलीनगर की संधि हो गई इसके द्वारा अंग्रेजों को व्यापारिक सुविधाये बंगाल में बिना चुंगी दिये व्यापार की अनुमति मुद्रा ढालने और किले बन्दी करने का अधिकार मिल गया।

बंगाल में उस समय कुछ और लोग सिराजुद्दौला के विरूद्ध षड़यंत्र कर रहे थे। उन लोगों में मीरजाफर मुख्य था। जो नवाब का ही एक संबंधी था। अंग्रेजों ने उसका लाभ उठाया और मीरजाफर से गुप्त वार्ता शुरू कर दी। षड़यंत्र का सब कार्य एक धनी व्यापारी अमीरचन्द की मध्यस्थता से हुआ जिसे एक पत्र भी दिखाया गया।

5-4 Iyklh dk ;q) &

सन 1756 में यूरोप में सप्त वर्षीय युद्ध प्रारंभ हो गया। इसके भी अंग्रेज और फ्रेन्च विरोधी थे, जिसका प्रभाव भारत में भी हुआ। क्लाइव ने तत्काल ही फ्रेंच बस्ती चन्द्र नगर पर अधिकार कर लिया। अंग्रेजों के इस कार्य से सिराजुद्दौला बहुत क्रोधित हुआ। अपने दरबार में चल रहे षड़यंत्रों का भी उसे आभास हो रहा था। क्लाइव ने नवाब पर आरोप लगाया कि उसने अली नगर की संधि को तोड़ा है। क्रोधित होकर सिराजुद्दौला के साथ राजधानी से चला गया। कलकत्ता से क्लाइव भी सेना लेकर मुर्शिदाबाद से से 21 मील दूर प्लासी के मैदान में पहुंचा। 23 जून 1757 को दोनों सेनाओं के बीच युद्ध हुआ। केवल कुछ ही घण्टों में युद्ध समाप्त हो गया। सिराजुद्दौला की सेना बड़ी होने पर भी सेनापति मीरजाफर अंग्रेजों से प्रभावित रहा उसने युद्ध में कोई भाग नहीं लिया। अंग्रेजों को विजय प्राप्त हुई। सिराजुद्दौला भाग गया बाद में उसकी हत्या कर दी गई। प्लासी के युद्ध के तीन महत्वपूर्ण परिणाम

हुए– (1) अंग्रेजों की स्थिति व्यापारियों से शासक के रूप में बदलने लगी। (2) मुगल साम्राज्य को बड़ा धक्का पहुंचा। सम्राट की अनुमति के बिना शासक मनमानी करने लगे। (3) अंग्रेजों को धन और जन का अपूर्व लाभ हुआ जिसके कारण वे अन्य संघर्षो में सफल हो सके। सर यदुनाथ सरकार ने लिखा है 23 जून 1757 को भारत के मध्यकाल का अवसान हो गया और नवीन युग का प्रादुर्भाव हुआ। इसे बंगाल की प्रथम क्रांति कहा जाता है।

5-5 cxky dh nwljh Økfr&

मीरजाफर ने बंगाल का नवाब बनने के लिए विश्वासघात और षड़यंत्र का सहारा लिया था। राज्य की वास्तविक शक्ति तो अंग्रेज ही थे जिन्होंने उसे पूर्ण सहायता दी थी। अपने सहायकों को मीरजाफर ने बहुत धन दिया। सैनिक सहायता के बदले कंपनी काफी धन मांग रही थी। नवाब के सैनिकों को वेतन नहीं मिल सका। जनता पर धन के लिए अत्याचार हो रहे थे। कलकत्ता की कौसिल ने इन सब बातों का दोष मीरजाफर पर लगाया। उसे गद्दी से हटाने का निश्चय करके 27 सितम्बर 1760 में मीरजाफर को बंगाल के नवाब के पद से हटाकर उसके दामाद मीरकासिम को बंगाल का नवाब बना दिया। नए नवाब मीरकासिम ने कंपनी से समझौता करके चटगांव, मिदनापुर और बर्दवान के जिले अंग्रेजों को सौंप दिये। इस घटना को बंगाल की दूसरी क्रांति कहा जाता है। इस क्रांति से भी कंपनी को लाभ हुआ।

ehjdkfle dk 'kklu &

मीरकासिम भी मीरजाफर के समान उस युग में प्रचलित षड़यंत्र पूर्ण तरीकों को अपना कर नवाब बना था। उसके सामने भी अनेकों कठिनाइयां उपस्थित हो गई, परंतु उसने उनका सामना किया। आर्थिक दशा सुधारने के लिए उसने सभी अधिकारियों से धन का हिसाब मांगा। जो लोग उचित हिसाब न दे सके उन्हें दण्ड दिया। जिन लोगों के पास अनुचित धन जमा था उसे वसूल किया सैनिकों का वेतन किश्तों पर देने की व्यवस्था की गई और उपव्ययिता को दूर किया। न्याय और पुलिस विभाग में भी सुधार किऐ। सुविधा की दृष्टि से उसने अपनी राजधानी मुंगेर कर ली। मराठों को कर देने का वचन देकर उत्तर पश्चिम की सीमा को सुरक्षित कर ली। उसने अवध के बजीर सुलाउद्दौला से भी मित्रता कर ली। मीकासिम के इन सुधारों के कारण अंग्रेज शंकित रहने लगे। कंपनी मुगल सम्राट की आज्ञा लेकर बंगाल में बिना कोई कर दिये व्यापार करती थी। कंपनी के कर्मचारियों ने व्यक्तिगत व्यापार भी शुरू कर दिया था। वे अनुचित लाभ उठा रहे थे जिसका परिणाम यह हुआ कि देशी व्यापार नष्ट होने लगा। मीरकासिम ने भी सभी को कर मुक्त व्यापार करने की छूट दे दी। अंग्रेज लोग इसे सहन नहीं कर सके। उन्होंने मी कासिम को अलग कर फिर से मीरजाफर को नवाब बनाने का निश्चय किया। जब क्रोधित नवाब के सैनिकों ने कंपनी के कुछ कर्मचारियों को पकड़ लिया तो अंग्रेजों ने एक सेना मेजर एडमस की अध्यक्षता में मुंगेर भेज दी। मीरकासिम की सेना मुंगेर से आगे बढ़ी। उदयनाला नामक स्थान पर दोनों की मुठभेड़ जिसमें मीरकासिम का सेनापति तुर्की खॉ मारा गया। मुंगेर और पटना पर अंग्रेजों ने कब्जा कर लिया। विवश होकर मीरकासिम अवध भागा जहां उसने वजीर शुजाद्दौला व मुगल सम्राट शाहआलम से मिलकर एक संयुक्त सेना बनाई। कंपनी की सेनाओं का नायक मुनरो था जिसने पटना के बक्सर की ओर प्रस्थान किया। इसी स्थान पर शुजाउद्दौला की

सेनाए थी। 22 अक्टूबर 1764 को बक्सर के मैदान में भीषण युद्ध हुआ। शाह आलम युद्ध में उदासीन बना रहा। दिन भर के युद्ध के बाद शाम के समय शुजाउद्दौला की सेनाए पीछे हटने लगी। मीरकासिम युद्ध से भाग निकला।

5-5 cDlj ;q) dk ifj.kke &

इस युद्ध का परिणाम बहुत महत्वपूर्ण था। इस युद्ध के द्वारा बंगाल में तीसरी क्रांति का संपादनहुआ। प्लासी की विजय अंग्रेजों के षड़यंत्र के बल पर प्राप्त की थी परंतु बक्सर की विजय उनकी शक्ति की प्रत्यक्ष विजय थी। इसमें बंगाल, बिहार, और दिल्ली तक अंग्रेजों की धाक जम गई। वास्तव में प्लासी के अधूरे कार्य को बक्सर की विजय ने पूरा किया था। भारत में ब्रिटिश शक्ति की प्रभुत्व स्थापना का कार्य बक्सर की विजय के बाद से आरंभ होता है।

बक्सर का युद्ध एक निर्णयात्मक युद्ध था। मीरकासिम से युद्ध प्रारंभ होते ही अंग्रेजों ने मीर जाफर को पुनः बंगाल का नवाब घोषित किया। मीर जाफर की दशा नाम मात्र के लिए नवाब की थी। इतिहासकार स्टीफन के शब्दों में नवाब वास्तव में कंपनी के नौकरों का साहूकार था जिससे वे जब और जितना चाहे रूपया वसूल कर सकते थे। नवाब और उसकी प्रजा दोनों ही अंग्रेजों की नीति के शिकार थे और उनकी धन पिपासा को शांत करने के लिए बाध्य थे। मीरजाफर अधिक दिनों तक जीवित नहीं रहा। 5 फरवरी 1765 में उसकी मृत्यु हो गई। उसकी मृत्यु के बाद उसका पुत्र निजामुद्दीन नवाब बना। यह भी कंपनी के हाथों की कठपुतली बना रहा। प्रदेश की आर्थिक व्यवस्था दिनों दिन खराब होती जा रही थी। कंपनी के कर्मचारी खूब लाभ उठा रहे थे, अराजकता का क्षेत्र बढ़ता जा रहा था। ये समाचार जब इंग्लैंड में कंपनी के संचालकों के पास पहुंचे तो उन्होंने रावर्ट क्लाइव को पुनः एक बार कंपनी का गवर्नर बनाकर भारत भेजा। मई 1765 में वह बंगाल पहुंचा। इसी समय बंगाल के तत्कालीन नवाब नजमुद्दौला की मृत्यु हो गई। मीर जाफर के अल्प वयस्क पुत्र को नवाब बना दिया गया। बंगाल की सरकार की दशा बहुत कमजोर थी। न सरकार के पास उचित शक्ति थी और न राजकीय कोष में धन था।

क्लाइव के पश्चात वारेन हेस्टिंग्ज 1772 में बंगाल का गवर्नर बन कर आया। उसे सन 1774 में कंपनी के प्रदेशों का गवर्नर जनरल बनाया गया। वारेन हेस्टिंग्ज ऐसे समय में भारत आया था जब कंपनी सरकार अनेक कठिनाइयों से घिरी हुई थी। उसने आंतरिक प्रशासन में उल्लेखनीय सुधार किये। बंगाल की द्वैध शासन व्यवस्था का अन्त कर दिया गया। लगान व्यवस्था के सभी मामलों को तय करने हेतु एक केन्द्रीय भू–राजस्व मण्डल बनाया गया। जिला दीवानी तथा फौजदारी अदालतों की स्थापना की गई। वारेन हेस्टिंग्ज को मराठों और हैदरअली के साथ महत्वपूर्ण युद्ध करना पड़े। युद्ध के पश्चात मराठों से मैत्री संधि करके वारेन हेस्टिंग्ज ने उन्हें तटस्थ बना दिया और इस प्रकार अंग्रेज अपने कट्टर शत्रु मैसूर के हैदरअली के साथ संघर्ष करने के लिए स्वतंत्र हो गये।

मैसूर के हैदरअली के साथ अंग्रेजों का कड़ा संघर्ष हुआ। 1782 में हैदरअली की मृत्यु हो जाने पर भी उनके पुत्र टीपू सुल्तान ने युद्ध जारी रखा। 1784 में अंग्रेजों एवं टीपू के बीच मंगलौर की संधि हुई।

1786 में वारेन हेस्टिंग्ज के स्थान पर लार्ड कार्नवालिस गर्वनर जनरल बनकर आया। उसने वारेन हेस्टिंग्ज के कार्यों को आगे बढ़ाया वह कंपनी के राज्य के विस्तार की तरफ नहीं झुका। उसने

बंगाल में किसानों से लगान वसूली के लिए स्थाई बन्दोबस्त की व्यवस्था की। कार्नवालिस के समय में मैसूर के टीपू सुल्तान के साथ युद्ध हुआ। टीपू पराजित हुआ उसे अपने राज्य का एक भाग अंग्रेजों को देना पड़ा।

कार्नवालिस के पश्चात सर जानशोर जवर्नर जनरल बनाया गया। इसने हस्तक्षेप न करने की नीति अपनाई। 1805 में वेलेजली के स्थान पर लार्ड कार्नवालिस पुनः गवर्नर बनाया गया। लार्ड मिण्टों के पश्चात माक्विर्स ऑफ हेस्टिंग्ज अथवा लार्ड मोयरो को सन 1813 में गवर्नर जनरल बनाया गया।

डलहौजी सन 1848 में भारत का गवर्नर जनरल बनकर आया। अब तक के सभी गवर्नर जनरलों में वह सबसे कम आयु (53) का था। इंग्लैंड में यह काल क्रांति के फलस्वरूप उसे (इंग्लैण्ड की) नवीन बाजारों तथा कच्चे माल की तीव्र आवश्यकता थी। कच्चे काल की दृष्टि से भारत समृद्ध था। उसकी राजनैतिक दशा भी अंग्रेजों के अनुकूल ही थी। नवीन गवर्नर जनरल ने भारत की अव्यवस्थित राजनैतिक दशा का पूर्ण लाभ उठाया उसने शक्तिशाली साम्राज्यवादी नीति को कार्यान्वित किया और कुछ वर्षों में भारत में अनेक राज्यों को व्यपमत सिद्धांत के अन्तर्गत कंपनी के राज्य में मिला लिया गया। डलहौजी ने साम्राज्यवादी नीति के अनुसार युद्ध किये और शासन प्रबंध में अनेक उल्लेखनीय सुधार भी किये।

5-6 fcfV'k 'kklu dh uhfr;k vkj i'kklu &

1600 से लेकर 1757 ई. तक भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी की भूमिका एक व्यापारिक निगम की थी। वह बाहर से वस्तुएं या बहुमूल्य धातुएं भारत लाती थी और उनका विनिमय कपड़ों मसालों आदि वस्तुओं से करती थी और उन्हें फिर बाहर लेजाकर बेचती थी और बहुत सा धन कमाती थी क्योंकि उसने भारतीय वस्तुओं की बिक्री के लिए ब्रिटेन तथा अन्य देशों में नये बाजार खोज निकाले थे। भारतीय वस्तुओं के निर्यात से भारतीय कारीगरों, व्यापारियों, सरकार आदि सभी को लाभ रहा। यही कारण था कि भारतीय शासकों ने भारत में कंपनी के कारखानों की स्थापना को न केवल सहन किया बल्कि प्रोत्साहन भी दिया।

ब्रिटेन में भारतीय कपड़ों की लोकप्रियता से ब्रिटिश वस्त्र निर्माता जलते थे, क्योंकि फैशन में एकाएक परिवर्तन आ गया था। अंग्रेजों के मोटे ऊनी कपड़ों की जगह भारत के सूती मुलायम कपड़ों ने ले ली थी। इसलिए ब्रिटिश वस्त्र निर्माताओं ने इंग्लैण्ड में भारतीय वस्तुओं की बिक्री को नियंत्रित करने और उस पर पाबंदी लगाने के लिये अपनी सरकार पर दबाव डाला। 1720 तक कानून पास कर छीट और सूती कपड़ों के पहनावे का इस्तेमाल करने की मनाही कर दी गई थी। 1760 में एक महिला को 200 पौंड जुर्माने के रूप में इसलिए देने पड़े क्योंकि उसके पास एक विदेशी रूमाल था। भारतीय कपड़े के आयात पर हालैण्ड को छोड़कर अन्य यूरोपीय देशों में भारी आयात शुल्क लगा दिया। लेकिन 18वीं शताब्दी के मध्य तक भारतीय रेशम और सूती कपड़ों की बाजार में खपत बनी रही। ब्रिटिश सूती कपड़ा उद्योग 18वी शताब्दी में उन्नत टेक्नोलॉजी के आधार पर विकसित होने लगा।

1757 ई. में प्लासी के युद्ध के बाद कंपनी एक व्यापरी कंपनी से एक शासक कंपनी बन गई, इसलिए भारत के साथ उसके संबंधों में काफी अन्तर आ गया। कंपनी ने अपनी राजकीय शक्ति का प्रयोग बंगाल के बुनकरों पर किया। उन्हें कम मजदूरी देकर कंपनी में काम करने के लिये बाध्य किया गया और साथ ही साथ उन्हें भारतीय व्यापारियों के यहां काम करने के लिये मना कर दिया गया।

बाकी बुनकरों को अपने माल सस्ती दरों पर कंपनी को बेचने के लिए मजबूर किया गया, भले ही उन्हें घाटा ही क्यों न उठाना पड़े। कंपनी ने अपने प्रतिद्वंदी व्यापारी भारतीयों और विदेशी दोनों को मैदान से हटा दिया और उन्हें बंगाल के दस्तकारों को उंची मजदूरी या कीमतें देने का प्रस्ताव करने से रोक दिया। केवल इतना ही नहीं कंपनी के कर्मचारियों ने कपास की बिक्री पर एकाधिकार स्थापित लिया और इस प्रकार बुनकरों को कच्चा माल भी बाजार से मिलना बन्द हो गया। उसके उन्हें बड़े उंचे दाम देने पड़े। परंतु फिर भी उस समय इंग्लैण्ड में मशीनों द्वारा बनाई गई वस्तुएं भारतीयों के सस्ते और बढ़िया माल के मुकाबले टिक न पाती थी।

1813 ई. के चार्टर के अनुसार ईस्ट इंडिया कंपनी के एकाधिकार को चुनौती दी गई और समस्त ब्रिटिश जनता के लिये व्यापार के रास्ते खोल दिये गये। केवल एकमात्र चाय का व्यापार और चीन के साथ व्यापार कंपनी के क्षेत्राधिकार में रह गये। मुक्त व्यापार के कारण ब्रिटिश वस्तुएं बेरोकटोक भारत में प्रवेश करने लगी और देखते ही देखते भारत इंग्लैण्ड का एक आर्थिक उपनिवेश बनकर रह गया। ब्रिटेन की औद्योगिक क्रांति ने ब्रिटेन की अर्थव्यवस्था और भारत के साथ उसके आर्थिक संबंधों को पूरी तरह परिवर्तित कर दिया। 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध और 19वीं शताब्दी के पहले कुछ दशकों के दौरान ब्रिटेन में उद्योग आधुनिक मशीनों, कारखानों की व्यवस्था और पूंजी के आधार पर तेजी से विकसित हुआ और उसका विस्तार हुआ। इस विकास में कई कारकों से सहायता मिली।

ब्रिटेन के भारत के साथ व्यापारिक संबंधों में परिवर्तन लाने वाला सबसे बड़ा कारक था इंग्लैण्ड में आने वाली औद्योगिक क्रांति। इस क्रांति के परिणामस्वरूप इंग्लैण्ड को अब भारत से कपड़ा आयात करने की कोई आवश्यकता न रही। वरन इंग्लैण्ड को अपना माल बेचने के लिये अब भारत को मण्डी के रूप में इस्तेमाल करना पड़ा। भारत से कच्चा माल ले जाकर इंग्लैण्ड की फैक्ट्रियों में उत्पादन किया जाता था तथा उसी माल को भारतीय बाजारों और अन्य देशों की मंडियों में बेचा जाता था। अपने माल की बिक्री को निश्चित करने के लिए इंग्लैण्ड द्वारा युद्ध और उपनिवेशवाद के सहारे विदेशी बाजारों पर कब्जा कर लिया गया। देखते ही देखते अफ्रीका, वेस्टइण्डीज, लैटिन, अमेरिका, कनाड़ा, आस्ट्रेलिया, चीन, भारत आदि में बिक्री के व्यापार का प्रसार हुआ।

नई मशीनों और कारखानों की व्यवस्था में निवेश के लिये देश में पर्याप्त पूंजी संचित हो गई थी। ब्रिटेन की जनसंख्या में तेजी से वृद्धि ने अधिक और सस्ते श्रम के लिये उद्योगों की बढ़ती हुई आवश्यकता को पूरा किया। ब्रिटेन की जनसंख्या 1740 के बाद तेजी से बढ़ी और 1780 के बाद 50 वर्षों में दुगनी हो गई।

उत्पादन बढ़ाने की आवश्यकता को टैक्नोलाजी के विकास ने पूरा किया। हर ग्रीब्ज, जेम्सवाट, क्राम्पटन, कार्टराईट और अनेक लोगों के आविष्कारों से उद्योग का विकास हुआ। यह ध्यान देने की बात है कि इन आविष्कारों के कारण ही औद्योगिक क्रांति नहीं हुई। फैलते हुए बाजारों के लिये तेजी से उत्पादन बढ़ाने की वस्त्र निर्माताओं की इच्छा और आवश्यक पूंजी लगाने की उनकी क्षमता ही औद्योगिक क्रांति का मुख्य कारण था। उद्योग के नये संगठन ने तकनीकी परिवर्तन को मानवीय विकास की प्रमुख विशेषता बना दिया। इस अर्थ में औद्योगिक क्रांति कभी समाप्त नहीं हुई क्योंकि 18वीं शताब्दी के मध्य से आधुनिक उद्योग टैक्नोलाजी विकास के एक चरण से दूसरे चरण की ओर बढ़ती गई है।

औद्योगिक क्रांति ने ब्रिटिश समाज में एक मूलभूत परिवर्तन किया। समाज में दो बिलकुल नए वर्गों ने जन्म लिया। ये वर्ग औद्योगिक पूंजीपति वर्ग जिनका कारखानों पर स्वामित्व था और मजदूर जो

दैनिक मजदूरी पर श्रम करते थे। औद्योगिक पूंजीपति वर्ग तेजी से विकसित हुआ और उसे अभूतपूर्ण समृद्धि मिली मगर मजदूरों, श्रमजीवी गरीबों को आरम्भ में काफी कष्टप्रद जीवन बिताना पड़ा। 19वीं सदी के बाद ही जाकर कहीं उनकी आय में वृद्धि होने लगी। वस्त्र निर्माता ईस्ट इंडिया कंपनी, पूर्वी व्यापार पर उसके एकाधिकार और भारत के राजस्व और निर्यात व्यापार पर नियंत्रण के जरिये भारत के शोषण के तरीकों को अपने ध्येय में बाधक समझते थे। उन्होंने 1793 और 1813 में बीच कंपनी और उसके व्यापारिक विशेषाधिकारों के खिलाफ एक शक्तिशाली अभियान छेड़ा और अन्त में 1813 में भारतीय व्यापार पर उसके एकाधिकार को खत्म करने में सफल हो गये। भारत और ब्रिटेन को आर्थिक उपनिवेश बना दिया गया।

भारत का माल इंग्लैण्ड न जा सके और इंग्लैण्ड का माल भारत में बिना किसी रोक टोक के आता रहे इसके लिए ब्रिटेन की सरकार ने अनेक कदम उठाए जो सबके सब शोषण की नीति पर आधारित थे। भारत का तैयार माल इंग्लैण्ड न जा सके इसलिए उस पर भारी निर्यात कर लगा दिया गया। इसके विपरीत इंग्लैण्ड का माल भारत में बेरोक टोक आता रहे इसलिए उसे भारत से लिये जाने वाले शुल्कों से प्रायः मुक्त सा कर दिया। भारतीय दस्तकारी की वस्तुएं ब्रिटिश मिलों की काफी सस्ती वस्तुओं का मुकाबला करने में असमर्थ थी। ब्रिटिश मिलें आविष्कारों के प्रयोग तथा आय की शक्ति का व्यापक इस्तेमाल कर अपनी उत्पादन क्षमता में तेजी से सुधार ला रही थी। ब्रिटेन ने 18वीं शताब्दी में अपने उद्योगों के सिलसिले में सही रास्ता अपनाया था। फ्रांस, जर्मनी और संयुक्त राज्य अमेरिका इस समय इसी रास्ते पर चल रहे थे। अनेक दशकों बाद जापान और सोवियतसंघ ने भी यही रास्ता अपनाया। इस प्रकार 1813 के बाद ईस्ट इंडिया कंपनी की व्यापारिक नीति ब्रिटिश उद्योग की जरूरतों के अनुकूल रखी और चलाई गई। उसका मुख्य लक्ष्य भारत को ब्रिटिश तैयार माल के उपभोक्ता और कच्चे माल के निर्यातक के रूप में बदल देना था।

अंग्रेजों ने विभिन्न स्त्रोतों से भारत के धन को इकट्ठा करके इंग्लैण्ड की ओर प्रवाहित किया और उसके बदले में कुछ न दिया। उन्हें भारत का शोषण करने से ही मतलब था। यहां की जनता का हित उनके मन में बिलकुल नहीं था। आर्थिक निष्कासन भारत में केवल ब्रिटिश राज्य में ही देखा गया। उसके पहले की बुरी से बुरी भारतीय सरकारों ने जनता से वसूल किये गये राजस्व को देश के अन्दर ही खर्च किया। अकेले बंगाल से ही 1748 से 1765 ई. के मध्य उन्होंने कोई 60 लाख पौण्ड स्वदेश भेजे थे। बाद में यह गति और भी तेज हो गई और प्रति वर्ष 20 से 30 लाख पौण्ड धन इंग्लैण्ड जाने लगा।

5-7 ifjogu vkj lapkj d lk/kuk dk fodkl &

19वीं सदी के मध्य तक भारत में परिवहन के साधन पिछड़े हुए थे। बैलगाड़ी, ऊंट, घोड़े पर ही एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाना संभव था। ब्रिटिश शासकों ने परिवहन की तरफ इसलिए ध्यान दिया कि अगर ब्रिटिश उद्योगों के लिए भारतीय कच्चा माल भारत में वितरित करना है तो आने जाने के साधन में सुधार बहुत आवश्यक है। इसलिए उन्होंने नदियों में स्टीमर चलाये तथा सड़कों को सुधारना आरंभ किया। ग्रांट ट्रंक रोड़ पर कलकत्ता से दिल्ली तक काम आरंभ किया गया और उसे 19वीं सदी के छटे दशक में पूरा किया गया। देश के बड़े शहरों, बन्दरगाहों और बाजार को सड़कों द्वारा जोड़ने के प्रयास आरंभ किये गये। मगर परिवहन असली सुधार सिर्फ रेलमार्ग के बनने पर आया। लार्ड डलहौजी जो 1848 में भारत का गवर्नर जनरल बना, भारत में रेलमार्ग निर्माण का कार्य जल्दी से

करने के पक्ष में था। 1853 में उसने चार मुख्य लाइनों का जाल बिछाने का प्रस्ताव रखा जिसके जरिये देश के अन्दरूनी इलाकों को बड़े बन्दरगाहों से तथा देश के विभिन्न भागों को एक दूसरे से जोड़ा जा सके। अंग्रेजी सरकार ने सोचा कि भारत में रेल निर्माण करके वे अधिकक प्रभावशाली ढंग से भारत पर शासन कर सकेगी। रेलों के निर्माण से बाह्मा आक्रमण तथा आंतरिक विद्रोहों का आसानी से मुकाबला किया जा सकेगा। रेलों के निर्माण से ब्रिटिश निर्माताओं को भी विशेष लाभ रहेगा क्योंकि रेलों की सहायता से भारत के अन्दरूनी विशाल बाजार पर काबू पाना आसान हो जाएगा।

रेलवे लाइनें इस तरह से बिछाई गई थी कि आयात–निर्यात को बढ़ावा मिले किन्तु वस्तुओं को देश के अन्दर एक जगह से दूसरी जगह लाने ले जाने में अपेक्षाकृत कम सुविधा मिली। वर्मा और उत्तर–पश्चिम भारत में कई रेलवे लाइनें बड़ी ऊंची लागतों पर ब्रिटिश साम्राज्यवादी हितों को साधने के लिए बनाई गई थी।

लार्ड डलहौजी के काल में अलग–अलग स्थानों पर आधुनिक ढंग से डाकघर तथा तार घर स्थापित किये गये ताकि समाचार आसानी से पहुंचाये जा सके। प्रथम टेलीग्राफ लाइन कलकत्ता से आगरा तक 1853 में चालू की गई। लार्ड डलहौजी के काल से पहले डाक का कोई ठीक प्रबंध नहीं था। डाक की फीस नगद दामों में खत भेजने वाले से नहीं वरन पाने वाले से ली जाती थी। लार्ड डलहौजी ने टिकट लगाने की रीति को चलाया और सारे देश में एक जैसी डाक की फीस नियत की जो पत्र भेजने वाले से टिकटों के रूप में ली जाती थी। उसके अतिरिक्त तार से बड़े–बड़े नगरों तथा छावनियों को मिला दिया गया।

लार्ड डलहौजी ने सड़कों, पुलों एवं नहरों के निर्माण की ओर अपना पूरा ध्यान दिया। 1848ई. में सार्वजनिक निर्माण विभाग का निर्माण किया। इस विभाग के अन्तर्गत अनेक सड़कों, पुलों एवं नहरों का निर्माण होने लगा।

5-8 Hkkjr e fcfV’k lkekftd uhfr;k &

भारत में 18वीं शताब्दी राजनैतिक उथल–पुथल से भरी हुई थी। इस आपाधापी के युग में जो आर्थिक स्थिति प्रभावित थी वहीं सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्थिति भी दयनीय थी। नित्य प्रति के उत्पातों एवं संघर्षों ने सामाजिक जीवन को आक्रांत कर दिया था। अधिकारियों के अत्याचार सामन्तों और जमींदारों के शोषण, ठेकेदारों एवं अंग्रेज सरकार के कर्मचारियों की लूट खसोट एवं चालाकियों ने आम आदमी का जीना दूभर कर दिया था। राजे महाराजे अपने विलासिता पूर्ण जीवन में अनुरक्त थे, फिर भी अगर 18वीं सदी के जीवन की तुलना 19वीं सदी के जीवन से की जाए तो 18वीं सदी का जीवन फिर भी 19वीं सदी के जीवन से अच्छा था क्योंकि 19वीं सद के ब्रिटिश शासन ने भारतीयों का शोषण कर उसे खोखला बना दिया था। सामाजिक स्थिति बहुत दयनीय थी।

समाज का बहुसंख्यक वर्ग हिन्दुओं का था। हिन्दु समाज में जाति–प्रथा के कारण अन्तर्जातीय विवाह वर्जित थे। छुआ छूत का बहुत ध्यान रखा जाता था जिसका परिणाम यह हुआ कि हिन्दु कभी सामाजिक स्तर पर एकता नहीं कर सके। विघटन का यह बहुत बड़ा कारण था।

प्राचीन आर्य व्यवस्था के अनुसार परिवार पितृ प्रधान थे। महिलाओं की स्थिति संतोषप्रद नहीं थी। केरल एक मात्र ऐसा प्रान्त था जहां सामाजिक जीवन में महिलाओं की दशा अच्छी थी और उन्हें

सम्मानजनक स्थान प्राप्त था। संभ्रान्त परिवारों में महिलाएं पर्दे में रहती थी परंतु गरीब वर्ग की महिलाओं को मेहनत मजदूरी करने के लिये इधर–उधर जाना पड़ता था।

हिन्दु समाज कई कुप्रथाओं से भी ग्रस्त था। सती प्रथा और बाल विवाह जैसी सामाजिक कुरीतियों ने हिन्दु समाज को बुरी तरह झकझोंर दिया था। सती प्रथा राजपूताना, उत्तरी भारत और बंगाल आदि में अधिक प्रचलित था। मृत पति के शव के साथ जीवित पत्नी स्वयं जल जाती थी अथवा उसे जबरदस्ती जला दिया जाता था। इस प्रथा का प्रभाव दक्षिण भारत में नगण्य था। बाल विवाह भी संकीर्ण विचारधारा एवं अनुचित सामाजिक दबावों का परिणाम था जिसने हिन्दु समाज को बहुत हानि पहुंचाई। विधवा विवाह को हिन्दु समाज में बुरी दृष्टि से देखा जाता था।

मुस्लिम समाज की सामाजिक स्थिति संतोषप्रद नहीं थी। मुसलमानों में जातियों, कबीलों आदि के आधार पर विभाजित थी। शिया, सुन्नी छोटे–छोटे विवादों पर आपस में लड़ जाया करते थे। विदेशी मुसलमान चाहे वे ईरानी हो, यूनानी हो या अफगान अथवा अरब के अपने को हिन्दुस्तानी मुसलमानों से श्रेष्ठ समझते थे। जो हिन्दु इस्लाम धर्म में दीक्षित हुए वे अपने अपने जातिगत संस्कार से लेकर आये अतः मुस्लिम समाज में कट्टरता कम हुई और समन्वय का मार्ग प्रशस्त हुआ। यह समाज मोटे तौर पर दो भागों में विभक्त था– संभ्रान्त एवं साधारण। संभ्रान्त लोगों का जीवन विलासिता पूर्ण एवं सुविधा सम्पन्न था जबकि साधारण वर्ग का जीवन अभावग्रस्त था।

सन 1813 तक अंग्रेजों ने देश की धार्मिक सांस्कृतिक और सामाजिक स्थिति में हस्तक्षेप न करने की नीति अपनाई, परंतु इसके बाद उन्होंने इस ओर ध्यान देना आरंभ किया। ब्रिटेन के औद्योगिक पूंजीवाद ने उन्हें इस ओर ध्यान देने को बाध्य किया। सोच विचार और चिन्तन के तौर तरीके बदलने लगे। चिन्तन के तीन मुद्दे थे। विवेकशीलता, तर्क और विज्ञान में विश्वास। पुरातन दृष्टिकोण के स्थान पर सन 1800 तक तीव्र गति से नया दृष्टिकोण आया भारतीय समाज की कड़ी आलोचना की जाने लगी और उसे अंग्रेज घृणा की दृष्टि से देखने लगे। दूसरीओर कुछ उदारवादी अंग्रेज जिन्हें रेडिकल्स कहा जाता था। वे संकुचित आलोचना और साम्राज्यवादी दृष्टिकोण से हटकर विकसित और मानवतावादी विवेकशील चिंतन करने लगे एवं भारत को उन्होंने उदारवादी दृष्टिकोण से देखा। उनका विचार था कि भारत की कुरीतियों को पाश्चात्य विज्ञान दर्शन आधुनिकीकरण द्वारा दूर किया जा सकता है। विलियम बैंटिक स्वयं रेडिकल था जो 1829 में भारत का गवर्नर जनरल बना। उसने भारत में अनेक सुधार किये।

1789 की फ्रांसीसी क्रांति ने स्वतंत्रता, समानता और भाई चारे के संदेश को विश्व के कोने–कोने में पहुंचाया। भारतीय चिन्तकों और विचारकों पर भी इन विचारों का प्रभाव पड़ा। इन विचारों का प्रभाव अंग्रेजों के प्रशासन पर भी पड़ा। भारतीयों की सामाजिक स्थिति में सुधार आये– इस दृष्टिकोण से अंग्रेजों को सोचना पड़ा। इस दृष्टिकोण से आरंभ में सोचने वाले वारेन हेस्टिंग्स, मुनरो, एल्फिस्टन और मेटकॉफ आदि थे। ईसाई धर्म प्रचारकों ने भी आधुनिकीकरण की नीति अपनाई परंतु उनका रूख आक्रमक था। वे खुले आम भारतीय धर्मों की आलोचना करते थे। उनका विचार था कि ईसाई धर्म ही एकमात्र सच्चा धर्म है और उसी से भारतीय समाज का कल्याण हो सकता है। अपने धर्म पर आघात होते देख भारतीयों में आत्मिक जागरण उत्पन्न होने लगा जो आगे जाकर समाज सुधार में उपयोगी सिद्ध हुआ। अंग्रेजी प्रशासन की ओर से भारतीय समाज में सुधार लाने के लिए कुछ लोकोपकारी कदम उठाये गये जिनमें से कुछ इस प्रकार हैः–

1. 1829 में सती प्रथा को गैर कानूनी घोषित किया गया। राजाराम मोहन राय की पहल पर लार्ड विलियम बैंटिक का यह सराहनीय प्रयास था।
2. शिशु हत्या को रोकने के संबंध में 1795 एवं 1802 में कानून बनाए गये परंतु उन्हें सख्ती से बैंटिक और हार्डिंग ने ही लागू किया। यह कानून इसलिए बनाया गया था कि राजपूत वंशों में व अन्य कुछ जातियों में दहेज के भय एवं अन्य कुछ कारणों से जनमते ही लड़कियों को मार देने की कुप्रथा थी।
3. हार्डिंग ने नर बलि प्रथा को कानून बना कर रोका। यह प्रथा गोड़ जाति में प्रचलित थी।
4. ब्रिटिश प्रशासन ने पंडित ईश्वर चन्द्र विद्यासागर एवं कुछ अन्य सुधारकों की पहल पर 1856 में हिन्दु विधवाओं के पुनर्विवाह के लिये कानून पास किया। उस समय समाज में हिन्दु विधवा की स्थिति पशु से बदत्तर थी।
5. भारतीय समाज में शिक्षा के प्रचार–प्रसार के लिये वारेन हेस्टिंग्ज ने 1781 में मुस्लिम कानून और संबद्ध विषयों के अध्ययन के लिए कलकत्ता में मदरसा स्थापित किया। इसी कारण जोनाथन डंकन ने 1791 में हिन्दू कानून और दर्शन में अध्ययन के लिए वाराणसी में संस्कृत कॉलेज स्थापित किया।
6. 1835 में निर्णय के अनुसार ब्रिटिश शासन ने कुछ स्कूल कॉलेजों की स्थापना की जिसमें अंग्रेजी को शिक्षा का माध्यम बनाया गया। यह कदम लार्ड मैकाले की शिक्षा योजना के आधार पर उठाया गया। मैकाले गवर्नर जनरल की काउंसिल का विधि सदस्य था जिसका विचार था– प्राच्य विद्या यूरोपी विद्या से बिलकुल निकृष्ट है मैकाले के विचार दम्भ एवं अज्ञान पूर्ण थे। उसकी शिक्षा योजना बहुत कम धन से आरंभ की गई थी जिसका उद्देश्य शिक्षित भारतीय तैयार करना था जो ब्रिटिश शासन की सेवा कर सके। बाद में यही लोग सामाजिक जागृति लाने में बड़े सहायक सिद्ध हुए।
7. 1857 में कलकत्ता, बम्बई और मद्रास में विश्वविद्यालय स्थापित किये गये। शिक्षा के क्षेत्र में उठाये गये कदमों में सबसे बड़ी कमी यह थी कि लड़कियों की शिक्षा पर कोई ध्यान नहीं दिया गया था।

समाजिक उन्नयन हेतु ब्रिटिश प्रशासन की ओर से जो भी कदम उठाये गये उनमें धीमी गति से ही सही रूप से भारतीय समाज में बदलाव आते चले गये।

3

5-9 /kkfeZd] lkaLd`frd o lkekftd tkx`fr ,oa l/kkj vkUnksyu ¼vk;Z lekt cã lekt½ rFkk lkfgR;] dyk] foKku dk fodkl &

भारतीय समाज के समुदायों में धार्मिक और सामाजिक सुधार के आन्दोलनों का आरंभ हुआ। धर्म के क्षेत्र में इन आंदोलनों ने कट्टरता, अंधविश्वास तथा पुरोहितों के वर्चस्व पर हमले किये। सामाजिक जीवन में इनका उद्देश्य जाति प्रथा, बाल विवाह तथा अन्य कानूनी और सामाजिक असमानताओं को दूर करना था।

vk;l lekt&

हिन्दु समाज में सुधार का एक और आंदोलन स्वामी दयानन्द सरस्वती ने चलाया, जिन्होंने 1875 में आर्य समाज की स्थापना की। दयान्नद का जन्म काठियावाड़ के ब्राह्मण परिवार में हुआ था। बहुत छोटी उम्र में ही उन्होंने मूर्ति पूजा के विरूद्ध विद्रोह कर दिया। 22 वर्ष की आयु में वे घर से भाग खड़े हुए। हिन्दुत्व के सुधार के लिये उन्होंने वेदों का सहारा लिया एवं 'पुनः वेदों की ओर लौटो' का नारा दिया।

1869 में प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश उनकी प्रमुख रचना है, वे ब्रह्म समाज के नेताओं से मिलकर उनके विचारों से परिचित हो चुके थे। उन्होंने बाल विवाह को वेद विरोधी बतलाकर उस पर चोट की। अपनी पुस्तक में उन्होंने सभी धर्मों की समीक्षा की।

दयानन्द के अनुसार वेद अकाट्य है और वेदों को आधार बनाकर हिन्दु धर्म को असली रूप में लाना चाहिए। सामाजिक और धार्मिक सुधार के क्षेत्र में आर्य समाज की उपलब्धियां महत्वपूर्ण है और वे दूसरे समसमायिक सुधार आंदोलनों की उपलब्धियों से संभवतः अधिक है। ब्रह्म समाज का प्रभाव मुख्यतः पढ़े–लिखे लोगों तक सीमित रहा। ऊपर वर्णित कुछ अन्य सुधारकों ने धर्मग्रन्थों की प्रमाणिकता को चुनौती दी थी।

आर्य समाज ने ब्राह्मणों की सत्ता को नकारा और अनेक धार्मिक रीति–रीवाजों तथा मूर्तिपूजा का खण्डन किया। यद्यपि वह स्वयं में वर्ण व्यवस्था का विरोधी न था, पर उसने वंशवाद पर आधारित जाति प्रथा का विरोध किया। उसने स्त्रियों और पुरूषों के समान अधिकारों की वकालत की। मगर आर्य समाज की सबसे बड़ी उपलब्धि, शिक्षा के क्षेत्र में रही। इसने पूरे देश में लड़कों और लड़कियों दोनों के लिये अनेक स्कूल और कॉलेज खोले। इन स्कूलों में शिक्षा का माध्यम हिन्दी होता था और उच्च कक्षाओं में अंग्रेजी अनिवार्य विषय होता था। आर्य समाज का सबसे अधिक प्रभाव पंजाब में पड़ा, जहां सभी वर्गों में शिक्षा के प्रसार तथा हिन्दुओं को अनेक अंधविश्वासों से मुक्ति दिलाने के क्षेत्र में उसका कार्य खासतौर पर सराहनीय है।

5-10 jktk jkeeksgu jk; vkSj czã lekt&

राजा राममोहन राय (1772–1833) आधुनिक भारत में पुनर्जागरण क प्रमुखतम व्यक्ति थे। बुद्धिवादी तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण और मनुष्य की गरिमा तथा सामाजिक समानता के सिद्धांतों को अपना आधार बनाकर वे समाज के सुधार की दिखा में पहल करने वाले पहले व्यक्ति थे, इसलिए इन्हें आधुनिक भारत का जनक कहा जाता है। धर्मसुधार और समाज सुधार के कार्य के प्रति पूरी तरह समर्पित होकर उन्होंने 20 अगस्त 1828 में ब्रह्म समाज की स्थापना की।

धर्म के क्षेत्र में उन्होंने बहुदेववाद तथा मूर्तिपूजा की निंदा की और सभी धर्मों तथा मानवता के लिए एक ईश्वर के सिद्धांत का प्रचार किया। उन्होंने धर्म के प्रति एक बुद्धिसंगत दृष्टिकोण अपनाने पर बल दिया तथा लोगों को राय दी कि वे, मध्यस्थ ब्राह्मणों पर निर्भर न रहकर धर्मग्रंथों का स्वयं अध्ययन करें।

राजा राममोहन राय ने जाति प्रथा पर कड़ी चोट की। उन्होंने सती–प्रथा तथा बाल विवाह की समाप्ति के लिए सरकार को तैयार करने के लिये अभियान चलाया। वे स्त्रियों के समान अधिकार के पक्षधर थे, विधवाओं के अधिकार, पुनर्विवाह के तथा स्त्रियों के संपत्ति संबंधी अधिकार के समर्थक थे। वे

आधुनिक शिक्षा के पक्षधर थे तथा भारत में विज्ञान के प्रचार के लिए उन्होंने अंग्रेजी शिक्षा दिये जाने की वकालात की। उनके सभी प्रयासों का उद्देश्य आधुनिक ज्ञान का प्रसार तथा भारतीय समाज का आधुनिकीकरण था।

उन्होंने अपने विचारों के समर्थन में प्राचीन ग्रंथों का ही सहारा न लेकर बुद्धिसंगत तथा मानवतावादी सिद्धांतों का भी उपयोग किया और इसके लिये वे परंपरा से नाता तोड़ने के लिये भी तैयार थे।

राजा राम मोहन राय द्वारा आरंभ किये गये काम को उनके द्वारा स्थापित संगठन, ब्रह्म समाज ने जारी रखा। यह समाज 19वीं सदी में हिन्दु समाज के सुधार के लिये भारतीयों द्वारा किया गया पहला प्रयास था। इसने जातिगत भेद भाव समाप्त करने तथा स्त्रियों, मुख्यतः विधवाओं की दशा में महत्वपूर्ण काम किया। यद्यपि ब्रह्म समाज में अनेक मतभेद उभरे, फिर भी उसके समर्थकों की बहुत बड़ी संख्या थी और उसने बंगाल के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। केशवचन्द्र सेन के नेतृत्व में ब्रह्म समाज का काम पूरे देश में फैल गया और देश के विभिन्न भागों में 124 संस्थाएं स्थापित हुई।

बंगाल के एक प्रमुख सुधारक ईश्वरचन्द्र विद्यासागर (1820–91) थे। वे एक उच्चकोटि के विद्वान थे। जिन्होंने स्त्री मुक्ति के लिए अपना जीवन अर्पित कर दिया। उन्हीं के प्रयासों का फल था कि 1856 में एक कानून बनाकर विधवा पुनर्विवाह के रास्ते की कानूनी बाधाएं दूर कर दी गई। उन्होंने लड़कियों में शिक्षा के प्रसार में नेतृत्वकारी भूमिका निभाई और अनेक बालिका विद्यालय स्थापित किए और स्थापित करने में सहायता दी। आधुनिक बंगाली भाषा की उन्नति में तथा इसकी शिक्षा के लिए प्राइमरी पुस्तकें तैयार करने में उनकी प्रमुख भूमिका रही।

5-11 ikFkuk lekt&

देश के दूसरे भागों में भी ऐसे ही आंदोलन शीघ्र ही उठ खड़े हुए बंगाल के बाद पश्चिमी भारत वह सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र था जहां सुधार आंदोलन फैले। पश्चिमी भारत के विभिन्न संगठनों की प्रमखतम गतिविधियां स्त्री शिक्षा, विधवा पुनर्विवाह, विवाह की आयु सीमा बढ़ाने, जातिगत भेदों तथा मूर्तिपूजा की निंदा के क्षेत्रों में थी। 1867 में बंबई में आचार्य केशव चंद्र सेन ने प्रार्थना समाज की स्थापना की। प्रार्थना समाज की धार्मिक, सामाजिक सुधार की गतिविधियां ब्रह्म समाज जैसी ही थी। महादेव गोविन्द रानाडे (1842–1901) जैसे अनेक राष्ट्रीय नेता इसमें शामिल हुए।

रानाडे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के संस्थापकों में से एक थे, परंतु उनकी रूचि समाज सुधार में थी। जब वे पूना में न्यायाधीश थे उन्होंने सार्वजनिक सभा में गतिविधियों में सक्रिय भाग लिया जो जनमत तैयार करने वाला एक प्रमुख संगठन था। 1867 में इंडियन सोशल कांफ्रेंस (भारतीय सामाजिक सम्मेलन) नामक एक अखिल भारतीय संगठन की स्थापना हुई। रानाडे इस संगठन के प्राण थे और वे 14 वर्षों तक इसके महासचिव रहे। रानाडे के नेतृत्व में इस कांफ्रेंस ने एक धर्मनिरपेक्ष संगठन की तरह काम किया और इसने भारतीय समाज के आधुनीकीकरण के उद्देश्य से विभिन्न सुधारों के लिए अभियान चलाए। जाति प्रथा का उन्मूलन, अंतर्जातीय विवाह, विवाह की आयु में वृद्धि, बहुपत्नी प्रथा को हतोत्साहित करना, विधवा पुनर्विवाह, स्त्री शिक्षा तथा कथिज जाति बाहर लोगों की दशा में सुधार तथा हिन्दुओं और मुसलमानों के धार्मिक विवादों का पंचायते बुलाकर निपटारा ये इस कांफ्रेंस की कुछ मांगे थी। रानाडे समस्याओं पर उदार दृष्टि से विचार करने वाले एक महान बुद्धिजीवी थे एवं उन्हें महाराष्ट्र

का सुकरात कहा गया। उनका दृढ़ विश्वास था कि सामाजिक, शैक्षिक, राजनीतिक और आर्थिक सभी क्षेत्रों में राष्ट्र की प्रगति आवश्यक है।

bdkbl dk lkjk'k&

1. भारतीय समाज के समुदायों में धार्मिक और सामाजिक सुधार के आन्दोलनों का आरंभ हुआ।
2. हिन्दु समाज में सुधार का एक और आंदोलन स्वामी दयानन्द सरस्वती ने चलाया।
3. जिन्होंने 1875 में आर्य समाज की स्थापना की।
4. हिन्दुत्व के सुधार के लिये उन्होंने वेदों का सहारा लिया।
5. 1869 में प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश उनकी प्रमुख रचना है, वे ब्रह्म समाज के नेताओं से मिलकर उनके विचारों से परिचित हो चुके थे।
6. उन्होंने बाल विवाह को वेद विरोधी बतलाकर उस पर चोट की।
7. आर्य समाज ने ब्राह्मणों की सत्ता को नकारा और अनेक धार्मिक रीति–रीवाजों तथा मूर्तिपूजा का खण्डन किया।
8. आर्य समाज का सबसे अधिक प्रभाव पंजाब में पड़ा, जहां सभी वर्गों में शिक्षा के प्रसार तथा हिन्दुओं को अनेक अंधविश्वासों से मुक्ति दिलाने के क्षेत्र में उसका कार्य खासतौर पर सराहनीय है।
9. राजा राममोहन राय (1772–1833) आधुनिक भारत में पुनर्जागरण के प्रमुखतम व्यक्ति थे।
10. राजा राममोहन राय ने जाति प्रथा पर कड़ी चोट की।
11. उन्होंने सती–प्रथा तथा बाल विवाह की समाप्ति के लिए सरकार को तैयार करने के लिये अभियान चलाया।
12. बंगाल के एक प्रमुख सुधारक ईश्वरचन्द्र विद्यासागर (1820–91) थे।
13. जिन्होंने स्त्री मुक्ति के लिए अपना जीवन अर्पित कर दिया।
14. रानाडे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के संस्थापकों में से एक थे, परंतु उनकी रूचि समाज सुधार में थी।
15. रानाडे जाति प्रथा का उन्मूलन, अंतर्जातीय विवाह, विवाह की आयु में वृद्धि, बहुपत्नी प्रथा को हतोत्साहित करना, विधवा पुनर्विवाह, स्त्री शिक्षा तथा कथिज जाति बाहर लोगों की दशा में सुधार तथा हिन्दुओं और मुसलमानों के धार्मिक विवादों का पंचायते बुलाकर निपटारा ये इस कांफ्रेंस की कुछ मांगे थी।

इकाई आधारित प्रश्न –

प्रश्न 1. मुगल आक्रमण कर्ता बाबर ने भारत में अपना साम्राज्य किस शताब्दी के प्रारंभ में स्थापित किया?

प्रश्न 2. मेवाड़ के राणा उदय सिंह के बेटे का नाम लिखिए?

प्रश्न 3. ब्रिटिश ईस्ट इंडिया की स्थापना कब हुई?

प्रश्न 4. अंग्रेजों तथा सिराजुद्दौला के बीच प्लासी का युद्ध किस दिनांक को और किस वर्ष हुआ था?

प्रश्न 5. राजाराम मोहन राय ने किस सन में ब्रह्म समाज की स्थापना की?

इकाई– 6

सूचकांक–डी.एड/II/IX/VI

पत्राचार पाठ्यक्रम
माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल
(द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित)
डिप्लोमा इन एज्युकेशन
fo"k;& lkekftd foKku ,oa mldk f'k{k.k
द्वितीय वर्ष
प्रश्न पत्र – नवां

विषयः– भारत का स्वतंत्रता आन्दोलन। **अंक 08**

1. **ब्रिटिश शासन के प्रति असंतोष, 1857 का प्रथम स्वतंत्रता आन्दोलन, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना, गरम एवं नरम दल, बंगभंग आन्दोलन तथा क्रांतिकारियों का योगदान।**
2. **मुस्लिम लीग की स्थापना, खिलाफत आंदोलन, गांधी युग, असहयोग आंदोलन भारतीय सुधार अधिनियम 1935**
3. **राष्ट्रीय आंदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन, क्रिप्स व केबिनेट मिशन, स्वतंत्र भारत का निर्माण, मध्यप्रदेश का स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान।**

प्रिय छात्राध्यापकों!

गत पाठ में आपने मुगलकालीन भारत में राजवंश तथा मुगलों के विरूद्ध भारतीय प्रतिरोध, मराठा शक्ति का उदय, भारत में अंग्रेजी सत्ता की स्थापना एवं प्रसार, भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की सामाजिक एवं आर्थिक नीतियां के बारे में अध्ययन किया। प्रस्तुत पाठ में 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम, स्वरूप कारण एवं परिणाम, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना, गांधी युग, भारत छोड़ो आन्दोलन इत्यादि विषय का अध्ययन करेंगे। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से पाठ को दो उपइकाईयों में विभक्त किया गया है।

1

प्रस्तावना–

लार्ड डलहौजी, जिसके विषय में आप पिछले पाठ में पढ़ चुके है। फरवरी 1856 में भारत से विदा हो गया और उसका स्थान लार्ड कैनिंग (1856–1882) ने ग्रहण किया। लार्ड डलहौजी द्वारा 'हड़प नीति' तथा साम्राज्यवादी नीति द्वारा तथा अन्य प्रकार से देशी राज्यों पर अधिकार करने व रेल और तार व्यवस्था का सूत्रपात करने के कारण भारतवासियों में बहुत असंतोष फैल गया था। इसी कारण लार्ड कैनिंग ने 1857 की क्रांति को सिपाही विद्रोह की संज्ञा दी है। श्री सावरकर ने उसे भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम कहा है। कुछ लेखक उसे पूर्ण रूप से सिपाही विद्रोह ही मानते है तथा कुछ लेखकों के विचार से वह भारत में अंग्रेजी शक्ति के विरूद्ध एक संगठित राष्ट्रीय विद्रोह या क्रांति थी।

6.1 ब्रिटिश शासन के प्रति असंतोष :–

भारतीय रियासतों को युद्ध हड़प नीति तथा कुशासन के आधार पर अंग्रेजी साम्राज्य में सम्मिलित करने की लार्ड डलहौजी की उग्र विस्तारवादी नीति के कारण संपूर्ण भारत में भय, आशंका और अस्थिरता का बीजरोपण हो गया। झांसी, सतारा, तंजौर और नागपुर के मराठा राज्यों को गोद निषेध के सिद्धांत के अनुसार हड़प लिया गया। अंतिम पेशवा बाजीराव द्वितीय के दत्तक पुत्र नाना साहब की पेंशन बंद कर देने के कारण वह ब्रिटिश राज्य का प्रबल शत्रु बन गया। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई भी उसके विरूद्ध किये गये अंग्रेजों के अन्याय को कभी नहीं भुला सकती थी। सभी हिन्दुओं में लार्ड डलहौजी की उपरोक्त नीति के कारण असंतोष उत्पन्न हुआ। अंग्रेजों का मित्र होते हुये भी अवध के नवाब वाजिद अलीशाह के पदच्युत किये जाने से केवल मुसलमान ही असंतुष्ट नहीं हुए वरन भारत के अन्य देशी राज्यों में भी असंतोष फैला। इस नीति से अंग्रेजों की सदभावना या न्याय भावना के प्रति भारतीय जनता का विश्वास उठ गया। मुगल सम्राट के प्रति ब्रिटिश शासकों के दुर्व्यवहार के कारण मुसलमानों की भावना को और भी अधिक आघात पहुंचा। इस प्रकार हिन्दु और मुसलमान दोनों ने समान रूप से अंग्रेजों को एक शत्रु मान लिया, जिन्होंने उनकी शक्ति को नष्ट कर दिया था, इसलिए हिन्दुओं और मुसलमानों का एक दूसरे के सहयोग से भारत में ब्रिटिश सत्ता को समाप्त कर देने का प्रयत्न स्वाभाविक ही था।

भारतीय राज्यों को अंग्रेजी साम्राज्य में सम्मिलित कर लिये जाने से भारतीय अफसरों की जीविका का एकमात्र साधन समाप्त हो गया। वे हिन्दुस्तानी कर्मचारी अंग्रेजी शासन में उच्च पद प्राप्त करने की कदापि आशा नहीं कर सकते थे। इस कारण भारतीय समाज के उच्च वर्ग में अंग्रेजों के प्रति कटुता उत्पन्न हुई नव विजित प्रदेशों (अवध) में भूमि का बंदोबस्त करते समय ब्रिटिश अफसरों ने पुराने जमीदारों के अधिकार पत्रों की जांच कड़ाई के साथ कराई और उनके विरूद्ध किसानों को बढ़ावा दिया। अवध के बहुत से पुराने जागीरदारों की जागीरें छीन ली गई। बंबई प्रान्त के प्रसिद्ध 'इनाम कमीशन' द्वारा 20000 जागीरों का अपहरण कर लिया गया। इस प्रकार समाज के उच्च वर्ग अर्थात जमीदार और जागीरदार अंग्रेजी शासन का शत्रु हो गया।

अंग्रेजी कानून जिसके अन्तर्गत उच्च वर्ग और निम्न श्रेणी के लोगों में कोई भेद नहीं समझा जाता था यह उच्च वर्ग को अप्रिय था। जनसाधारण में भी अंग्रेजी कानून व्यवस्था लोकप्रिय नहीं थी। नये सामाजिक सुधारों के तथा पश्चिमी शिक्षा पद्धति लागू किये जाने से भी अधिकांश भारतीयों में असंतोष उत्पन्न हुआ। ब्रिटिश अफसर भारतीयों को हीन समझते थे और कई बार उनका अपमान करते थे। वे कभी भारतीयों से सामाजिक स्तर पर हिल मिल नहीं सके।

अंग्रेज भारत से समय–समय पर बहुत सा धन ले गये। उन्होंने भारत में घरेलू उद्योगों को नष्ट कर दिया था। वे भारत में बहुत कम कीमत पर कच्चा माल खरीद कर इंग्लैण्ड भेज देते थे ओर वहीं कच्चा माल इंग्लैण्ड के कारखानों में बनाकर नये रूप में पुनः उंचे दामों में बेचा जाता था। इस प्रकार देश की संपत्ति इंग्लैण्ड जा रही थी। भारतीय अब केवल गरीब किसानों के रूप में निर्वाह कर रहे थे।

6.2 धार्मिक कारण – हिन्दुओं और मुसलमानों में समान रूप से यह भावना व्याप्त थी कि अंग्रेज उनके पुराने धर्म को समाप्त करके उन्हें ईसाई बनाना चाहते है। 1850 में पारित किये गये धार्मिक अयोग्यता अधिनियम द्वारा हिन्दू से ईसाई बने लोगों को अपनी पैतृक सम्पत्ति का हकदार माना गया, उन्हें नौकरियों में पदोन्नति की सुविधा प्रदान की। भारत में ईसाई (प्रचारक) मिशनरी की बढ़ती हुई संख्या तथा ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा इनकों दिये गये प्रश्रय के कारण इस प्रकार की आशंकाओं की पुष्टि हुई। मिशनरी लोगों ने न केवल लोगों का धर्म परिवर्तन कराया वरन् हिन्दू और इस्लाम की आलोचना की। इससे हमारे देशवासियों को बहुत आघात पहुंचा। सती एवं बाल हत्या का निषेध करना तथा विधवा विवाह की अनुमति देना, विशेषरूप से पुरातन विचारधारा वाले लोगों में हिन्दू धर्म के क्षेत्र में अनावश्यक हस्तक्षेप समझा गया। बहुत से लोगों का यह विश्वास था कि पाश्चात्य शिक्षा से हमारे पुराने धर्मों की जड़े नष्ट हो जावेगी और इसके बाद ईसाई धर्म का प्रचार करना सरल होगा।

कंपनी की सेना में भारतीय सैनिकों की संख्या अधिक थी। अंग्रेज सैनिकों की संख्या उन भारतीय सैनिकों की तुलना में बहुत कम थी। 1856 में केवल 45322 अंग्रेज सैनिक थे, जबकि हिन्दुस्तानी सैनिकों की संख्या 233000 थी। इसके कारण से भारतीय सिपाहियों के विद्रोह को प्रोत्साहन मिला।

कंपनी के हिन्दुस्तानी सिपाहियों में इस समय कम वेतन तथा किसी प्रकार की तरक्की न मिलने के कारण गहन असंतोष था। इसके अतिरिक्त हिन्दुस्तानी सिपाहियों के प्रति अंग्रेज अफसरों के दुर्व्यवहार से विरोध उत्पन्न होना अवश्यभावी था। कंपनी की बंगाल सेना में उंची जातियों के ब्राह्मण, क्षत्रियों की संख्या बहुत थी और उनमें अनुशासन भी कम था। ये उच्च जाति के सैनिक समुद्र के पार जाने को तैयार नहीं थे। कुछ ने तो सिंधु और बर्मा में जाने से इंकार कर दिया था। 1856 में नया नियम जनरल सर्विस एनलिस्टमेंट एक्ट पास किया गया जिसके अनुसार नये भर्ती किये हुये सैनिकों को आवश्यकता पड़ने पर समुद्र के पास व किसी भी बाहरी देश में जाने के लिये बाध्य किया जा सकता था। उच्च वर्ग के भारतीय सैनिकों ने इस नये कानून को जाति बहिष्कत कराने का प्रयत्न समझा इन सब बातों के अतिरिक्त बंगाल की सेना के अधिकांश सिपाही अवध के रहने वाले थे और अवधवासियों की ब्रिटिश विरोधी भावनाओं का समर्थन करते थे।

6.3 1857 का प्रथम स्वतंत्रता आन्दोलनः–

1857 की क्रांति का प्रारंभ मेरठ में 10 मई 1857 को हुआ। जब कंपनी के भारतीय सिपाहियों को तीन रेजीमेंटों ने विद्रोह कर दिया तथा अपने अफसरों की हत्या करके दिल्ली की ओर प्रस्थान किया। विद्रोहियों ने देहली पर अधिकार कर लिया और बहादुरशाह को सम्राट घोषित कर दिया। इस क्रांति की ज्वाला लखनऊ, बरेली, कानपुर, आगरा, झांसी, बुन्देलखण्ड तथा अन्य स्थानों में फैल गई। क्रांति के प्रारंभिक काल में अंग्रेज कई स्थानों पर पराजित हुये और उन्हें कठिन स्थिति का सामना करना पड़ा कानपुर में नाना ने नेतृत्व किया और अंग्रेज जनरल व्हीलर को 20 जून को समर्पण करना पड़ा। लखनऊ में अल्पवयस्क नवाब की माता बेगम हजरत महल ने शासन संभाल लिया। बिहार में शाहबाद जिले के कुंवर सिंह ने विद्रोह की बागडोर संभाली। झांसी और बुंदेलखंड में महारानी लक्ष्मीबाई और तात्या टोपे अंग्रेजों की सत्ता उखाड़ने का प्रयत्न कर रहे थे, किन्तु धीरे–धीरे अंग्रेजों की स्थिति सुधरने लगी। सितम्बर 1857 में निकलसन ने देहली पर पुनः अधिकार कर लिया। बहादुरशाह को कैद करके रंगून भेज दिया गया। कानपुर में नाना साहब अंग्रेज सेना से हार गये और निकल भागे। सेनापति आउटरम और हेबलाक ने लखनऊ को क्रांतिकारियों से बचा लिया। देहली पर पुनः अधिकार कर तथा लखनऊ बचाव से क्रांति के इतिहास में एक नया मोड़ आया और उसके पश्चात अन्य स्थानों पर क्रांति को कुचलने में अंग्रेजों को अधिक कठिनाई नहीं हुई।

मई 1858 ई. में रूहेलखण्ड की राजधानी बरेली पर अंग्रेजों ने अधिकार कर लिया। बरेली और शाहजहांपुर के युद्ध में मौलवी अहमदशाह ने वीरता दिखाई। जून 1858 ई. में विश्वासघाती ने उसका वध कर दिया।

क्रांति का दायरा जितना बड़ा था उतनी ही उसकी जड़े भी गहरी थी। उत्तर और मध्य भारत में हर जगह सिपाहियों की बगावत के होते ही जनता ने भी विद्रोह कर दिया। सिपाहियों द्वारा ब्रिटिश सत्ता नष्ट किये जाने के बाद आम जनता हथियार लेकर उठ खड़ी हुई और भालों, कुल्हाड़ियों, तीर कमानों, लाठियों, हसियों और यहां तक कि अनगढ़ बन्दुकों से अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने लगी। ब्रिटिश सरकार की आर्थिक नीति ने भारतीय दस्तकारों तथा शिल्पकारों को बर्बाद कर दिया। इंग्लैंड से मशीनों द्वारा बनाई गई सस्ती वस्तुओं के आयात एक तरफ मुक्त व्यापार, भारतीय वस्तुओं पर ऊंची आयात शुल्क कच्चे माल के निर्यात, कर्मचारियों द्वारा कारीगरों पर अत्याचार करने आदि, कारणों से भारतीय दस्तकार और शिल्पकार अपने पुश्तैनी पेशे को छोड़ने पर मजबूर हो गये। अपनी बर्बादी के लिये दस्तकार और शिल्पकार लोग अंग्रेजों को कैसे भूल सकते थे। इसलिये उन्हें बदला लेने का मौका मिला। क्रांति में किसानों के बड़े पैमाने पर भाग लेने के कारण उसे वास्तविक ताकत मिली तथा उसे

जन क्रांति का चरित्र प्राप्त हुआ। ऐसा उन जगहों पर हुआ जो अभी उत्तरप्रदेश और बिहार में शामिल है। इन इलाकों में किसानों और जमीदारों ने महाजनों और उन नये जमीदारों पर हमले किये जिन्होंने उन्हें उनकी जमीन से बेदखल कर दिा था। उन्होंने विद्रोह का सहारा लेकर महाजनों की लेखा बहियों तथा कर्ज के प्रमाणों को नष्ट कर दिया। उन्होंने अंग्रेजों द्वारा स्थापित न्यायालयों, तहसीलों और राजस्व अभिलेखों तथा थानों को नष्ट कर दिया।

1857 की लड़ाई को अंग्रेजों ने जब रोकने की भरसक कोशिश की उन्हें न केवल विद्रोह का सामना करना पड़ा बल्कि दिल्ली, अवध उत्तर पश्चिम प्रांतों और आगरा, मध्य भारत, पश्चिम बिहार के लोगों के विरूद्ध भी भीषण और क्रूर लड़ाई छेड़ने पड़ी। उन्होंने गांवों को जला दिया और हजारों बेगुनाह व्यक्तियों का कत्लेआम किया। खुले आम फांसी पर लटका कर तथा बिना मुकदमा चलाए मतफय दंड देकर उन्होंने लोगों को डराने की कोशिश की। सिपाहियों और जनता ने अंत तक बड़ी दृढ़ता और बहादुरी से लड़ाई की। 1857 की क्रांति की अधिकांश शक्ति हिन्दु–मुस्लिम एकता में निहित थी। सैनिकों, जनता और नेताओं की बीच पूर्ण हिन्दू–मुस्लिम एकता थी। हिन्दु और मुस्लमान क्रांतिकारियों तथा सिपाहियों ने एक दूसरे की भावनाओं का आदर किया। उदाहरण के लिये, जहां क्रांति सफल हुई वहां हिन्दुओं की भावनाओं काआदर करते हुए गोहत्या पर प्रतिबंध लगाने का आदेश तुरंत जारी कर दिया गया। इसके अतिरिक्त नेतृत्व में हिन्दुओं और मुसलमानों का समान प्रतिनिधित्व था। जगदीशपुर (बिहार) का राजा कुंवरसिंह 80 वर्ष कीआयु का होते हुये भी इस स्वतंत्रता संग्राम में शामिल हो गया। वह बिहार में विद्रोह का मुख्य नेता था। वह अंग्रेजों से बिहार में लड़ा और बाद में नाना साहब की सेनाओं के साथ मिलकर उसने अवध और मध्य भारत में अभियान चलाये। उसने अंग्रेजी सेनाओं को कई स्थानों पर हराया। लड़ाई में उसे एक घातक जख्म लग गया। उसकी मृत्यु 27 अप्रैल 1858 को जगदीशपुर गांव में उसके पैत्रिक का मकान में हो गई। अंग्रेजों ने जुलाई 1857 तक इस महान क्रांति को पूर्णतः कुचल दिया।

6.4 भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापनाः–

मिस्टर ऐ.ओ. ह्यूम ने एक जो अवकाश प्राप्त एक अंग्रेज अधिकारी थे, दो प्रमुख भारतीयों के सहयोग से दिसम्बर 1885 में अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की नीव डाली। 19वीं शताब्दी के प्रारंभ से ही भारत में चल रहे राजनैतिक आन्दोलन के परिणाम स्वरूप ही भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस क जन्म हुआ। ह्यूम ने वर्तमान सरकार के लोगों के प्रति संपर्क के भयंकर अभाव का अनुभव किया। वह लार्ड डफरिन से मिले तथा उन्हें विश्वास दिलाया कि भारत में एक ऐसे संगठन की आवश्यकता है जो कि भारतीयों में बढ़ती जन आंदोलन की भावना को सीमाओं में बांधने का काम कर सके। इसी उद्देश्य से महासभा क गठन किया गया। हमारे अध्ययन हेतु प्रस्तुत अवधि में भारतीय राष्ट्रीय महासभा के इतिहास को दो अवस्थाओं में विभक्ति किया जा सकता है– प्रथम 1885 ई. से 1905 तक तथा द्वितीय 1905 से 1919 तक।

प्रथम अवस्था 1885 से 1905 तक के उद्देश्य– भारतीय राष्ट्रीय महासभा ने अपनी प्रथम अवस्था के अवधिकाल में इतिहास के सुधार के सिद्धांतों की परिपूर्ण एवं अपने उद्देश्य एवं आदर्श की शनैः शनैः परिपक्व बनाया। इस अवधिकाल में कांग्रेस के निम्नलिखित उद्देश्य थे– (1) सिंचाई के साधनों के प्रसार करना, (2) भारत के खाद्य पदार्थ पर रोक लगाना, (3) भारत के उद्योगों का विकास, (4) शिक्षा विकास, (5) कार्यपालिका का न्यायपालिका से पृथक्ककरण, (6) कर की दरों में कमी, (7) पुलिस सेवाओं में सुधार और (8) भारत के लिए प्रतिनिधि सभा का गठन।

कांग्रेस की कार्यप्रणाली – कांग्रेस के काम करने के ढंग का प्रस्ताव पास करना, शिप्ट मण्डल भेजना तथा याचिका प्रस्तुत करना था। सर्वाधिक प्रमुख तथ्य यह है कि इसकी गतिविधियां केवल भारत तक ही सीमित नहीं रही थी, अपितु इंग्लैंड में भी जनमत को प्रभावित करने की दिशा में कार्य किया। सन 1887 ई. में दादाभाई नौरोजी ने इंग्लैंड में इण्डियन रिफर्म एसोसिएशन की नींव भारत के कल्याण हेतु कार्य करने के लिए डाली। सरकार की नीतियों की आलोचना करने में कांग्रेस ने सदैव मर्यादा का

पालन किया। यह सम्राट के प्रति निष्ठावान थी तथा ब्रिटिश राज्यवादियों ने उदारवाद में अटूट विश्वास तथा न्याय की भावना के प्रति असीम प्रेम की भावना रखती थी। आरंभ में सरकार ने कांग्रेस के प्रति कृपादृष्टि बनाए रखी किन्तु बाद में इसके प्रतिकूल हो गई।

सरकार के विरोध के उपरांत भी कांग्रेस जन साधारण में प्रिय बन गई। प्रशासकीय समस्याओं की संसदीय जांच एवं 1892 के इण्डियन कौंसिल एक्ट द्वारा भारत को प्रदत्त राजनीतिक अधिकारी को कांग्रेस की सफलताओं में गिना जाता है।

6.5 गरम एवं नरम दल :–

आप पढ़ चुके है कि भारत में राष्ट्रीय चेतना जागृत होने के पश्चात भारतीयों के लिये राजनीतिक अधिकार प्राप्ति के उद्देश्य से जो विभिन्न संस्थाये स्थापित हुई थी उनमें से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस सर्व प्रमुख थी। आपको स्मरण होगा कि कांग्रेस ने सर्वधानिक प्रशासनिक राजनीतिक तथा नागरिक अधिकारों की सुरक्षा इन सभी क्षेत्रों में ठोस अधिकार की प्राप्ति के प्रयास आरंभ किये। जैसा कि आपको ज्ञात है कांग्रेस के आरंभिक नेताओं का ब्रिटिश शासन को न्यायिकता पर विश्वास था और वे सोचते थे कि भारतीयों की न्यायिक मांगों को ब्रिटिश प्रशासन अनदेखा नहीं करेगा। इस कारण से कांग्रेस की नीति नरमपंथी रही। किन्तु यह विश्वास अधिक वर्षों तक टिक न सका और उग्र या जुझारूराष्ट्रवादी प्रवृत्तियां विकसित होने लगी। इसे गरम दलीय राजनीति भी कहा जाता है।

गरम दल के नेताओं आरंभ से ही राष्ट्रीय आंदोलन में मौजूद थे। इस विचारधारा का प्रतिनिधित्व बंगाल में राजनारायण बोस और अश्विनी कुमार दत्त तथा महाराष्ट्र में विष्णु शास्त्री चिपलुणकर जैसे लोगों ने किया।

बीसवीं शताब्दी के आरंभ होते ही जुझारू राष्ट्रवादियों की विचारधारा को एक अनुकूल वातावरण मिल गया और उसके अनुयायी राष्ट्रीय आंदोलन के द्वितीय चरण का नेतृत्व करने के लिये सामने आये। इस विचार धारा के सबसे विशिष्ट प्रतिनिधि थे लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक। तिलक का जन्म 1856 ई में हुआ था। प्रारंभ जीवन में वे भारतवासियों पर होने वाले अत्याचारों के विरूद्ध विस्फोटक भावनाओं से ओतप्रोत थे। एक कट्टर हिन्दू की भांति उन्हें पुरातन भारतीय दर्शन से प्ररेणा मिलती थी। भारतीय युवकों में वीरता की भावना उत्पन्न करने के उद्देश्य से उन्होंने गणपति तथा शिवाजी महोत्सव आरंभ किये थे। उन्होंने केसरी नामक समाचार पत्र के द्वारा अंग्रेजों की नीति की स्पष्ट आलोचना की।

भारत वर्ष के जनजीवन एवं राजनीतिक क्षेत्र में तिलक के अवतरित होते ही इस देश के राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास का एक नया अध्याय प्रारंभ होता है। जन साधरण में गरम दल अपनाने की प्रेरणा उन्होंने ही फूकी। मध्यमवर्गियों पर उनकी कोई आस्था नहीं थी और वह प्रार्थनाओं एवं आवेदन पत्रों पर कोई विश्वास नहीं करते थे। उनकी यह दृढ़ धारणा थी कि भारत को स्वाधीनता तभी मिलेगी जब अंग्रेजों से स्वतंत्रता छीन सकने की शक्ति एवं सामर्थ्य भारतवासियों में हो उन्हें अग्रेंजों के न्याया में कोई भरोसा नहीं था। स्वतंत्रता को वह अंग्रेजों की कृपा से प्राप्त होने वाली सुविधा नहीं मानते थे अपितु उसे वह भारतवासियों का जन्मसिद्ध अधिकार मानते थे। उनका नारा था कि स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है और हम उसे लेकर ही रहेंगे। उनका मत था कि भारतीय संस्कार पाश्चात्य संस्कृति से श्रेयस्कर है। उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन को राष्ट्रीय क्रांति का रूप दिया। वे अधिकारियों के लिये भय के स्त्रोत थे।

तिलक ने राष्ट्रीय आंदोलन को जन आंदोलन का रूप दिया। देश में राजनैतिक चेतना के महत्व को वे समझते थे। उनको यह विदित था कि जब तक स्वाधीनता के लिए आंदोलन की भावना सर्वसाधारण जनता में जागृत नहीं करेंगे तब तक आंदोलन सफल नहीं हो सकता। इस समय तक आंदोलन की भावना कतिपय वर्ग के लोगों तक ही सीमित थी किन्तु तिलक ने इस भावना को व्यापक रूप दिया और उसे देश के सभी भागों में फैलाया।

बंगभंग आंदोलन :–

भारत की राजनीतिक गतिविधियों की दृष्टि से बंगाल प्रान्त महत्वपूर्ण था। आपने पिछली कक्षाओं में पढ़ा होगा कि बंगाल की दीवानी प्राप्त करने के पश्चात अंग्रेजों ने भारत में किस प्रकार से सत्ता पर अधिकार जमा लिया था। राष्ट्रीय चेतना जागृति का बंगाल से गहरा नाता था सामाजिक तथा धर्मिक सुधार आंदोलनों का केन्द्र बिन्दु बंगाल ही था। उन दिनों बंगाल प्रान्त में बिहार, उड़ीसा तथा असम का कुछ भा ही सम्मिलित था। इतने विशाल प्रान्त में एक चिनगारी का जलना भी बहुत बड़े जनसमुदाय को प्रभावित करता था। राष्ट्रीय आंदोलन की उग्रता की आंच अब ब्रिटिश प्रशासन को लगने लगी थी। अन्ततः तत्कालीन गवर्नर लार्ड कर्जन ने इतने बड़े प्रान्त के प्रशासन में आने वाली समस्याओं को आधार बनाकर बंगाल प्रान्त के दो भाग करने का निर्णय किया। पूर्वी भाग में असम और पूर्व बंगाल को रखा गया और पश्चिमी भाग में शेष बंगाल को। यह विभाजन 5 जुलाई 1905 को किया गया परंतु लार्ड कर्जन का मुख्य उद्देश्य था संगठित बंगाल को तोड़ना उसे दुर्बल बनाना और राष्ट्रीयता के वेग को रोकना। लार्ड कर्जन ने स्वयं कहा था– ''इस प्रकार अपने शासन के शक्तिशाली प्रतिद्वंद्वियों को कमजोर बनाना इस योजना का एक मुख्य उद्देश्य है।''

बंगाल विभाजन के पीछे लार्ड कर्जन का एक अन्य उद्देश्य भी था। बंगाल के विशाल प्रान्त में हिन्दू और मुसलमान समान रूप से रहते थे। अंग्रेजों ने ''फूट डालों और राज्य करों'' की नीति को बंगाल में लागू करना उचित समझा। उन्होंने बंगाल में सांप्रदायिकता के बीज बोए। बंगाल को इस प्रकार बांटा गया कि पूर्वी भाग जहां मुसलमान अधिक थे, अलग हो गए। ढाका मे एक घोषणा में लार्ड कर्जन ने कहा– ''पूर्वी बंगाल के मुसलमानों के बीच ऐसी एकता लाई जाए जैसी पुराने मुसलमान नवाबों और राजाओं के जमाने के बाद कभी नही देखी गई थी।''

6.6 क्रांतिकारियों का योगदान :–

राष्ट्रवादियों के लिए बंग भंग की कार्यवाही एक प्रशासनिक कार्य नहीं वरन भारतीय राष्ट्रवाद को एक चुनौती थी। शीघ्र ही एक व्यापक विरोधी आंदोलन प्रारंभ हो गया। 7 अगस्त 1905 को कलकत्ता के टाउन हॉल में एक विशाल प्रदर्शन का अयोजन किया गया। विभाजन के दिन को राष्ट्रीय शोक दिवस घोषित किया गया। लोगों ने उपवास रखे। प्रातःकाल गंगा में स्नान किया। रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने इस अवसर के लिए विशेष राष्ट्रगीत की रचना की। कलकत्ता की गलियां ''वंदे मातरम'' से गूंज उठी। रक्षाबंधन के त्यौहार को राष्ट्रीय आंदोलन का पर्व मानकर बंगाल के दोनों भागों की जनता ने अटूट एकता के प्रतीक के रूप में एक दूसरे की कलाई पर राखी बांधी। इस आंदोलन में नरमदलीय और गरमदलीय दोनों प्रकार के राष्ट्रवादियों ने परस्पर सहयोग दिया।

बंगाल के नेताओं ने अनुभव किया कि केवल सभाओं और प्रदर्शनों से सरकार पर पर्याप्त प्रभाव नहीं पड़ सकता है। जनभावनाओं को प्रदर्शित करने वाली किसी ठोस कार्यवाही की भी आवश्यकता है। नेताओं ने एक नवीन अस्त्र का प्रयोग किया। यह था स्वदेशी आंदोलन इसके अन्तर्गत विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करना और प्रत्येक क्षेत्र में स्वदेशी वस्तुएं ही अपनाने की अपील की गई। जनता ने उपरोक्त वचन निभाने की शपथ ली। अनेक स्थानों पर विदेशी कपड़े की खुलेआम होली जलाई गई तथा विदेशी कपड़ा बेचने वाली दुकानों पर धरने दिए गए। संपूर्ण देश में स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन को अपार सफलता मिली। विवाह तक में विदेशी वस्तुए वापस कर दी जाती थी। लोग ऐसे समारोहों में भाग लेने से मना कर देते थे, जहां विदेशी नमक या विदेशी शक्कर का खाद्यान्न में उपयोग किया गया हो।

स्वदेशी आंदोलन ने देशी उद्योगों को बहुत बढ़ावा दिया। अनेकों कपड़ा मिलें, हस्तकरण कंपनिया, राष्ट्रीय बैंक और बीमा कंपनियां खोली गई। कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने भी एक स्वदेशी भंडार में सहायता दी। भारतीयों द्वारा विदेशी वस्तुओं के स्थान पर प्रत्येक स्वदेशी वस्तु अपनाने से अंग्रेजों के व्यापार पर भी प्रभाव पड़ा।

संस्कृति के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय प्रभाव हुए। राष्ट्रवादी काव्य, गद्य और पत्रकारिता की धारा प्रवाहित होने लगी। राष्ट्रीय शैक्षणिक संस्थान खोले गए। 15 अगस्त 1906 को नेशनल काउंसिल ऑफ एज्युकेशन की स्थापना की गई। स्वदेशी आंदोलन का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू यह भी था कि इसमें छात्रों महिलाओं और अनेक मुस्लिम नेताओं ने भाग लिया। छात्रों पर तो सरकार ने बहुत अत्याचार किए किन्तु उनका मनोबल नहीं टूटा।

बंगभंग विरोधी आंदोलन केवल बांगल तक ही सीमित नहीं था। बंबई, मद्रास और उत्तरी भारत में भी स्वदेशी तथा बहिष्कार आंदोलन चलाए गए। लोकमान्य तिलक ने इस कदम को राष्ट्रीय आंदोलन में एक नया अध्याय माना तथा स्वदेशी का संदेश पूरे भारत में फैलाया। उन्होंने इसे ब्रिटिश राज के विरूद्ध जनसंघर्ष चलाने तथा सारे देश को समान सहानुभूति के बन्धन में बांधने वाले अवसर के रूप में लिया गया।

अपीलों या जन आंदोलनों के द्वारा सुधारों तथा स्वराज्य के लिए गरमदल और नरमदल पूर्ण शक्ति से कार्य कर रहे थे, परंतु सरकारी दमन और निराशा का परिणाम अंततः क्रांतिकारी आतंकवाद के रूप में हुआ। बंगाल के असंतुष्ट युवकों को यह विश्वास हो गया कि सविनय अवज्ञा से राष्ट्रवादी लक्ष्यों को प्राप्त करना असंभव है। अतः उन्होंने क्रांतिकारी पद्धतियां अपनाकर बंदूक और पिस्तौल का सहारा लेकर विदेशी शासन को उखाड़ फेंकने का निश्चय किया। उन्होंने आयरिश आतंकवादियों की नीति पर चलकर गुप्त संगठन बनाए और युवकों को गालाबारूद बनाने तथा हथियार चलाने का प्रशिक्षण देना शुरू किया। क्रांतिकारियों के दो महत्वपूर्ण संगठन थे– महाराष्ट्र में ''अभिवन भारत सोसायटी'' औरबंगाल में ''अनुशीलन समीति''। प्रमुख क्रांतिकारी थे– खुदीराम बोस, प्रफुल्ल चार्की, चाफेकर बंधु, विनायक दामोदर सावरकर, अरविंद घोष, वारिन्द्र कुमार बोस इत्यादि। क्रांतिकारियों ने अपनी गतिविधियों के केन्द्र विदेश में स्थापित किए। भारत के बाहर काम करने वालों में कुछ प्रमुख व्यक्ति थे– श्यामजी कृष्ण वर्मा, मेडम भिक्काजी कामा, बरकतुल्लाह भोपाली, बी.बी.एस. अरूयर, लाला हरदयाल, रासबिहारी सोहर सिंह भकना, उबैदुल्लाह सिधी और मानवेंद्र नाथ राय, उत्तरी अमेरिका के भारतीय क्रांतिकारियों ने विभिन्न भारतीय भाषाओं में ''गदर'' नामक एक अखबार निकाला और इसी नाम का एक दल (गदर पार्टी) स्थापित किया काबुल में एक क्रांतिकारी दल में स्वतंत्र भारत की अंतरिम सरकार स्थापित की। राजा महेन्द्र प्रताप उसके राष्ट्रपिता और बरकतुल्लाह भूपाली (भोपाल मध्यप्रदेश के निवासी) उसके प्रधानमंत्री थे।

यद्यपि ये क्रांतिकारी अपने उद्देश्य में सफल नहीं हुए परंतु उनका देशप्रेम निश्चय और आत्मबलिदान भारतीय जनता के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बना। खुदीराम बोस और करतार सिंह सरापा जैसे 19 वर्षीय नवयुवकों द्वारा हंसते हुए फांसी का फंदा गले में डलवा लेना साहस और देशभक्ति के अनुपम उदाहरण थे। ऐसे ही बलिदानों ने भारत के युवा वर्ग को निर्भयता और बल प्रदान किया।

2

6.7 मुस्लिम लीग की स्थापनाः–

अंग्रेजों से प्रेरणा तथा संरक्षण पाकर मुसलमानों ने अपने हितों की रक्षा के लिये 1906 में मुस्लिम लीग की स्थापना की। मुस्लिम लीग ने जो मूलतः कुछ ऐसे मुसलमानों का संगठन था जो नवीन राष्ट्रीयवाद की विचारधारा की अपेक्षा केवल धर्म पर ही बद देता था। सन 1913 ई. में ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत ही स्वशासन को अपना लक्ष्य निर्धारित किया। इंग्लैंड एवं टर्की के मध्य युद्ध के कारण मुसलमान अंग्रेजी सरकार से अप्रसन्न थे। मुसलमानों के इस ब्रिटिश विरोधी भाव के कारण मुसलमानों एवं कांग्रेस के मध्य सहयोग हेतु मार्ग प्रशस्त हो गया। 1916 ई. में कांग्रेस एवं लीग ने अपने अधिवेशन लखनऊ में आयोजित किये जिसमें ''लखनऊ पेक्ट'' के नाम से विख्यात समझौता हुआ। समझौते के फलस्वरूप कांग्रेस पृथक निर्वाचन क्षेत्र की बात से सहमत हो गई तथा दोनों संगठनों ने मिलकर औपनिवेशक स्तर के आधार पर संवैधानिक योजना तैयार की।

खिलाफत आन्दोलनः–

खिलाफत का अर्थ 'खलीफा का पद है। खलीफा विश्व के समस्त मुसलमानों का धर्म गुरू माना जाता था। तुर्की का सुल्तान मुसलमानों का खलीफा था। प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद मित्र राष्ट्रों व तुर्की के सुल्तान (खलीफा) के साथ किए गए व्यवहार के कारण मुसलमानों ने खिलाफत आंदोलन शुरू किया। मौलाना मोहम्मद अली तथा शौकत अली (अली बंधु) ने अंग्रेजी शासन से अनुरोध किया कि वह मुसलमानों के धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप न करे। 19 अगस्त 1919 में सारे देश में खिलाफत दिवस मनाया गया। अंग्रेजी दमन नीति के विरोध में गांधीजी ने असहयोग करने का जो सुझाव रखा था उसे मुसलमानों का भी समर्थन मिला। गांधीजी ने भी खिलाफत आंदोलन का पूर्ण समर्थन किया। इस तरह अंग्रेजों के विरूद्ध हिन्दू मुसलमान एक हो गए।

6.8 गांधी युगः–

रोलेट एक्ट से भारतीय जनमानस को गहरा आघात पहुंचा। देश में अशांति फैल गई और एक्ट के विरूद्ध शक्तिशाली आंदोलन उठ खड़ा हुआ। इसी आंदोलन में देश को एक नए नेता का नेतृत्व प्राप्त हुआ। ये नवीन नेता थे, मोहनदास करमचंद गांधी।

महात्मा गांधी का जन्म 2 अक्टूबर 1969 ई. में गुजरात के पोरबंदर में हुआ था। इनका पूरा नाम मोहनदास करमचंद गांधी था। इंग्लैंड में वकालत पास करके वह दक्षिण अफ्रीका गए। वहां की सरकार अल्पसंख्यक गोरो के हाथ में थी। वह सरकार वहां के पुराने निवासियों और एशिया के देशों से जाकर बसे लोगों पर अत्याचार करती थी। इस अत्याचार का गांधीजी ने कड़ा विरोध किया तथा उन्होंने एक नई विधि को अपनाया जिसे सत्याग्रह कहा जाता है। आगे भारत को स्वतंत्र कराने में भी गांधी जी ने अपनी नई विधि अर्थात सत्याग्रह का प्रयोग किया। सन 1915 में गांधी जी दक्षिण अफ्रीका से भात वापस लौटे। वे राजनीति में आने से पूर्व भारत की स्थिति को समझना चाहते थे, अतः 1916 ई. में उन्होंने अहमदाबाद में साबरमती आश्रम की स्थापना की तथा वहीं से अपने सत्य अहिंसा के आदर्शों का पालन करना प्रारंभ किया। गांधीजी ने अपने सत्याग्रह का प्रारंभ 1917 ई. में बिहार के चंपारन नामक स्थान से किया था। यहां नील के खेतों में काम करने वाले किसानों की स्थिति बहुत खराब थी। अंग्रेजी बलपूर्वक इनसे खेती करवाते थे तथा कम कीमत पर नील बेचने को मजबूर करते थे। सन 1917 में गांधीजी, डॉ राजेन्द्र प्रसाद, मजरूल हक, जे.पी. कृपालानी तथा महादेव देसाई के साथ चंपारन के अंग्रेज अफसरों ने गांधीजी को चंपारन छोड़ने को विवश किया किन्तु गांधीजी अड़े रहे और अंत में अंग्रेज अफसरों को झुकना पड़ा और पीड़ित किसानों को दशा सुधारने पड़ी। गांधीजी की यह प्रथम विजय थी। यहीं से इन्हें भारतीय किसानों की निर्धनता का अनुभव हुआ।

6.9 असहयोग आंदोलनः–

कलकत्ते में सितंबर 1919 में कांग्रेस का अधिवेश हुआ। गांधी जी ने सरकार के प्रति असहयोग करने की योजना रखी जो पारित हुई।

असहयोग का अभिप्राय– गांधीजी कट्टर अहिंसावादी थे और वे राष्ट्रीय आंदोलन में सफलता प्राप्त करने के लिए भी अहिंसात्मक मार्ग अपनाने के लिए कटिबद्ध थे। उन्होंने हर प्रकार से अत्याचार व अन्याय से लड़ने के लिए सत्याग्रह नाम के नए अस्त्र का आविष्कार किया। सत्याग्रह अर्थात सत्य पर डटे रह कर संघर्ष करना। संघर्ष चलाने के लिए गांधीजी ने सत्याग्रह को दो शाखाओं 1. असहयोग एवं 2 सनिवय अवज्ञा का सहारा लेने का निश्चय किया। उनका विचार था कि इन दोनों का प्रयोग व्यक्तियों, संस्थाओं और सरकार सभी के विरूद्ध किया जा सकता है।

असहयोग से अभिप्राय है कि हम जिसके विरूद्ध सत्याग्रह करते है उससे अपने संबंध तोड़ ले उसके साथ सहयोग न करें, कोई ऐसा काम न करे जिससे उसे अनैतिक कार्यों में सहायता अथवा प्रोत्साहन मिले।

असहयोग आंदोलन का कार्यक्रम– दिसम्बर 1920 में कांग्रेस का नियमित अधिवेशन नागपुर में हुआ। इस अधिवेशन में असहयोग आंदोलन के निम्नलिखित कार्यक्रम की पुष्टि की गई–

1. विदेशी माल का बहिष्कार।
2. सरकारी उपाधियों और पदों का त्याग।
3. सरकारी उत्सवों और दरबारों का बहिष्कार।
4. स्वायत शासन संस्थाओं से मनोनीय सदस्यों का त्यागपत्र।
5. सरकारी व सरकार से सहायता प्राप्त स्कूलों व कॉलेजों का बहिष्कार करना।
6. सरकारी न्यायालयों व वकीलों द्वारा बहिष्कार।
7. सैनिकों, लिपिकों, व श्रमिकों द्वारा मेसोपेटामिया के लिए की जाने वाली भर्ती से इंकार करना।
8. विधान मंडलों का बहिष्कार।
9. राष्ट्रीय शिक्षा संस्थाओं की स्थापना करना।
10. पंचायतों की स्थापना करना।
11. घर–घर चर्खा चलाना और सूत कातना।
12. छुआछूत को दूर करना।
13. हिन्दू–मुस्लिम एकता को दृढ़ करना।

6.10 आंदोलन का आरंभ एवं प्रगति– अगस्त 1920 को गांधीजी ने असहयोग आंदोलन आरंभ करते हुए स्वयं ब्रिटिश सरकार द्वारा दी गई 'केसरे हिन्द' की उपाधि वापस कर दी। सेठ चमनलाल बजाज ने रायबहादुर की उपाधि वापस की, सुभाषचन्द्र बोस ने आई.सी.एस. का पद ठुकरा दिया और रवीन्द्रनाथ टैगोर ने सर की उपाधि वापिस की।

गांधी जी ने आंदोलन को सफल बनाने के लिये पूरे देश का दौरा किया। उन्होंने सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलने और आंदोलन को पूर्ण अहिंसात्मक रखने का जनता से आग्रह किया।

कलकत्ता में राष्ट्रीय कालेज, गुजरात विद्यापीठ, बिहार विद्यापीठ, काशी विद्यापीठ तिलक मराठा विद्यापीठ और बंगाल राष्ट्रीय विश्वविद्यालय जैसी राष्ट्रीय शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की गई।

मोतीलाल नेहरू, चितरंजन दास, जयकर, राजेन्द्र प्रसाद, वल्लभ भाई पटेल, राजगोपालाचार्य, आसफ अली, डॉ मुंजे, डॉ. प्रकाशम, सत्यमूर्ति इत्यादि प्रसिद्ध वकीलों ने वकालत करना छोड़ दिया।

सारे देश में विदेशी माल का बहिष्कार किया गया और विदेशी वस्तुओं तथा विदेशी वस्त्रों की होली जलाई गई। चरखा और खादी का खूब प्रचार हुआ और स्वदेशी को अपनाने पर बल दिया गया।

कांग्रेस ने विधान मण्डलों का पूर्ण बहिष्कार किया और चुनावों में भाग नहीं लिया। जनता भी मतदान करने नही गई। इस आंदोलन में हिन्दू मुस्लिम एकता स्थापित हुई और मुसलमानों ने कंधा मिलाकर कार्य किया।

सन 1919 के सुधारों को लागू करने के लिए ड्यूक आफ कन्नोट इंग्लैंड से भारत आया। स्थान स्थान पर उसका बहिष्कार किया गया। नवंबर 1921 में प्रिंस ऑफ वेल्स (इंग्लैंड का राजकुमार) भारत की सरकारी यात्रा पर आया। कांग्रेस ने उसके आगमन का पूर्ण बहिष्कार करने की जनता से अपील की। वह जिस दिन बंबई में उतरा उस दिन नगर में भयंकर दंगा व रक्तपात हुआ। सरकार ने आंदोलन कुचलने के लिए कठोर दमनचक्र, चला। लोगों पर गोलियां चलाई गई और हजारों की संख्या में लोगों को जेलों में ठूंस दिया गया। समस्त देश में राष्ट्रीय भावना का ज्वार सा आ गया था। सरकारी लाठियों के प्रहार अथवा गिरफ्तारी का जनता को कोई भय नहीं रहा। सभी प्रमुख नेताओं को गिरफ्तार कर लेने पर भी आंदोलन की उग्रता कम नहीं हुई। अंग्रेज सरकार ने समझौते की दिशा में प्रयास किया। पं. मदन मोहन मालवीय के द्वारा कांग्रेस को सूचित किया गया कि आंदोलन बंद कर

दिया जाए तो स्वयं सेवक संघ दल कानूनी घोषित कर दिया जाएगा और सब राज नैतिक बंदी मुक्त कर दिए जाएंगे किन्तु इस संधि का कोई परिणाम नहीं निकाला।

चौरा–चोरी की घटना– सन 1921 में अहमदाबाद में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। इसमें स्वराज्य मिलने तक अहिंसात्मक असहयोग आंदोलन जारी रखने का निश्चय किया गया था। समस्त नेता जेल में थे। गांधीजी ने वाइसराय को अल्टीमेंटम देकर राजबंदियों को मुक्त करने तथा दमन बंद करने की मांग की। अंग्रेजों के अत्याचारों से अहिंसात्मक नीति के संबंध में लोगो में उलझन उत्पन्न हो गई और इस प्रकार की उत्साह हीनता छा गई थी। 5 फरवरी 1922 ई. को गोरखपुर जिले में चौरी–चौरा के स्थान पर पुलिस ने अहिंसात्मक प्रदर्शनकारियों पर गोली चलाई और जब उनकी गोलियां समाप्त हो गई तब वे भागकर थाने में छिप गए। उत्तेजित भीड़ ने थाने को आग लगा दी जिससे पुलिस के सभी व्यक्ति और भवन जल कर राख हो गये।

आंदोलन का स्थगन– गांधीजी ने असहयोग आंदोलन को पूर्ण रूप से अहिंसात्मक रखने पर जोर दिया था। चौरा–चौरी की हिंसात्मक घटना की सूचना उन्हें मिलने पर वे अत्यंत दुखी हुए। तुरंत ही बारदोली में कांग्रेस कार्य समिति की बैठक हुई जिसमें निर्णय करके असहयोग आंदोलन को स्थगित कर दिया गया और कांग्रेसजनों को केवल रचनात्मक कार्यक्रम चलाने की आज्ञा दी गई।

ऐसे समय में जबकि आंदोलन चरम सीमा पर था और जनता द्वारा खुले दिल से कांग्रेस का साथ दिया जा रहा था उसे एकाएक स्थगत कर देने से जनता व नेताओं को बड़ा धक्का पहुंचा। मोतीलाल नेहरू, देशबंधु चितरंजन दास व लाला लाजपत राय आदि को गांधी जी के इस निर्णय से बड़ा दुख हुआ। सुभाष चंद्र बोस ने इसकी आलोचना की तथा इसे राष्ट्रीय विपत्ति से कम नहीं माना।

आंदोलन के स्थगन से ब्रिटिश सरकार को प्रसन्नता हुई। आंदोलन रूकते ही गांधीजी को गिरफ्तार करके जेल में डाल दिया गया।

असहयोग आंदोलन का महत्व– असहयोग आंदोलन अपने घोषित लक्ष्यों, खिलाफत संबंधी मांग पूरी करवाने पंजाब हत्याकांड के लिए अंग्रेज सरकार द्वारा उपचार एक वर्ष में स्वराज्य की प्राप्ति में सफल नहीं हो सका। सरकारी संस्थाओं का बहिष्कार और रक्षात्मक कार्यक्रम में चर्खे का प्रयोग थोड़े ही दिन लोकप्रिय रहा। बाद में वह भी बहुत कम हो गया। लेकिन इस आधार पर आंदोलन को असफल नहीं कहा जा सकता। इस आंदोलन की सफलताएं भी विभिन्न थी।

(अ) कांग्रेस की नीति में परिवर्तन– इस आंदोलन के फलस्वरूप कांग्रेस की नीति और कार्य प्रणाली में परिवर्तन हो गया। प्रारंभ में कांग्रेस की नीति थी सरकार से विनती करके प्रार्थना पत्र देकर भारतीयों के लिए प्रशासन में आकार मांगना और सरकारी नौकरियों में रियायतें प्राप्त करना। अब कांग्रेस ने स्वशासन को अपना उद्देश्य बनाया तथा संघर्ष का मार्ग अपनाया।

(ब) जनता आंदोलन – इस आंदोलन में जनता को बड़ी संख्या में सम्मिलित किया गया। पहले शिक्षित वर्ग समझता था कि राजनीति से सामान्य जनता का कोई संबंध नहीं है असहयोग आंदोलन ने इस धारणा को बदल दिया।

(स) आंदोलन का अहिंसात्मक रूप – किसी भी शक्तिशाली शासन के विरूद्ध अहिंसात्मक तरीके से चलाया गया, यह प्रथम संघर्ष था। विश्व इतिहास की यह एक नई घटना थी। इस पद्धति का प्रभाव देश की जनता और विश्व के अन्य देशों पर भी पड़ा।

(द) एकता की स्थापना – इस आंदोलन में हिन्दुओं तथा मुसलमानों के बीच एकता की स्थापना हुई। ब्रिटिश शासन को अपना शत्रु मानकर दोनों संप्रदायों ने कंधे से कंधा मिलाकर कार्य किया। एक दूसरे के प्रति विश्वास और सहानुभूति उत्पन्न हुई।

(ई) रचनात्मक कार्य– असहयोग आंदोलन में कांग्रेस ने रचनात्मक कार्य भी किए। खादी तथा चर्खे का प्रचार राष्ट्रीय शिक्षा संस्थाएं चलाना, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करके स्वदेशी वस्तुओं को अपनाना, हरिजनों का उद्धार आदि से राष्ट्र को बड़ा लाभ हुआ। विदेशी माल के बहिष्कार से देशी उद्योगों को प्रोत्साहन मिला। राष्ट्रीय शिक्षा संस्थाओं ने राष्ट्रभक्ति की भावना को दृढ़ किया।

6.11 स्वराजय दल का आंदोलन– महात्मा गांधी ने जन सहयोग आंदोलन प्रारंभ किया था तब भी देश में चितरंजनदास एवं मोतीलाल नेहरू जैसे नेता थे जिन्होंने आंदोलन का अनुमोदन नहीं किया था। गांधीजी ने किसी प्रकार से नेताओं को राजी कर लिया था तथा इन नेताओं ने असहयोग आंदोलन के कार्यक्रमों को स्वीकार किया था। आंदोलन के स्थापित हो जाने के पश्चात जब कारावास से मुक्त हुए तो उन्होंने गांधीजी द्वारा प्रतिपादित आंदोलनों के सिद्धांतों में अविश्वास प्रकट किया। उसका विश्वास था कि भारतीयों को चुनाव लड़ना चाहिए तथा व्यवस्थापिका में जाकर सरकार का दृढ़, निरंतर एवं समान विरोधी की नीति का अवलंबन करना चाहिए। वह विरोध इस सीमा तक किया जाए कि 1919 के अधिनियम की अव्यवहारिकता सिद्ध हो सके और अंग्रेज जन साधारण को स्वराज्य प्रदान करने हेतु तैयार हो जाए। उन्होंने अपने अनुयायियों से स्वराजिक दृष्टिकोण से संधि कर लेने की बात कही तथा उसी के साथ विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार एवं खादी के प्रयोग की अपील की। वह स्वयं अस्प श्यता एवं शिक्षा के विरूद्ध चलाए गए अभियान में व्यस्त हो गए।

सन 1923 ई. के चुनाव में स्वराज्य दल को बंगाल एवं मध्य प्रांत में पूर्ण बहुमत प्राप्त हुआ। केन्द्रीय व्यवस्थापिका के निर्वाचित स्थानों में भी पर्याप्त संख्या में सदस्य निर्वाचित हुए। प्रांतीय व्यवस्थापिकाओं में स्वराज्य दल ने द्वेद्ध शासन प्रणाली में अविश्वास व्यक्त करते हुए सरकार के कामकाज में बाधा उत्पन्न की, किंतु इनका विघटन प्रारंभ हो गया तथा सन 1926 के अंत में नवीन चुनाव होने तक दल दो समूहों में विभक्त हो गया। एक दल सरकार से पूर्ण सहयोग करने में तथा दूसरा दल सरकार से पूर्ण रूप से सहयोग के सिद्धांत में विश्वास रखता था।

6.12 भारतीय सुधार अधिनियम 1935 :–

भारतीय जनता की संवैधानिक अधिकारों की मांग के उत्तर में ब्रिटिश सरकार ने सन 1909 और 1919 में क्रमशः दो सुधार अधिनियम पारित किये थे। ये अधिनियम जनता को संतुष्ट न कर सके। सन 1930 में कांग्रेस ने पूर्ण स्वाधीनता की मांग रखी। तीन गोलमेज सम्मेलन लंदन में आयोजित किये गये। तीसरे गोलमेज सम्मेलन के पश्चात सन 1933 में ब्रिटिश सरकार ने एक श्वेत पत्र प्रकाशित किया। इन श्वेत पत्र में उन बिन्दुओं की ओर संकेत किया गया था जिनके आधार पर सरकार अगला सुधार अधिनियम पारित करने वाली थी और भारत के भावी प्रशासन का आधार बनने वाला था। 4 अगस्त 1935 को ब्रिटिश सरकार ने नया अधिनियम पारितकिया। इस अधिनियम की प्रमुख विशेषताएं थी–

1. प्रान्तों में आरक्षण सहित स्वायत्त शासन और उत्तरदायी सरकार की स्थापना।
2. प्रान्तों और राजयों को मिलाकर अखिल भारतीय संघीय सरकार की स्थापना।
3. प्रान्तों के द्वैध शासन प्रणाली की समाप्ति तथा केन्द्र में द्वैध प्रणाली का चलन।
4. सीटों (स्थानों) का वितरण सांप्रदायिक परिनिर्णय के आधार पर किया जाना।

राष्ट्रीय नेताओं ने उपरोत अधिनियम को अत्यधिक निराशाजनक माना। महात्मा गांधी ने चुनावों में भाग लेकर पद ग्रहण करने का पक्ष लिया जबकि पं. जवाहरलाल नेहरू तथा सुभाष चन्द्र बोस ने चुनावों में भाग लेने का विरोध किया। अन्ततः दोनों पक्षों में समझौता हो गया। 1935 के अधिनियम के अन्तर्गत सरकार ने 1937 में प्रान्तों की विधान सभाओं के लिये चुनाव करवाये। कांग्रेस तथा अन्य दलों ने चुनावों में भाग लिया। कांग्रेस को भारी सफलता प्राप्त हुई। मद्रास, बिहार, बंबई, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश तथा उड़ीसा में कांग्रेस को पूर्ण बहुमत मिला। केवल पंजाब और सिन्ध में कांग्रेस अल्पमत में रही। जुलाई 1937 में कांग्रेस ने प्रान्तों में मंत्रिमंडल का निर्माण किया और प्रशासन आरंभ किया। 1935 के अधिनियम के अनुसार ही प्रशासन चलता रहा।

3

राष्ट्रीय आंदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन, क्रिप्स व केबिनेट मिशन, स्वतंत्र भारत का निर्माण, मध्यप्रदेश का स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान।

6-13 jk"Vªh; vkUnksyu o Hkkjr NksMks vkUnksyu%&

क्रिप्स मिशन की असफलता ने भारतीय जनता के मन में गहरा असंतोष उत्पन्न कर दिया। उधर जापान की सफलता ने भारतीयों को उत्तेजित और सचेत कर दिया था। कांग्रेस ने अनुभव किया कि भारत की जनता द्वारा किए गए आंदोलन से ही जापानी खतरे को टाला जा सकता है और जनता को जागृत करने के लिए ब्रिटिश सरकार द्वारा भारतीयों के पक्ष में सत्ता हस्तांतरण करना अति आवश्यक है। इन तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए कांग्रेस ने जुलाई 1942 में वर्धा में अपनी कार्य समिति की बैठक की तथा एक प्रस्ताव पास करके अंग्रेजों से भारत छोड़ने छोड़ने के लिए कहा। ब्रिटिश सरकार को चेतावनी दी गई कि यदि उन्होंने भारत से हटने से इंकार किया तो महात्मा गांधी के नेतृत्व में एक जन आंदोलन आरंभ कर दिया जाए।

कांग्रेस के नेताओं का विचार था कि भारत छोड़ों की चेतावनी के कारण सरकार चिंतित होकर भारत के पक्ष में निर्णय लेगी लेकिन सरकार ने इसके विपरीत नीति अपनाई। दूसरे ही दिन गांधीजी एवं अन्य नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया और कांग्रेस दल को गैर कानूनी घोषित कर दिया गया। जनता की उत्तेजना बढ़ गई। नेतृत्व के अभाव में आंदोलन अनियंत्रित एवं असंगठित हो गया। सरकार ने कठोर नीति अपनाई और दमनचक्र तीव्रगति से चलाया। परिणामस्वरूप जनता में क्रोध की भयंकर लहर दौड़ गई। तोड़ फोड़ की कार्यवाहियां की गई, रेल की पटरियां उखाड़ी गई, तार कांटे गए, पुल, रेल्वे स्टेशन व डाकघरों को नष्ट किया गया। सरकार को कई स्थानों पर गोली चलाने के आदेश देने पड़े। अनेक अबोध व्यक्ति मारे गए और हजारों की संख्या में लोगों को गिरफ्तार किया गया। सरकार की नृशंसता से जनता आतंकित हो उठी। इसके विरूद्ध महात्मा गांधी ने जेल में आमरण अनशन शुरू किया। वाइसराय लार्ड लिनलिथगों ने गांधीजी को मुक्त करने की जनता की मांग को अनसुना कर दिया, जिस कारण वाइसराय की कार्यकारिणी के 3 सदस्यों ने त्यागपत्र दे दिया। नृशंस क्रूरता से आंदोलन दबा दिया गया किन्तु अंग्रेजों के विरूद्ध क्रोध की जो ज्वाला भारतीयों के मन में भड़क रही थी वह बुझ नहीं सकी।

6-14 fØIl ,o dfcuV fe'ku%&

विश्वयुद्ध के प्रवाह में जब जापान ने सिंगापुर और रंगून पर अधिकार कर लिया तो अंगेजों ने अनुभव किया कि जब तक भारतीयों का समर्थन प्राप्त नहीं होता तब तक जापान को पराजित करना कठिन है। अतः 1942 में सर स्टेफर्ड क्रिप्स की अध्यक्षता में एक मिशन भारतीय नेताओं से बातचीत

करने आया। इस मिशन ने भारत के भावी प्रशासन के लिए कुछ सुझाव रखे। इनमें भारत को युद्ध के पश्चात औपनिवेशिक स्तर का स्वराज्य देने तथा भारत के लिए संविधान बनाने हेतु एक संविधान निर्माण समिति बनाने का प्रस्ताव रखा। यह अंग्रेजों के पुराने आश्वासन थे। गांधी जी ने इन्हें अस्वीकृत किया, अतः कोई समझौता नहीं हो सका। मुस्लिम लीग ने प्रस्ताव को आंशिक रूप से स्वीकार किया किन्तु पाकिस्तान की मांग पर बल देती रही। क्रिप्स मिशन पूर्णतः असफल रहा।

फरवरी 1946 में ब्रिटिश सरकार ने भारतीय नेताओं से बातचीत करने के लिए मंत्रीमण्डल के सदस्यों का एक शिष्ट मण्डल (केबिनेट मिशन) भारत भेजा। ब्रिटिश प्रधानमंत्री ने घोषणा की कि उनकी सरकार भारत को स्वाधीनता देने की इच्छुक है। केबिनेट मिशन ने प्रस्ताव रखा कि एक भारतीय संघ बनाया जाए जिसके प्रांतों को चार क्षेत्रों में बांट दिया जाए। प्रत्येक क्षेत्र का अपना संविधान हो और उसे विदेश नीति प्रतिरक्षा और संचार को छोड़ शेष विषयों में स्वायत्ता प्राप्त हो। मिशन ने यह प्रस्ताव भी रखा कि एक संविधान सभा बनाई जाए, जिसके सदस्यों का चुनाव जनता द्वारा न हो बल्कि साम्प्रदायिक चुनाव मण्डलों के आधार पर प्रान्तीय विधानमंडल उनका चुनाव रकें। यह प्रस्ताव भी रखा गया कि भारतीय रियासतों के प्रतिनिधि उनके शासकों द्वारा मनोनीत हो। संविधान सभा के बारे में मिशन के प्रस्ताव को कांग्रेस ने स्वीकार कर लिया कांग्रेस यद्यपि वयस्क मताधिकार के आधार पर चुनी हुई एक संविधान सभा के लिए जोर देती आई थी फिर भी स्वाधीनता की प्राप्ति में देर न होने देने के लिए उसने कैबिनेट मिशन क प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। जुलाई में संविधान सभा के चुनाव पूरे हुए। इसमें 210 सामान्य सीटों में से 201 कांग्रेस को मिली और मुसलमानों के लिए आरक्षित 78 सीटों में से 73 मुस्लिम लीग को मिली। मुस्लिम लीग ने संविधान सभा का बहिष्कार कर दिया और पाकिस्तान नाम से एक अलग राज्य की मांग के लिए जोर देती रही। इस बीच रियासतों की जनता ने संगठित भारत में रियासतों के विलय के लिए जोर डाला। 2 सितम्बर 1946 को जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में कांग्रेस ने अंतिरम सरकार बनाई। बाद में मुस्लिम लीग भी इस अंतिरम सरकार में शामिल हुई। 24 मार्च 1947 का लार्ड माउंटबेटन भारत के वायसराय नियुक्त किए गए और ब्रिटिश सरकार ने घोषणा की कि वह अधिक से अधिक जून 1948 तक भारतीयों को सत्ता सौंप देंगी। 30 जून 1947 को माउंटबेटन ने प्रस्ताव रखा कि भारत को दो भागों में विभाजित करके भारतीय संघ और पाकिस्तान नाम अलग–अलग राज्य बनाए जाए। भारतीय रियासतों को अपना–अपना भविष्य स्वयं तय करने का अधिकार दे दिया गया। इस तरह देश का विभाजन हो गया और सत्ता भारत और पाकिस्तान को दे दी गई। पाकिस्तान में पश्चिमी पंजाब, पूर्वी बंगाल, सिंध और पश्चिमत्तोर सीमा प्रान्त शामिल थे।

15 अगस्त 1947 को भारत स्वाधीन हो गया। मगर दुर्भाग्य से सांप्रदायिक दंगे भड़क उठे। लाखों लोग बेघर हो गए। गांधी जी तसल्ली और धीरज बंधा रहे थे। भारत की स्वाधीनता के दिन वे कलकत्ता में थे जहा भयानक सांप्रदायिक दंगे हुए थे। सांप्रदायिक हिंसा बन्द हो जाने के बाद ही वे दिल्ली लौटे। 30 जनवरी 1948 को एक हिन्दू कट्टरपंथी ने गोलीमार कर उनकी हत्या कर दी।

6-15 Lor= Hkkjr dk fuek.k%&

संविधान सभा ने स्वाधीन भारत के लिए के संविधान तैयार करके 26 जनवरी 1950 के लागू किया गया और भारत को एक गणराज्य घोषित किया गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सबसे पहला काम था देश के एकीकरण की प्रक्रिया को पूरा करना। रियासतों के अनेक शासक अपने स्वतंत्र राज्य कायम करने के सपने देख रहे थे। मगर रियासतों की जनता के आन्दोलन और गृहमंत्री सरदार पटेल की बुद्धिमत्ता के कारण वे सभी भारतीय संघ में शामिल होने के लिए तैयार हो गए। जूनागढ़ का नवाब भाग कर पाकिस्तान चला गया। इधर पाकिस्तान में घुसपैठियों ने हमला किया तो वहां के राजा हरिसिंह डोंगरा तथा नेशनल कांफ्रेस के नेता शेख अब्दुल्ला ने 26 अक्टूबर 1947 को भारत से प्रार्थना की कि वह भारत राज्य के विलय को स्वीकार करें। हैदराबाद का भारत में विलय नवंबर 1949 में हुआ। 1949 के अन्त तक भारतीय रियासतों का भारत में विलय पूरा हो चुका था और उन्हें संघ के विभिन्न राज्यां का अंग बनाया जा चुका था।

अब कुछ ही भारतीय क्षेत्र ऐसे थे जो आपनिवेशक शासन में थे। ये थे फ्रांस के अधीन पांडिचेरी, कराइकल, यनाम, माहे और चन्द्रनगर और पुर्तगाल के अधीन दादरा और नागर हवेली गोवा, दमन और डिव्। 1954 तक फ्रांस के अधिकार क्षेत्र भारत में शामिल हो चुके थे। 1961 में गोवा की मुक्ति के साथ पुर्तगाल के अधिकार क्षेत्र भी भारत में शामिल हो गए और इसी के साथ औपनिवेशक शासन से पूरे भारत की मुक्ति की प्रक्रिया पूरी हो गई। स्वाधीनता के साथ भारतीय जनता के इतिहास का नया युग आया तथा एक नए और समृद्ध भारत के निर्माण का आरंभ तेजी से आरंभ हुआ।

6-16 e/; izn'k dk Lor=rk vkUnksyu e ;ksxnku%&

कांग्रेस कार्यकारिणी की बैठक हुई और पर्याप्त विचार विमर्श के पश्चात भारत छोड़ो का प्रस्ताव 8 अगस्त 1942 को पारित हो गया। समस्त भारतवासियों ने गांधी जी के नेतृत्व में अंहिसात्मक संघर्ष करने का संकल्प लिया। मध्यप्रदेश के प्रमुख नेताओं को विभिन्न शहरों में उनके निवास स्थान पर बना लिया गया। पं. रविशंकर शुक्ल, ठाकुर छेदीलाल और द्वारिका प्रसाद मिश्र को बम्बई लौटते हुए मलकापुर रेलवे स्टेशन पर बंदी बनाया गया। भारत छोड़ो आन्दोलन का मध्यप्रदेश के देश भक्तों ने संचालन गंभीरता से लिया। मध्यप्रदेश की रियासतों की जनता भी इस राष्ट्रीय यज्ञ में अपनी आहुति देने में पीछे नहीं थी। सागर, जबलपुर, खण्डवा, छिंदवाड़ा, रायपुर, दुर्ग और बिलासपुर आदि सभी शहरों के कांग्रेसी और गैर कांग्रेसी कार्यकर्ता प्रदर्शन के लिय सड़कों पर आ गये।

मध्यप्रदेश के सभी शहरों, ग्रामों नगरों में आम हड़ताल घोषित कर दी तथा हजारों कार्यकर्ता बन्दी बना लिये गये। सागर व जबलपुर में भी उग्र भीड़ ने हिंसात्मक कार्य किये। दुर्ग जिले के पास में रामदेव आचार्य के नेतृत्व में एक प्रदर्शन किया गया, जिसका लक्ष्य पुलिस को खाकी वर्दी पहनाना था।

मध्यप्रदेश के मण्डला में 1500 लोगों ने शासकीय कार्यालयों के अभिलेखों को नष्ट कर दिया तथा रेल–परिवहन, टेलीफोन के तार आदि काट दिए। सागर व जबलपुर में भी उग्र भीड़ ने हिंसात्मक कार्य किये। 1938 ई. में अखिल भारतीय रियासती प्रजा सम्मेलन के पश्चात मध्यप्रदेश के इन्दौर, ग्वालियर, देवास, भोपाल, रीवा, छतरपुर, पन्ना, टीकमगढ़ आदि राज्यों में नागरिक अधिकार संबंधित आन्दोलन मुखरित होने लगे। इसी के परिणामस्वरूप 1942 ई. में ''भारत छोड़ो आन्दोलन'' में इन रियासतों के नवयुवकों का योगदान उल्लेखनीय था जिन्होंने अपने शासकों की व ब्रिटिश फौजो की बर्बरता का वीरतापूर्वक सामना किया।

इकाई का सारांशः–

1. लार्ड डलहौजी की उग्र विस्तार वादी नीति के कारण संपूर्ण भारत में भय, आशंका और अस्थिरता का बाजारोपण हो गया।
2. 1856 में नया नियम जनरल सर्विस एनलिस्टमेंट एक्ट पास किया गया।
3. 1856 में एनफील्ड रायफल का प्रयोग प्रारंभ किया गया। इस नई रायफल के चर्बीयुक्त कारतूस सैनिकों को दिये गये थे।
4. 1857 में क्रांति के प्रारंभ होने से पहले विद्रोह के लक्षण प्रकट हो गये थे।
5. मध्य भारत क्षेत्र में झांसी की रानी लक्ष्मीबाई और तात्या टोपे विद्रोह के नेता थे।
6. लखनऊ की बेगम हजरत महल, फैजाबाद के मौलवी अहमदशाह, बिहार के कुंवर सिंह ने भी अंग्रेजों के विरूद्ध विद्रोह का संगठन किया।
7. क्रांति का प्रारंभ मेरट में 10 मई 1857 को हुआ।
8. 1885 में मिस्टर ह्यूम ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की नींव रखी।
9. मुस्लिम लीग की स्थापना 1906 ई. में की गई।
10. लार्ड कर्जन ने 1905 को बंगाल का विभाजन किया।
11. बंगभंग के विरोध में स्वदेशी तथा बहिष्कार के प्रबल आन्दोलन चले।
12. 19 अगस्त 1919 में सारे देश में खिलाफत दिवस मनाया गया।
13. महात्मा गांधी ने 1920 को असहयोग आन्दोलन प्रारंभ करते हुए ब्रिटिश सरकार द्वारा दी गई केसरी हिन्द की उपाधि वापिस कर दी।
14. 1935 को ब्रिटिश सरकार ने भारतीय सुधार हेतु नया अधिनियम पारित किया।
15. कांग्रेस ने जुलाई 1942 में वर्धा में अपनी कार्य समिति की बैठक की तथा एक प्रस्ताव पास करके अंग्रेजों से भारत छोड़ने को कहा।
16. 1942 में सर स्टेफर्ड क्रिप्स की अध्यक्षता में एक मिशन भारतीय नेताओं से बातचीत करने आया।
17. फरवरी 1946 मे ब्रिटिश सरकार ने भारतीय नेताओं से बातचीत करने के लिये मंत्रीमण्डल के सदस्यों का एक शिष्ट मण्डल (कैबिनेट मिशन) भारत भेजा।
18. 24 मार्च 1947 को लार्ड माउंट बेटन भारत के वायसराय नियुक्ति किये गये।
19. 30 जून 1947 को माउंट बेटन ने प्रस्ताव रखा कि भारत को दो भागों में विभाजित करके भारतीय संघ और पाकिस्तान नाम अलग–अलग राज्य बनाए जाए।

20. 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हो गया।
21. हैदराबाद का भारत में विलय नवम्बर 1949 में हुआ।
22. भारत छोड़ो आन्दोलन का मध्यप्रदेश के देशभक्तों ने संचालन गंभीरता से लिया।
23. सागर, जबलपुर, खण्डवा, मण्डला, छिन्दवाड़ा, रायपुर, दुर्ग, बिलासपुर आदि शहरों के कांग्रेसी और गैर कांग्रेसी कार्यकर्ता प्रदर्शन के लिये सड़कों पर आ गये।
24. 1938 ई. में अखिल भारतीय रियासती प्रजा सम्मेलन के पश्चात मध्यप्रदेश के इन्दौर, ग्वालियर, देवास, भोपाल, रीवा, छतरपुर, पन्ना, टीकमगढ़ आदि राज्यों में नागरिक अधिकार संबंधित आन्दोलन हुए।

इकाई आधारित प्रश्न –

प्रश्न 1. लार्ड डलहौजी भारत से किस सन् में चला गया?
प्रश्न 2. 1857 की क्रांति की असफलता का मुख्य कारण क्या था?
प्रश्न 3. 1942 ई. में किसकी अध्यक्षता में एक मिशन भारतीय नेताओं से बातचीत करने आया?
प्रश्न 4. कांग्रेस ने 1942 में वर्धा में बैठक कर अंग्रेजों से क्या छोड़ने को कहा?
प्रश्न 5. केबिनेट मिशन भारत में कब भेजा गया?

i=kpkj ikB;Øe
ek/;fed f'k{kk e.My] e/;izns'k] Hkksiky
¼}kjk lokZf/kdkj lqjf{kr½
fMIyksek bu ,T;qds'ku
fo"k;& lkekftd foKku ,oa mldk f'k{k.k
f}rh; o"kZ
iz’u i= & uoka

fo"k;%& Hkkjrh; lafo/kkuA 8

vad

1- Hkkjrh; lafo/kku dh izLrkouk ,oa fo'ks"krk,aA
2- dsUnzh; 'kklu] jkT; 'kklu ¼dk;Zikfydk O;oLFkkfidk ,oa U;k;ikfydk½A
3- LFkkuh; Lo'kklu ,oa ftykLrjh; iapk;rh jkt ¼xzke iapk;r] tuin iapk;r] ftyk iapk;r] uxj iapk;r] uxj ikfydk] uxj fuxe ,oa fodkl izkf/kdj.k½A

fiz; Nk=k/;kid!

पत्राचार शिक्षण व्यवस्था के अन्तर्गत प्रस्तुत इकाई सामाजिक विज्ञान एवं उसका शिक्षण की सातवीं इकाई नागरिक शास्त्र की है। इस इकाई में हम निम्नलिखित विषयों पर चर्चा करेंगे।

1. भारतीय संविधान की प्रस्तावना एवं विशेषताएं।
2. केन्द्रीय शासन, राज्य शासन (कार्यपालिका व्यवस्थापिका एवं न्यायपालिका)।
3. स्थानीय स्वशासन एवं जिलास्तरीय पंचायती राज (ग्राम पंचायत, जनपद पंचायत, जिला पंचायत, नगर पंचायत, नगर पालिका, नगर निगम एवं विकास प्राधिकरण)।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से संपूर्ण इकाई को 6 उप इकाईयों में बांटा गया है।

1

7-1 Hkkjrh; lafo/kku dh izLrkouk %&

जैसा कि आप सभी जानते है कि भारतीय संविधान 26 जनवरी 1950 को देश में प्रभावी हुआ, जिसमें एक प्रस्तावना संविधान के प्रारंभ में दी गई है। भारतीय संविधान की प्रस्तावना में संविधान के

आदर्शों तथा उसनें नीहित सिद्धांतों का विवरण दिया गया है। प्रस्तावना संविधान का अंग नहीं है यह न्यायालय द्वारा प्रवर्तित नहीं किये जा सकते। कोई भी व्यक्ति इस बात को लेकर न्यायालय की शरण में नही जा सकता कि सरकार द्वारा प्रस्तावना को क्रियान्वित नहीं किया गया है। फिर भी प्रस्तावना संविधान के प्रकाश स्तम्भ की भांति है इसके अन्तर्गत भारतवासियों ने निश्चित उद्देश्यों और आदर्शों को अंगीकृत कर उसके प्रति अपनी प्रतिबद्धता दर्शायी है।

संविधान की विशेषताओं का अध्ययन करने से पहले प्रस्तावना के विषय में जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है। 1976 तक प्रस्तावना में कोई परिवर्तन नहीं किया गया। 1976 में इसमें समाजवादी पंथ निरपेक्ष तथा राष्ट्र की एकता तथा अखण्डता शब्द जोड़ दिये गये है।

भारतीय संविधान की प्रस्तावना में कहा गया है ''हम भारत के लोग भारत को संपूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न समाजवादी पंथ निरपेक्ष लोकतांत्रिक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक न्याय विचार अभिव्यक्ति विश्वास धर्म और उपासना की स्वतंत्रता प्रतिष्ठा और अवसर की क्षमता प्राप्त करने के लिए तथा उन सबमें व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखण्डता सुनिश्चित करने वाला बंधुत्व बढ़ाने के लिए दृढ़ संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज दिनांक 26 नवम्बर 1949 ईसवीं को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत अधिनियमित और आत्मार्पित करते है।''

7-2 Hkkjrh; lafo/kku dh fo'ks"krk,¡ %&

हमारा देश 15 अगस्तर 1947 को स्वतंत्र हुआ। तभी हमारी सरकार को संविधान बनाने का अधिकार प्राप्त हुआ। 26 नवम्बर 1949 को भारत के लिए नवीन संविधान तैयार किया गया तथा 26 जनवरी 1950 को उसे लागू किया गया एवं भारत को गणतंत्र घोषित किया गया।

1- *lai.kZ iHkqRo lEiUu yksdrU=kRed x.kjkT; %&* भारत पूरी तरह से स्वतंत्र राज्य है। अपने आंतरिक एवं बाहरी मामलों में हम किसी के अधीन नहीं है। भारत एक लोकतंत्रात्मक गणराज्य है जिससे समस्त शक्तियों का केन्द्र जनता है। गणराज्य का अर्थ यह है कि भारत का राष्ट्राध्यक्ष वंशानुगत न होकर अप्रत्यक्ष रूप से जनता के निर्वाचित प्रतिनिधियों के द्वारा निर्वाचित होता है।

2- */keZ fujis{k jkT; %&* सरकार का कोई राज्य धर्म नहीं है। सबको अपने अपने धर्म की उपासना व पालन करने तथा अन्तकरण की स्वतंत्रता प्राप्त है।

3- *lektokn dh LFkkiuk %&* 42वें संविधान संशोधन द्वारा समाजवादी शब्द को संविधान की प्रस्तावना में सम्मिलित कर लिया गया है। हमारा देश समाजवादी ढंग से समाजवाद की स्थापना करना अपना मुख्य उद्देश्य मानता है।

4- *fyf[kr vkj fufeZr lafo/kku* %& संविधान सभा द्वारा बड़े सोच विचार के बाद इसे 2 वर्ष 11 माह और 18 दिन में बनाकर तैयार किया गया है।

5- *fo'kky lafo/kku* %& हमारा संविधान विश्व का सबसे बड़ा संविधान है। इसमें 404 अनुच्छेद व अनुसूचियां और 24 भाग है।

6- *lalnh; 'kklu iz.kkyh* %& भारत में संसद सर्वोपरि है। इसमें कार्यपालिका के पास शासन की वास्तविक शक्तियां रहती है और मंत्रिमण्डल (कार्यपालिका) संसद के प्रति उत्तरदायी है।

7- *la?kkRed gksrs gq, Hkh ,dkRed* %& भारत में संघात्मक प्रणाली है अर्थात भारत कई राज्यों का एक संघ है जिसमें सारी शक्तियों एक स्थान पर केन्द्रित न होकर केन्द्र और राज्यों में विभाजित है। भारत में 28 राज्य एवं 7 केन्द्र शासित प्रदेश है जिनसे मिलकर भारतीय संघ बना है। किन्तु केन्द्र की अपेक्षा राज्यों की शक्तियां कम है। शक्तियों का झुकाव केन्द्र की तरफ अधिक है।

संकटकालीन स्थितियों में केन्द्र को महत्वपूर्ण शक्तियां प्राप्त है ताकि देश की अखण्डता की रक्षा की जा सके। संकटकाल में हमारा संविधान एकात्मक स्वरूप ग्रहण कर लेता है। इसलिए कहा जाता है कि भारत के संविधान का शरीर संघात्मक है परंतु उसकी आत्मा एकात्मक है।

8- *ekSfyd vf/kdkj* %& हमारे संविधान में नागरिकों के सर्वांगीण विकास के लिए मौलिक अधिकार प्रदान किये है। इन अधिकारों को न्यायपालिका का संरक्षण प्राप्त है। नागरिक को निम्न छः मौलिक अधिकार है।

1. समानता का अधिकार।
2. स्वतंत्रता का अधिकार।
3. शोषण के विरूद्ध अधिकार।
4. धार्मिक स्वतंत्रता अधिकार।
5. सांस्कृतिक व शिक्षा संबंधी अधिकार।
6. संविधान उपचारों का अधिकार

9- *ekSfyd drZO;* %& संविधान में 42वें संशोधन में 10 मौलिक कर्तव्यों का समावेश किया गया है जैसे संविधान का पालन करना, राष्ट्र ध्वज, राष्ट्रगीत का आदर करना आदि प्रजातंत्र की सफलता के लिए इन कर्तव्यों का बड़ा महत्व है।

10- *Lora= U;k;ikfydk* %& संविधान में एक स्वतंत्र और निष्पक्ष न्यायपालिका की स्थापना की गई है। इसे कार्यपालिका और व्यवस्थापिका से स्वतंत्र रखा गया है। न्यायपालिका मौलिक अधिकारों और संविधान की रक्षक है। इसे न्यायिक पुनरावलोकन का अधिका भी प्राप्त हैं।

11- *bdgjh ukxfjdrk* %& हमारे देश में दोहरी नागरिकता नहीं है। हम सभी भारत के नागरिक है। भले ही वे किसी भी राज्य के निवासी हो। राष्ट्र की पृथक्कता की भावना को समाप्त करने के लिए संपूर्ण भारत में इकहरी नागरिकता रखी गई है।

12- 0;Ld erkf/kdkj %& देश के सभी स्त्री–पुरूषों को जिनकी आयु 18 वर्ष है, वयस्त मताधिकार प्राप्त है। देश में केवल वे ही मताधिकार से वंचित है जो अपराधी देशद्रोही आदि है।

13- vYi l[;d ,o fiNM+s oxZ dk lja{kd %& हमारे संविधान में अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के कल्याण और प्रगति के लिए विशेष व्यवस्था की गई है। संसद और संविधान सभाओं में इनके लिए स्थान सुरक्षित रखे गये है। शिक्षा और नौकरी की प्राप्ति में इन्हें विशेष सुविधाएं दी गई है।

7-3 lfo/kku dk vFkZ%& संविधान ऐसे निश्चित नियमों का संग्रह होता है जिसमें सरकार की कार्यप्रणाली प्रतिपादित होती है और जिसके द्वारा उसका संचालन होता है।

fo'k"krk,¡ %&

1. संपूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य।
2. धर्म निरपेक्ष राज्य।
3. समाजवाद की स्थापना।
4. लिखित और निर्मित संविधान।
5. विशाल संविधान।
6. संसदीय शासन प्रणाली।
7. संसदात्मक होते हुए भी एकात्मक।
8. मौलिक अधिकार।
9. मौलिक कर्तव्य।
10. स्वतंत्र न्यायपालिका।
11. इकहरी नागरिकता।
12. वयस्क मताधिकार।
13. अल्पसंख्यक एवं पिछड़े वर्ग का संरक्षक।

2

7-4 dUnzh; 'kklu& dk;Zikfydk 0;oLFkkfidk] U;k;ikfydk dk;Zikfydk%&

jk"Vªifr%& भारत के संविधान के अनुच्छेद 52 व 53 में कहा गया है कि भारत का राष्ट्रपति होगा और संघ की समस्त कार्यपालिका शक्ति राष्ट्रपति में निहित होगी।

भारत का राष्ट्रपति बनने के लिये आवश्यक है कि:–

1. वह भारत का नागरिक हो।

2. वह 35 वर्ष की आयु पूर्ण कर चुका हो।

3. वह लोकसभा के लिए सदस्य निर्वाचित होने की योग्यता रखता हो।

4. वह केन्द्र अथवा राज्य सरकार के अधीन किसी लाभ के पद पर न हो।

राष्ट्रपति का चुनाव 5 वर्ष के लिए संसद तथा विधानमण्डल के निर्वाचित सदस्यों द्वारा किया जाता है। पांच वर्ष के पूर्व भी राष्ट्रपति त्याग पत्र देकर अपने पद से हट सकता है। राष्ट्रपति संविधान का उल्लंघन करे या फिर संसद द्वारा महाभियोग लगाकर उसे पद से हटाया जा सकता है।

राष्ट्रपति का पद अत्यंत महत्वपूर्ण है उसे निम्न शक्तियां प्राप्त हैः–

1- dk;ikfydk 'kfDr;k %& संविधान के अनुसार समस्त कार्यपालिका शक्तियां राष्ट्रपति में निहित होती है। इन शक्तियों का प्रयोग करते हुए वह लोकसभा में बहुमतदल के नेता को प्रधानमंत्री नियुक्त करता है तथा उसकी सहायता से मंत्री परिषद की नियुक्ति करता है वह तीनों सेनाओं का सर्वोच्च सेनापति होता है। वह तीनों सेनाओं के अध्यक्षों, उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश राज्यपालों की नियुक्ति करता है वह संघ सरकार के संचालन के नियम बनाता है।

2- 0;oLFkkfidk lc/kh 'kfDr;k %& राष्ट्रपति सदन का अभिन्न अंग है। वह संसद का अधिवेशन बुलाने सत्रावसान करने तथा लोकसभा को भंग करने की शक्ति रखता है। वह राज्य सभा में 12 तथा लोकसभा में दो सदस्यों को मनोनीत करता है। संसद के सत्र के प्रारंभ में वह उद्घाटन भाषण देता है। कोई भी विधेयक बिना राष्ट्रपति की स्वीकृति से कानून का रूप नहीं ले सकता है। वह अध्यादेश जारी कर सकता है तथा किसी भी विधेयक को पुनर्विचार के लिए लौटा सकता है।

3- foRrh; 'kfDr;k %& राष्ट्रपति के आदेश पर ही लोकसभा में बजट प्रस्तुत किया जाता है। वित आयोग की नियुक्ति राष्ट्रपति करता है और कोई भी धन विधेयक बिना राष्ट्रपति की स्वीकृति के लोकसभा में प्रस्तुत नहीं किया जा सकता।

4- U;kf;d 'kfDr;k %& राष्ट्रपति उच्च तथा उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश की नियुक्ति करता है। राष्ट्रपति किसी अपराधी के दण्ड को क्षमा कर सकता है वह मृत्युदण्ड भी माफ कर सकता है।

5- ladVdkyhu 'kfDr;k %& आंतरिक विद्रोह युद्ध अथवा आक्रमण की स्थिति में राज्य में वैधानिक संकट की स्थिति में अथवा वित्तीय संकट की स्थिति में संकटकाल की घोषणा करता है।

mijk"Vifr %&

उप–राष्ट्रपति पद की व्यवस्था भारतीय संविधान के अनुच्छेद 63 में की गई है। राष्ट्रपति के अतिरिक्त भारत में एक उप राष्ट्रपति भी होता है। इनका चुनाव एक निर्वाचक मण्डल करता है जिसमें संसद के दोनों सदन के निर्वाचित सदस्य होते है। उपराष्ट्रपति बनने के लिये वह भारत का नागरिक हो तथा उसने 35 वर्ष की अवस्था पूर्ण की हो तथा वह राज्य सभा का सदस्य चुने जाने की योग्यता रखता हो। इसका कार्यकाल 5 वर्ष है।

उपराष्ट्रपति राष्ट्रपति की अनुपस्थिति में राष्ट्रपति के कार्यों को करता है। इसके अतिरिक्त उपराष्ट्रपति राज्यसभा का पदेन सभापति होता है। राज्य सभा की कार्यवाही का संचालन करता है।

7.5 केन्द्रीय मंत्री परिषद :-

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 74 के अनुसार संघीय सरकार में एक मंत्री परिषद होगी जिसका नेता प्रधानमंत्री होगा। मंत्री परिषद संघीय कार्यपालिका का प्रमुख अंग हे। वह राष्ट्रपति को सलाह प्रदान करती है। राष्ट्रपति की वास्तविक कार्यपालिका शक्तियों का प्रयोग मंत्री परिषद ही करता है। इसमें तीन प्रकार के मंत्री होत है– (1) केबिनेट स्तर के मंत्री (2) राज्य मंत्री (3) मंत्री। मंत्री परिषद की नियुक्ति प्रधानमंत्री की सलाह पर राष्ट्रपति करता है। मंत्री परिषद का कार्यकाल सामान्यतः 5 वर्ष का होता है किन्तु इसके पूर्व भी इसे भंग किया जा सकता है।

मंत्री परिषद सामूहिक रूप से संसद के प्रति उत्तरदायी होती है। यदि प्रधानमंत्री त्यागपत्र दे दे तो स्वतः ही मंत्री परिषद अपने आप समाप्त हो जाती है।

7.6 प्रधानमंत्री :-

अनुच्छेद 74 में प्रधानमंत्री पद की व्याख्या की गई है।

केन्द्रीय सरकार में सबसे शक्तिशाली एवं महत्व का पद प्रधानमंत्री का है। संविधान में लिखा है कि राष्ट्रपति की सहायता तथा परामर्श देने के लिये एक मंत्री परिषद होगी, जिसका नेता प्रधानमंत्री होता है।

राष्ट्रपति की समस्त कार्यपालिका शक्तियां का प्रयोग मंत्री परिषद ही करती है। इस दृष्टि से प्रधानमंत्री का पद महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि अप्रत्यक्ष रूप में राष्ट्रपति की शक्तियां वास्तव में प्रधानमंत्री की ही शक्तियां है।

प्रधानमंत्री की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा की जाती है। सामान्यतः राष्ट्रपति लोकसभा में बहुमत दल के नेता को ही प्रधानमंत्री नियुक्त करता है। प्रधानमंत्री का कार्यकाल सामान्यतः 5 वर्ष रहता है।

प्रधानमंत्री परिषद का नेता होता है। वह मंत्री मंडल की बैठकों की अध्यक्षता करता है। वह लोकसभा में बहुमत दल का नेता होता है, जब तक उसके दल में अनुशासन है उसके नेतृत्व को कोई चुनौती नहीं दे सकता।

वह मंत्रियों के कार्यों को विभाजन करता है तथा सरकार की नीतियों का निर्धारण करता है। वह मंत्री मण्डल रूपी टीम का नेत्व करता है। वह मंत्रियों के विभागों में फेरबदल कर सकता है। उसकी इच्छा के बिना कोई भी व्यक्ति मंत्री के पद पर नहीं रह सकता।

7-7 dUnh; 0;oLFkkfidk %&

Hkkjrh; lln %& हमारे संविधान में दोहरी शासन व्यवस्था का प्रावधान है संघ सरकार पूरे देश पर शासन चलाती है। राष्ट्रपति, लोकसभा और राज्यसभा से मिलकर संसद बनती है। संसद हमारे देश की कानून बनाने वाली सर्वोच्च संस्था है।

ykdlHkk %& संसद के प्रथम सदन को लोकसभा कहते है। लोकसभा जनता का सदन है इसके सदस्यों का चुनाव जनता द्वारा प्रत्यक्ष रूप से किया जाता है।

lxBu %& लोकसभा में चुने हुए सदस्यों की संख्या 552 है। इनका चुनाव जनता के द्वारा किया जाता है।

dk;dky %& लोकसभा के सदस्य 5 वर्ष के लिये चुने जाते है।

fuokpu %& लोकसभा के सदस्यों के चुनाव के लिये पूरे देश को निर्वाचन क्षेत्रों में बांट दिया गया है। प्रत्येक निर्वाचन क्षेत्र से एक प्रत्याशी चुना जाता है। 18 वर्ष या इससे अधिक आयु वाले प्रत्येक नागरिक को मतदान का अधिकार प्राप्त है।

lnL;k dh ;kX;rk, %&

1. भारत का नागरिक हो।
2. पागल दिवालिया या सजायाफता न हो।
3. सरकारी लाभ के पद पर न हो।
4. 25 वर्ष की आयु पूर्ण कर चुका हो।

7-8 ykdlHkk inkf/kdkjh %&

लोकसभा का एक अध्यक्ष तथा एक उपाध्यक्ष होता है। लोकसभा के सदस्य इसे अपने में से ही चुनते है। अध्यक्ष लोकसभा के अधिवेशन की अध्यक्षता करता है। वह सदन के कार्यों का संचालन कर अनुशासन बनाये रखता है।

jkT; lHkk %& भारतीय संसद के द्वितीय सदन को राज्य सभा कहते है।

xBu %& इस सदन की कुल संख्या 250 होती है। इनमें से 12 सदस्य को राष्ट्रपति मनोनीत करता है। यह सदस्य साहित्य, कला, विज्ञान, समाज सेवा आदि क्षेत्रों में प्रसिद्ध होते है।

puko %& राज्य सभा के सदस्य राज्य की विधानसभाओं में चुने हुए सदस्यों द्वारा चुने जाते हैं। इस सभी के सदस्य की आयु 30 वर्ष या इससे अधिक होनी चाहिए। शेष योग्यताएं लोकसभा के सदस्य के समान होती है।

dk;Zdky %& राज्य सभा एक स्थायी सदन है। यह कभी भी भंग नहीं होता। राज्य सभा के एक तिहारी सदस्य प्रति दो वर्ष वाद कार्यमुक्त कर दिये जाते है उतने ही नवीन सदस्य चुन लिये जाते है। प्रत्येक सदस्य छः वर्ष के लिये चुना जाता है।

lHkkifr %& भारत का उपराष्ट्रपति राज्य सभा का पदेन सभापति होता है। उप सभापति राज्य सभा के सदस्यों में से ही चुना जाता है।

इस प्रकार लोकसभा और राज्य सभा से मिलकर संसद बनती है। संसद के सदस्यों को कुछ विशेष सुविधाएं दी गई है। उन्हें प्रतिमाह वेतन व भत्ते के अतिरिक्त निवास, निःशुल्क टेलीफोन, और पूरे भारत में भ्रमण करने के लिए निःशुल्क प्रथम श्रेणी में रेल यात्रा करने की सुविधा दी गई है।

7-9 laln ds dk;Z %&

भारतीय संसद का निम्नलिखित कार्य करने पड़ते हैः–

1- *dkuwu cukuk %&* संसद राष्ट्र की कानून बनाने वाली सर्वोच्च संस्था है। लोकसभा में प्रस्तुत विधेयक को तीन वाचनों की प्रक्रिया पूर्ण करना होती है।

प्रथम वाचन के अवसर पर सभा के सदस्यों को विधेयक की प्रतियां बांट दी जाती है। विधेयक प्रस्तुत करने वाला विधेयक उद्‌देश्यों की व्याख्या करता है।

द्वितीय वाचन के समय विधेयक की प्रत्येक धारा पर चर्चा होती है। समर्थन तथा आलोचना के पश्चात जो सुझाव दिये जाते है सदन उन्हें स्वीकार अथवा अस्वीकार कर सकता है।

तृतीय वाचन के अवसर पर विधेयक की समस्त धाराओं पर समय चर्चा होती है। इसके पश्चात मतदान होता है। बहुमत विधेयक के पक्ष में हो तो विधेयक को पारित कर दिया जाता है।

यही प्रक्रिया राज्य सभा में भी दोहराई जाती है। राज्य सभा में स्वीकृत होने के पश्चात वह स्वीकृति तथा हस्ताक्षर हेतु राष्ट्रपति के पास भेज दिया जाता है। इसके उपरांत वह विधि अथवा कानून का रूप धारण कर लेता है।

2- *ctV Lohd`r djuk %&* संसद ही बजट स्वीकृत करती है। संसद की स्वीकृति के बिना कोई भी नया कर नहीं लगाया जा सकता है और न ही पैसा खर्च किया जा सकता है। इस प्रकार संसद का आय–व्यय पर पूर्ण नियंत्रण रहता है।

3- *dk;ikfydk ij fu;=.k %&* संसद कार्यपालिका पर भी नियंत्रण रखती है। प्रधानमंत्री एक अन्य मंत्री अपने कार्यों के लिए लोकसभा के समक्ष उत्तरदायी है। अविश्वास का प्रस्ताव पास कर मंत्री मण्डल को लोक सभा पदमुक्त कर सकती है।

4- *lfo/kku esa la'kks/ku %&* संसद की आवश्यकता अनुसार संविधान की कुछ धाराओं में संशोधन कर सकती है। कुछ विषयों पर संशोधन हेतु राज्यों की विधान सभाओं की स्वीकृति भी लेना होती है।

5- *ekgfHk;kx yxkuk %&* वह राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति तथा न्यायाधीशों पर महाभियोग लगाकर उन्हें अपदस्थ कर सकती है।

7-10 U;k;ikfydk %&

mPpre U;k;ky; %& हमारे संविधान में स्वतंत्र एवं एकल न्याय पद्धति की व्यवस्था है। हमारे देश का सबसे प्रमुख और बड़ा न्यायालय उच्चतम न्यायालय है। यह दिल्ली में स्थित है।

lxBu %& इस न्यायालय में एक मुख्य तथा 25 अन्य न्यायाधीश होते है। मुख्य न्यायाधीश की नियुक्ति राष्ट्रपति करता है। अन्य न्यायाधीशों की नियुक्ति वह मुख्य न्यायाधीश के परामर्श पर करता है। न्यायाधीश पद हेतु योग्यताएं –

1. भारत का नागरिक हो।
2. पांच वर्ष तक न्यायाधीश के पद पर कार्य कर चुका हो अथवा 10 वर्ष तक वकालत कर चुका हो।
3. राष्ट्रपति की दृष्टि में वह कानून का पण्डित हो।

dk;dky %& उच्चतम न्यायालय का न्यायाधीश 65 वर्ष की आयु तक अपने पद पर कार्य कर सकता है।

7-11 dk;z ,oa 'kfDr;k %&

1. *izkjfHkd {ks=kf/kdkj %&* इस न्यायालय के पास अभियोग को सीधे सुनने की शक्ति प्राप्त है। ऐसे प्रकरण जो इस न्यायालय द्वारा सीधे सुने जाते है वे दो प्रकार के होते है।
    1. वे प्रकरण जो केन्द्र तथा किसी एक राज्य या अधिक के बीच विवाद प्रस्तुत करते हैं।
    2. वे प्रकरण जो भारत के मूल अधिकारों से संबंधित हो। उनमें मूल अधिकारों की रक्षा का प्रश्न हो।
2. *vihyh; {ks=kf/kdkj %&*
    1. ऐसे प्रकरण जो राज्यों के उच्च न्यायालयों के निर्णय के विरूद्ध हो अपील के रूप में पुनर्विचार के लिये उच्च न्यायालय में आता है।

2. कम से कम 20 रूपये की धनाराशि की दीवानी उच्चतम न्यायालय में अपील करने की पात्रता रखते है।

3. फौजदारी के वे प्रकरण जिनमें राज्य के उच्च न्यायालय ने अभियुक्त को मृत्युदण्ड दिया हो।

3. **ijke'k nsu dk vf/kdkj %&** भारत का राष्ट्रपति किसी कानूनी प्रश्न पर उच्चतम न्यायालय से परामर्श ले सकता है। परंतु परामर्श को मानने के लिये राष्ट्रपति बाध्य नहीं है।

4. **lafo/kku vkj eksfyd vf/kdkjks dh j{kk %&** वे कानून जो संविधान की धाराओं के विपरीत है, उच्चतम न्यायालय ऐसे कानूनों को अवैध घोषित कर सकता है। संविधान द्वारा प्रदत्त अधिकारों की रक्षा के लिये भी कोई नागरिक उच्चतम न्यायालय की शरण ले सकता है।

5. **vfHkys[k U;k;ky; ds :i esa %&** यह एक अभिलेख न्यायालय भी है। इसके सभी निर्णयों का प्रकाशन होता है। इसके द्वारा दिये गये निर्णय देश के अन्य न्यायालयों में कानून की तरह प्रयोग में लाये जाते है। उनका उपयोग उदाहरण के रूप में किया जाता है।

dk;Zikfydk&

jk"Vªifr in ds fy, ;ksX;rk,¡%&

1. वह भारत का नागरिक हो।
2. उसकी आयु 35 वर्ष से कम न हो।
3. वह लोकसभा के लिए निर्वाचित होने की योग्यता रखता हो।

राष्ट्रपति का पद अत्यंत महत्वपूर्ण है उसे निम्न शक्तियां प्राप्त हैं:–

1. कार्यपालिका शक्ति।
2. व्यवस्थापिका संबंधी शक्तियां।
3. वित्तीय शक्तियां।
4. न्यायपालिका संबंधी शक्तियां।
5. संकटकालीन शक्तियां।

उपराष्ट्रपति राष्ट्रपति की अनुपस्थिति में राष्ट्रपति के कार्यों को करता है। इसके अतिरिक्त उपराष्ट्रपति राज्यसभा का पदेन सभापति होता है।

dsUnzh; O;oLFkkfidk %& राष्ट्रपति, लोकसभा और राज्यसभा से मिलकर संसद बनती है लोकसभा संसद का प्रथम सदन है। इसके सदस्यों की संख्या 552 है। राज्य सभा संसद का द्वितीय सदन है सदस्य संख्या 250 होती है। भारतीय संसद को निम्नलिखित कार्य करने पड़ते है।

1. कानून बनान।
2. बजट स्वीकृत करना।
3. कार्य पालिका पर नियंत्रण

4. संविधान में संशोधन

5. महाभियोग लगाना।

U;k; ikfydk %& हमारे देश का सबसे प्रमुख और बड़ा न्यायालय उच्चतम न्यायालय है यह दिल्ली में स्थित है। इसमें एक मुख्य न्यायाधीश तथा 25 अन्य न्यायाधीश होते है।

7-12 jkT; iky%&

राज्यपाल राज्य का प्रमुख होता है। उसी के नाम से राज्य का प्रशासन चलाया जाता है। राज्यपाल की नियुक्ति भारत का राष्ट्रपति करता है। उसका कार्यकाल 5 वर्ष का होता है किन्तु राष्ट्रपति उसे 5 वर्ष के पूर्व भी हटा सकता है अथवा कार्यकाल बढ़ा सकता है।

राज्यपाल पद पर वही व्यक्ति नियुक्त हो सकता है जो भारत का नागरिक हो, 35 वर्ष की आयु पूर्ण कर चुका हो। संसद या विधान मण्डल का सदस्य न हो तथा सरकार में किसी आर्थिक लाभ के पद पर न हो।

राज्यपाल की शक्तियां और कार्य राष्ट्रपति के समान होते है। राज्यपाल राज्य के मुख्यमंत्री, मंत्रियों तथा सभी उच्च अधिकारियों जैसे राज्य के लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष, सदस्यों तथा राज्य के महाधिवक्ता की नियुक्ति करता है। राज्य विधान मण्डल का अधिवेशन राज्यपाल के अभिभाषण से ही प्रारंभ होता है। राज्यपाल को विधान सभा का अधिवेशन बुलाने तथा उसे स्थगित करने का अधिकार प्राप्त है। विधान सभा में पारित सभी विधेयक उसके हस्ताक्षर के बाद ही कानून का रूप धारण करते है। राज्यपाल अध्यादेश जारी कर सकता है। राज्यपाल कानून के अधीन दी गई सजा को कम अथवा माफ कर सकता है।

धन विधेयक को विधान सभा में प्रस्तुत करने के पूर्व राज्यपाल की स्वीकृति आवश्यक है। इस प्रकार राज्यपाल राज्य में केन्द्र का प्रतिनिधित्व करता है।

7-13 jkT; e=h e.My ,oa e[; e=h %&

राज्य का मंत्री मण्डल ही राज्य की वास्तविक कार्यपालिका है। मुख्यमंत्री मंत्री मण्डल का प्रधान होता है। राज्यपाल, राज्य विधान सभा में बहुमत दल के नेता को मुख्यमंत्री नियुक्त करता है। मुख्यमंत्री के परामर्श से ही राज्यपाल अन्य मंत्रियों की नियुक्ति करता है तथा उनके विभाग का वितरण करता है। मुख्यमंत्री तथा अन्य मंत्रियों को विधानसभा का सदस्य होना अनिवार्य है।

प्रदेश के मंत्री मण्डल में केबिनेट मंत्री, राज्यमंत्री, उपमंत्री तथा संसदीय सचिव होते है। इन्हीं मंत्रियों तथा सचिवों को मिलाकर राज्य मंत्री मंडल का गठन होता है। मंत्री मण्डल के मंत्रियों की संख्या का निर्धारण मुख्यमंत्री करता है।

मंत्री मंडल ही राज्य की कार्यपालिका होती है। मंत्रीमण्डल के द्वारा ही राज्यपाल की वास्तविक कार्यपालिका शक्तियों का प्रयोग किया जाता है। वह राज्य शासन की नीति का निर्धारण करती है और राज्यपाल को शासन संबंधी सलाह देती है। मंत्री मण्डल ही विधान सभा के कार्यों को निश्चित करता है। विधान सभा में प्रस्तुत किये जाने वाले विधयेक की सूची तैयार करता है। राज्य के लिए कल्याणकारी योजनाएं बनाता है। मंत्री मण्डल की स्वीकृति के पश्चात ही राज्य की आय–व्यय का बजट प्रस्तुत किया जाता है।

jkT; 0;oLFkkfidk %&

jkT; fo/kku e.My%& राज्य के कानून राज्य के विधान मण्डल बनाते है। राज्य के विधान मण्डल ही राज्य की व्यवस्थापिका है। जिस प्रकार केन्द्र में संसद के दो सदन होते है, उसी प्रकार राज्य विधान मण्डल के भी दो सदन है। एक सदन विधान सभा तथा दूसरा विधान परिषद कहलाता है। हमारे देश में विधान परिषदे बहुत ही कम राज्यों में है। मध्यप्रदेश में भी एक ही सदन है। विधान सभा जनता का प्रतिनिधित्व करती है।

fo/kku lHkk %& संपूर्ण मध्यप्रदेश को 320 विधान सभा क्षेत्रों में विभाजित किया गया है। एक विधायक लगभग 75 हजार जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करता है। मध्यप्रदेश की विधान सभा राजधानी भोपाल में है। विधान सभा का कार्यकाल 5 वर्ष का है किन्तु राज्यपाल इसे 5 वर्ष के पूर्व भी भंग कर सकता है। विधान सभा का पदाधिकारी अध्यक्ष होता है। अध्यक्ष की अनुपस्थिति में उपाध्यक्ष विधान सभा की बैठकों की अध्यक्षता करता है। इनका निर्वाचन विधान सभा सदस्य करते है।

fo/kkuifj"kn %& विधान परिषद एक स्थाई सदन है। यह भंग नहीं होता। इसके चुनाव की प्रक्रिया अलग है। इसके एक तिहाई सदस्यों का चुनाव विधानसभा सदस्यों द्वारा होता है। दूसरे एक तिहाई सदस्य राज्य की स्थानीय संस्थाओं से चुने जाते है। कुछ सदस्य विश्व विद्यालय स्नातकों तथा कुछ शिक्षक निर्वाचन क्षेत्रों से चुने जाते है। शेष सदस्य, राज्यपाल द्वारा मनोनित होते है। यह सदन विधान सभा के कार्यों में सहयोग प्रदान करता है।

'kfDr;k %& राज्य विधान मण्डल राज्य सूची के विषयों पर कानून बनाता है। इसे समवर्ती सूची के विषयों पर भी कानून बनाने का अधिकार है। वित्तीय शक्तियों के अन्तर्गत राज्य के वित पर पूर्ण नियंत्रण रहता है। इसके द्वारा बजट पारित किया जाता है तथा इसका कार्यपालिका पर भी पूर्ण नियंत्रण रहता है। मंत्री मंडल इसके विश्वास प्राप्त होने तक ही अपने पद पर रह सकता है।

jkT; U;k;ikfydk %&

mPp U;k;ky; %& भारत के संविधान के अनुसार प्रत्येक राज्य के लिए उच्च न्यायालय की व्यवस्था की गई है। मध्यप्रदेश का उच्च न्यायालय जबलपुर में स्थित है। इसकी दो खण्डपीठ इन्दौर

तथा ग्वालियर में स्थित है। मध्यप्रदेश से विभाजित हुआ छत्तीसगढ़ राज्य का उच्च न्यायालय बिलासपुर में स्थित है।

lxBu %& उच्च न्यायालय में एक मुख्य न्यायाधीश तथा अन्य न्यायाधीश होते है। अन्य न्यायाधीशों की संख्या संसद निर्धारित करती है। भारत का राष्ट्रपति उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश की सलाह से उच्च न्यायालय के मुख्य तथा अन्य न्यायाधीशों की नियुक्ति करता है।

;kX;rk,l %&

1. वह भारत का नागरिक हो।
2. वह पांच वर्ष तक राज्य के किसी न्यायालय में न्यायाधीश रहा हो।
3. वह 10 वर्ष तक उच्च न्यायालय में अधिवक्ता रहा हो।

dk;ldky%& उच्च न्यायालय के न्यायाधीश 62 वर्ष तक की अवस्था तक अपने पद पर रह सकते है। सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश की तरह ही उच्च न्यायालय का न्यायाधीश भी महाभियोग की प्रक्रिया द्वारा पद से हटाया जा सकता है।

7-14 dk;l ,o 'kfDr;k %&

1- U;k; lc/kh vf/kdkj %& उच्च न्यायालय को प्रारंभिक तथा अपीलीय अधिकार प्राप्त है। राज्य के दीवानी फौजदारी मामलों में अपील सुनता है तथा नागरिकों के मौलिक अधिकार से संबंधित प्रकरणों की सीधी सुनवाई करता है।

2- vkn'k tkjh dju dk vf/kdkj %& उच्च न्यायालय नागरिकों के मौलिक अधिकारों की रक्षा के लिए आदेश जारी करता है।

3- v/khuLFk U;k;ky;k ij fu;=.k %& उच्च न्यायालय का राज्य के सभी अधीनस्थ न्यायालयों पर पूर्ण नियंत्रण रहता है। जिले के अधीनस्थ न्यायालयों के न्यायाधीशों की नियुक्ति, पदोन्नति तथा स्थानांतरण आदि करता है तथा अधीनस्थ न्यायालय के कार्य एवं व्यवहार संबंधी नियमों को बनाता है।

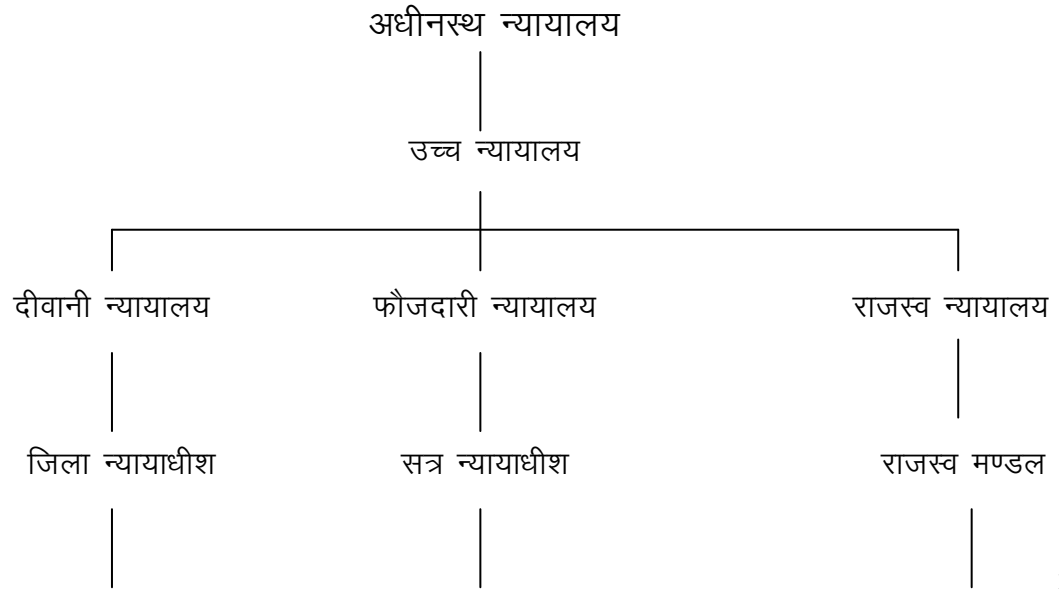

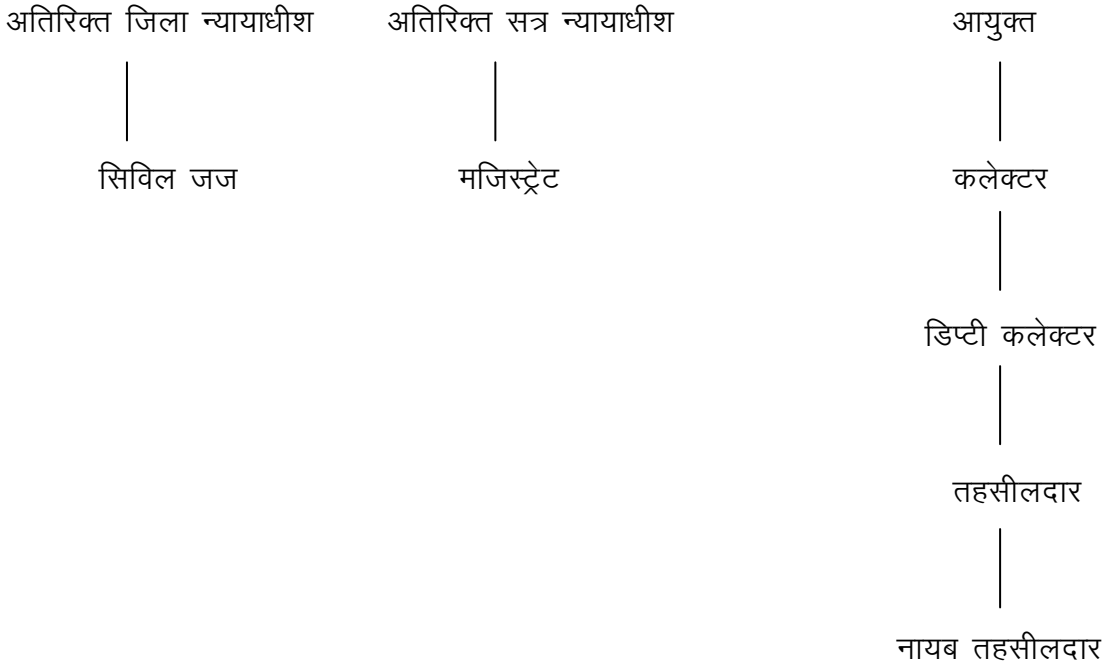

jkT; dk;ikfy dk ¼jkT; iky½%&

राज्यपाल राज्य का प्रमुख होता है। राज्यपाल की नियुक्ति भारत का राष्ट्रपति करता है। राज्यपाल की शक्तियां और कार्य राष्ट्रपति के समान होते है।

jkT; e=h eMy ,oa e[; e=h %&

राज्य का मंत्रीमंडल ही राज्य की वास्तविक कार्यपालिका है। मुख्यमंत्री, मंत्रीमंडल का प्रधान होता है। राज्यपाल राज्य विधान सभा में बहुमत दल के नेता को मुख्यमंत्री नियुक्त करता है।

jkT; 0;oLFkkfidk %&

राज्य के विधान मंडल ही राज्य की व्यवस्थापिका है। राज्य विधान मंडल के भी दो सदन होते है। एक सदन विधान सभा तथा दूसरा विधान परिषद कहलाता है।हमारे देश में विधान परिषद बहुत ही कम राज्यों में है। मध्यप्रदेश में भी एक ही सदन है विधानसभा।

jkT; U;k; ikfy dk %&

भारत के संविधान के अनुसार प्रत्येक राज्य के लिए उच्च न्यायालय की व्यवस्था की गई है। मध्यप्रदेश का उच्च न्यायालय जबलपुर में स्थित है।

7-15 jkT;& lfpoky;%&

देश और राज्यों के शासन को प्रजातांत्रिक व्यवस्था के अनुकूल चलाने हेतु जनता के प्रतिनिधियों का चुनाव होता है। जनता के प्रतिनिधि नीति निर्धारण का कार्य तो करते है पंरतु नित्यप्रति के शासन के कार्यों को सुचारू रूप से चलाने के लिये अधिकारियों तथा कार्यालय विशेष की आवश्यकता भी पड़ती है। जन नीतियों को कार्यरूप में परिणित करने हेतु जो शासकीय अधिकारियों का प्रमुख कार्यालय होता है, उसी को राज्य सचिवालय कहते है। मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में यह कार्यालय वल्लभ भवन में स्थित है। इसका कार्य राज्य के राज्यपाल तथा मंत्रियों को विभागीय कार्य में सहयोग देना है।

lfpoky; dh dk;Z 0;oLFkk ,oa deZpkjh %&

कर्मचारी शासन के वैतनिक तथा स्थाई कर्मचारी होते है। इनका राजनीति से कोई संबंध नहीं होता। ये कर्मचारी अपने विभागीय मंत्रियों के द्वारा प्रसारित एवं निर्मित नीति के अनुकूल कार्य करते है।

सचिवालय में प्रत्येक विभाग का प्रमुख सचिव (प्रिंसिपल सेक्रेटरी) होता है। इस सचिव के साथ उप सचिव तथा अन्य विभागीय कर्मचारी होते है। ये विभाग विशेष के माध्यम से शासन की नीति के अनुकूल कार्य करते है।

मुख्य रूप से गृहस्थ शिक्षा, कृषि तथा अन्य पृथक–पृथक विभागों के कार्यालय में सचिवालय विभक्त होता है। मुख्य सचिव, सचिवालय का सर्वोच्च शासकीय अधिकारी होता है।, इसका सभी विभागों पर नियंत्रण रहता है तथा आपस में एकता बनाये रखने का कार्य भी करता है।

मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में वल्लभ भवन में राज्य सचिवालय स्थित है। इसका कार्य राज्य के राज्यपाल तथा मंत्रियों को विभागीय कार्य में सहयोग देना है।

ftyk iz'kklu

7-16 fofHkUu izeq[k foHkkx muds vf/kdkjh o dk;Z %&

हमारा देश विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। हमारे देश का क्षेत्रफल लगभग 33 लाख वर्ग किलोमीटर है। अतः एक ही स्थान से इतने बड़े देश का प्रशासन संभव नहीं। अतः शासन की सुविधा के लिए प्रशासन को संभाग जिले, सबडिवीजन, तहसीलों में बाट दिया गया है।

संपूर्ण जिले के प्रशासन का भार जिलाधीश पर होता है। वह जिले का प्रमुख है। जिलाधीश भारतीय प्रशासनिक सेवा का सदस्य होता है।

जिला प्रशासन के तीन प्रमुख कार्य होते है पहला कार्य शांति और व्यवस्था बनाये रखना, दूसरा कार्य जिले में विद्यमान भूमि का रिकार्ड रखना और किसानों से भूमि कर वसूल करना और तीसरा कार्य नागरिक सुविधाएं और सेवाएं प्रदान करना और सभी क्षेत्रों में जिले के विकास का प्रयास करना।

जिले के प्रशासन में कई अधिकारी, कर्मचारी कार्य करते है, उससे जिलाधीश का पद सर्वोच्च होता है। इस पद पर बहुत ही कुशल तथा अनुभवी कर्मचारी नियुक्त किया जाता है।

जिला प्रशासन तथा इसके प्रमुख अधिकारी एवं कार्यों को निम्न चार्ट में बताया गया है।

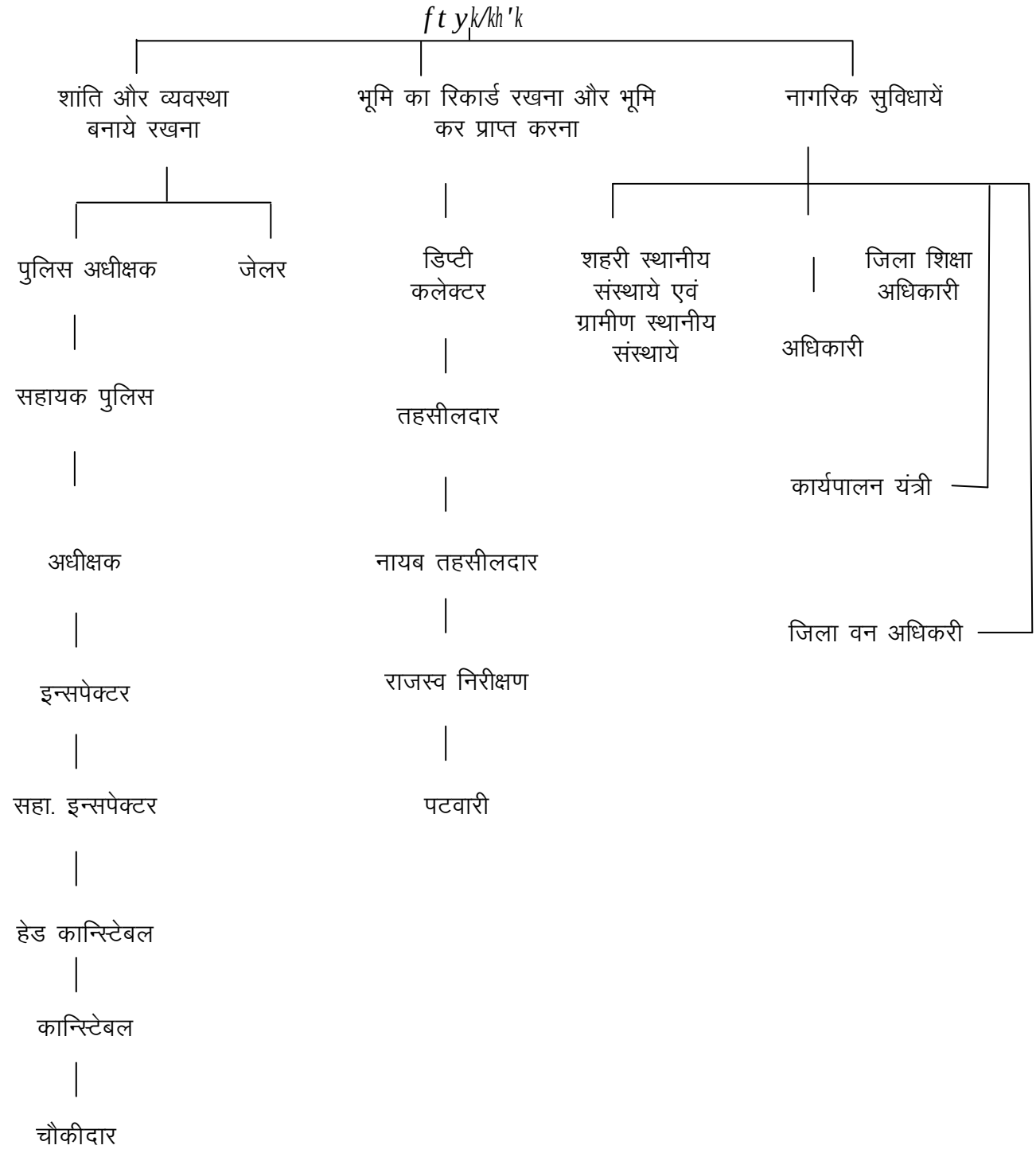

शासन की सुविधा के लिए प्रशासन को संभाग, जिले, सबडिवीजन, तहसीलों में बांट दिया जाता है। संपूर्ण जिले के प्रशासन का भार जिलाधीश पर होता है। वह जिले का प्रमुख होता है।

3

LFkkuh; Lo'kklu %&

7-17 भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था केवल केन्द्रीय तथा राज्य सरकारों तक ही सीमित नहीं है वह स्थानीय स्तर पर भी लोकतांत्रिक है स्थानीय स्वशासन इसी लोकतांत्रिक व्यवस्था का प्रतीक है। हमारा स्थानीय स्वशासन ही लोकतांत्रिक शासन होता है इसे स्थानीय स्वशासन इसलिए कहते है क्योंकि स्थानीय विषयों के संदर्भ में लोग स्वयं अपना शासन चलाते है। किसी गांव या कस्बे की समस्याओं का सबसे अच्छा ज्ञान उसी गांव के निवासियों को ही होता है इसलिए यह व्यवस्था है कि प्रत्येक गांव तथा कस्बे की अपनी एक छोटी सरकार हो जिसका संचालन स्थानीय जनता स्वयं करे।

इस प्रकार स्थानीय स्वशासन की स्थापना के दो मुख्य कारण है प्रथम स्थानीय स्वशासन द्वारा स्थानीय स्तर पर लोकतांत्रिक सरकार की व्यवस्था करना है। द्वितीय स्थानीय जनता के योगदान में सरकार की जानकारी बढ़ती है और वह अधिक उपयोग सिद्ध होती है।

किसी क्षेत्र के निवासियों को उस क्षेत्र की समस्याओं का अच्छा ज्ञान हो सकता है उन्हें ही यह मालूम होता है कि उनके क्षेत्र का विकास किस प्रकार हो सकता है। शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानीय शासन व नगरीय दोनों क्षेत्रों में स्थानीय स्वशासन की संस्थाये तीन प्रकार की है। ग्रामीण क्षेत्र में ग्राम पंचायत, जनपद पंचायत और जिला पंचायत है। इसी प्रकार नगरीय क्षेत्र नगर पंचायत, नगरपालिका और नगर निगम है। उपयुक्त व्यवस्था हमारे संविधान के 74वें संशोधन के अन्तर्गत मध्यप्रदेश सरकार ने की है इस संशोधनके अनुसार मध्यप्रदेश में पंचायतों एवं नगर निकायों का गठन भी किया जा चुका है।

7-18 x|keh.k LFkkuh; Lo'kklu %&

i|pk;r jkt %&

हमारे देश के सभी प्रदेशों में साफ सफाई, स्वास्थ्य सेवाओं, रोशनी, पीने का पानी आदि सुविधाओं की व्यवस्था करने के लिए ग्राम पंचायते बनाई गई है जो गांव छोटे–छोटे है उनमें दो तीन गांवों को मिलाकर एक ग्राम पंचायत बनाई जाती है गांवों के लिये की गई इस प्रकार की व्यवस्था को पंचायती राज भी कहते है। पंचायती राज का अर्थ होता है ऐसी स्थानीय सरकार जो पंचायतों के माध्यम से कार्य करती है। वर्तमान में पंचायती राज की प्रणाली भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के लगभग 10 वर्ष पश्चात शुरू की गई है।

मध्यप्रदेश में संविधान के 74वें संशोधन के बाद त्रिस्तरीय पंचायत राज की व्यवस्था की गई है।

1. ग्रामों के लिए ग्राम सभा, ग्राम पंचायत और नगर पंचायत।
2. प्रत्येक विकास खण्ड के लिए जनपद पंचायत और,
3. प्रत्येक जिले के लिए जिला पंचायत गठित की गई है।

LFkkuh; Lo'kklu ¼xkeh.k½

xke ipk;r%&

हमारे देश में प्रायः सभी ग्रामों में ग्राम पंचायत कार्य कर रही है। प्रत्येक ग्राम पंचायत में एक सरपंच तथा उप सरपंच होता है। गांव के सभी स्त्री–पुरूष जो 18 वर्ष या अधिक आयु के हो ग्राम पंचायत के सरपंच तथा पंचों का चुनाव प्रत्यक्ष मतदान द्वारा करते है। सरपंच ग्राम पंचायत की बैठकों की अध्यक्षता करता है।

ग्राम पंचायत जनता की सुविधा के लिए कई समितियां निर्माण करती है, पंचायत का एक सचिव भी होता है जो राज्य सरकार द्वारा नियुक्त किया जाता है। वह पंचायत की बैठकों की व्यवस्था आय व्यय का लेखा एवं अन्य कागजों, रजिस्टरों आदि को रखता है।

ग्राम पंचायत ग्राम की उन्नति के लिए जिम्मेदार होती है। ये विकास के अनेक कार्य करती है, जैसे ग्राम की सफाई, प्रकाश, स्वास्थ्य, शिक्षा प्रबंध, पुलियों का निर्माण, सार्वजनिक भूमि का प्रबंध आदि।

7-19 tuin ipk;r %&

ब्लाक स्तर पर प्रदेश में जनपद पंचायते गठित की गई है। जनपद पंचायत, ग्राम पंचायत एवं जिला पंचायत के बीच महत्वपूर्ण कड़ी है। जनपद पंचायत के सदस्यों का चुनाव वयस्क मतदान के आधार पर जनता करती है। जनपद पंचायत के सदस्यों का चुनाव 5 वर्ष के लिए होता है। जनपद पंचायत का एक अध्यक्ष तथा एक उपाध्यक्ष होता है। अध्यक्ष जनपद पंचायत की मीटिंग की अध्यक्षता करता है।

tuin ipk;r d dk;l %&

ग्राम पंचायत अपने गांव की सफाई, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि का प्रबंध करती है। गांव के अधिक विकास के लिए तकनीकी सलाह और धन की आवश्यकता है। जनपद पंचायत के पास कई प्रकार के विशेषज्ञ होते है, जैसे कृषि विशेषज्ञ, शिक्षा विशेषज्ञ, पशु चिकित्सा विशेषज्ञ आदि। ये विशेषज्ञ उप ब्लाक या क्षेत्र के अन्तर्गत, आने वाले गांव में जाकर गांव के विकास में ग्रामीण जनता की सहायता करते हैं। किसानों को उत्तम और उन्नत बीज दिलवाना, खाद इत्यादि वितरित करना, शिक्षा का प्रसार करना,

बीमार जानवरों का इलाज व जानवरों का इलाज व जानवरों की नस्ल सुधरवाना इत्यादि कार्य विशेषज्ञों द्वारा कराए जाते है। ये विशेषज्ञ लोगों को टीकों की जानकारी देते हैं तथा परिवार कल्याण के बारे में लोगो को बतलाते है।

जनपद पंचायतों का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य ग्राम पंचायतों को राज्य सरकार से धन दिलवाना है। जनपद पंचायत के कार्यों की देख रेख करती है।

7-20 ftyk ipk;r %&

जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है कि पंचायती राज के तीन स्तर है– (1) ग्राम स्तर पर ग्राम सभा, ग्राम पंचायत (2) विकास खण्ड स्तर पर जनपद पंचायत (3) जिला स्तर पर पंचायत।

विकासखंड पर गठित पंचायत जनपद पंचायत कहलाती है। ब्लाक में स्थित ग्राम पंचायतों के सरपंच और पंच मिलकर जनपद पंचायत के सदस्य चुनते हैं। विधान सभा, लोकसभा व राज्य सभा के स्थानीय सदस्य भी इसके सदस्य होते है।

जनपद पंचायत में दो महिला सदस्य व अनुसूचित जनजाति के सदस्य भी होते है। जनपद पंचायत के सदस्य अध्यक्ष व उपाध्यक्ष का चुनाव करते है।

जनपद पंचायत का कार्यकाल पांच वर्ष का होता है।

जनपद पंचायत का प्रमुख कार्य सरकार से गांवों को धन दिलाना है। इसके अलावा परिवार कल्याण, टीकाकरण, उत्तम बीज की व्यवस्था करना भी इसका कार्य है।

जनपद पंचायत कर (टैक्स) लगाकर व राज्य सरकार से अनुदान प्राप्त कर आय कराती है। इसका सर्वोच्च अधिकारी ''मुख्य कार्यपालन अधिकारी'' होता है।

जिला पंचायत सरकार द्वारा प्राप्त अनुदान, मेलों, दुकान, भवन पर कर लगाकर आय प्राप्त करती है। जिला पंचायत का मुख्य कार्यपालन अधिकारी राज्य सरकार द्वारा नियुक्त किया जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में विकास के काम ये तीनों संस्थायें आपस में मिलकर करती है।

शासन के अधिकांश विभागों का कार्य जिला सरकार को सौंपने का निर्णय लिया गया है, जैसे– शिक्षा, स्वास्थ्य और जल प्रबंधन आदि ताकि शासन की नीतियों का विकेन्द्रीकरण निचले स्तर तक हो सके।

7-21 uxjh; i'kklu %&

2001 की जन गणना के अनुसार देश की 102.5 करोड़ जनसंख्या में से 28.29 करोड़ नगरों में है। हमारे कस्बों तथा शहरों के लिए स्थानीय शहरी निकायों की स्थापना की गई है। यह निकाय अपने क्षेत्र में जल आपूर्ति, स्वास्थ्य, नाली कूड़े का प्रबंध तथा सफाई व प्रकाश इत्यादि समस्याओं का

समाधान करते है। यह स्थनीय निकाय जनतांत्रिक होते है। इन निकायों में स्थानीय नागरिक सीधी चुनाव पद्यति से निर्वाचित होते है।

LFkkuh; 'kgjh fudk;ksa ds izdkj %&

भारत के प्रत्येक राज्य में निम्नलिखित नगरीय निकाय हैः–

1. नगर पंचायत
2. नगर पालिका
3. नगर निगम

7-22 uxj iapk;r%&

जो क्षेत्र ग्रामीण क्षेत्र से नगरीय क्षेत्र में बदल रहे होते है वहां नगर पंचायते गठित होती है। ऐसे स्थानों पर शहर और गांव का मिला जुला रूप होता है तथा आबादी भी बहुत अधिक नहीं होती। प्रदेश में 263 नगर पंचायते गठित है। नगर पंचायतों को वार्डों में बांटा जाता है। नगर पंचायत में न्यूनतम 15 और अधिकतम 40 वार्ड होते है। नगर पंचयतों में एक वार्ड से एक सदस्य निर्वाचित होता है। नगर पंचायत के अध्यक्ष का निर्वाचन होता है। नगर पंचायत अध्यक्ष का निर्वाचन सीधे जनता द्वारा किया जाता है। नगर पंचायत सदस्य और अध्यक्ष के पदों में अनु.जाति जनजाति अन्य पिछड़ा वर्ग और महिलाओं के लिए आरक्षण की व्यवस्था है।

7-23 uxj ikfydk %&

नगर पालिका के अधिकारी सदस्य अपने नगर की जनता द्वारा चुने जाते है। इसके सदस्यों की संख्या नगर की जनसंख्या पर निर्भर करती है। प्रायः इनकी संख्या 15 से लेकर 60 तक होती है। चुनावों के लिए प्रत्येक शहर को वार्डों में बांट दिया जाता है। कुछ स्थान अनुसूचित जातियों के लिए सुरक्षित रखे जाते है।

नगर पालिका के चुनाव व्यस्क मताधिकार के आधार पर कराए जाते है इसके लिए आवश्यक है कि मतदाता की आयु 18 वर्ष हो तथा उसका नाम मतदाता सूची में ही नगर पालिका का सदस्य बनने के लिए आयु 25 वर्ष होना आवश्यक है। चुने हुए सदस्यों का कार्यकाल 5 वर्ष का होता है।

चुने हुए सदस्य अध्यक्ष, उपाध्यक्ष का चुनाव अपने में से करते है। इसके अतिरिक्त चुने हुए सदस्य कुछ अनुभवी व्यक्तियों का चुनाव भी करते है। इन्हें विशिष्ट सदस्य (एल्डरमेन) कहा जाता है। अध्यक्ष नगर पालिका की बैठकों की व्यवस्था करता है।

इन निर्वाचित सदस्यों के अतिरिक्त कुछ निर्वाचित सदस्य भी होते है। जैसे मुख्य नगर पालिका अधिकारी। यह प्रशासनिक अधिकारी होते है। इसकी नियुक्ति राज्य शासन करता है। इसके अतिरिक्त स्वास्थ्य अधिकारी, इंजीनियर चुंगी कर अधिकारी आदि।

नगर निगम तथा नगर पालिका के कार्य समान होते है। इनका प्रमुख कार्य सार्वजनिक स्वास्थ्य, सार्वजनिक सफाई, प्रकाश, पानी आदि की व्यवस्था करना। इसके अतिरिक्त सड़कों की मरम्मत, पार्क मनोरंजन के साधनों की व्यवस्था, शमशान, कब्रिस्तान आदि की व्यवस्था भी करती है।

7-24 uxj fuxe%&

नगरों का स्थानीय शासन पर नियंत्रण निगम के द्वारा होता है। नगर निगम अधिक जनसंख्या पर स्थापित किया जाता है।

नगर निगम के अध्यक्ष को महापौर (मेयर) कहा जाता है। महापौर का चुनाव नगर निगम के सदस्य करते है। महापौर के अतिरिक्त एक उप महापौर तथा 50 से लेकर 150 तक सदस्य होते हैं। इनका चुनाव 5 वर्ष के लिये किया जाता है। ये वयस्क मताधिकार के आधार पर चुने जाते हैं। नगर निगम के सदस्य कभी–कभी अनुभवी सदस्यों को भी चुनते हैं जिन्हें विशिष्ट सदस्य कहा जाता है। ये सब मिलकर नगर निगम बनाते है।

नगर निगम का प्रतिदिन का कार्य कई तरह की समितियां करती है। इन समितियों में 5 से 12 तक सदस्य होते है। प्रत्येक समिति का अध्यक्ष होता है। इनमें शिक्षा समिति, स्वास्थ्य निर्माण समिति प्रमुख है।

प्रत्येक नगर निगम का एक प्रमुख पदाधिकारी होता है। यह जनता द्वारा निर्वाचित नहीं होता। इसकी नियुक्ति राज्य सरकार करती है। इसका प्रमुख कार्य नगर निगम के निर्णयों को लागू करना है। इस अधिकारी को आयुक्त कहते हैं। यह नगर निगम का प्रशासनिक अधिकारी होता है। इसके अतिरिक्त इंजीनियर, डॉक्टर, शिक्षा विशेषज्ञ आदि प्रमुख है। मुख्य पदाधिकारी विभिन्न विभागाध्यक्षों के काम की देखभाल करता है।

7-25 fodkl ikf/kdj.k %&

विगत वर्षों में देश के बड़े–बड़े नगर बिना किसी नियोजन के बढ़ते रहे। औद्योगिकरण के फलस्वरूप मलिन बस्तियों का निर्माण हो गया एवं पर्यावरण प्रदूषण की समस्याएं भी उठ खड़ी हुई। इनके समाधान के लिये सरकार ने लगभग सभी बड़े शहरों में नगर सुधार न्यासो का उन्नयन करते हुए विकास प्राधिकरण कायम किये। इनमें निर्वाचित प्रतिनिधी नहीं होते है। वे राज्य सरकार के शासकीय एवं नगर निगम, औद्योगिक तथा सामाजिक व्यापारिक हितों के सदस्य मनोनित होते है। प्राधिकरण के मुख्य कार्यकारी अधिकारी को सरकार नियुक्त करती है। उसके अधीन अन्य तकनीकी, प्रशासकीय एवं वित्त के अधिकारी, कर्मचारी भी कार्यरत रहते है।

विकास प्राधिकरण का मुख्य कार्य नगर का सुनियोजित विकास, शासन द्वारा लागू नगर अभिन्यास (मास्टर प्लान) का कार्यान्वयन, मलिन बस्तियों में पर्यावरण सुधार, शहर तथा उसके आसपास

की भूमि पर समान्वित विकास कर आवासीय, व्यावसायिक परिसर, कॉलोनियों का निर्माण एवं सड़को का युक्तियुक्त विस्तार करना आदि प्रमुख है। प्रदेश में भोपाल, इन्दौर, ग्वालियर, जबलपुर, उज्जैन, देवास आदि शहरों में विकास प्राधिकरण है।

bdkbl lkjk'k

1. भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था केवल केन्द्र तथा राज्यों तक ही समिति नहीं है वह स्थानीय स्तर पर भी लोकतांत्रिक हैं।
2. स्थानीय स्वशासन इसी लोकतांत्रिक व्यवस्था का प्रतीक है।
3. शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानीय स्वशासन की संस्थायें तीन प्रकार की है– ग्रामीण क्षेत्रों में ग्राम पंचायत, जनपद पंचायत व जिला पंचायत है।
4. इसी प्रकार नगरीय क्षेत्र में नगर पंचायत, नगर पालिका एवं नगर निगम है।
5. औद्योगिक विकास के फलस्वरूप मलिन बस्तियों का निर्माण हो गया।
6. पर्यावरण प्रदूषण की समस्याएं भी उठ खड़ी हुई।
7. इनके समाधान के लिए सरकार ने लगभग सभी बड़े शहरों में नगर सुधारन्यासों का उन्नयन करते हुए विकास प्राधिकरण कायम किये।
8. प्राधिकरण के मुख्य कार्यकारी अधिकारी को सरकार नियुक्त करती है।
9. प्रदेश में भोपाल, इन्दौर, ग्वालियर, जबलपुर, उज्जैन आदि शहरों में विकास प्राधिकरण है।

bdkbl vk/kkfjr iz'u %&

प्रश्न 1. भारतीय संविधान कब लागू हुआ?

प्रश्न 2. भारत के राष्ट्रपति के चुनाव हेतु उम्मीदवार की न्यूनतम आयु कितनी होनी चाहिए।

प्रश्न 3. राज्यपाल की नियुक्ति किसके द्वारा होती है?

प्रश्न 4. मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में राज्य सचिवालय कहां पर स्थित है?

प्रश्न 5. जिला प्रशासन के दो कार्यों के नाम लिखिये।

i=kpkj ikB;Øe
ek/;fed f'k{kk e.My] e/;in'k] Hkkiky
¼}kjk lokf/kdkj lqjf{kr½
fMIykek bu ,T;qds'ku
fo"k;& lkekftd foKku ,oa mldk f'k{k.k
f}rh; o"kZ
iz'u i= & uok

---

fo"k;%& vad	ukxfjdrkA	10

1- ukxfjdrk dk vFkZ] izdkj] dk;Z] ifjokj lekt ,oa dkuwu] ukxfjdksa ds vf/kdkj ,oa drZO;] jk"Vªh; izrhd fpUg] vPNs ukxfjd ds xq.kA
2- ekuo vf/kdkj dk vFkZ] Lo:i ,oa lqj{k.k dh vko';drk] ekuo vf/kdkj vk;ksx] e-iz- dk laf{kIr ifjp;A
3- ykdra= /keZ fujis{k ,oa lektoknh lekt dh LFkkiuk ds fy, fd;s tk jgs iz;kl] izpo"kZh; ;kstukvksa ls vkfFkZd ,oa lkekftd fodklA

---

fiz; Nk=k/;kid!

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से संपूर्ण पाठ को तीन उप इकाईयों में बांटा गया है।

1

8-1 ukxfjdrk dk vFkZ%&

नागरिकता का अर्थ समयानुसार बदलता रहा है। प्राचीन युनान में जबकि नगर राज्य हुआ करते थे, राज्य के सभी सदस्यों को नागरिकता के अधिकार प्राप्त नहीं थे बल्कि कुछ सीमित जनसंख्या को ही ये अधिकार प्राप्त होते थे। अरस्तु के अनुसार उसी व्यक्ति को नागरिक कहा जाता था जिसे राज्य की कार्यपालिका तथा न्यायिक कार्यों में भाग लेने का अधिकार हो परंतु आज राज्य में सभी सदस्यों को बिना किसी भेदभाव के नागरिकता के अधिकार दिये जाते है।

नागरिकता का अर्थ व्यक्ति के उस पद या स्थिति से है जिसके कारण वह राज्य का सदस्य कहलाता है और अपने कर्तव्यों का पालन करता है तथा राज्य द्वारा दिये गये अधिकारों का प्रयोग करता है। विभिन्न लेखकों ने नागरिकता की परिभाषाएं दी है।

प्रो. गेटेल का कहना है कि नागरिकता व्यक्ति की वह स्थिति है जिसके कारण वह अपने राज्य में राष्ट्रीय तथा राजनैतिक अधिकारों का प्रयोग कर सकता है और अपने कर्तव्यों का पालन करने को तैयार रहता है।

प्रो. लास्की का मत है कि ''अपनी शिक्षित बुद्धि को जनहित में प्रयोग करना ही नागरिकता है।''

इन सभी परिभाषाओं से स्पष्ट है कि नागरिकता व्यक्ति का वह स्थान या स्थिति है जिसके आधार पर वह राज्य से बंधता है, उसके प्रति निष्ठावान बनता है और अपने कर्तव्यों का पालन करने को तत्पर रहता है तथा राज्य से कई प्रकार के अधिकार प्राप्त करता है।

8-2 ukxfjdrk d: i:dkj %&

1. जन्मजात नागरिकता।
2. राज्यकृत नागरिकता।

1- tUe tkr ukxfjdrk& जन्मजात नागरिकता उसे कहते है जो व्यक्ति को अपने जन्म के आधार पर मिलती है अर्थात बच्चा पैदा होते ही इस राज्य का सदस्य या नागरिक बना जाता है। राज्य के अधिकतर नागरिक राज्य के जन्मजात नागरिक होते है। जन्मजात नागरिकता अपने आप मिल जाती है और उसके लिए कोई प्रयत्न नहीं करने पड़ते है। जन्म से ही बच्चा किसी न किसी राज्य का जन्म जात नागरिक बन जाता है। चाहे वह उस नागरिकता को बाद में रखना चाहे या न रखना चाहे।

2- jkT;d`r ukxfjdrk & राज्यकृत नागरिकता उसे कहते है जो व्यक्ति को राज्य द्वारा प्रदान की जाती है। जन्म से तो वह किसी दूसरे राज्य का नागरिक होता है परंतु कुछ परिस्थितियों के कारण वह अपने राज्य को छोड़ देता है और किसी अन्य राज्य में रहने लगता है और उसके अपने मौलिक राज्य में वापस लौट कर जाने की संभावना नहीं होती है ऐसी दशा में वह व्यक्ति उस नए राज्य की नागरिकता प्रदान किये जाने की प्रार्थना करता है। राज्य उसकी प्रार्थना पर विचार करता है और यदि चाहे तो उसे नागरिकता प्रदान कर देता है। प्रत्येक राज्य नागरिकता प्रदान करे के लिए कुछ शर्ते निश्चित करता है जिसमें एक निश्चित अवधि के लिए उस राज्य में व्यक्ति के निवास की शर्त अवश्य होती है।

8-3 ifjokj %& कुछ विद्वानों ने माना कि परिवार एक स्वाभाविक संस्था है क्योंकि पुरूष और स्त्री का संबंध स्वाभाविक ही है, अतः संतान प्राप्त करने की इच्छा स्वाभाविक है। परिवार दो बुनियादी संबंधो

विवाह संबंध और रक्त संबंध पर आधारित है। परिवार मनुष्य की सबसे छोटी और बुनियादी सामाजिक इकाई है। मनुष्य परिवार में ही उत्पन्न होता है। प्रायः उसी में उसका पालन–पोषण होता है।

(1) जिसमें केवल पति–पत्नी है। (2) जिनमें पति–पत्नी अल्प वयस्क संतति सम्मिलित होते है और (3) संयुक्त परिवार जिनमें कई पीढ़ियों के लोग साथ रहते है।

आक्सफोर्ड शब्द कोष के अनुसार परिवार माता–पिता एवं उनकी संतान अथवा संबंधियों का समूह है चाहे वे साथ–साथ हो चाहे न हो।

ifjokj d dk;l %& परिवार में मनुष्य उन गुणों को स्वाभाविक रूप से सीखता है जो अच्छा नागरिक बनने के लिए आवश्यक होते है, जैसे प्रेम और सहानुभूति, त्याग, सेवा, सहयोग और सहिष्णुता, नियम पालन, अनुशासन आदि। परिवार नागरिक जीवन की प्रथम पाठशाला हे।

ekuo ifjokj e jgdj lekt dh mUufr ixfr d liuk dk ltkrk gA

ifjokj ,o lekt d chp jgdj eu"; viuh reke vko';drkvk dh ifrl djrk gA

tl fd&

जीवन रहने के लिए, संस्कृति उत्थान हेतु, मानव जाति के उत्थान हेतु, मानव जाति के स्थायित्व हेतु वृद्धि एवं शारीरिक विकास हेतु, नैतिक जीवन विकास हेतु साथ ही सुखी जीवन निर्वाह हेतु परिवार एवं समाज उसे महती आवश्यकता रखते है।

8-4 lekt %&

अर्थ समाज एक ऐसे औजार की तरह है जिसका ध्येय मानव समाज का सृजन है। वह साध्य प्राप्ति हेतु एक प्रथम साधन है, जिसका उद्देश्य मानव कल्याण है। मिडिग्स के शबदों में ''समाज स्वयं एक संघ है'' एक संगठन है, वैचारिक संबंधों का योग है। उसमें सहयोगी व्यक्ति परस्पर जुड़े होते है।'' सारांशतः समाज से हमारा अभिप्राय मनुष्य के उस संपूर्ण समुदायों और संबंधों के योग से है जो हमें पृथ्वी पर देखने को मिलते है।

lekt dh vko';drk eu"; dh fuEu vko';drkvk dh ifrl d fy, lekt dk egRo gA

1. जीवित रहने के लिए।
2. काम वासना की तृप्ति के लिए।
3. मानव जाति के स्थायित्व के लिए।
4. सुखी जीवन निर्वाह हेतु।
5. संस्कृति उत्थान हेतु।
6. नैतिक जीवन के विकास हेतु।

8-5 dkuu %&

ऐस निश्चित नियमों को कानून कहते है जो मनुष्य के बाहरी कार्यों को नियंत्रित करते है और इन कानूनों को राज्य की मान्यता प्राप्त होती है जो इन कानूनों का उलंघन करता है राज्य उसे दण्ड देता है। आर्मस्टन के अनुसार कानून ''उच्चतर का निम्नतर को आदेश है।''

dkuu ds izdkj %&

1. व्यक्तिगत कानून।
2. सार्वजनिक कानून।
3. संवैधानिक कानून।
4. सामान्य कानून।
5. प्रशासनिक कानून।
6. प्रथागत कानून।
7. अध्यादेश।
8. अन्तर्राष्ट्रीय कानून।

रीति–रिवाज एवं परस्पर धर्म, न्यायिक निर्णय, कानूनी टीकायें, औचित्य आधारित निर्णय तथा व्यवस्थापन कानून के स्त्रोत माने जाते है।

8-6 ukxfjdksa ds vf/kdkj %&

हमने नागरिकता का अध्ययन करते समय पढ़ा है कि नागरिकता प्राप्त करने का तात्पर्य विभिन्न प्रकार के अधिकार प्राप्त करना है। राज्य की ओर से लिखित अथवा अलिखित रूप से नागरिकों को अपने अधिकार दिये जाते है। भारतीय संविधान द्वारा भी भारतीय नागरिकों को कुछ मौलिक अधिकार दिये गये है।

नागरिकों को अधिकार उस उद्देश्य से दिये जाते है कि वे अपने जीवन को उन्नति शील बना सके तथा अपने व्यक्तित्व का विकास कर सकें। अधिकारों के माध्यम से नागरिक अपने जीवन के विभिन्न क्षेत्र में उन्नति के अवसर प्राप्त कर सकता है।

vf/kdkjksa dk oxhZdj.k %&

राज्य द्वारा नागरिकों की सुख सुविधा के लिए अनेक प्रकार के अधिकार दिये जाते है इन अधिकारों का निम्न प्रकार से वर्गीकरण किया जा सकता है।

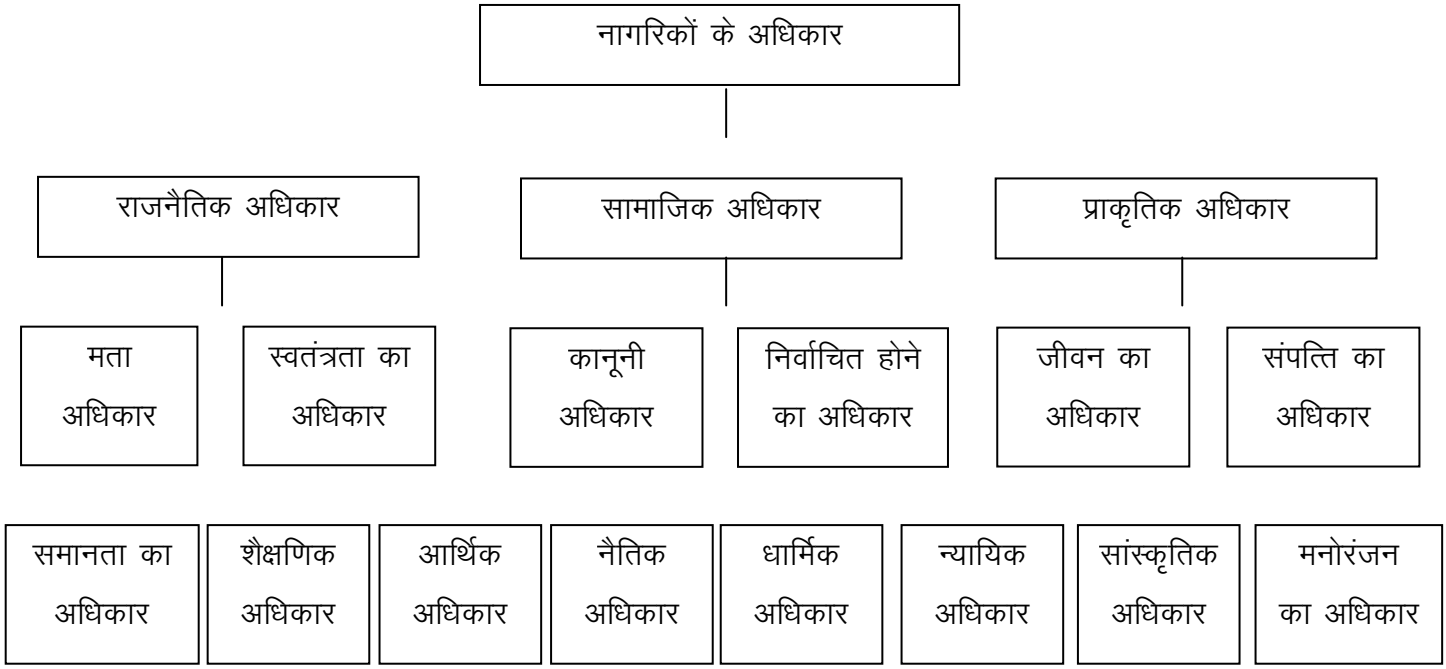

8-7 *jktufrd vf/kdkj%&*

1- *erkf/kdkj%&* एक प्रजातंत्रीय देश में मत देने का अधिकार महत्वपूर्ण होता है। नागरिक अपने मताधिकार से अपनी सरकार का चुनाव स्वयं कर सकते हें

2- *Lora=rk dk vf/kdkj %&* मनुष्य की स्वतंत्रता उसका जन्मसिद्ध अधिकार है। उसे राजनैतिक, पारिवारिक व सामाजिक क्षेत्र में स्वतंत्रता होनी चाहिए। अपना मत व्यक्त करना समुदायों का निर्माण करना आदि स्वतंत्रता के अधिकार है।

3- *dkuuh vf/kdkj%&* एक राज्य में प्रत्येक नागरिक को सरकारी नौकरी पाने का अधिकार होता है। यदि समाज में उसके प्रति किसी प्रकार का अन्याय किया जाता है तो वह न्यायाल में न्याय पा सकता है।

4- *fuokfpr gksus dk vf/kdkj %&* प्रजातंत्र में राज्य के नागरिकों को विधान सभा व अन्य प्रतिनिधि सभाओं के लिए चुनाव में खड़े होने का अधिकार होता है।

8-8 *lkekftd vf/kdkj %&*

1- *lekurk dk vf/kdkj %&* समाज में किसी नागरिक को भाषा, धर्म, लिंग, रंग आदि के आधार पर ऊंचा नीचा नहीं समझा जाना चाहिए।

2- *'k{kf.kd vf/kdkj %&* आजकल प्रायः सभी राज्यों में अपने नागरिकों को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार दिया जाता है।

3- *vkfFkd vf/kdkj %&* इनका बड़ा महत्व है क्योंकि इनका प्रयोग करके व्यक्ति अपनी रोजी कमाता है और आर्थिक स्थिति को ऊंचा उठाता है।

4- *ufrd vf/kdkj %&* नागरिक का आध्यात्मिक व चारित्रिक विकास उसके नैतिक अधिकारों के आधार पर होता है।

5- */kkfed vf/kdkj %&* प्रत्येक नागरिक को अपने धर्म को मानने, धर्म के अनुसार आचरण करने का अधिकार है।

6- *U;kf;d vf/kdkj%&* यदि किसी व्यक्ति के साथ अन्याय हुआ है या उसके किसी अधिकार पर हस्तक्षेप हुआ हैतो वह कानून के अन्तर्गत न्यायालय का द्वार खटखटाकर न्याय पा सकता है।

7- *lkLdfrd vf/kdkj %&* नागरिक को अपने राज्य में भाषा, संगीत, कला विज्ञान आदि की उन्नति करने के अधिकार राज्य द्वारा प्रदत्त किये जाते है।

8- *eukjkatu lac/kh vf/kdkj %&* नागरिकों के स्वास्थ्य मनोरंजन के लिए राज्य द्वारा लोगों को अनेक अधिकार दिये जाते है वे अपनी रूचि के अनुसार मनोरंजन कर सकते है।

8-9 *ikdfrd vf/kdkj %&*

कुछ विद्वानों का मत है कि राज्य के निर्माण के पूर्व ही लोगों को अपने जीवन तथा संपत्ति की रक्षा का अधिकार था जो प्रत्येक राज्य द्वारा उन्हें पुनः प्रदान किये गये है।

ey drO; %&

मूल कर्तव्य भारत के प्रत्येक नागरिक के लिए संवैधानिक दायित्व है। वस्तुतः ये सामाजिक और नैतिक दायित्व देश की शांति एवं उन्नति को सुनिश्चित करने के लिए है।

मूल कर्तव्य संविधान 1976 में सम्मिलित किये गये। इन कर्तव्यों का प्रयोजन नागरिकों में देश भक्ति की भावना में वृद्धि करना, राष्ट्र को सुदृढ़ बनाना देश की सम्प्रभुता तथा अखंडता की रक्षा करने के लिए आचार संहिता का पालन कराना समरसता की भावना विकसित करना है।

इन मूल कर्तव्यों के अनुपालन द्वारा नागरिकों से अपेक्षा की गई है कि वे :–

1. संविधान का पालन करें तथा उसके आदर्शों संस्थाओं राष्ट्र ध्वज और राष्ट्रगान का सम्मान करें।
2. स्वतंत्रता संग्राम के लिए राष्ट्रीय आन्दोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे तथा उनका पालन करें।
3. भारत की प्रभुता, एकता और अखण्डता की रक्षा करें और उसे अक्षुण रखे।

4. देश की रक्षा करें और आह्वान किये जाने पर राष्ट्र की सेवा करें।
5. भारत के सभी लोगों में समरसता और समान मातृत्व की भावना का निर्माण करें, जो धर्म, भाषा प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करें जो स्त्रियों के सम्मान के विरूद्ध है।
6. प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा करे और उसका संवर्धन करें तथा प्राणी मात्र के प्रति दया भाव रखे।
7. वैज्ञानिक दृष्टिकोण मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करें।
8. व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करें जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई–नई ऊंचाईयों को छू लें।

8-10 vPN ukxfjd d xq.k fuEu g&

1. कर्तव्य पालन करना।
2. अनुशासन व आज्ञा पालन।
3. प्रेम की भावना।
4. सहयोग एवं सहानुभूति।
5. सेवा व त्याग की भावना।
6. सहनशीलता।

8-11 jk"Vxhr jk"V/o t ,o jk"Vh; fpUg

jk"Vxhr&

इसे श्री बकिंमचन्द्र उपाध्याय जी ने लिखा है, राष्ट्रगीत में हमारी मातृभूमि की प्रशंसा की गई है। हमारा राष्ट्रगीत ''वन्दे मातरम्'' हैं

jk"V/o t&

हमारे राष्ट्रीय ध्वज का आकार आयताकार है। इसकी लम्बाई–चौड़ाई का अनुपात क्रमशः 3:2 है। हमारा ध्वज तीन बराबर भागों में तथा तीन रंगों में बंटा है। सबसे ऊपर केशरिया रंग है, जो देश भक्ति, त्याग और वीरता का प्रतीक है। ध्वज के बीच में सफेद पट्टी है जो सत्यता, पवित्रता का प्रतीक है। सबसे नीचे हरा रंग जो खुशहाली और समृद्धि का प्रतीक है। ध्वज में सफेद रंग के बीच अशोक चक्र है। चक्र में 24 कमानियां है। ये कमानियां हर समय काम करने की प्रेरणा देती है।

jk"VfpUg&

राष्ट्रीय चिन्ह दो भागों में विभक्त है (1) शीर्ष, (2) आधार)। शीर्ष में तीन शेर दिखाई देते हैं, परंतु वास्तव में चार शेर हैं। अशोक स्तम्भ पर इसे देखा जा सकता है जो कि सारनाथ में है। आधार में बाई ओर एक घोड़ा, दाई ओर एक बैल है। इनके बीच एक चक्र 24 कमानियों से मिलकर बना है। शीर्ष के बीच में देवनागरी लिपि में 'सत्यमेंव जयते' लिखा है।

2

ekuo vf/kdkj

8-12 vFk%&

मानव जीवन का चरम लक्ष्य अपने जीवन के अस्तित्व को बनाये रखने के साथ–साथ अपने व्यक्तित्व का अधिकाधिक विकास करना है। मानव अधिकार मानव के वे नागरिक राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, शैक्षणिक सांस्कृतिक अधिकार है जो मानव जाति को जन्मजात गरिमा और सम्मान प्रदान करने के लिए आवश्यक है।

भारतीय संसद द्वारा पारित मानव अधिकार संरक्षण अधिनियम 1993 की धारा 2 के अनुसार मानवाधिकारों का मतलब संविधान द्वारा प्रत्याभूत या अन्तर्राष्ट्रीय प्रसंविदाओं में नीहित और भारत में न्यायालयों द्वारा प्रवर्तनीय जीवन स्वतंत्रता समानता और व्यक्ति की गरिमा संबंधी अधिकार है।

संक्षेप में ''मानव अधिकार'' के निम्नलिखित अर्थ हैः–

1. वे अधिकार जो प्रत्येक मानव के जन्मजात होते है और उसके जीवन का अंतिम अंग होते है।
2. वे अधिकार जो मानव जीवन और उसके विकास के लिए आधारभूत होते है।
3. वे अधिकार जिनके उपभोग के लिए उचित सामाजिक दशाओं या परिस्थितियों का होना एक पूर्व शर्त है।
4. वे अधिकार जिन्हें मानव की प्राथमिक आवश्यकताओं और मांगों के रूप में प्रत्येक राज्य को अपने संविधान तथा कानून में सम्मिलित कर लेना चाहिए।

परंतु दुर्भाग्य वश मानव जाति का आज तक का इतिहास अधिकांश जनता को मानव अधिकारों से वंचित रखे जाने का इतिहास है। इतना ही नहीं आधुनिक विश्व में भी मानव अधिकारों के हनन के अनेक उदाहरण देखने को मिलते है। जबकि विश्व के सभी धर्मों के साहित्य में मानव अधिकारों का किसी न किसी रूप में उल्लेख किया गया है।

8-13 ekuo vf/kdkjksa dk fodkl %&

सामाजिक अनुबंध में रूसो के इस कथन मानव स्वतंत्र जन्मा है, परंतु वह सर्वत्र जंजीरों में जकड़ा है को अठाहरवीं शताब्दी में यूरोप में बल मिला। सन् 1776 के अमरीकी स्वतंत्रता की घोषणा पत्र में मनुष्य के जन्मजात और अहस्ततरणीय अधिकारों का उल्लेख जिनमें मानव जीवन की स्वतंत्रता और सुख शांति सम्मिलित है, स्वीकार किया गया और अनेक अधिकारों को वैधानिक मान्यता देने का

प्रथम आलेख बन गया। सन् 1789 में फ्रांस में मानव और नागरिक अधिकारों के घोषणा पत्र में इसका और अधिक विस्तार से उल्लेख किया गया। उन्नीसवीं शताब्दी में समाजवादी आन्दोलन ने मानव अधिकरों को सकारात्मक रूप देने की दिशा में अपरिहार्य समझते हुए सामाजिक परिवर्तन और आर्थिक न्याय की आवश्यकता पर बल दिया। भारतीय स्वतंत्रता की भांति राष्ट्रीय स्वतंत्रता के अन्य संघर्षों ने भी सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन के लिए किये गये प्रयासों के साथ ही साथ मानव के मूल अधिकारों को अपने संविधान में सम्मिलित किये जाने पर बल दिया है। दक्षिण अफ्रीका में महात्मा गांधी द्वारा किये गये प्रयासों ने यह और भी अधिक स्पष्ट कर दिया कि प्रजातियों को समान अधिकार के लिए प्रजातिय रंग भेद पर आधारित सभी प्रकार के भेद भावों को समाप्त करना अनिवार्य है।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि मानव अधिकारों की घोषणा स्वयं कोई नवीन अधिकार न होकर शताब्दियों के विकास का परिणाम है। संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना से पूर्व अनेक महत्वपूर्ण घोषणाओं एवं अधिनियमों आदि में मानव अधिकारों को मान्यता दी जा चुकी थी परंतु मानवीय अधिकारों की एक अभिव्यक्ति संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा द्वारा सन 1948 में स्वीकृत मानवीय अधिकारों की विश्वव्यापी घोषणा के रूप में हुई जिसे अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त हो चुकी हे।

8-14 ekuo vf/kdkjksa dh vko';drk egRo ;k mnns';%&

आज मानव अधिकारों की अत्यंत आवश्यकताएं है। इसका उद्देश्य मानव जाति को जन्मजात गरिमा व सम्मान प्रदान कराना है। मानव अधिकार की आवश्यकता निम्न प्रकार हैः–

1. मानव अधिकार व्यक्ति की गरिमा, उसके सम्मान की रक्षा के लिए आवश्यक है।
2. व्यक्तियों के व्यक्तित्व के सर्वोन्मुखी विकास हेतु मानव अधिकार आवश्यक है।
3. मानव के उपर विश्व के अनेक देशों में अत्याचार किये जाते है वहां पर मानव की रक्षा हेतु मानव अधिकार की आवश्यकता है।
4. किसी व्यक्ति से इच्छा के विरूद्ध कोई काम नहीं कराया जा सके इसलिए भी मानव अधिकार महत्वपूर्ण है।

8-15 ekuo vf/kdkjksa dh fo'o0;kih ?kks"k.kk%&

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान मानव अधिकारों पर कुठाराघात के कारण भविष्य में मानव अधिकारों की रक्षा हेतु कोई ठोस व्यवस्था किये जाने की आवश्यकता अनुभव हुई। व्यवस्था संबंधी इस आवश्यकता की पूर्ति का दायित्व संयुक्त राष्ट्र संघ ने ग्रहण किया और इसके लिए उसने श्रीमती एलोनोर रूजवेल्ट की अध्यक्षता मं मानव अधिकार आयोग की स्थापना की। इस आयोग ने मानव अधिकारों के घोषणा पत्र का प्रारूप तैयार करके संघ कीमहासभा में प्रस्तुत किया और महासभा ने 10 दिसम्बर 1948 को सर्वसम्मति से उसे स्वीकार कर लिया। आयोग द्वारा निर्मित और महासभा द्वारा

स्वीकृत इस अधिकार पत्र को ही मानव अधिकारों की सार्वलौकिक या विश्वव्यापी घोषणा के नाम से जाना जाता है। मानव अधिकारों का व्यापक रूप से प्रचार करने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष 10 दिसम्बर के दिन को मानव अधिकार दिवस के रूप में मनाया जाता है।

घोषणा पत्र में विश्व के समस्त राष्ट्रों की संपूर्ण मानव जाति के लिए एक समान मानक निर्धारित किया गया है। परंतु इस संबंध में उल्लेखनीय है कि यह घोषणा संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा के प्रस्ताव के रूप में स्वीकार की गई थी। अतः इसका कानूनी रूप से बाध्य करने वाला कोई स्वरूप नहीं है। घोषणा पत्र की प्रस्तावना में मानव जाति की जन्मजात गरिमा सम्मान और अधिकारों पर बल दिया गया है। प्रस्तावना सहित घोषणा में 30 अनुच्छेद है जिनमें नागरिक और राजनैतिक अधिकारों के साथ–साथ सामाजिक आर्थिक और सांस्कृतिक अधिकार भी सम्मिलित है। घोषणा पत्र के पहले अनुच्छेद में कहा गया है कि सभी मनुष्य जन्म से स्वतंत्र और अधिकार तथा मर्यादा में समान है। घोषणा पत्र के दूसरे अनुच्छेद में कहा गया है कि प्रत्येक व्यक्ति जाति, रंग, लिंग, भाषा, धर्म, राजनीतिक अथवा सामाजिक उत्पत्ति अथवा अन्य किसी प्रकार के भेदभाव के बिना सभी प्रकार के अधिकारों और स्वतंत्रताओं का अधिकरी है।

अधिकारों को तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया है। पहली श्रेणी में अनुच्छेद 1 से लेकर 18 तक नागरिक व राजनीतिक अधिकारों का उल्लेख है जिनमें जीवन, स्वतंत्रता, सुरक्षा का अधिकर, पराधीनता और वासना से मुक्ति का अधिकार, कानून के समक्ष समता का अधिकार, मनमाने रूप से बंदी बनाये जाने और देश निकाले जाने से रक्षा का अधिकार, सार्वजनिक और न्यायपूर्ण मुकदमों का अधिकार, अपराधी प्रमाणित न होने तक निर्दोश समझे जाने का अधिकार, राष्ट्रीयता का अधिकार, परिवार की सुरक्षा का अधिकार राज्य से बाहर आने जाने, विचार विवेक और धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार, पति पत्नि की समानता का अधिकार, शांतिपूर्ण ढंग से एकत्रित होने और संघ बनाने का अधिकार इच्छानुसार सरकार बनाने का अधिकार, मताधिकार का अधिकार और राजनैतिक कार्यों में भाग लेने का अधिकार आदि सम्मिलित है।

दूसरी श्रेणी में अनुच्छेद 19 से लेकर 25 तक आर्थिक सामाजिक व धार्मिक अधिकारों का उल्लेख है। जिसमें सामाजिक सुरक्षा, इच्छानुसार कार्य चुनने व करने तथा समाज के धार्मिक कार्यों में भाग लेने का अधिकार, समान कार्य के लिए समान और न्यायपूर्ण वेतन का अधिकार, बेकारी, बीमारी और वृद्धावास्था में सामाजिक सहायता प्राप्ति का अधिकार आदि सम्मिलित है। घोषणा पत्र की अंतिम श्रेणी में अनुच्छेद 26 से 30 में यह स्वीकार किया गया है कि प्रत्येक मानव को ऐसी शैक्षिक सांस्कृतिक और अन्य अधिकार है जिसमें विश्वशांति और सुरक्षा हो तथा व्यक्ति को अपने व्यक्तित्व का पूर्ण विकास करने का पूर्ण अवसर प्राप्त हो। घोषणा पत्र में यह भी उल्लेख है कि घोषणा पत्र प्रदत्त अधिकारों और स्वतंत्रताओं का संयुक्त राष्ट्र संघ के उद्देश्यों एवं सिद्धांतों के विरूद्ध किसी भी दशा में प्रयोग न किया जाये।

इस विश्वव्यापी घोषणा के प्रारूप को तैयार करके संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा से स्वीकृत कराने वाले संघ के मानव अधिकार आयोग की अध्यक्ष श्रीमती एलोनोट रूजवेल्ट ने इस घोषणा पत्र को संपूर्ण मानव समाज के मेग्ना कार्टा नाम दिया था। परंतु घोषणा पत्र के वास्तविक स्वरूप के संबंध में पामर और पार्किन्स के शब्दों में कहा जा सकता है कि यह घोषणा केवल आदर्शों का प्रतिपादन है कानूनी रूप से बाध्य करने वाला कोई समझौता नहीं परंतु यह एक महत्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय दस्तावेज है।

8-16 e/;izns'k ekuo vf/kdkj vk;ksx%&

मध्यप्रदेश सरकार के द्वारा 6 जनवरी 1992 को मध्यप्रदेश मानव अधिकार आयोग गठित करने का संकल्प लेकर देश में सर्वप्रथम 'मानव अधिकार आयोग' गठित करने का सौभाग्य मिला। इसके पश्चात भारत सरकार द्वारा मानव अधिकार संरक्षण अधिनियम बनाया गया जिसके अन्तर्गत 1995 को वर्तमान मध्यप्रदेश में मानव अधिकार आयोग का गठन किया गया।

आयोग के अध्यक्ष एवं सदस्यों की नियुक्ति मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में गठित एक समिति की अनुशंसाओं पर राज्यपाल अपने हस्ताक्षर और मुद्रा सहित अधिपत्र के द्वारा करते है। इस समिति के सदस्यों में विधान सभा के अध्यक्ष, प्रदेश के गृहमंत्री तथा विधान सभा में विपक्ष का नेता शामिल होते है। मध्यप्रदेश मानव अधिकार का मुख्यालय भोपाल में स्थित है।

3

ykdra=%&

8-17 भारत तो प्राचीन काल से ही शासन की लोकतंत्रात्मक प्रणाली में विश्वास करता आया है। यही कारण है कि संविधान सभा के सभी सदस्यों ने एक मत से इसी प्रणाली को अपनाने का निश्चय किया और भारत को एक लोकतंत्रात्मक गणराज्य घोषित किया। लोकतंत्र में शासन व्यवस्था लोकमत के आधार पर चलती है। भारत जैसे विशाल एवं अनेक विविधताओं और भिन्नताओं वाले देश में एकता बनाये रखने के लिये।

8-18 /keZ fujis{krk%&

भारत वर्ष की सदैव यह विशेषता रही है कि यहां पर सभी धर्मों, सम्प्रदायों एवं उपासना पद्धतियों का समान सम्मान किया जाता रहा है। यहीं कारण है कि संविधान में भारत को धर्म निरपेक्ष राष्ट्र घोषित किया गया। साथ ही यह भी स्पष्ट किया गया है कि धर्म निरपेक्ष का अर्थ अधार्मिक अथवा धर्म विरोधी राज्य नहीं है वरन मौलिक अधिकारों में धार्मिक स्वतंत्रता को सम्मिलित किया गया है।

8-19 lekt oknh lekt%&

समाजवादी समाज में लोक विकास में समान अवसर है तथा संपूर्ण समाज का जीवन स्तर उठाने के प्रयत्न किए जाते हैं

संसार में तीन प्रकार की अर्थव्यवस्था चल रही है। एक पूंजीवादी दूसरी साम्यवादी तथा तीसरी मिश्रित। हमनेइन सबका सार ग्रहण करते हुए समाजवादी समाज की कल्पना की है। ऐसा समाज जिसमें ऊंच–नीच, छोटा–बड़ा, स्त्री–पुरूष आदि का भेद भाव न हो और सबको समान अधिकार प्राप्त हों।

संविधान के 15वें अनुच्छेद के अनुसार किसी भी नागरिक के साथ धर्म, मूल, वंश, जाति, लिंग, जन्म स्थान या इनमें से किसी भी आधार पर राज्य भेद भाव नहीं करेगा। सभी को समानता का अधिकार प्राप्त है। अतः किसी को भी सार्वजनिक स्थान पर जाने से रोका नहीं जा सकता और न ही किसी व्यवस्था के करने से रोका जा सकता है।

सभी नागरिकों को बिना किसी भेद भाव के जीवन यापन हेतु समान अवसर प्राप्त है। अनुच्छेद 16वें में अवसर की समानता दी गई है। सभी समान रूप से सरकारी पदों पर नियुक्ति पा सकते है।

8-20 vkfFkd vkj lkekftd fodkl d fy, ipo"kh; ;ktuk %&

आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए नियोजित अर्थव्यवस्था की आवश्यकता होती है। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारत एक पिछड़ा हुआ देश था। अतः देश को आत्मनिर्भर बनाने तथा बेराजगारी दूर करने के लिए सुनियोजित व्यवस्था करनी थी। इसलिए मार्च 1950 में राष्ट्रीय योजना आयोग की स्थापना की गई। जिसका काम ऐसी योजना बनाना था जिससे देश में उपलब्ध मानवीय एवं भौतिक साधनों का अधिकतम उपयोग करके अधिकतम सामाजिक लाभ प्राप्त किया जा सके। इस नियोजना द्वारा देश का तेजी से आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक विकास करके देश में समाजवादी एवं कल्याणकारी राज्य की स्थापना करना है।

हमने अपनी योजनाओं में निम्नानुसार प्राथमिकताएं रखी हैः–

1- iFke ipo"kh; ;ktuk ¼1 viy 1951 l ekp 1956 rd½ mnn';%&

1. युद्ध तथा विभाजन के कारण देश की अर्थ व्यवस्था में उत्पन्न असंतुलन को ठीक करना।
2. देश के सर्वांगीण तथा संतुलित विकास की ऐसी प्रक्रिया प्रारंभकरना, जिससे राष्ट्रीय आय में वृद्धि एवं लोगों के जीवन स्तर में सुधार हो सके।

2- f}rh; ipo"kh; ;ktuk ¼1 viy 1955 l ekp 1961 rd½ mnn';%&

1. आर्थिक विकास कर के समाजवादी समाज की स्थापना।
2. भारी तथा आधारभूत उद्योगों का विकास करना।
3. राष्ट्रीय आय में वृद्धि करना।
4. आय की असमानता कम करना।
5. रोजगार की सुविधा बढ़ाना।

3- r'rh; ipo"kh; ;kstuk ¼1 viy l ekp 1966 rd½

mn'; ½&

1. खाद्यान्नों में आत्मनिर्भरता प्राप्त करना।
2. राष्ट्रीय आय 5 प्रतिशत वृद्धि करना।
3. विविध उद्योगों की वृद्धि करना।
4. शिक्षा तथा सामुदायिक विकास के कार्यक्रमों का विस्तार करना।

4- prFk ipo"kh; ;kstuk ¼1 viy 1969 l ekp 1974 rd½

fo'k"k&

1966 से 1968 तक देश को पाकिस्तान तथा चीन के आक्रमणों का सामना करना पड़ा। अतः वार्षिक योजना ही बनाना पड़ी तथा उनका प्रमुख उद्देश्य खाद्यानों का उत्पादन बढ़ाना ही रखना पड़ा।

mn'; ½&

1. कृषि तथा औद्योगिक उत्पादन बढ़ाना।
2. विदेशी सहायता की निर्भरता को कम करना।
3. कमजोर वर्ग हेतु कल्याणकारी कार्यक्रम बनाना।
4. परिवारों को नियोजित करना।
5. पंचायतों एवं सहकारी संस्थाओं को विकसित करना।

5- ikpoh ipo"kh; ;kstuk ¼1 viy 1974 l ekp 1979 rd½

mn'; ½&

1. बेरोजगारी तथा गरीबी दूर करना।
2. सार्वजनिक वितरण प्रणाली सुधार कर दैनिक उपयोग की वस्तुओं को उपलब्ध कराना।
3. ऊर्जा के साधनों का विकास तथा पर्यावरण प्रदूषण दूर करना।

6- NBoh ipo"kh; ;kstuk ¼1 viy 1979 l ekp 1985 rd½

mnns';%&

1. आर्थिक तथा तकनीकी आत्मनिर्भरता।
2. निर्धन तथा ग्रामीणों के जीवन स्तर में सुधार।
3. आय तथा धन की असमानता घटाना।
4. छोटे परिवारों को स्वेच्छा से स्वीकृत करने की भावना बढ़ाना।

7- lkroh iapo"khZ; ;kstuk ¼1 vizSy 1985 ls ekpZ 1990 rd½

mnns';%&

1. नियोजन में विकेन्द्रीकरण द्वारा जनता की पूर्ण साझेदारी।
2. उत्पादक रोजगारों की वृद्धि करना।
3. समाज की विभिन्न विषमताओं को दूर करना।
4. खाद्यान्नों में आत्मनिर्भरता प्राप्त करना।
5. सामाजिक उपयोग के ऊंचे स्तर प्राप्त करना।
6. निर्यात बढ़ाना तथा आयात में कमी करना।
7. प्रौद्योगिकी में कार्य–कुशलता तथा प्रतिस्पर्धा बढ़ाना।
8. ऊर्जा के स्त्रोतों को खोजना तथा बढ़ना।

इस प्रकार हम देखते है कि प्रत्येक पंचवर्षीय योजना में प्राथमिकता का सामाजिक विकास एवं कल्याण के अनुरूप बदला जाता है।

bdkbZ vk/kkfjr iz'u %&

प्रश्न 1. कानून की एक परिभाषा बतलाइये।

प्रश्न 2. राष्ट्रगीत किसके द्वारा लिखा गया है।

प्रश्न 3. विश्व में मानव अधिकार दिवस कब मानाया जाता है?

प्रश्न 4. मध्यप्रदेश में मानव अधिकार का मुख्यालय कहां स्थित है?

प्रश्न 5. प्रथम पंचवर्षीय योजना का काल निम्न में से कौन सा हैः–

(अ) 1947 अगसत से 1952 अगस्त तक।

(ब) 1 अप्रैल 1951 से मार्च 1956 तक।

(स) 1 अप्रैल 1956 से 13 मार्च 1961 तक।

(द) 1961 से 1966 तक।

& & & &

i=kpkj ikB;Øe

ek/;fed f'k{kk e.My] e/;izns'k] Hkksiky

¼}kjk lokf/kdkj lqjf{kr½

fMIyksek bu ,T;qds'ku

fo"k;& lkekftd foKku ,oa mldk f'k{k.k
f}rh; o"kZ

isij i= & uok

---

fo"k;%& jk"Vªh; fodkl ,oa vUrjk"Vªh; lnHkkouk,A
5 vad

1- jk"Vªh; ,dhdj.k ls vk'k;] ck/kd rRo o mUgsa nwj djus ds mik;] tulqf[k;k leL;k ,oa fuokj.k] xjhch mUewyu] xzkeh.k fodkl esa ck/kd rRo ,oa mik;] la;qDr jk"Vª la?k& xBu] izeq[k vax] dk;ZA

2- izeq[k vUrjk"Vªh; leL;k,a rFkk blesa Hkkjr dk ;ksxnkuA

---

fiz; Nk=k/;kid]

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से प्रस्तुत इकाई को दो उप इकाईयों में बांटा गया है।

1

jk"Vªh; ,dhdj.k %&

9-1 राष्ट्रीय एकीकरण की आवश्यकता पिछले दो तीन दशकों में प्रतीत हुई है क्योंकि इस समय विघटनकारी प्रवृत्तियों में काफी वृद्धि होने लगी थी। स्वतंत्रता के पूर्व संपूर्ण प्रांत अंग्रेजों की दासता से मुक्ति पाने के लिए एक जुट होकर खड़ा था। अतः अंग्रेजों से लड़ते समय पूरे भारत में राष्ट्रीय एकता विद्यमान थी परंतु दुर्भाग्यवश स्वतंत्रता के पश्चात विद्यटनकारी प्रवृत्तियों ने अपना सिर फिर उठाया और

जगह—जगह पर साम्प्रदायिकता भाषावाद जातिवाद तथा प्रांतीयता की बाढ़ में से प्रवृत्तियां उभरने लगी। जिसके फलस्वरूप शांति तथा सुव्यवस्था नष्ट होने लगी अतः राष्ट्रीय एकीकरण के लिए प्रयत्नों में गति आई जिससे विघटनकारी तत्वों को दबाया जा सके।

9-2 jk"Vh; ,dhdj.k dk vFk %&

राष्ट्रीय एकीकरण का तात्पर्य उन विघटनकारी तत्वों को समाप्त करने से है जिसके कारण राष्ट्र के अन्य समूहों में झगड़ा या मनोमालिन्य हो। संक्षेप में राष्ट्रीय एकीकरण वह वस्तु है जिससे देश में विघटनकारी तत्व समाप्त हो जाते है तथा देश में सहिष्णुता एवं एकता का वातावरण बनता है।

jk"Vh; ,dhdj.k mudk ck/kd rRo vkj mUgs nj djus ds mik; %&

भारत एक विशाल देश है। अतः उसमें अनेक प्रकार की विविधताओं का होना स्वाभाविक है। किन्तु इन विविधताओं में एकता का रहना आवयक है। यह एकता ही राष्ट्र का प्राण है, प्रगति का सौपान है। एकता के बिना राष्ट्र खोखला हो जाएगा, टूट जाएगा। अतः यह आवश्यक है कि इस विशाल भारत में एकता बनाए रखने के लिए हम सदैव सतर्क एवं प्रयत्नशील रहें।

jk"Vh; ,dhdj.k ds ck/kd rRo %&

भारत में अनेक भाषाएं तथा सैकड़ों बोलियां बोली जाती है। वेश—भूषा, खान—पान, रीति—रिवाज, जल—वायु तथा कृषि उपज भी अलग—अलग है। तात्पर्य यह है कि भारत वर्ष में धर्म, भाषा, प्रान्त, जाति तथा संस्कृति आदि में अनेक विविधाएं है। इन सबका सामंजस्य आवश्यक है। किन्तु यह भिन्नताएं अनेक प्रकार से बाधाएं उत्पन्न करती रहती है। उदाहरण के लिये भाषाओं का विवाद चलता रहता है। कभी—कभी प्रान्तीयता की भावना बढ़ने लगती है और अलगाववाद की प्रवृत्ति पनपती है। धर्म, सम्प्रदाय एवं जाति के आधार पर भी कभी—कभी एकता खण्डित होने लगती है। ऊंच—नीच, छुआ—छूत, अमीर—गरीब के बीच की खाई भी हितकर नहीं है।

''जहां चार बर्तन होते है वहां खटकते है'' हम भी आपस में लड़ते झगड़ते रहते है। किन्तु फिर भी हम सब एक है। यह साबित कर चुके है। इसके प्रमाण है पाकिस्तान और चीन के साथ हुए संघर्ष। उस समय हम दिखा चुके है कि यह सब भेदभाव हमारे आपस के है, कोई दूसरा इसे हमारी कमजोरी न समझे उसके लिए तो हम सब एक है।

jk"Vh; ,dhdj.k dks cuk, j[kus vkj mldk leFku djus oky s rRo %&

1- *f'k{kk %&* शिक्षित व्यक्ति का दृष्टिकोण विकसित हो जाता है। क्योंकि इसके द्वारा उसका नैतिक, बौद्धिक, मानसिक तथा शारीरिक विकास होता है। अतः शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रीय

एकता को बढ़ाना चाहिए। बच्चों को संकुचित भावनाओं से आपस में सहयोग तथा राष्ट्रप्रेम की भावना की ओर बढ़ाना चाहिए।

2- /keZ %& सम्प्रदाय तथा जातिवाद संबंधी संकीर्ण भावनाओं को मिटाना।

1- /keZ fujis{krk %& भारत एक धर्म निरपेक्ष राष्ट्र है। प्रत्येक को अपने धर्म के पालन करने की स्वतंत्रता है। लेकिन यह स्वतंत्रता दूसरों के धर्मपालन में बाधक नहीं होना चाहिए। सभी धर्मावलम्बी एक साथ प्रेम से रहे। इस भावना का बचपन से ही विकास करना चाहिए। हमारा इतिहास बताता है कि हम सब एक साथ शांति से रहते आये है। पाश्चात्य शासकों ने अलगाव की भावना बढ़ाई उसे जड़मूल से खत्म करना होगा।

2- lEiznk;okn%& भारतवर्ष में अनेक सम्प्रदाय है लेकिन उनके पीछे एक सांस्कृतिक एकता है जो सबको उत्तर से दक्षिण तक और पूर्व से पश्चिम तक एकता के सूत्र में बांधे हुए है, उसे मिटने नहीं देना है बढ़ाना है।

3- Hkk"kkvksa ds izfr mnkj n`f"Vdks.k %& भारत जैसे विशाल देश में अनेक भाषाओं और बोलियों का होना स्वाभाविक है। सभी भाषाओं का समान विकास होना चाहिए। साथ ही एक सम्पर्क भाषा का सभी को ज्ञान होना आवश्यक है। हिन्दी को हमने राष्ट्र भाषा की मान्यता दी है, जिसका अध्ययन सभी नागरिकों को आदर पूर्वक करना चाहिए। भाषावार प्रांतों की रचना करके हमने भूल की है। किन्तु अब इस भूल को उदार दृष्टिकोण द्वारा सुधारा जा सकता है।

4- izkarh;rk dh Hkkouk dks lekIr djuk %& भारत देश एक है। सभी प्रांत उसके अंगमात्र है। फिर पानी, भूमि या बिजली के कारण आपसी झगड़ा क्यों होना चाहिए? संपूर्ण देश की सभी वस्तुएं सभी की है। अतः यह आवश्यक है कि प्रांतीयता की भावना को समाप्त कर दिया जाये। इसके लिए प्रांतो एक दूसरे पर निर्भर बनाना चाहिए तथा सरकारी सेवाओं से सभी प्रांतों के रहने वालों को सभी प्रांतों में रहना चाहिए। एक ऐसा न्याय बनाना चाहिए जो प्रांतों के विवादों को निपटा सके और उसका निर्णय सर्वमान्य हो।

5- lkekftd ,oa vkfFkZd vlekurk,a lekIr djuk %& सामाजिक भेद भाव जैसे छुआ छूत, ऊंच नीच, जाति वर्ग को समाप्त करना चाहिए। इसके लिये कानून बनाना ही पर्याप्त नहीं है एक स्वस्थ जनमत तैयार करने की जरूरत है। इसी तरह गरीबी और अमीरी का अन्तर कम करने के लिए धन के उचित वितरण पर ध्यान देना चाहिए।

6- LoLFk tuer rS;kj djuk %& ऐसा जनमत तैयार किया जाये जिससे स्वार्थ को देशहित में त्यागने की सामाजिक भावना का विकास हो।

7- jktuSfrd nyksa dk dRrZO; fu/kkZj.k %& केवल ऐसे ही राजनैतिक दलों को मान्यता दी जाये जो जातिवाद, प्रांतीयवाद, भाषावाद, क्षेत्रवाद तथा सम्प्रदायवाद से ऊपर उठकर राष्ट्रहित के कार्य कर सके।

8- jk"Vªh; ,dhdj.k esa lHkh dk lg;ksx %& राष्ट्रीय स्तर की समस्याओं जैसे– गरीबी, बेरोजगारी, अशिक्षा, महंगाई आदि पर चर्चा करने के लिए एक राष्ट्रीय मंच बनाना चाहिए, जिसमें सभी प्रांतों, धर्मों, जातियों, राजनैतिक दलों, उच्च स्तर की सामाजिक संस्थाओं व्यापारियों तथा बुद्धिजीवियों आदि के प्रतिनिधि शामिल हो। इसकी बैठकों का आयोजन भी समय–समय पर विभिन्न स्थानों पर किया जाए।

आज राष्ट्रीय एकीकरण समय की मांग है। यदि हम समय रहते न चेते तो टूट जाएंगे, मिट जाएंगे कहीं के न रहेंगे। अतः इस ओर शासन तथा समाज को ध्यान देना चाहिए और राष्ट्रीय एकीकरण को दृढ़ बनाने के लिए जुट जाना चाहिए।

9-3 tula[;k leL;k ,oa fuokj.k %&

आज विश्व के सम्मुख जनसंख्या की वृद्धि एक दानवीय रूप में उत्पन्न ज्वलंत समस्या है। जनसंख्या की दृष्टि से भारत का विश्व में दूसरा स्थान है। स्वतंत्रता के पश्चात सन 1951 ई.वी. में प्रथम जनगणना से प्राप्त आंकड़ों को देखे तो स्पष्ट हो जाता है कि सन 1951 में जहा हमारी जनसंख्या 36 करोड़ थी तथा दर की वृद्धि दर 13.30 थी, वहीं आगे बढ़ते–बढ़ते सन 1991 में 84.63 करोड़ एवं वृद्धि की दर 23.85 हो गई है। इस निरंतर बढ़ती जनसंख्या ने देश के सामने अनेक विकट समस्याओं को जन्म दिया है, जैसे–

1. खाद्यान्न का अभाव।
2. कुपोषण की समस्या।
3. बेरोजगारी की समस्या।
4. अधिकांश लोगों का निम्न जीवन स्तर।
5. आवास संबंधी समस्या।
6. परिवारों का विघटन।
7. भूमि विघटन।
8. आर्थिक विकास में बाधा।
9. सामाजिक विकास में बाधा।
10. शिक्षा की समस्या।
11. जीवन यापन में साधनों की कमी।
12. यातायात एवं आवागमन के साधनों में कमी।
13. पर्यावरण प्रदूषण।
14. प्राकृतिक सम्पदा में निरंतर कमी।
15. ऊर्जा की कमी।

16. स्वास्थ्य संबंधी समस्या।

17. जीवन में गुणवत्ता का हास आदि समस्याएं अपना प्रभाव दिखा रही है।

9-4 Hkkjr ,oa tul[;k %&

सन् 1991 की जनगणना के अनुसार भारत की जनसंख्या 84 करोड़ 39 लाख और 3.1 हजार थी। प्रतिवर्ष 22 प्रतिशत की वृद्धि हो रही है। लगभग सवा करोड़ जनसंख्या प्रतिवर्ष बढ़ जाती है। सन् 2000 में यह आबादी 100 करोड़ हो चुकी है। यह एक गहन चिन्ताजनक समस्या है। इस समस्या के कारण भारत का आर्थिक एवं सामाजिक विकास तीव्रगति से प्रभावित एवं बाधक सिद्ध हुआ है।

tul[;k o`f) d dkj.k %&

1. मृत्युदर की अपेक्षा जन्मदर वृद्धि तीव्र होना।
2. उत्तम स्वास्थ्य सुविधाएं सुलभ होना।
3. महामारियों पर नियंत्रण पाना।
4. लोगों की सोच में परिवर्तन न होना।
5. महिलाओं के प्रति हीन भावनाएं।
6. बाल विवाह।
7. उत्तराधिकार की धारणा।
8. आश्रित जनसंख्या का अधिक भार।
9. अनुकूल जलवायु।

9-5 tul[;k l mRiUu leL;kvksa dk fujkdj.k %&

भारत की बढ़ती हुए आबादी के कुप्रभाव को देखते हुए सरकार ने बहुत से कदम उठाए है। समाज कल्याण विभाग, शिशु कल्याण, परिवार कल्याण विभाग आदि अपने स्तर से प्रचार–प्रसार कर रहे है।

इसी सोच के अन्तर्गत शिक्षा विभाग को बढ़ती आबादी के प्रभावों से जोड़ा गया है। एक नवीन विचार ''जनसंख्या शिक्षा'' जिसका उद्देश्य बच्चों में बढ़ती आबादी के प्रभावों एवं उससे उत्पन्न समस्याओं एवं उन समस्याओं से जूझने के लिए बच्चों को प्रेरित करना, अपने जीवन स्तर को सुधारना आदि के विषय में विभिन्न विषयों के साथ आबादी के कुछ बिन्दुओं को स्पर्श बिन्दुओं के साथ स्पष्ट किया जाना है।

9-6 tu l[;k f'k{kk %&

यह एक चेतना है जिससे हमारे जीवन में गुणवत्ता का विकास होगा। शासन एवं समाज आबादी की वृद्धि के प्रभावों से निपटने के लिए कुछ प्रयास कर रहे है, जो इस प्रकार है:—

1. पूरे राष्ट्र में शिक्षा का प्रसार एवं प्रचार किया जा रहा है।
2. महिलाओं एवं बालिका शिक्षा पर जोर दिया जा रहा है।
3. निरक्षरों को साक्षर किया जा रहा है।
4. खाद्यानों का उत्पादन बढ़ाया जा रहा है।
5. पिछड़े वर्ग एवं आदिवासियों के स्तर को विकसित किया जा रहा है।
6. शिशुओं की समुचित देखभाल की जा रही है।
7. वृक्षारोपण के कार्यक्रम चलाए जा रहे है।

tul[;k of) l vudk leL;k, mRiUu gk jgh g tl%&

1. बेरोजगारी की समस्या।
2. आश्रित जनसंख्या का भार।
3. व्यवसाय की अनुपलब्धता।
4. प्रदूषण की समस्या।
5. नैतिकता का अभाव।
6. साम्प्रदायिकता का प्रसार।

भारत में बढ़ती जनसंख्या के लिए प्रतिवर्ष 12 लाख टन खाद्यान, 25 लाख मकान, 40 लाख रोजगार, 19 करोड़ मीटर वस्त्र एक लाख शालाएं और लगभग 3 लाख अध्यापक की आवश्यकता होगी। क्योंकि भारत की जनसंख्या वृद्धि का मुख्य कारण जन्मदर और मृत्युदर में अन्तर अधिक होना है, जिससे हमारे संसाधन तीव्र गति से कम होते जा रहे है।

dkj.k %& जन्मदर एवं मृत्युदर में असमानता उत्तम व्यवस्था का सुलभ होना अशिक्षा एवं अज्ञानता।

NkVk ifjokj%& भारत ही नहीं इस विश्व की विकरालता को समझते हुए हमारे समाज को अपने हित, राष्ट्रहित एवं समस्त मानव जाति के हित में सोचते हुए छोटे परिवार की सोच को अपनाना होगा। यदि हमारा परिवार ही समिति होगा तो हम अपनेजीवन स्तर को सुधार सकेगे, उसमें गुणवत्ता बनाए रख सकेंगे और समस्याओं का समाधान भी स्वयं कर सकेंगे। छोटे परिवार की सोच से हम अपनी सुख सुविधाएं बनाए रख सकेंगे।

9-7 Hkkjr e xjhch& dkj.k vkj mUg nj dju d mik;%&

भारत अपार प्राकृतिक धन संपदा से भरा हुआ होते हुए भी एक गरीब देश है। यहां कुल जनसंख्या का लगभग 48.5 प्रतिशत भाग गरीबी की रेखा के नीचे जीवन व्यतीत कर रहा है।

गरीबी से तात्पर्य मनुष्य की आधारभूत आवश्यकताओं, भोजन, वस्त्र, आवास और स्वास्थ्य आदि की पूर्ति के लिए आवश्यक वस्तुओं और सेवाओं को न जुटा पाने से है। 1979—80 के मूल्यों के आधार

पर प्रत्येक ग्रामीण को 76 रू. तथा शहरी को 80 रू. प्रति व्यक्ति प्रतिमाह व्यय करना चाहिए। तभी वह उक्त आवश्यक आवश्यकताओं की सामान्य ढंग से पूर्ति कर सकता है। लेकिन भारत में करोड़ों लोग इतना नहीं कर पाते। जिसे देश में ऐसी दशा हो उसे गरीब कहना स्वाभाविक है।

xjhch d dkj.k & Hkkjr e xjhch d vud dkj.k gA tl&

1- vkfFkd dkj.k

1. प्राकृतिक साधनों का उचित दोहन न होना।
2. बेरोजगारी।
3. महंगाई।
4. जनसंख्या में वृद्धि
   (अ) कृषि कार्य पर निर्भरता।
   (ब) पूंजी का अभाव।
   (स) आय का असमान वितरण।

2- jktufrd dkj.k

1. पराधीनता एवं विदेशी शासकों पर निर्भरता।
2. राष्ट्रीय नीति की अस्थिरता।

3- lkekftd dkj.k

1. निरक्षरता।
2. रूढ़िवादिता एवं भाग्यवादिता।
3. फिजूल खर्ची।
4. धर्म, जाति एवं परिवार प्रणाली से अनुचित लगाव।
5. श्रमिक की गतिशीलता में कमी।

iR;d dk ;gk l{ki e o.ku fd;k tk jgk gA

1- vkfFkd dkj.k&

1- ikdfrd lk/kuk dk mfpr nkgu u gkuk & भारत में प्राकृतिक संपदा की कमी नहीं है। यहां के जंगल, पर्वत, नदियों, खनिज तथा उर्वर भूमि अतुलनीय है। किन्तु पूंजी के अभाव में उनका पूरा लाभ नहीं मिल पाता।

2- cjktxkjh & बेरोजगारी को दूर करने के जितने प्रयत्न किए जाते है, उतनी ही वह बढ़ती जाती है। जनसंख्या वृद्धि और रोजगार के अवसरों का अभाव इसके मुख्य कारण है। इस समय लगभग 5–6 करोड़ व्यक्ति बेरोजगार अथवा अर्द्धबेरोजगार है।

3- egxkbl dh leL;k & महंगाई से मुद्रा की क्रय शक्ति घटती है और वास्तविक आय कम हो जाती है। जिससे सारा धन वस्तुओं को जुटाने में ही लग जाता है जिससे पूंजी का अभाव होता है तथा नए निवेश नहीं हो पाते।

4- *tul[;k dh of)* & भारत में 2.5 प्रतिशत की दर से जनसंख्या बढ़ती जा रही है जिसके कारण वस्तुओं सेवाओं की मांग उनकी उपलब्धता के अनुपात से अधिक रहती है। जिसका परिणाम यह होता है कि पूरी आय भरण पोषण पर ही खर्च हो जाती है और विकास कार्यों के लिए पूंजी का निर्माण नहीं हो पाता।

¼d½ कृषि कार्य पर निर्भरता – भारत में 80 प्रतिशत जनसंख्या प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर रहती है। गांवों में वैकल्पिक व्यवसायों का अभाव है। खेती की जोत छोटी होती जा रही है, जिसके कारण वैज्ञानिक ढंग से खेती नहीं हो पाती।

[k ,oa x & प्रचुर मात्रा में प्राकृतिक साधन होते हुए भी पूंजी के अभाव एवं तकनीकी ज्ञान की कमी के कारण उनका पूरा लाभ नहीं लिया जा सकता। पूंजी की कमी का एक खास कारण आय का असमान वितरण है। यहां अनगिने पूंजीपतियों के घराने देश की 85 प्रतिशत पूंजी के मालिक बने बैठे है। अतः कृषि पर दबाव बढ़ता ही जाता है।

2- *jktuhfrd dkj.k* &

1- *ijk/khurk* & भारत सदियों तक गुलाम रहा तथा विदेशी शासक अपनी पूरी शक्ति से उसका शोषण करते रहे। उन्होंने यहां के संपूर्ण संसाधनों का प्रयोग अपने हित में किया। देशी कुटीर उद्योगों को हतोत्साहित करके विदेशी वस्तुओं से बाजार भर दिया। उन्होंने जमींदारी प्रथा चलाकर अधिकांश लोगों को खेतिहार मजदूर बना दिया। आर्थिक व्यवस्था पूर्णतः लंगड़ी बना दी। इस कमी को पूरा करने में समय लगेगा।

2- *jk"Vªh; uhfr dh vfLFkjrk* & स्वतंत्रता प्राप्त करने के पश्चात हमने योजनाबद्ध नियोजन प्रारंभ किया लेकिन उसमें भी पूर्ण देश का एक साथ विकसित करने के लिए किसी स्थिर नीति को नहीं अपना सके। पूंजी तथा तकनीकी ज्ञान का अभाव तथा प्रादेशिक खींचतान इसके मार्ग मेंबाधक रहे।

3- *lkekftd dkj.k* &

1- *fuj{kjrk* & भारत में इस समय की 77 प्रतिशत जनसंख्या निरक्षर है। शिक्षा के अभाव में व्यक्ति सही मार्ग नहीं चुन पाता और न अपने अधिकारों के प्रति जागरूक रह पाता है शासन की ओर से अनेक योजनाएं चलाई जा रही है, जिनसे गरीबी दूर होनी चाहिए। लेकिन शिक्षा के अभाव में सही व्यक्ति को उनका लाभ नहीं मिला पाता।

2- *:f<okfnrk ,oa HkkX;okfnrk* & हमारा समाज आज भी पुरानी परम्पराओं से चिपका हुआ है तथा गरीबी और अमीरी को भाग्य की देन समझता है। यह पिछड़ापन ऋणग्रस्त बनाकर गरीबी बढ़ाता है।

3- *fQ t y [kph &* जन्म, मरण, शादी विवाह, त्यौहार तथा तीर्थ यात्राओं पर आंखे बंद करके शक्ति से अधिक खर्च कर दिया जाता है। जिसका परिणाम यह होता है कि जिन्दगी भर कर्जदार रहना पड़ता है। गरीबी दूर करने की बात तो सोच ही नहीं पाता। ग्रामीण क्षेत्रां में मुकदमेंबाजी पर भी अनाप–शनाप खर्च करते रहते हैं जिसके कारण खाते–पीते घरबार बरबाद हो जाते है।

4- */ke] tkfr ,o l;Dr ifjokj iFkk &* धर्म और जाति भी गरीबी बढ़ाने में योगदान करते है। क्योंकि इनके कारण अनेक प्रकार के खर्च तो किये जाते हैं साथ ही कुछ ऐसे उत्पादक कार्य है, जिन्हें सब नहीं समझ सकते। संयुक्त परिवार प्रथा धीरे–धीरे लुप्त होती जा रही है। फिर भी अभी तक इसका इतना प्रभाव है कि सामान्य व्यक्ति घर छोड़कर रोजी रोटी की तलाश में बाहर नहीं जाना चाहता और सीमित साधनों में गरीबी की जिन्दगी बिताता रहता है।

5- *Je dh xfr'khyrk dk vHkko &* विकसित देशों की समानता में अभी भी हमारे देश का श्रम कम गतिशील है। घर पर आधी रोटी खाकर सो जाना पसंद है, बजाये इसके कि बाहर जाये अच्छी आमदनी करें और गरीबी को दूर कर सम्पन्न जीवन बिताएं।

9-8 *xjhch dk nj dju d mik; %&*

1. रोजगार के अवसर बढ़ाना।
2. जनसंख्या पर नियंत्रण।
3. आर्थिक विकास में तेजी लाना।
4. सार्वजनिक निर्माण कार्यां में वृद्धि करना।
5. भूमि सुधार।
6. सामाजिक सेवाओं का विस्तार करना।
7. उचित वातावरण का निर्माण करना।

iR;d dk l{ki e o.ku fd;k tk jgk g%&

1- *jktxkj d volj c<kuk &* ऐसे अनेक उपाय है, जिनसे रोजगार के अवसर बढ़ाए जा सकते है। योजनाओं के अन्तर्गत छोटी–छोटी परियोजनाएं चलाना औद्योगिक संस्थाओं की क्षमता बढ़ाना, गरीबों को वस्तुओं और सेवाओं को सस्ती दर पर उपलब्ध कराना, प्राकृतिक संपदा के उचित दोहन का प्रबंध करना, श्रमशक्ति का उचित विकास करना तथा कृषि एवं गैर कृषि क्षेत्रों का विकास करना।

2- *tul[;k ij fu;=.k %&* इसके लिये परिवार कल्याण कार्यक्रम चलाए जा रहे है। उनका धुआंधार प्रचार किया जा रहा है, लेकिन आशाजनक सफलता नहीं मिल पा रही है। इसका

प्रमुख कारण है अशिक्षा एवं धर्मान्धता। जनसंख्या राष्ट्रीय समस्या है। इसका किसी धर्म से कोई संबंध नहीं है। यदि धर्म से संबंध होता तो माल्थस जो एक पादरी था इसकी वकालत न करता ईरान जैसे मुस्लिम देश इसे न अपनाता। अतः आवश्यकता है इसे निर्भीक एवं प्रभावी ढंग से चलाने की।

3- *vkfFkd fodkl e rth ykuk %&* कृषि, लघु एवं कुटीर उद्योगों का गतिशील विकास करके रोजगार के अवसर बढ़ाए जाएं तभी गरीबी मिटाने में सहायता मिलेगी।

4- *lkoltfud fuekZ.k dk;k e of) djuk %&* ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक से अधिक सार्वजनिक निर्माण कार्य जैसे– सड़क, नहरें, कुएं, मकान, बिजली आदि प्रारंभ करके बेरोजगारों को रोजगार दिया जाए तथा अर्द्ध रोजगार को अपनी आमदनी बढ़ाने का अवसर दिया जाना चाहिए। गरीबी दूर करने में बहुत सहायता मिल सकती है।

5- *Hkfe l/kkj %&* स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से ही इस क्षेत्र में ही बहुत काम किया जा रहा है। लेकिन इस कार्य को सख्ती से सही ढंग से नहीं लागू किया। अधिकतम जोन संबंधी कानूनों को सख्ती से अपनाया जाए तथा भूमि का भूमिहीनों का उचित रीति से वितरण किया जाए। इससे अनेक भूमिहीनों को रोजगार मिलेगा तथा उनकी आमदनी बढ़ने से गरीबी दूर होगी।

6- *lkekftd lokvk dk foLrkj djuk %&* सामाजिक सेवाओं जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य तथा मनोरंजन आदि का विस्तार करना चाहिए। सभी को यह बताया जाए कि कम आमदनी होने पर भी किस प्रकार अच्छा जीवन व्यतीत किया जा सकता है। गांव में उचित मूल्य की दुकानें खोली जाएं तथा मकान बनाने के लिए उदारता से अनुदान एवं सहायता करनी चाहिए उनकी आवश्यकताओं के समय आसानी से बैंक ऋण मिल सके। इसके लिए ऋण प्राप्त करने की प्रक्रिया को सरल बनाना चाहिए। इससे उत्पादन बढ़ेगा, आय बढ़ेगी जिससे गरीबी दूर होगी।

7- *mfpr okrkoj.k dk fuekZ.k djuk %&* किसी भी उद्‌देश्य को पूरा करने के लिए उचित वातावरण बना लेना आवश्यक होता है। पूरा समाज गरीबी के प्रति जागरूक हो। पुरानी दूषित परम्पराओं तथा अंधविश्वासों का त्याग करें और शिक्षा की वृद्धि में सहायक हो शिक्षा रोजगार मुखी होना चाहिए। इससे गरीबी उन्मूलन में अच्छी सफलता मिल सकती है।

9-9 *xke fodkl ck/kk, vkj mUgs nj djus d mik; %&*

बापू कहा करते थे कि असली भारत तो गांव है। वास्तव में 1981 की जनगणना के अनुसार 77.8 प्रतिशत जनसंख्या गांव में निवास करती थी। लगभग यह स्थिति इस समय भी है। अतः गांव का विकास ही भारत का विकास है। लेकिन भारत एक विशाल देश है। इसमें लाखों गांव दूर–दूर तक बसे हुए है। अनेक गांव पर्वत पर ऐसे बसे हुए है जहां पहुंच पाना आज भी कठिन है। ऐसी दशा में सम्पूर्ण सम्यक ग्रामीण विकास आदि असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है।

xkeh.k fodkl d ekxZ e vud ck/kk;s g] tks l &

1. दूर–दूर अंचल में बसे होना।
2. सम्यक सुविधाओं का अभाव।
3. संचार के साधनों का अभाव।
4. अशिक्षा तथा तकनीकी ज्ञान का न होना।
5. कृषि के क्षेत्र में पिछड़ापन।
6. कृषि सहायक एवं घरेलू उद्योगों का अभाव।
7. ग्रामीण ऋणग्रस्तता।
8. कृषि उत्पादों के विक्रय में अनेक मध्यस्थलों का होना।
9. बैंकिंग सुविधा का अभाव।
10. दूषित परम्पराओं घर का महत्व तथा फिजूलखर्ची।
11. शासकीय योजनाओं का सही लोगों तक पहुंचना।

uhp iR;d dk o.ku Øe'k% fd;k tk jgk gA

1. भारत में कई लाख गांव है जो दूर–दर अंचलों में बसे हुए है। कई गांव तो इतनी दूरी पर बसे हुए है, जहां पहुंचना भी कठिन है। कई इतने छोटे हैं जहां किसी योजना का क्रियान्वित करना ही व्यर्थ हो जाता है।
2. इतने बढ़े विशाल देश में सब गांव को रेल और सड़क से जोड़ना ही असंभव सा हो गया है।
3. छोटे–छोटे गांव तक संचार सुविधाएं पहुंचाना भी बहुत कठिन है। भारत जैसे विकसित देश में जहां पूंजी का अभाव हो सुदूर देहातों तक संचार माध्यमों का विस्तार करना आसान काम नहीं है।
4. अधिकांश देहातों में स्कूल नहीं है और जहां है भी वहां सभी बालक–बालिकाएं पढ़ने नहीं जाते। गरीब माता–पिता अपने पुत्र–पुत्रियों को बचपन से ही काम पर जुटा देते है। किंतु निरक्षरों को तकनीकी शिक्षा कैसे दी जा सकती है।
5. भारत कृषि के क्षेत्र में भी पिछड़ा हुआ है। वैज्ञानिक उपकरणों का प्रयोग नहीं हो पाता, अच्छा बीज और अच्छा खाद का अभाव रहता है। सिंचाई की सुविधाएं नही है। भूमि की जोत अनार्थिक होती जा रही है तथा भूमि के कटाव की समस्या नहीं सुलझा पा रही है।
6. कृषि सहायक तथा घरेलू उद्योगों का अभाव– पहले ग्राम एक पूर्ण आर्थिक इकाई के रूप में विकसित हुए थे लेकिन आजकल बड़े उद्योगों ने उनकी आत्मनिर्भरता समाप्त कर दी है। वहां के सभी प्रकार के उद्योग समाप्त हो चुके है। जिसके कारण उनका विकास रूक गया है।
7. ग्रामीण ऋणग्रस्तता– अधिकांश ग्रामवासियों की आय कम एवं अनिश्चित होती है। फिर भी अनेक रीति रिवाजों पर अनाप शनाप खर्च करते रहते है। इसके लिए भले ही उन्हें ब्याज दर पर कर्ज लेना पडे। शासन ने अनेक प्रकार से सहायता देकर उन्हें मुक्त करने का प्रयत्न किया है लेकिन वह फिर भी इस संकट से नहीं उबर पाते।

8. मध्यस्थ – किसान कोअपनी उपज गांव में ही बनिये को, पटेल को बेच देना पड़तीहै। उसे बहुत कम मूल्य मिलता है जबकि उपभोक्ता मध्यस्थों से इसी को उंचे दामों पर प्राप्त कर पाते हैं।
9. ग्रामीण जन दूषित परम्पराओं पर बहुत फिजूल खर्ची करते हैं। साथ ही घर का मोह दूर कर कमाने नहीं देता। अतः वे गांव में ही गरीबी का जीवन बिताते रहते हैं।
10. शासन ग्रामोत्थान की अनेक योजनाएं बनाता है, उनका क्रियान्वयन करता है। लेकिन चालाक लालची और अयोग्य कर्मचारी उसका पूरा–पूरा लाभ सही लोगों तक नहीं पहुंचने देते।
11. शासन ने ग्रामीण उत्थान के लिए सहकारी संस्थाओं का जाल बिछा दिया है। लेकिन अभी तक उसका पर्याप्त विकास नहीं हो सका है। अभी इस क्षेत्र में बहुत कुछ करना है।

mik; %&

भारत एक उन्नत खुशहाल समृद्ध और संपन्न राष्ट्र बने, यह प्रत्येक भारतवासी का सपना है परंतु हमारा यह सपना तभी सच हो सकता है जब हम देश के गांवों की परिस्थितियों और जन जीवन की कमियों को समझे और उन्हें सुधारने का भरसक प्रयत्न करें। गांवों की समस्याओं और असुविधाओं को दूर करने में ग्रामीणों का सहयोग ले जब गांव आत्मनिर्भर व विकासशील बनेंगे तभी विकसित भारत का स्वप्न साकार हो सकेगा अस्तु हमें गांवों को विकासशील बनाने के लिए निम्न उपाय करना चाहिए।

1- *f'k{kk dk ilkj &* आज भी गांवों में आधी आबादी निरक्षर है। निरक्षरता के कारण वे राष्ट्र धारा में नहीं जुड़ पा रहे है। इन लोगों में जब तक शिक्षा का उजाला नहीं फैलाया जाता गांवों के विकास की कल्पना फलीमूत नहीं हो सकती।

2- *xjhch dk nj djuk &* भारतीय गांवों में खेतीदर मजदूरों की संख्या अधिक है। उनके सामने सबसे बड़ी चुनौती गरीबी है जिसके चलते वे अपना विकास नहीं कर पा रहे है। अतः सरकार द्वारा गरीबी उन्मूलन हेतु कार्यक्रम चलाया जाना चाहिए।

3- *cjkt xkjh &* ऐसी योजना बनायी जानी चाहिए जिससे पंचायत स्तर पर ग्रामीण समस्याओं को दूर करने हेतु राहत कार्य खोले जाएं जैसे तालाब, गहरीकरण, सड़क निर्माण पुलिया निर्माण आदि जिससे गर्मियों में ग्रामीणों को पलायन नहीं करना पड़ेगा और गांवों की समस्या भी दूर हो जायेगी।

4- *flapkbZ dh lefpr 0;oLFkk &* भारत मे अभी भी सिंचाई के साधन का समुचित विकास नहीं हो सका है, कई गांव अभी तक पूर्णतः असिंचित है। अतः सिंचाई प्रबंधन को दुरूस्त कर भारतीय ग्रामों की आर्थिक स्थिति मजबूत कर सकते है।

5- *df"k esa oSKkfudrk &* किसानों को नई तकनीकी की जानकारी अत्यावश्यक है ताकि वे भी उन्नत बीज, रासायनिक खाद, कीटनाशकों का उपयोग भलिभांति समझकर अपनी पैदावार बढ़ा सकें।

6. किसानों द्वारा पैदा किये गये धान के लिए सरकारी स्तर पर समर्थन मूल्य पर धान खरीदी की व्यवस्था की जाना चाहिए।

7. *Lojkstxkj d ifr tkx:drk &* ग्रामीण स्तर पर मुर्गीपालन मछलीपालन, बढ़ई कार्य, चूना बनाना आदि कार्यों के लिए भरपूर कार्यक्रम चलाया जाना चाहिए। सरल कार्यों से आसान किस्तों पर ऋण मुहैया कराया जाना चाहिए। जिससे ग्रामीण नवयुवक इसका लाभ उठा सकें।

8. ग्रामीणों में बचत व आत्मनिर्भरता लाने के लिए उनको स्वसहायता समूह बनाने हेतु प्रोत्साहित करना चाहिए।

9. ग्रामीण स्तर पर उपलब्ध वनोपज लाख लासा चिरोंजी जड़ी बूटी संग्रह आदि की जानकारी देना चाहिए। ग्रामीणों को मधुमक्खी पालन की जानकारी एवं मशरूम उत्पादन भी ग्रामीणों के लिए लाभकारी योजना है।

उपयुक्त सुझावों के अतिरिक्त ग्राम पंचायत ग्राम के शिक्षा से जुडे व्यक्तियों द्वारा ग्राम में उपलब्ध संसाधनों का बेहतर उपयोग करते हुए संभावित प्रयासों द्वारा समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। ग्रामवासियों को जागरूक व सक्रिय करने में शिक्षकों की भूमिका अहम है।

2

l;qDr jk"V l?k %&

9-10 vko';drk%&

विश्व में भय का वातावरण समाप्त कर युद्ध की स्थिति को शांत करने के लिए तथा विभिन्न राष्ट्रों में पारस्परिक सहयोग तथा सद्भाव बढ़ाने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ जैसी संस्था की भी आवश्यकता होती है। उग्रराष्ट्र तथा साम्राज्यवादी प्रवृत्ति बढ़ जाने के कारण 1914–1918 तक प्रथम विश्व युद्ध हुआ। फलस्वरूप जन मानस में एक भावना पैदा हुई कि युद्ध द्वारा शांति स्थापना असंभव है। इसके लिए तो एक ऐसी संस्था स्थापित होना चाहिए जो राष्ट्र के आपसी विवाद शांतिपूर्वक सुलझा सके और 1939 में द्वितीय विश्व युद्ध छिड़ गया जो 1945 तक चलता रहा। यह युद्ध अत्याधिक विनाशकारी साबित हुआ।

अतः फिर से एक शांति संपन्न संस्था की स्थापना करने के लिए सेनफ्रांसिस में 51 राष्ट्रों के 830 प्रतिनिधि इकट्ठे हुए जिन्होंने 24 अक्टूबर 1945 को एक घोषणा पत्र प्रकाशित किया। फलस्वरूप संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना हुई।

9-11 ie[k vx %&

संयुक्त राष्ट्र संघ के संचालन हेतु उसके छः प्रधान अंग बनाए गए हैः–

1. साधारण महासभा।

2. सुरक्षा परिषद।
3. आर्थिक तथा सामाजिक परिषद।
4. संरक्षण समिति।
5. अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय।
6. सचिवालय।

इसके अतिरिक्त 18 उप अंग है।

9-12 xBu %&

संयुक्त राष्ट्र संघ में दो तरह के सदस्य हैः—

1. प्रारंभिक सदस्य — जिनकी संख्या 511 हैं, जिन्होंने सेनफ्रांसिसको में चार्टर पर हस्ताक्षर किये थे।
2. बाद में प्रवेश पाने वाले सदस्य वे सभी शांति प्रिय राष्ट्र इसके सदस्य बन सकते हैं जो चार्टर के दायित्वों को स्वीकार करते हुए और जो संयुक्त राष्ट्र संघ के मत में इन दायित्वों के निभाने के लिए इच्छुक और समर्थक हो। सुरक्षा परिषद एवं पांच स्थाई सदस्य की सिफारिश पर महासभा को दो तिहाई बहुमत से नये सदस्य बनाये जाते है।

9-13 l;Dr jk"V l?k d dk;l %&

1. अन्तर्राष्ट्रीय शांति तथा सुरक्षा की स्थापना करना।
2. राष्ट्रों के प्रति मैत्रीपूर्ण संबंध बढ़ाना।
3. अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं का समाधान खोजना।
4. विभिन्न राष्ट्रो के क्रियाकलापों में सामंजस्य रखना।

9-14 Hkkjr dk ;kxnku %&

सोवियत संघ और संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के बीच चल रहे शीतयुद्ध से भारत बचना चाहता था। इस कारण भारत ने असंलग्नता और पंचशील का मार्ग अपनाया। भारत को शांतिपूर्ण विदेशी नीति में असंलग्नता की नीति का विशेष स्थान है। इसे गुट निरपेक्षता की नीति भी कह सकते है। भारत ने गुटों से अलग रहकर संयुक्त राष्ट्र संघ को नयी दिशा दी है, उसने शांति के कार्यों महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान की है। इस नीति के कारण ही भारत स्वतंत्र रूप से साम्राज्यवाद, उप निवेशवाद, प्रजातिवाद का विरोध कर सका।

9-15 ie|[k vUrjk"Vh; leL;k;s ,o ble Hkkjr dk ;kxnku %&

आज विश्व तीन भागों में बंटा है– पूंजीवादी समाजवादी तथा गुटनिरपेक्षता पर चलने वाले देश। पूंजीवादी और समाजवादी देशों के बीच प्रारंभ से ही तनाव की स्थिति रही है। जिससे शीत युद्ध के वातावरण मे कमी आई है यद्यपि साम्राज्यों की दुनिया समाप्त हो गई है किन्तु शोषण पर आधारित अन्तर्राष्ट्रीय संबंधो का अंत नहीं हुआ है। शोषण विकसित देशों द्वारा किया जाता है। विकासशील देशों की अधिकांश जनता भुखमरी बेरोजगारी तथा निरक्षरता की शिकार है आज विश्व के सामने अनेक भीषण समस्याएं है। उदाहरण के लिए नवउपनिवेशवाद, मानवाधिकार तथा निशस्त्रीकरण की समस्या इसके अलावा गरीबी बेरोजगारी आर्थिक विषमता पर्यावरण सुरक्षा की समस्या जनसंख्या वृद्धि आदि समस्याएं है। इन समस्याओं के समाधान के लिए विभिन्न देश अन्तर्राष्ट्रीयता पर बल दे रहे है तभी समस्रूाओं का समाधान संभव है।

9-16 ie|[k vUrjk"Vh; leL;k,i %&

विश्व की अनेक समस्याएं है जिनमें मुख्य समस्याएं निम्नलिखित है :–

1. निशस्त्रीकरण– विशेषकर परमाणु निशस्त्रीकरण विश्व की एक प्रमुख समस्या है। विश्व शांति के लिए संपूर्ण निशस्त्रीकरण अति आवश्यक है।
2. सामाजिक तथा आर्थिक जीवन का विकास विश्व की दूसरी महत्वपूर्ण समस्या है। आर्थिक असमानता को कम करना नई अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है।
3. सुरक्षा विश्व की एक अन्य महत्वपूर्ण समस्या है। सुरक्षा सभी देशों और व्यक्तियों की व्यापक प्रवृत्ति है तथा विश्व शान्ति के लिए आवश्यक है।
4. विश्व की एक महत्वपूर्ण समस्या मानव अधिकार है मानव अधिकारों के बिना व्यक्ति अपने जीवन का विकास नहीं कर सकता।
5. विश्व की एक महत्वपूर्ण समस्या पर्यावरण की है। पर्यावरण का विनाश किसी एक क्षेत्र या देश का सवाल नहीं रह गया है जिन चीजों से मनुष्य का जीवन संभव बनता है उन सबका प्रदुषण और विनाश आज मानव की मुख्य समस्या है। पर्यावरण प्रदुषण से पृथ्वी के चारों ओर की ओजोन भी धरती को खतरा है इससे पृथ्वी के सभी प्रकार के प्राणियों तथा वनस्पति को खतरा है। यह संपूर्ण विश्व की समस्या है।
6. जनसंख्या बढ़ना विश्व की एक महत्वपूर्ण समस्या है विश्व में जितने खाद्य पदार्थ पैदा होते है वे जनसंख्या के हिसाब से कम है।
7. आज प्रत्येक राष्ट्र के सामने अस्तित्व की समस्या है अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए वह अन्य राष्ट्रों के साथ संबंधो को सामान्य बनाना चाहता है। आज विश्व की संरचना इस प्रकार की है

कि कोई भी राष्ट्र अकेला या अलग रहकर अपने अस्तित्व की रक्षा नहीं कर सकता न तो वह अपना विकास ही कर सकता है और न वह सुरक्षित रह सकता है।

ये विश्व समस्याएं एक दूसरे से घनिष्ट संबंध रखती है और इनके हल द्वारा ही विश्व शांति विश्व कल्याण और विश्व समृद्धि संभव है।

जहां तक भारत का प्रश्न है भारत संसार में पूर्ण परमाणु निशस्त्रीकरण चाहता है। भारत ने बार–बार यह कहा है कि हम परमाणु शक्ति का केवल शांतिपूर्ण कार्यों के लिए प्रयोग करेंगे। हम परमाणु अस्त्र नहीं बनायेंगे। भारत ने संपूर्ण विश्व में परमाणु निशस्त्रीकरण के लिए वातावरण बनाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है।

bdkbZ dk lkjk'k &

1. राष्ट्रीय एकीकरण का तात्पर्य उन विघटनकारी तत्वों को समाप्त करने से है जिसके कारण राष्ट्र के अन्य समूहों में झगड़ा या मनोमालिन्य हो।
2. आज राष्ट्रीय एकीकरण समय की मांग है। अतः इस ओर शासन तथा समाज को ध्यान देना चाहिए और राष्ट्रीय एकीकरण को दृढ़ बनाने के लिए जुट जाना चाहिए।
3. जनसंख्या की दृष्टि से भारत का विश्व में दूसरा स्थान है इस निरंतर बढ़ती जनसंख्या ने देश के सामने अनेक विकट समस्याओं को जन्म दिया है जैसे खाद्यन का अभाव, बेरोजगारी की समस्या, स्वास्थ्य संबंधी समस्या आदि।
4. भारत में गरीबी के अनेक कारण है जैसे आर्थिक कारण राजनैतिक कारण सामाजिक कारण।
5. गरीबी दूर करने के उपाय (क) रोजगार के अवसर बढ़ाना। (ख) जनसंख्या पर नियंत्रण। (ग) आर्थिक विकास में तेजी लाना आदि।
6. गांव का विकास ही भारत का विकास है। ग्रामीण विकास के मार्ग में अनेक बाधाएं है जैसे दूर–दूर अंचल में बसे होना, संचार के साधनों का अभाव, अशिक्षा बैंकिंग सुविधा का अभाव आदि।
7. संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात 24 अक्टूबर 1945 को की गई।
8. संयुक्त राष्ट्र के प्रमुख अंग (1) महासभा (2) सुरक्षा परिषद (3) आर्थिक एवं सामाजिक परिषद (4)न्याय परिषद (5) अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय (6) सचिवालय।
9. प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय समस्यायें :–
    1. आज विश्व में गरीबी, बेरोजगारी तथा आर्थिक विषमता की विकट समस्या है।
    2. विनाशक अस्त्रों का निर्माण।
    3. विश्व का पर्यावरण प्रदूषित होता जा रहा है जिसके कारण मानव स्वास्थ्य तथा जीवन के लिए संकट पैदा हो गया है।

4. विश्व की जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ रही है। नव उपनिवेशवाद, मानव अधिकार, निशस्त्रीकरण तथ आतंकवाद आदि समस्याएं है।

bdkb vk/kkfjr i'u %&

प्रश्न 1. भारत में बढ़ती हुई जनसंख्या का कोई एक कारण लिखिए।

प्रश्न 2. ग्रामीण विकास की बाधा दूर करने का कोई एक उपाय बतलाइये।

प्रश्न 3. संयुक्त राष्ट्र दिवस कब मनाया जाता है?

प्रश्न 4. संयुक्त राष्ट्र के प्रमुख अंगों के नाम लिखिए।

i=kpkj ikB;Øe

ek/;fed f'k{kk e.My] e/;izns'k] Hkksiky

¼}kjk lokf/kdkj lqjf{kr½

fMIyksek bu ,T;qds'ku

fo"k;& lkekftd foKku ,oa mldk f'k{k.k

f}rh; o"kZ

iz'u i= & uok

---

fo"k;%& lkekftd foKku f'k{k.k dh fof/k;kA

10 vad

---

1 सामाजिक विज्ञान अर्थ, परिभाषा एवं क्षेत्र, शिक्षण के सामान्य उद्देश्य, महत्व
2 प्रारंभिक शिक्षा में सामाजिक विज्ञान का पाठ्यक्रम एवं नवीन प्रवृत्तियां
3 सामाजिक विज्ञान शिक्षण की विधियां
4 सामाजिक विज्ञान में सहायक सामग्री एवं आदर्श पाठ योजना (हर्बट्स की पंचपदीय पाठ योजना एवं बालकेन्द्रित पाठ योजना)
5 सामाजिक विज्ञान में मूल्यांकन – ब्लूप्रिन्ट प्रश्न पत्र निर्माण, आदर्श उत्तर, मूल्यांकन – विश्लेषण, कठिन अंश एवं उपचारात्मक शिक्षण।

---

fiz; Nk=k/;kid!

तीन इकाईयों में भूगोल, इसके बाद तीन इकाईयों में इतिहास तथा तदुपरांत आपने अपने अध्ययन में तीन इकाई राजनीति शास्त्र के पढ़े है।

यह महत्वपूर्ण ज्ञान है विभिनन विषयों से संबंधित है। इसका संबंध आपके प्रतिदिन के जीवन से है। प्रस्तुत इकाई में आप सामाजिक अध्ययन का ज्ञान छात्रों को किस प्रकार प्रदान किया जाए इसकी विभिन्न शिक्षण विधियों का अध्ययन करेंगे।

1

10-1 lkekftd foKku dk vFkZ] ifjHkk"kk ,oa {ks= &

सामाजिक विज्ञान के विषय में एक भ्रमपूर्ण धारणा प्रचलित है। इस धारणा के अनुसार व्यक्ति इसे इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र, अर्थ शास्त्र का योग मानते है। वस्तुतः सामाजिक विज्ञान उपरोक्त विषयों का सम्मिलित नाम नहीं है वरन मानवीय संबंधों को स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त सामग्री प्राप्त करने का एक तरीका है। यह एक पूर्णतः नवीन विषय है जिसने शिक्षा जगत को एक नवीन दृष्टिकोण प्रदान किया है। शैक्षिक अनुसंधान विश्वकोष द्वारा इस दृष्टिकोण को इस प्रकार से स्पष्ट किया है।

किसी के लिये यह निश्चय करना उचित नहीं है कि सामाजिक अध्ययन, इतिहास भूगोल तथा नागरिक शास्त्र का गणितीय योग मात्र है। निश्चय ही इन विषयों से पर्याप्त सामग्री प्राप्त करता है, परंतु उसी सामग्री को ग्रहण करता है जो मानव के वर्तमान तथा दैनिक जीवन संबंधों को स्पष्ट करती है। यह सावधानीपूर्वक नोट किया जाना चाहिए कि इसका स्वरूप परम्परागत विषय जैसा नहीं है वरन एक क्षेत्र जैसा है।

इस विषय के अन्तर्गत सामाजिक विज्ञानों का स्थान प्राप्त होता है, परंतु इनका अपना स्वतंत्र अस्तित्व नहीं होता है। वे सब मिलकर एक नवीन एकीकृत स्वरूप ग्रहण लेते है। सामाजिक विज्ञान शिक्षण के लिए नवीन आधार प्रदान करने वाला विषय है। सामाजिक विज्ञान की विषय सामग्री द्वारा हम अपने छात्रों के समक्ष विषय को स्पष्ट तथा सरल बना सकते है। इस विषय की सहायता से छात्रों को अनिवार्य आदतों तथा कुशलताओं का प्रशिक्षण दिया जा सकता है तथा उसमें ऐसी वृत्तियों तथा आदर्शों का विकास किया जा सकता है कि वे लोकतंत्रात्मक समाज में प्रभावकारी सदस्यों के काम में उचित स्थान गहण करने में सक्षम हो। सामाजिक विज्ञान से सामाजिक और भौतिक वातावरण का भी अध्ययन किया जाता है। सामाजिक विज्ञान में सामाजिक तथा भौतिक वातावरण की विवेचना भी की जा सकती है। इस तथ्य की पुष्टि राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद द्वारा प्रकाशित पुस्तक Teaching Social Sutdies में इन शब्दों में की गई है।

''सामाजिक अध्ययन लोगों तथा सामाजिक एवं भौतिक वातवरण के प्रति उनकी पारस्परिक क्रिया सम्बन्धित है।'' मैकमिलन के अनुसार– ''यह विज्ञान समाज के विकास तथा उसकी संरचना का अध्ययन करता है।''

mDr foopu ds vk/kkj ij lkekftd foKku dh dN iiq[k fo'k"krk,¡ fuEufyf[kr g%&

1. छात्र/छात्राओं की उस वातावरण को समझने प्रदान में सहायता करता है जिसमें वे उत्पन्न हुए है तथा विकसित हुए है।
2. यह विषय इस तथ्य को समझने में सहायता करता है कि वर्तमान में मानव संपूर्ण विश्व में आर्थिक तथा राजनैतिक रूप में परस्पर आश्रित है। यह इस तथ्य को भी स्पष्ट करता है कि मानव स्थानीय राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर एक साथ मिलकर कार्य करने पर ही उसका विकास संभव है।

3. यह विषय आधुनिक विश्व की सभ्यता एवं संस्कृति को स्पष्ट करने एवं सरल बनाने में सहायता करता है।
4. इस विषय के अन्तर्गत मानव तथा भौतिक पर्यावरण के मध्य अन्तःक्रियाओं का अध्ययन भी किया जाता है।
5. इससे अतीत एवं वर्तमान में मानवता को प्रभावित करने वाली समस्याओं तथा घटनाओं का अध्ययन किया जाता है। सामाजिक समस्याओं एवं घटनाओं के तथ्यों को समझने में सहायता मिलती है।
6. यह विषय आधुनिक वैधानिक दृष्टिकोण प्रदान करता है। सामाजिक समस्याओं तथा घटनाओं के सही विश्लेषण में सहायता करता है।
7. विषय के विभाजन की कठोरता को समाप्त करके ज्ञान की सापेक्षता पर बल देता है।

10-2 Hkkjr esa lkekftd foKku dk L0k:i %&

भारत में सर्वप्रथम माध्यमिक शिक्षा आयोग (मुदलियर आयोग) ने इस विषय को प्रतिपादित किया है पूर्व में इतिहास, नागरिक शास्त्र तथा भूगोल विषय अलग–अलग विषय के रूप में पढ़ाए जाते थे। इस आयोग ने इन विषयों को एकीकृत स्वरूप को सामाजिक अध्ययन नाम दिया गया। इसके एकीकृत स्वरूप के विषय में मुदलियर आयोग ने लिखा है– ''इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, नागरिक शास्त्र आदि को एक पूर्ण इकाई के रूप में देखना चाहिए। इस एकीकृत स्वरूप की विषय सामग्री ऐसी होनी चाहिए, जिसमें सामाजिक पर्यावरण के अन्तर्गत परिवार, समुदाय राज्य तथा राष्ट्र के पर्यावरणों को स्थान प्राप्त हो तथा छात्र उस सामाजिक शक्तियों एवं आन्दोलनों के विषय को जान सके, जिनके मध्य वे जीवन यापन कर रहे है।'' आयोग के इसी सुझाव को मान्य करते हुए भारतीय विद्यालयों की पाठ्यचर्या में सामाजिक अध्ययन को महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया गया है। प्रारंभ में इतिहास, भूगोल तथा नागरिक शास्त्र को गणितीय योग के रूप में सम्मिलित किया गया। इन विषयों को अलग–अलग अस्तित्व कायम रहा। परंतु अब नवीन धारणा के अन्तर्गत इसे एक एकीकृत स्वरूप प्रदान करने का प्रयास किए जा रहे है। इसके लिए केन्द्रीय तथा राज्य सरकारें भी महत्वपूर्ण कदम उठा रही है। आशा है निकट भविष्य में सामाजिक विज्ञान को उसकी नवीन धारणा के अनुरूप ग्रहण करने में सफल हो सकेंगे। नवीन धारणा के आधार पर अब सामाजिक अध्ययन को सामाजिक विज्ञान के रूप में ग्रहण किया जाएगा।

10-3 lkekftd v/;;u rFkk lkekftd foKku dk vUrj %&

सामान्यतः सामाजिक अध्ययन तथा सामाजिक विज्ञान एक ही अर्थ में ग्रहण किए जाते है। वस्तुतः इनमें अन्तर पाया जाता है। बाह्य रूप में यह अन्तर दिखाई देता है। दोनों ही मानवीय संबधों का अध्ययन करते हैं। इनमें विषय के अध्ययन की गहराई, स्तर तथा प्रयोजन के दृष्टिकोण के आधार

पर अंतर पाया जाता है। सामाजिक विज्ञान मानवीय संबंधों का उच्चतर एवं विद्वतापूर्ण अध्ययन है जिसमें अनुसंधान तथा प्रयोग के लिए स्थान होता है। सामाजिक अध्ययन विद्यालय के पाठ्यक्रम का वह अंग है जिसमें सामाजिक विज्ञानों के तत्वों के विधियों तथा शोधों को सरलतम रूप में शिक्षण की सुविधानुसार रखा जाता है। सामाजिक विज्ञान मानवीय संबंधों का व्यवस्थित तथा प्रमाणित लेखा है जो कि आधुनिक विश्व की सामाजिक समस्याओं पर भी प्रकाश डालता है तथा उसका हल भी प्रस्तुत करता है।

वेस्ले ने इन दोनों के अंतर को स्पष्ट करते हुए लिखा है सामाजिक विज्ञान तथा सामाजिक अध्ययन दोनों मानवीय संबंधों की विवेचना करते है। परंतु सामाजिक विज्ञान प्रौढ़ावस्था पर सामाजिक अध्ययन बालकों के स्तर पर। अतः यह स्पष्ट है कि सामाजिक अध्ययन मूलतः सामाजिक विज्ञानों से ही अपनी विषय सामग्री प्राप्त करता है। सामाजिक अध्ययन सामाजिक विज्ञान है, जिसको निर्देशात्मक अभिप्रायों के लिए सरलीकृत एवं पुनः संगठित किया गया है। अतः सामाजिक विज्ञानों तथा सामाजिक अध्ययन में दार्शनिक अथवा सैद्धान्तिक अंतर नहीं है वरन केवल व्यावहारिक एवं सुविधा के दृष्टिकोण से अंतर पाया जाता है।

10-4 lkekftd foKku dk {k= %&

सामाजिक विज्ञान का क्षेत्र व्यापक है। इस विषय के अन्तर्गत इतिहास, भूगोल नागरिक शास्त्र अर्थशास्त्र, समाज शास्त्र आदि सामाजिक विज्ञानों से सामग्री ली जाती है सीधे इसमें आधुनिक तत्कालीन समस्याओं, घटनाओं तथा अन्य मामलों को सम्मिलित किया जाता है। इस दृष्टिकोण से सामाजिक विज्ञान का क्षेत्र बहुत ही व्यापक है। इस प्रकार सामाजिक विज्ञान मानव जीवन के किसी एक विशेष पक्ष का विवेचन नहीं करता वरन उसकी संपूर्णता अथवा समग्रता का वर्णन करना है इसमें मानव जीवन के आर्थिक, सामाजिक, नागरिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आदि सभी पक्षों का विवेचन किया जाता है। साथ ही सामाजिक विज्ञान मनुष्य के सामाजिक तथा भौतिक पर्यावरणों का विवेचन करते हुए उनकी पारस्परिक निर्भरता तथा अनिवार्यता को भी स्पष्ट करता है। वस्तुतः सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में निरंतर विस्तार हो रहा है। निकलसन तथा राइट के अनुसार वस्तुतः इसका क्षेत्र अत्यंत व्यापक है और संपूर्ण विश्व में मानव का वर्तमान सामाजिक जीवन ही इसका आधार है।

आधुनिक विचारधारा के अनुसार अब सामाजिक विज्ञान के अन्तर्गत न केवल सामाजिक विज्ञानों जैसे इतिहास, नागरिक शास्त्र, अर्थशास्त्र, भूगोल, समाजशास्त्र आदि को संगठित एकीकृत सामग्री सम्मिलित हो जाती है, अन्तर्राष्ट्रीय संबंध, अंतर सांस्कृतिक संबंध, नागरिकता की शिक्षा आदि विषयों को भी स्थान प्रदान किया गया है। अतः संक्षेप में इस विषय के क्षेत्र के अन्तर्गत निम्नलिखित बातों को भी सम्मिलित किया गया है :–

1. मानवीय संबंधों का अध्ययन।

2. प्राकृतिक विज्ञान तथा ललित कलाओं का व्यावहारिक अध्ययन।
3. तत्कालीन घटनाएं।
4. समाज संबंधी अध्ययन।
5. नागरिकता की शिक्षा।
6. अन्तर्राष्ट्रीय संबंध।
7. अन्तर सांस्कृतिक संबंध।
8. आधुनिक समस्याएं तथा
9. सामाजिक एवं भौतिक पर्यावरणों की पारस्परिक निर्भरता तथा अनिवार्यता संबंधी अध्ययन।

10-5 lkekftd foKku dk egRo %&

विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी ने आज समाज में महान परिवर्तन कर दिए है। इन परिवर्तनों के परिणाम स्वरूप मानव समाज के स्वरूप, आकार आदि में परिवर्तन आ गया है तथा मानवीय संबंधों में जटिलता आ गई है। समाज के परिवर्तित स्वरूप तथा मानवीय संबंधों की जटिलता को समझने उस नवीन समाज में व्यवस्थित होने के लिए सामाजिक विज्ञान का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक तथा महत्वपूर्ण है।

प्रजातंत्र ने भी सामाजिक विज्ञान की आवश्यकता को रेखांकित किया है। प्रजातंत्र की समस्याओं को समझने एवं उनके समाधान के लिए भी इसकी आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त वर्तमान में भौतिकवाद, भ्रष्टाचार, अपव्यय, स्वार्थ, अहंकार आदि बुराईयों में भी सामाजिक कुशलता, सहयोग, सजगता, सहिष्णुता, परोपकारिता आदि गुणों का विकास किया जाना संभव है। इन गुणों से युक्त व्यक्ति दूषित प्रभावों तथा कुरीतियों एवं बुराईयों से समाज की रक्षा कर सकेंगे।

आज का युग अन्तर्राष्ट्रीय युग माना जाता है। संपूर्ण विश्व के देश एक दूसरे के निकट आ गए है। विश्व के किसी एक क्षेत्र की घटना विश्व के अन्य समस्त देशों पर अपना प्रभाव डालती है। इस दृष्टिकोण से सामाजिक विज्ञान आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है। इसका ज्ञान अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग, सहिष्णुता, सद्भावना तथा विश्वशांति स्थापना के लिए परम आवश्यक है।

10-6 f'k{k.k ds lkekU; mn~ns';] egRo %&

वर्तमान भारतीय समाज अतीतकाल के समाज से बहुत भिन्न संगठन, स्वरूप, आकार आदि से बहुत परिवर्तन हो गया है। भारतीय सामाजिक परिवेश में परिवर्तन के कारण सामाजिक विज्ञान का अध्ययन अब और अधिक आवश्यक एवं महत्पूर्ण हो गया है। भारतीय समाज में परिवर्तन के उत्तरदायी प्रमुख कारण निम्नलिखित है :–

1. जनतंत्रात्मक शासन

2. समाजवादी राज्य
3. कल्याणकारी राज्य
4. सर्वोदय
5. ग्राम पंचायतों की व्यवस्था
6. औद्योगिक प्रगति
7. वैज्ञानिक आविष्कारों का प्रभाव
8. विभिन्न समस्याएं– जाति प्रथा, बेकारी की समस्या, खाद्यान्न की समस्या, जनसंख्या समस्या, सुरक्षा की समस्या, निरक्षरता की समस्या आदि।

lkekftd foKku d egRo dk nk Hkkxk esa foHkkftr fd;k tk ldrk g %&

1. वैयक्तिक दृष्टि से
2. सामाजिक दृष्टि से

1- o;fDrd n`f"V ls %& वैयक्तिक दृष्टि से सामाजिक विज्ञान का महत्व निम्नांकित बिन्दुओं के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है।

1. सामाजिक चरित्र का निर्माण इस विषय की शिक्षा द्वारा सहयोग, सहकारिता, सहिष्णुता, आदि गुणों का विकास किया जा सकता है।
2. व्यक्ति की मानसिक शक्तियों का विकास।
3. व्यावहारिक समस्याओं के समाधान के लिए तैयारी।
4. अपने उत्तरदायित्वों के निर्वहन के लिए सक्षम बनाना।
5. विभिन्न सामाजिक आदतों एवं कुशलताओं का विकास करना।
6. वातावरण में अनुकूल करने की क्षमता का विकास करना।

2- lkekftd n`f"V ls %& सामाजिक दृष्टि से सामाजिक विज्ञान का महत्व निम्नलिखित कारणों से है :–

1. स्वस्थ वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास।
2. देश की विरासत एवं संस्कृति से प्रेम।
3. सामाजिक जीवन को उन्नत, सफल तथा समृद्ध बनाने की क्षमता उत्पन्न करना।
4. अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास करना।
5. साथियों के प्रति सहिष्णुता, सहानुभूति तथा प्रेम की भावना विकसित करना।
6. पूर्वाग्रहों को दूर करके व्यापक, दृष्टिकोण का विकास करना आदि।

10-7 lkekftd foKku f'k{k.k ds mn~ns'; %&

किसी कार्य को करने के लिए उद्देश्य का ज्ञान होना चाहिए। कोई भी कार्य उद्देश्य के अभाव में सुचारू रूप से संचालित नहीं किया जा सकता है। अतः कार्य प्रारंभ करने के पूर्व उद्देश्यों का निर्धारण स्पष्ट रूप से कर लेना चाहिए। इस संबंध में बी.ए. भाटिया ने ठीक से लिखा है, लक्ष्य के ज्ञान के अभाव में शिक्षक उस नाविक के समान है, जो अपने साध्य अथवा मंजिल को नहीं जानता है और बालक उस पतवार विहीन नौका के समान है, जो लहरों के थपेड़े खाकर किसी किनारे पर लगेगी।

अतः अब प्रश्न उठता है कि सामाजिक विज्ञान शिक्षण के उद्देश्य क्या है प्रत्येक विषय के उद्देश्य सामान्यतः शिक्षा के उद्देश्यों के आधार पर निर्धारित किया जाता है। शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति किसी न किसी रूप में सामान्य शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति की जा सकती है। इसी कारण उस विषय को सामान्य शिक्षा के पाठ्यक्रम में स्थान प्रदान किया जाता है। सामाजिक विज्ञान शिक्षण के द्वारा सामाजिक, सांस्कृतिक तथा नागरिक उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायता मिलती है। सामाजिक विज्ञान शिक्षण के प्रमुख उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायता मिलती है। सामाजिक विज्ञान शिक्षण के प्रमुख उद्देश्य निम्नानुसार है :–

1- mRre ukxfjdrk dk fodkl%&

प्रत्येक राष्ट्र तथा समाज की आकांक्षा रहती है कि उसके नागरिक अथवा सदस्य उत्तम नागरिक हो। उत्तम नागरिक ही समाज अथवा राष्ट्र की आर्थिक सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक आदि उन्नति में योगदान करते है। वर्तमान में तो विश्व का आधार छोटा हो गया है। विश्व शांति के लिए उत्तम नागरिक का योगदान अनिवार्य है। सामाजिक विज्ञान शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य उत्तम नागरिक का निर्माण है। विभिन्न विद्वानों ने उत्तम नागरिकों के अलग–अलग गुणों का वर्णन किया है। यहां कुछ प्रमुख गुणों का वर्णन प्रस्तुत है जो कि उत्तम नागरिक के लिए अपेक्षित है।

1. समसामयिक समस्याओं के समाधान के लिए ज्ञान तथा कौशलों की प्राप्ति।
2. परिवर्तनशील विश्व में प्रभावकारी जीवन यापन के लिए अनुकूल करने की क्षमता का विकास करना।
3. लोकतांत्रित सिद्धांतों का विकास तथा दैनिक जीवन में उनका प्रयोग करना।
4. नवीन तथ्यों एवं विचारों को ग्रहण करने की क्षमता उत्पन्न करना।
5. सृजनात्मक रूप में कार्य करने की योग्यता का विकास।
6. सामाजिक गुणों, सहिष्णुता, संवेदन शीलता, सहकारिता, सहयोग करने की भावना आदि का विकास करना।

7. ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठ, देश की उपलब्धियों पर गर्व करना, देश की सुरक्षा आदि गुणों का विकास करना आदि।

सामाजिक विज्ञान शिक्षण युक्त गुणों का विकास करके उत्तम नागरिकों के निर्माण करने में सहयोग करता है।

2- *lkekftd pfj= dk fodkl %&*

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में जन्म लेता है ओर उसमें रहकर अपनी उन्नति करता है। उस दृष्टिकोण से बालकों में सामाजिक चरित्र का विकास करना सामाजिक विज्ञान का एक प्रमुख उद्देश्य माना गया है। बालक को समाज में अनुकूल कार्य करते हुए स्वयं की तथा समाज की उन्नति के लिए प्रयास करना होता है। इसके लिए उसमें कर्मनिष्ठता, उत्तरदायित्व की भावना, सहिष्णुता, सहयोग, संवेदनशीलता आदि गुणों का होना आवश्यक है। मानवीय संबंधों की समीक्षा भी अपेक्षित है। सामाजिक शिक्षण अध्ययन द्वारा छात्रों में उपरोक्त गुणों का निर्माण एवं विकास करके सामाजिक चरित्र का सही रूप प्रदान किया जाता है।

3- *lkekftd fojklr rFkk leL;kvksa dk Kku %&*

छात्रों को सामाजिक विरासत तथा समस्याओं की समझ उत्पन्न करना, सामाजिक शिक्षण का एक और प्रमुख उद्देश्य है। छात्रों के विरासत के रूप में सभ्यता, संस्कृति, रीति–रिवाज एवं परम्परायें प्राप्त होती है। सामाजिक विज्ञान के छात्रों को इस सामाजिक विरासत से परिचित कराना है। इस विरासत की अच्छाईयों को ग्रहण करने तथा विकास करने की क्षमता भी प्रदान करता है। समसामयिक समस्याओं के निदान एवं उपचार करने की क्षमता भी विकसित की जाती है।

4- *fofHkUu o`fRr;ksa rFkk dk'kyksa dk fodkl %&*

छात्रों को समाज में अनुकूल तथा उन्नति करने के लिएकुछ विशेष वृत्तियां तथा कौशलों की आवश्यकता होती है। आत्मनिर्भरता के लिए कर्म करने की वृत्ति, ईमानदारी, सहयोग आदि अपेक्षित है। इनके विकास में सामाजिक विज्ञान सहयोग करता है।

5- *vUrjkZ"Vªh; Hkkouk dk fodkl %&*

समाज राष्ट्र एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शांति, सद्भावना के लिए अपनत्व की भावना अनिवार्य है। मानवीय संबंधों के परिचय प्रदान करने का कार्य सामाजिक विज्ञान भली भांति करता है व्यक्ति स्वयं की तथा समाज की उन्नति अपनत्व की भावना में नहीं कर सकता है।

6- *ijLij vkfJr dh Hkkouk dk fodkl %&*

कोई भी व्यक्ति, समाज, राष्ट्र, स्वावलंबी नहीं है। व्यक्ति समाज एवं राष्ट्र अपनी आवश्यकताओं तथा आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए अन्य व्यक्तियों, समाजों, राष्ट्रों पर निर्भर है। इसी प्रकार भौतिक तथा सामाजिक पर्यावरण भी परस्पर आश्रित है। छात्रों में परस्पर आश्रित की भावना का विकास सामाजिक विज्ञान शिक्षण का उद्देश्य है।

7- *orZeku dk Li"V djuk %&*

सामाजिक विज्ञान छात्रों को आधुनिक विश्व से परिचित कराता है। परिवर्तनशील समाज की संभावना तथा संस्कृति का ज्ञान प्रदान किया जाता है। समसामयिक समस्याओं विकास एवं घटनाओं से परिचय प्राप्त करने का कार्य सामाजिक विज्ञान द्वारा किया जाता है। वर्तमान को सही रूप से समझने के साथ–साथ भविष्य में समस्याओं, विकारों तथा घटनाओं से बचने के उपाय खोजने की क्षमता भी उत्पन्न की जाती है। वर्तमान के आधार पर भविष्य की उन्नति सुख एवं शांति की नींव रखी जाती है।

8- *vUrjkZ"Vªh; lnHkkouk dk fodkl %&*

सामाजिक विज्ञान शिक्षण का यह एक उद्देश्य है कि वह मानवीय संबंधों की व्याख्या तथा अपनत्व की भावना का विकास करके अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना को उत्पन्न एवं विकसित करें। अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के अभाव में आज के तनावपूर्ण विश्व में शांति स्थापित करना कठिन है।

9- *okrkoj.k dk Kku %&*

व्यक्ति का जीवन उस वातावरण से प्रभावित होता है जिसमें वह जन्म लेता है और पलता–बढ़ता है। भौतिक वातावरण व्यक्ति के रहन–सहन, खान–पान, वेश–भूषा, व्यवसाय आदि पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। सामाजिक वातावरण उसके विचारों, अभिरूचियों तथा वृत्तियों में परिवर्तन लाता है अथवा प्रभाव डालता है। सामाजिक विज्ञान वातावरण के दोनों स्वरूपों का ज्ञान प्रदान कर व्यक्ति को समाज का कुशल तथा उपयोगी सदस्य बनाने के कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है। साथ ही दोनों प्रकार के वातावरण की पारस्परिक निर्भरता का भी ज्ञान कराता है।

अंत में हम शिक्षा आयोग (1964–66) के प्रतिवेदन के शब्दों में कह सकते है, सामाजिक अध्ययन (विज्ञान) का उद्देश्य छात्रों को उनके वातावरण संबंधी ज्ञान प्राप्त करने, मानवीय संबंधों की समझ और ऐसे अभिमत तथा मूल्यों में सहायक होते हैं जो समुदाय, राज्य राष्ट्र तथा विश्व के मामलों में विवेकपूर्ण ढंग से भाग लेने के लिए उपयोगी हैं। भारत में अच्छी नागरिकता

तथा भावात्मक एकीकरण की स्थापना के लिए सामाजिक अध्ययन का प्रभावी कार्यक्रम अनिवार्य है।

10-8 lkekftd foKku ds izkI; mn~ns'; %&

जब हम किसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए कार्य करते है तो उसके लिए हमें जिन छोटी–छोटी बातों को ध्यान में रखना पड़ता है उन्हें इस उद्देश्य से प्राप्य उद्देश्य कहते है। प्राप्य उद्देश्य अर्थ को स्पष्ट करते हुए कार्टन वी. गुड ने लिखा, ''प्राप्य उद्देश्य वह मानदण्ड अथवा लक्ष्य है जिसको छात्र द्वारा विद्यालयीन क्रिया को पूर्ण करके प्राप्त किया जाता है।''

lkekftd foKku ds mn~ns'; rFkk izkI; mn~ns'; esa vUrj %&

उद्देश्य का क्षेत्र व्यापक है। उद्देश्य मेंआदर्शवादिता होती है। अतः इसे पूर्ण रूप से प्राप्त करना संभव नहीं है। इसकी प्राप्ति हो भी सकती है। प्राप्य उद्देश्य का क्षेत्र सीमित होता है। प्राप्य उद्देश्यों की प्राप्ति होती है। प्राप्य उद्देश्य विशिष्ट होता है तथा इसमें व्यावहारिकता का गुण पाया जाता है।

lkekftd foKku ds izkI; mn~ns'; %&

1. ज्ञानः– तथ्यों पदों, अवधारणाओं, परम्पराओं, प्रवृत्तियों, सिद्धान्तों तथा सामान्यीकरणों, उप कल्पनाओं, समस्याओं, प्रक्रियाओं आदि का ज्ञान प्राप्त करना।
2. बौद्धिक योग्यताएं :– तथ्यों पदों, अवधारणाओं, परम्पराओं, प्रवृत्तियों, सिद्धान्तों तथा सामान्यीकरणों, उप कल्पनाओं, समस्याओं, प्रक्रियाओं आदि के लिए समझ विकसित करना।
3. व्यवहारिक कौशल अथवा प्रायोगिक कौशल :– दिए प्रदत्तों से मानचित्र, चार्ट, तालिकाएं, रेखाचित्र, ग्राफ आदि का निर्माण। प्रतिरूप का निर्माण।
4. व्यक्तिगत तथा सामाजिक गुण :– व्यक्तियों के बीच से संबंधित सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं धार्मिक समस्याओं तथा विषयों में रूचि उत्पन्न करना।

2

ikjEifjd f'k{kk esa lkekftd foKku dk ikB~;Øe ,oa uohu izo`fRr;k¡

पूर्व उप इकाई में हम सामाजिक विज्ञान के उद्देश्यों का विवेचन कर चुके है। इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए कोई उपयुक्त पाठ्यक्रम का होना आवश्यक है। इसके अभाव में सामाजिक विज्ञान के निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करना संभव नहीं है। पाठ्यक्रम की विषय सामग्री को जानने के पूर्व पाठ्यक्रम के अर्थ को समझना आवश्यक है।

10-9 ikB~;Øe dk vFkZ %&

करीकुलम शब्द की उत्पत्ति लेटिन भाषा के शब्द, क्यूररे शब्द से हुई है जिसका अर्थ है दौड़ का मैदान। इस प्रकार पाठ्यक्रम दौड़ का मैदान है। जिस पर बालक उद्देश्यों को प्राप्तकरने के लिए दौड़ता है।

10-10 ifjHkk"kk,¡ %&

1- gujh l¡ vkVks &

पाठ्यक्रम वह साधन है जिसके द्वारा हम बच्चों को शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने के योग्य बनाने की आशा करते हैं।

2- **माध्यमिक शिक्षा आयोग –**

पाठ्यक्रम का अर्थ केवल उस सैद्धांतिक विषयों से नहीं है जो विद्यालयों में परम्परागत रूप से पढ़ाये जाते है, वरन इसमें अनुभवों की वह संपूर्णता निहित है जिसको छात्र विद्यालय, कक्षा कक्षा, पुस्तकालय, वर्कशॉप, प्रयोगशाला और खेल के मैदान तथा शिक्षकों एवं शिष्यों के अगणित अनौपचारिक संपर्कों से प्राप्त करता है। इस प्रकार विद्यालय का संपूर्ण जीवन पाठ्यक्रम हो जाता है, जो छात्रों के जीवन में समस्त पक्षों को प्रभावित कर सकता है और उनके संतुलित व्यक्तित्व के विकास में सहायता देता है।

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर पाठ्यक्रम के संबंधों में निम्नलिखित विशेषताएं दिखाई देतीहैः–

1. पाठय्क्रम उद्देश्य को प्राप्त करने का एक साधन है।
2. पाठ्यक्रम में अनुभवों की संपूर्णता निहित है।
3. विद्यालय के अंदर तथा बाहर के अनुभवों एवं क्रियाकलाप इसमें सम्मिलित है।
4. पाठ्यक्रम में निहित अनुभवों का प्रयोग शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए किया जाता है।
5. संपूर्ण विद्यालयीन वातावरण ही पाठ्यक्रम है।

10.11 पाठ्यक्रम तथा पाठ्य विवरण :–

सामान्यतः पाठ्यक्रम तथा पाठ्य विवरण को समान अर्थों में ग्रहण किया जाता है। वस्तुतः दोनों में अंतर है। पाठ्य विवरण पाठ्यक्रम के अंतर्गत छात्र कक्षा के अंदर तथा बाहर जो अनुभव प्राप्त करता है वह सभी कुछ सम्मिलित होता है। समस्त बौद्धिक विषय विभिन्न कौशल, शिल्प, खेल–कूद आदि आदि संपूर्ण क्रियाकलाप पाठ्यक्रम के अन्तर्गत आ जाते है। कक्षा में शिक्षण की दृष्टि से शिक्षक की

सुविधा के लिए जब पाठ्यक्रम को क्रमबद्ध तथा व्यवस्थित कर लिया जाता है तो उसे हम पाठ्य विवरण कहते है।

10.12 प्राथमिक तथा पूर्व माध्यमिक में प्रचलित सामाजिक विज्ञान का पाठ्यक्रम :–

वर्तमान समय में प्राथमिक तथा पूर्व माध्यमिक तथा पूर्व माध्यमिक कक्षाओं में सामाजिक विज्ञान के अन्तर्गत इतिहास, नागरिक, शास्त्र तथा भूगोल विषय सम्मिलित किए गए है। इन विषयों का अध्ययन एकीकृत स्वरूप में नहीं है, वरन अलग–अलग विषय के रूप में किया जाता है। सामाजिक विज्ञान विषय के अन्तर्गत प्रचलित पाठ्यक्रम का संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है –

भूगोल –

1. **प्राकृतिक भूगोल :–** पृथ्वी की गतियों का स्पष्टीकरण करते हुए दिन–रात, ऋतुएं, अक्षांश एवं देशांतर रेखाओं के साथ मौसम जलवायु पर प्रभाव डालने वाले तत्वों की जानकारी दी गई है। विभिन्न प्रकार की हवाओं का ज्ञान भी सम्मिलित किया गया है।
2. **सामान्य भूगोल :–** स्थानीय जिला, मध्यप्रदेश, भारत देश, एशिया, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया की भौगोलिक स्थिति और विस्तार भू–संरचना, जलवायु, वनस्पति तथा खनिज सम्पदा की जानकारी दी जाती है। मानवीय पक्ष के अन्तर्गत सिंचाई, कृषि की उपजें, व्यापारिक उद्योग धन्धे, आयात निर्यात यातायात के साधन जनसंख्या का विस्तार, जनसंख्या घनत्व तथा प्रमुख नगरों के विषय में जानकारी प्रदान की जाती है।

इतिहास –

इस विषय के अध्यापन की सुविधा के दृष्टिकोण से कालक्रम के अनुसार व्यवस्थित किया गया है। सर्वप्रथम भारत का संक्षेप में परिचय दिया गया है। परिचय के अन्तर्गत सिंधु घाटी की सभ्यता, वैदिक सभ्यता, जैन तथा बौद्ध धर्म मौर्य गुप्त तथा हर्ष राज्य का उदय, विकास एवं पतन के कारणों का समावेश किया गया है। मध्यकालीन भारत में राजपूत राज्य का उत्थान एवं पतन के कारण स्पष्ट किए गये है। भारत में तुर्कों का आक्रमण, राज्याधिकार, भारत का पुनर्जागरण, स्वतंत्रता के लिये किए गए आंदोलनों तथा स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात घटित घटनाओं का संक्षेप में वर्णन किया गया है। साथ ही पड़ोसी देशों, श्रीलंका, बांग्लादेश, पाकिस्तान, बर्मा, नेपाल का सामान्य परिचय तथा उनके साथ भारत के संबंधों पर संक्षेप में प्रकाश डाला गया है।

10.13 नागरिक शास्त्र –

इस विषय में अन्तर्गत नागरिकों के कर्तव्य तथा अधिकार, उत्तम नागरिक के गुण, राष्ट्रगीत, राष्ट्रध्वज तथा राष्ट्रीय चिन्ह की जानकारी दी जाती है भारत गणराज्य के प्रमुख लक्ष्य, लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता, राष्ट्रीय एकीकरण, समाजवाद की संरचना सार्थक विकास के लिए पंचवर्षीय योजना की आवश्यकता को स्पष्ट किया गया है। भारत की सामाजिक प्रमुख समस्याओं जैसे– राष्ट्रीय एकीकरण, गरीबी उन्मूलन तथा ग्रामीण विकास को विस्तार से स्पष्ट किया है। समस्याओं के प्रमुख कारणों एवं बाधाओं को दूर करने पर विचार किया गया है। समाज संघ, परिविचार, कानून और नागरिकता के अर्थ एवं कार्य को स्पष्ट किया गया है। इसके साथ ही संयुक्त राष्ट्र के गठन, कार्य एवं भारत के योगदान को विस्तार से समझाया गया है।

उपरोक्त तीनों विषयों के पाठ्यक्रम के माध्यम से सामाजिक विज्ञान शिक्षण के पूर्व निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करने का प्रयास किया गया है। परंतु हम देख रहे हैं कि अपेक्षित उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल नहीं हो सके है। इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए एक नई धारणा का उदय हुआ है। इस धारण में सामाजिक विज्ञान शिक्षण के संबंध में कुछ सुझाव दिए है, जो कि निम्नानुसार है :–

1. विषयवस्तु का चयन सामाजिक, परिप्रेक्ष्य में होना चाहिए।
2. भिन्न–भिन्न विषयों का एकीकरण होना चाहिए।
3. पाठ्यक्रम द्वारा छात्रों के सामाजिक, भावनात्मक तथा आध्यात्मिक पक्षों के विकास पर बल दिया जाना चाहिए।

संक्षेप में सामाजिक विज्ञान में सम्मिलित विषयों को अलग–अलग शिक्षण के स्थान पर एकीकृत रूप में अध्यापन किया जाना चाहिए। परम्परागत शिक्षण विधियों के स्थान पर नवीन छात्र केन्द्रित शिक्षण विधियों का उपयोग करना चाहिए। शिक्षण वास्तविक होनी चाहिए। सामाजिक विज्ञान शिक्षण में भौतिक पर्यावरण को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाना चाहिए। सामाजिक और भौतिक पर्यावरण परस्पर निर्भर है। दोनों की निर्भरता को स्पष्ट करते हुए स्वच्छ एवं स्वस्थ पर्यावरण के निर्माण के लिए प्रेरणा देना चाहिए।

3

lkekftd foKku dh f'k{k.k fof/k;k %&

10-14 आधुनिक शिक्षण शास्त्र का उद्गम जान एमास कामेनियस के महान ग्रंथ ''ग्रेट डाइटेक्टिक'' में विस्तृत रूप से मिलता है। इन ग्रंथ में उसने इस तथ्य पर बल दिया, संपूर्ण अनुदेश प्राकृतिक क्रम में श्रेणीबद्ध एवं व्यवस्थित किया जाना चाहिए। शिक्षक को अध्यापन कार्य करते समय छात्रों की ज्ञानेन्द्रियों को जागृत करके ज्ञान एवं समझदारी विकसित करनी चाहिए।''

रूसों ने अपने ग्रन्थ 'एमिल में प्राकृतिक वस्तुओं को शिक्षक की संज्ञा दी अर्थात बालक प्रकृति से सीखता है। उसने विभिन्न सिद्धांतों का प्रतिपादन किया यथा क्रियाशीलता या करके सीखने का सिद्धांत, प्रयोग द्वारा सीखना, निरीक्षण द्वारा सीखना आदि।

रूसों के शिष्य पेस्टालॉजी ने अनुदेशन को मनोवैज्ञानिक बनाने पर बल दिया। उन्होंने प्रतिपादित किया कि शिक्षा अर्न्तनिहित शक्तियों को बाहर निकालने की प्रक्रिया है।

पेस्टालॉजी के शिष्यों फ्रोबेल तथा हरबर्ट ने उनकी विचार धारा को आगे बढ़ाया और शिक्षण शास्त्र में मनोविज्ञान के प्रयोग को युक्ति संगत बताया। फ्रोबेल ने किण्डरगार्टन पद्धति को और हरबर्ट ने अनुदेश विधि को जन्म दिया। हरबर्ट ने अपनी विधि में चार पदों को स्थान दिया– 1. स्पष्टता, 2. संबंध संगति 3. व्यवस्था नियमीकरण 4. विधि 5. प्रयोग। उनके शिष्य जिलर ने स्पष्टता नामक पद को दो भागों में विभक्त किया– 1. प्रस्तावना और 2. प्रस्तुतीकरण। राइन ने प्रस्तावना में उद्देश्य का उप पद भी जोड़ा। हरबर्ट ने पांच नियमित पदों को जन्म दिया जो इस प्रकार है– प्रस्तावना, प्रस्तुतीकरण, तुलना एवं तत्व निरूपण, नियमीकरण एवं प्रयोग। इन पदों को आज भी पाठसूत्र में प्रयोग किया जाता है।

मैडम मेरिया माण्टेसरी ने स्वशिक्षा को सर्वोच्चता प्रदान की। फ्रोबेल ने खेल द्वारा शिक्षा को आधार बनाया। जान ड्यूवी ने अनुभव द्वारा सीखने के सिद्धांत को प्रतिपादन किया।

अध्यापन कला में विषयगत अध्यापन विधियों का अपना महत्व है। बालकों की आयु, उसकी मनोवैज्ञानिकता। विषय वस्तु को आधारित कर अध्यापक को अध्यापन विधि का चयन करना होता है। जो अध्यापक जितनी कुशलता से विधियां प्रविधियों का चयन करेगा वह उतनी ही कुशलता से सफल अध्यापन कर सकेगा। इसकी परिणति यह होगी कि बालक सफलता से विषयवस्तु को ग्रहण करते हुए अपने व्यवहार में परिवर्तन कर सकेंगे।

सामाजिक विज्ञान के अध्यापन हेतु सामान्य प्राथमिक, माध्यमिक स्तर पर निम्न विधियों का अनुकरण उपयोगी होगा।

(अ) 1. वर्णनात्मक
2. कथात्मक
3. अभिनयात्मक

(ब) 1. इकाई योजना
2. योजना पद्धति

10-15

1- o.kukRed fof/k %&

वर्णन तथ्यों के वर्णन का एक रूप है। कभी–कभी कक्षा में ऐसी स्थिति उत्पन्न होती है। जब अन्य प्रणालियों अपेक्षाकृत अधिक प्रभावी नहीं होती उस समय शिक्षक को वर्णनात्मक प्रणाली

का अनुसरण करना पड़ता है। मान लीजिए गांधी जी के विषय में पढ़ाते समय सत्याग्रह की कल्पना स्पष्ट करनी है, उस समय अध्यापक को शब्द को विश्लेषित करते हुए सत्याग्रह आंदोलन का वर्णन प्रस्तुत करना होगा तभी छात्र सत्याग्रह को समझ सकेंगे।

o.ku iLrqr djrs le; f'k{kd dks fuEukfdr ckrks dk /;ku j[kuk pkfg, &

1. वर्णन सरल, स्पष्ट उच्चारण, सुबोध और रोचक होना चाहिए।
2. वर्णन छात्रों की आयु और रूचि के अनुकूल हो।
3. वर्णन करने के पूर्व शिक्षक को अपने विचार एक क्रम में जमा लेना चाहिए और उसी क्रम के अनुसार वर्णन करना चाहिए।
4. वर्णन को आकर्षक बनाने के लिए विभिन्न अध्यापन सामग्री, चित्र, मानचित्र, ग्लोब, नमूना, रेखाचित्र, श्यामपट आदि का प्रयोग यथावसर एवं यथा सांध्य करना चाहिए।
5. वर्णन में अनावश्यक बातें अथवा घटनाएं नहीं होनी चाहिए।
6. वर्णन खण्डशः किया जाना चाहिए। वर्णन का क्रम तार्किक एवं तारतम्यानुकूल होना चाहिए।
7. खण्डशः जो वर्णन प्रस्तुत किये जावे उसकी ग्राहयता की जांच कतिपय महत्वपूर्ण अंश, पर प्रश्न पूछ कर करना चाहिए।
8. वर्णन पुस्तक या नोट्स को रखकर नहीं करना चाहिए।
9. वर्णनात्मक विधि शिक्षक प्रधान न हो। अतः छात्रों की सहभागिता प्रश्नोत्तर, चित्र पठन, घटना वर्णन आदि के द्वारा की जावे।

ykHk&

1. प्रत्येक स्तर के छात्रों के लिए उपयोगी।
2. आर्थिक बोझ नहीं।
3. शिक्षक की दृष्टि से सरल व सुलभ।
4. क्षमतानुकूल शिक्षक इसका उपयोग यथा स्थान यथा संभव करने में सक्षम।
5. इस विधि का अनुसरण छात्रों की आयु स्तर को ध्यान में रखकर नहीं किया गया तो कक्षा में अनुशासनहीनता का भय।
6. छात्रों को विषय ज्ञान कराने की अपेक्षा शिक्षक का पाठ्यक्रम पूर्ण कराने में ही अधिक ध्यान देना।

10-16

2- dFkkRed fo/kk;h dgkuh fof/k &

महान दार्शनिक एवं शिक्षाविद प्लेटो ने इस विधि को छोटे बालकों के लिए उपयोगी बताया है। छोटे बालक कहानी सुनने के लिए लालायित रहते है। छोटे बालक की यह प्रवृत्ति होती है कि वे कहानी कहने व सुनने दोनों में ही बड़ी रूचि दिखाते है। गुजरात के शिक्षा शास्त्री गिजुभाई ने अध्यापन के लिए कहानी कथन विधि को सर्वोत्तम विधि बताई है। छोटी अवस्था वाले बालकों को सामाजिक विज्ञान व शिक्षण इस विधि द्वारा दिया जाना चाहिए।

कहानी का माध्यम तभी सरल हो सकता है जबकि अध्यापक के मन में अपने विषय के प्रति उत्साह हो वह अभिनय कला में पारंगत हो, विनोदी स्वभाव का हो तथा विषय को भली भांति स्पष्ट करने में समर्थ हो।

इस विधि की सफलता शिक्षक की योग्यता तथा क्षमता पर निर्भर करती है।

/;ku nuu ;kX; ckrsa &

1. संपूर्ण पाठ्यवस्तु अथवा पाठ्यांश पर कथा तैयार की जावे। इस हेतु पाठ्पुस्तक, स्थानीय परिवेश अथवा घटनाक्रम का चयन किया जा सकता है।
2. कथन में तारतम्यता हो। आवश्यकतानुकूल सहायक सामग्रियों का उपयोग करें।
3. शिक्षक उच्चारण स्पष्ट हों।
4. कथा की भाषा सुबोध एवं सरल हो।
5. कथा के हाव भाव के अनुरूप शिक्षक की भाव भंगिमा हो।
6. आवश्यकतानुसार शिक्षण सहायक सामग्री का उपयोग हो।
7. प्रत्येक घटना के बाद बोध प्रश्न हो अथवा घटना का वर्णन छात्रों से प्रस्तुत करवाया जावे।
8. घटनाक्रमों को अपनी भाषा में लिखने के लिए उत्प्रेरित किया जाये। इससे रटने की प्रवृत्ति विकसित नहीं होगी।

ykHk &

1. बालक कथा सुनने में रूचि रखते है।
2. बच्चों की एकाग्रता विकसित होती है।
3. सुनकर ग्रहण करने की क्षमता विकसित होती है।
4. सुनकर धारण करने की क्षमता का क्रमिक विकास होता है।
5. स्वयं की भाषा विकसित होगी।

nks"k %&

1. कथन अपेक्षानुसार न हुआ तो छात्रों की एकाग्रता प्रभावित होगी।
2. कक्षानुशासन प्रतिकूल होगा।

3. उद्देश्यों की पूर्ति नहीं हो पायेगी।

3- vfHku;kRed fof/k %&

अभिनय रंगमंच तक ही सीमित नहीं है। सामाजिक अध्ययन के अध्यापन में अभिनय विधि का प्रयोग प्राथमिक स्तर पर सर्वथा उपयोगी एवं कारगर है। इसमें आवश्यकता शिक्षक के चिंतन की तथा विषयांश के चयन की है। पाठ्यपुस्तक के पाठ्यांश को आधार मानकर संवाद लेखन किया जावे। संवाद लेखन उपरांत पात्रों के अनुरूप हाव भाव के साथ शिक्षक द्वारा छात्रों के सहयोग से प्रस्तुति की जाये।

यह वह विधि है जिसमें शिक्षक आवश्यकतानुसार छात्रों की सहभागिता से गति, वाणी व हाव भाव समायोजित कर किसी घटना या चरित्र को प्रस्तुत करता है।

इस विधि से पाठ की सूक्ष्मातिसूक्ष्म विवेचना हो जाती है। इसके प्रयोग से छात्रों में विषय ग्राहयता आत्मविश्वास तथा आत्माभिव्यंजना शक्ति सहजता से विकसित की जाती है। इसके द्वारा उनमें झिझक तथा लज्जाशीलता की प्रवृत्ति दूर होती है। इसके अतिरिक्त छात्र बोलने की कला भी सीख लेते है।

/;ku nu ;kX; ckr &

1. इस विधि के उपयोग के पूर्व शिक्षक स्वयं अभिनय कला में दक्ष हो।
2. संवाद का लेखन सावधानी पूर्वक किया जाये।
3. सामाजिक जीवन की समस्याओं को इस प्रविधि के द्वारा सुस्पष्ट एवं बोधगम्य बनाया जावे।
4. सभी छात्रों को क्रमिक रूप से सहभागी बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जावे।
5. कथा में अभिनय के पूर्व शिक्षक को उन समस्त सूचनाओं से छात्रों को अवगत कराया जावे जो कि अभिनय में आवश्यक है।

ykHk &

1. शिक्षक बालकेन्द्रित अधिक और शिक्षक केन्द्रित कम रहता है।
2. बालकों की मानसिक शक्तियों का विकास होता है।
3. बालकों में रूचि उत्पन्न की जा सकती है।
4. बालकों में प्रेरणाशक्ति एवं क्रियात्मकता को विकसित करती है।
5. विषय रोचक, सुबोध, सरस एवं बोधागम्य बन जाता है।
6. बालकों में निर्भीकता के गुण विकसित होते हैं।
7. स्वभाषा के विकास के अवसर अधिक रहते है।

nk"k &

1. समय अधिक लगता है।
2. पाठ के कुछ अंश ही अभिनय योग्य होते है। इससे पाठ्यक्रम की इकाइयां समय पर पूर्ण नहीं होती।
3. शिक्षक को अभिरूचि न होने के कारण इस विधि को अपनाने में कठिनाई महसूस होती है।
4. बहुकक्षीय शिक्षण व्यवस्था में क्रियान्वयन में कठिनाई होती है।

bdkbl ;ktuk

vFkl &

इकाई वातावरण, संगठित विज्ञान, कला या आचरण का एक व्यापक एवं महत्वपूर्ण अंग होती है जिसे सीखने के फलस्वरूप व्यक्तित्व में सामंजस्य आ जाता है।

एक निर्देशात्मक युक्ति है जो छात्रों को समवेत रूप में ज्ञान प्रदान करती है।

bdkbl ;ktuk dl f'k{kd in &

1- [kkt &

इस पद पर शिक्षक इस बात का पता लगाता है कि नवीन इकाई के संबंध में छात्रों का कितना पूर्व ज्ञान है। शिक्षक छात्रों के पूर्व ज्ञान की खोज निम्न युक्तियों से कर सकते है –

1. लिखित परीक्षा द्वारा
2. मौखिक परीक्षा द्वारा
3. विचार विमर्श द्वारा

2- iLrqrhdj.k &

इस पद के अन्तर्गत शिक्षक इकाई की विषय वस्तु को छात्रों के समक्ष बातचीत या कथन के द्वारा प्रस्तुत करता है। इसके बाद वह प्रश्नों द्वारा यह जानने का प्रयास करता है कि छात्र, इकाई की विषय वस्तु को समझ गया है या नहीं। यदि छात्र नहीं समझ पाते है तो शिक्षक उसको पुनः प्रस्तुत करेगा। शिक्षक अगले पद पर तब तक नहीं जायेगा जब तक छात्र इस पद की विषयवस्तु को पूर्णतः समझ नहीं लेते।

3- vkRehdj.k &

इस पद पर छात्रों को इकाई की विषयवस्तु को आत्मसात करने का अवसर प्रदान किया जाता है। इस सोपान में छात्र निम्न माध्यम से विषय वस्तु आत्मसात कर सकते है।

1. अध्ययन करके।
2. लिखकर।
3. एक दूसरे से बातचीत करके।

4. शिक्षक से परामर्श करके।

4- lxBu &

इस पद में छात्र इकाई की विषय वस्तु को व्यवस्थित रूप से लिखकर ज्ञान को संगठित करते है। यदि वे ऐसा करने में सफल होते है तो शिक्षक यह समझ लेते है कि वे इकाई की विषयवस्तु को भली भांति समझ गये है।

5- okpu &

इस पद के अन्तर्गत निम्नांकित दो विधियां प्रयुक्त की जाती है।

1. आदर्श विधि।
2. वास्तविक विधि।

1- vkn'k fof/k %& इसके अनुसार प्रत्येक छात्र को इकाई की विषयवस्तु को कक्षा के समक्ष उसी प्रकार प्रस्तुत करना पड़ता है जिस प्रकार शिक्षक ने प्रस्तुत की थी।

2- okLrfod fof/k %& इसके अनुसार कुछ छात्र इकाई का वाचन करते है। कुछ उसे लिखते है तथा कुछ उस पर विचार विमर्श करते है। शिक्षक उनकी इन विभिन्न क्रियाओं के आधार पर यह निर्णय करते है कि उन्होंने इकाई विषयवस्तु को किस सीमा तक ग्रहण कर लिया है।

bdkbZ fof/k ls ykHk &

1. यह विधि वातावरण संबंधी इकाईयों का प्रयोग छात्रों का वातावरण से सामंजस्य स्थापित करने की क्षमता प्रदान करती है।
2. विविध प्रकार की क्रियाएं, अनुभवों तथा समस्या निराकरण का आयोजन करके क्रियाशीलता के सिद्धांत पर बल देती है।
3. कक्षा कार्य को अधिक सार्थक तथा रोचक बनाती है।
4. बालकों में विषय के प्रति रूचि उत्पन्न करती है।
5. बालकों में योजना तैयार करने का गुण विकसित करती है।
6. सहयोग, विनम्रता, नेतृत्व, सहकारिता, धैर्य, सहनशीलता आदि गुणों का विकास होता है।
7. स्वास्थ्य की आदत का निर्माण होता हैं।

nks"k &

1. इस प्रकार के ज्ञानोपार्जन के लिए उपयुक्त नहीं।
2. इस विधि के प्रयोग में पर्याप्त समय लगता है।
3. समय सीमा का मिश्रण नहीं।
4. इन शिक्षण पदों को सभी विषयों के शिक्षण में प्रयोग नहीं किया जा सकता।

;kstuk fof/k &

योजना विधि से शिक्षण करते समय निम्नलिखित पदों का अनुसरण किया जाए –

1- ifjfLFkfr mRiUu djuk &

शिक्षक बालकों से विचार विमर्श करके ऐसी परिस्थिति उत्पन्न करता है कि उनकी किसी विशेष कार्य में रूचि जाग्रत हो जाती है और उससे संबंधित समस्या का समाधान करने के लिए तत्पर हो जाता है।

2- ;kstuk dk p;u &

समस्या के समाधान के लिए बालक विभिन्न प्रकार की योजना प्रस्तुत करते है। शिक्षण उन योजनाओं के गुण दोषों का विवेचन करके उन्हें ऐसी योजना को चुनने में सहायता देते हैं जो सर्वोत्तम तथा समस्त बालकों को मान्य तथा सर्वाधिक महत्व की होती है।

3- mn~n'; fu:i.k &

शिक्षक छात्रों की रूचि, आवश्यकता तथा उनकी योग्यताओं को ध्यान में रखकर लक्ष्यों का निर्धारण कर आवश्यक निर्देश एवं सुझाव प्रस्तुत करते है।

4- ;kstuk dk dk;kZØe cukuk &

निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये विभिन्न साधनों पर विचार विमर्श किया जाता है। साथ ही उनका तुलनात्मक अध्ययन करके उपयुक्त कार्यक्रम का चयन किया जाता है।

5- ;kstuk dk dk;kZUo;u &

कार्यक्रम को निश्चित करने के बाद उसे छात्रों द्वारा पूर्ण किया जाता है। छात्र कार्यक्रम में निर्धारित विभिन्न क्रियाओं को वैयक्तिक एवं सामूहिक रूप से पूर्ण करते है। शिक्षक उनकी क्रियाओं का निरीक्षण आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन करते है।

6- ;kstuk dk eY;kdu &

इस पद से विचार विमर्श करके यह ज्ञात किया जाता है कि लक्ष्यों की प्राप्ति हुई अथवा नहीं सब छात्र अपने कार्य के संबंध में अपने–अपने विचार व्यक्त करते हैं। शिक्षक उनके कार्य की जांच करके सफलता का आंकलन करते है।

7- ;kstuk dk fy[kuk &

मूल्यांकन के उपरांत छात्र की योजना पुस्तिका में उसका विवरण लिखते है। शिक्षक उनके विवरण को पढ़कर उनके कार्य और प्रगति के संबंध में अपने विचार निश्चित करते है।

;kstuk fof/k d xq.k &

1. योजना वैयक्तिक और सामूहिक दोनों प्रकार की हो सकती है, इसमें बालक के आत्मविश्वास धैर्य और ज्ञान आदि गुणों का विकास होता है।
2. सामाजिक गुणों का विकास होता है।
3. विभिन्न विषयों में समन्वय स्थापित किया जा सकता है।
4. स्वाध्याय की आदत का विकास होता है।
5. रचनात्मक प्रवृत्ति का विकास होता है।
6. व्यवहारिक जीवन की शिक्षा स्वतः प्राप्त कर लेते है।
7. क्रियात्मक विधि पर बल दिया जाता है।
8. प्रत्येक छात्र अपनी क्षमतानुकूल कार्य करने में सक्षम होता है।
9. छात्रों में सामाजिक आदर्शों, गुणों तथा अभिरूचियों का विकास होता है।
10. श्रम के प्रति निष्ठा।
11. वैयक्तिक भेदों के अनुकूल सीखने के अनुभव प्रदान करता है।

nks"k &

1. इस विधि के द्वारा क्रम तथा तारतम्य के साथ ज्ञान प्रदान नहीं किया जा सकता।
2. विधि बहुत व्यय पूर्ण है।
3. समय अधिक लगता है।
4. इसके प्रयोग से शालेय कार्य निष्क्रिय हो जाता है।
5. पाठ्यपुस्तक योजनाओं के आधार पर नहीं लिखी गई है अतः योजनाओं की पूर्ति के लिए सामग्री उपलब्ध नहीं हो पाती।
6. अर्जित ज्ञान की पुनरावृत्ति के लिए कोई स्थान नहीं है।
7. इस विधि द्वारा प्राप्त ज्ञान अत्यधिक अनिश्चित अत्यधिक अव्यवस्थित और अत्यधिक तात्कालिक होता है।

4

lkekftd foKku esa lgk;d lkexzh ,oa vkn'k ikB ;kstuk

10-17 छोटी कक्षा में सहायक सामग्री की अधिक आवश्यकता होती है क्योंकि उनका मानसिक विकास शैशवावस्था में होता है। शिक्षक को चाहिए कि यह आकर्षक से आकर्षक एवं शीघ्र समझ में आने वाली सहायक सामग्री का प्रयोग कर अपने शिक्षण को प्रभावशाली बनायें। मूल उदाहरणों की सर्वाधिक आवश्यकता इसी स्तर पर होती है। उदाहरण के लिये कक्षा पांच का पंचायत का चुनाव पढ़ाना है। यदि शिक्षक व्याख्यात्मक विधि से चुनाव की सारी विधि को बताता जायेगा तो छात्र संभव है कि कुछ भी न समझ पायें। किन्तु यदि उन्हें चुनाव का हर चरण चित्रों द्वारा ही दिखाकर समझाया जायेगा तो निश्चय ही विषयवस्तु उनकी समझ में आ जायेगी। चित्रों द्वारा ही उनमें अच्छे सामाजिक गुणों का विकास किया जा सकता है। गांव की सफाई, अनपढ़ों को पढ़ाना, बड़ों का सम्मान करना आदि गुणों का चित्रों के माध्यम से उनमें विकसित किया जा सकता है।

इस स्तर पर अभिनय पद्धति एवं कथा कहानी पर विशेष बल दिया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य विषयवस्तु को सरल बनाकर उनके सम्मुख रखना होता है। चित्र एवं माडल वास्तव में ऐसी सामग्रियां हैं जो विषयवस्तु को साकार हमारे सम्मुख खड़ा कर देती है। ग्रामीणों की समस्याओं का दिग्दर्शन, ऋतु परिवर्तन, ग्रहण आदि को चित्रों द्वारा दिखाया जा सकता है। नमूनों, चित्रों, मॉडलों, चार्टों, रेखाचित्र, मानचित्र, ग्लोब आदि सहायक सामग्रियों का उपयोग यथाशक्ति शिक्षक को पाठ सरल ग्राहय बनाने के लिये करना चाहिए।

10-18 n'; lgk;d lkexzh dk Hkn &

1- fp= &

सामाजिक अध्ययन के अन्तर्गत भूगोल, नागरिक शास्त्र, इतिहास ऐसे विषय है जिनके विषयांशों की गणित तथ्यों को वास्तविक रूप से सीधा संपर्क नहीं किया जा सकता है। अतः फोटों चित्र अथवा चित्रण द्वारा प्रत्यक्षीकरण कराया जा सकता है। अध्यापन को प्रभावशाली करने के लिए चित्रों में कुछ विशिष्ट गुणों अथवा विशेषताएं होनी आवश्यक है।

1. आकार चित्र बड़ा हो जिसे टांगकर दिखलाया जा सके।
2. चित्र वास्तविकता को ठीक और सत्य रूप में प्रकट करता हो।
3. चित्र स्पष्ट एवं आकर्षक हो।
4. वह स्वाभाविक और साधारण का प्रतीक हो, अस्वाभाविक और असाधारण न हो।
5. चित्र बालकों की उत्सुकता और जिज्ञासा प्रवृत्ति को उत्साहित कर सके।
6. उनका रंग ठीक तरह का और स्वाभाविक हो।
7. उन पर स्पष्ट शीर्षक दिये हो।

चित्रों का प्रदर्शन –

1. बड़े चित्र कक्षा के सम्मुख टांगे जिससे संपूर्ण कक्षा के छात्र देख सकें।

2. छोटे चित्रों को प्लेन बोर्ड अथवा कार्डबोर्ड के तख्ते पर लगा दिया जाये। इन्हें बालक समीप से देख सकें।

2- ueuk &

भौगोलिक वस्तुओं के नमूने का संग्रह विद्यालय में किया जावे। उन्हें दिखाकर वस्तु का बोध कराया जा सकता है, विभिन्न प्रकार की मिट्टी विभिन्न प्रकार की चट्टानों के टुकड़े, विभिन्न वनस्पति, खनिज पदार्थ, उपज औजार, वस्त्र आदि का संकलन छात्रों के सहयोग से किया जावे। इन्हें सुरक्षित रखने की व्यवस्था शाला में हो। ऐतिहासिक महत्व की वस्तुओं के अन्तर्गत सिक्के एकत्रित किये जावे।

3- ekMy &

मॉडल आकार प्रकार का अनुपात रखता हुआ वास्तविकता की एक प्रतिपूर्ति है। मॉडल का निर्माण शिक्षक छात्रों के सहयोग से करें। इससे उनकी क्रियाशील एवं अभिव्यंजना शक्ति का विकास होता है। खेती में काम आने वाले औजार, सिंचाई के यंत्र, पंचायत घर, आदर्श ग्राम के मॉडल आदि तैयार किए जा सकते है।

शिक्षक को चाहिए कि वह इन मॉडलों को स्वयं ही कक्षा में बालकों द्वारा बनवायें। इससे कई लाभ होंगे एक तो बालक हाथ और आंख के सामंजस्य स्थापित करने में समर्थ हो जायेंगे और दूसरे उनकी क्रियात्मकता को विकास मिलेगा। कक्षा में जिस समय उनकों वही मॉडल दिखायें जायेगें वे रूचि के साथ उनका अवलोकन कर आत्म गौरव एवं आत्म विश्वास का अनुभव करेंगे ऐसा करने में बालक करके सीखों के सूत्र का निर्वाह कर सकेंगे।

4- j[kkfp= &

कार्डबोर्ड, कागज और श्यामपट पर सरलता से रेखाचित्र बनाये जा सकते हैं। रेखाचित्र द्वारा छात्रों का ध्यान आकर्षित कराया जा सकता है। किसी बन्दरगाह, नगर, प्रदेश की स्थिति सरल रेखाचित्र दिखाकर अध्यापन को प्रभावशाली बनाया जा सकता है। इससे बालकों की ग्राहय क्षमता दुगुना हो जाती है। ग्राफपेपर पर उत्पादन, वर्षा, तापमान, औद्योगिक प्रगति आदि दिखलाने से बालक सरलता से ग्रहण कर लेते है।

5- ekufp= &

भित्ति मानचित्र और बड़े मानचित्र भूगोल अध्ययन के अत्यंत आवश्यक अंग है। भौगोलिक वर्णन का संक्षिप्त सारांश देने में इनका उपयोग अमूल्य है। बिना इसके भूगोल अध्ययन अर्थहीन है।

प्राथमिक और माध्यमिक शालाओं में सामाजिक विज्ञान के अन्तर्गत भूगोल के अध्यापन के लिए विश्व का रंगीन मानचित्र राजनैतिक सीमाओं के साथ अपने जिले, प्रदेश और देश के और विश्व के कुछ सीमांकित सादे मानचित्र और राज्यों के प्राकृतिक, राजनैतिक मानचित्र, जलवायु, वनस्पति, उत्पादन, जनसंख्या और भूमि वितरण के मानचित्रों का होना आवश्यक है।

मानचित्र सर्वे ऑफ इंडिया द्वारा प्रमाणित हो इसका ध्यान रखना आवश्यक है।

6- Xykc &

पृथ्वी की आकृति, प्रतिपूर्ति ग्लोब है। अतः अनेक भौगोलिक संबंधों का उचित अध्यापन ग्लोब द्वारा ही हो सकता है। पृथ्वी भूखण्डों और जलखण्डों का वास्तविक स्वरूप और संबंध ग्लोब द्वारा ही प्रकट किया जाता है।

अक्षांश और देशांतर दिन–रात सूर्य की स्थिति जैसे विषयों का उचित ज्ञान ग्लोब द्वारा ही दिया जाना संभव है।

7- ';ke iV &

श्याम पट शिक्षक का अभिन्न मित्र है। श्यामपट के सही उपयोग पर ही शिक्षण में शिक्षक की सफलता निर्भर करती है। श्यामपट को दो भागों में बांटा जावे। एक हिस्से में श्यामपट सार विकसित किया जावे तथा दूसरे भाग में क्रमिक अध्यापन के समय रेखाचित्र, विषयवस्तु का संक्षिप्त विश्लेषण, काठिन्य निवारण आदि कार्य करते रहना आवश्यक है। इससे छात्र एक ओर जहां विषयवस्तु को समझने में सक्षम होता है वहीं श्याम पट सार को पाठ के अंत में अपनी पुस्तिका में उतार सकते हैं। आवश्यकतानुसार लपेट श्यामपट का उपयोग किया जा सकता है।

8- Hkze.k rFkk 'kS{kf.kd ;k=k,¡ &

भ्रमण तथा यात्राओं से छात्र का सीधा संपर्क स्थापित किया जा सकता है। सामाजिक अध्ययन के शिक्षण में कक्षा के बाहर छात्रों को भ्रमण हेतु ले जाना चाहिए। स्थानीय परिवेश में जहां विषय से संबंधित प्रत्यक्ष वस्तुओं, स्थानों एवं प्रकृति का अवलोकन किया जा सके वहां छात्रों को अवश्य ले जाया जावे। ग्राम में पंचायत, पोस्ट आफिस, थाना आदि शहरों में अस्पताल, अजायबघर, संग्रहालय, नगरपालिका तथा अन्य सामाजिक संस्थाएं प्रत्यक्ष अवलोकन कर छात्र कार्य प्रणाली को समझ सकेंगे। भूगोल के अन्तर्गत खेत, नदी, नहर, पहाड़, ऋतुओं का प्रभाव प्रकृति पर दिशा ज्ञान आदि की जानकारी सहजता से दी जा सकती है।

निरीक्षण योग्य बातों का चयन उन पर किये जाने वाले प्रश्न, समय का विभाजन, आदि बातों का पहले से ही सावधानी से विचार कर लेना चाहिए। प्रत्येक प्रकार की यात्रा के किये गये निरीक्षण कार्य को कक्षा में आने पर मानचित्र सूची लेख आदि के रूप में अर्जित ज्ञान को

स्थायी करा देना आवयक है। इसके छात्रों में चारित्रिक एवं सामाजिक गुणों का समुचित विकास होता है।

9- *Vsyhfotu &*

टेलीविजन अध्यापन का सशक्त माध्यम विकसित हो रहा है। वर्तमान में टेलिविजन द्वारा विभिन्न विषयों के पाठ प्रसारित किये जाते है। कक्षा अध्यापन की तुलना में यह पाठ अधिक प्रभावशील होते है। छात्र टी.वी. के पाठ बड़ी रूचि से एकाग्रचित होकर देखते हैं। इससे उन्हें विषयवस्तु समझने में सुविधा होती है।

Vh-oh- }kjk v/;kiu &

bl ds ieq[k rhu pj.k gS &

1. प्री. टेलीकास्ट (पूर्व प्रसारण)
2. टेलीकास्ट (प्रसारण)
3. पोस्ट टेलीकास्ट (प्रसारणोपरांत)

1- *ih- VsyhdkLV ¼iwoZ izlkj.k½ %&* टेलीकास्ट होने से पहले शिक्षक विषयवस्तु की भूमिका प्रस्तुत करते हैं। इसका मुख्य लक्ष्य है कि बालक प्रसारण के समय विषवस्तु की बारीकियों को ध्यान से देखकर समझ सकें।

2- *VsyhdkLV ¼izlkj.k½ %&* इसमें छात्र एकाग्रचित से टी.वी. में आ रहे पाठ को देखते हैं। आवश्यकतानुसार इस अवधि में आवश्यक टीप भी लेते हैं।

3- *iksLV VsyhdkLV ¼izlkj.kksijkar½ %&* प्रसारणोपरांत शिक्षक प्रसारित विषयवस्तु पर कतिपय बोध प्रश्न करते है जिससे विषयवस्तु की ग्राहयता की जानकारी होती है। स्थल विशेष का मौखिक विवरण भी पूछा जाता है जिससे घटनाक्रम को क्रमिक रूप से अपने शब्दों में छात्र प्रस्तुत करते हैं।

ohfM;ks dSlsV & आधुनिक समय में रेडियों पाठ के समान ही विभिन्न विषयों की इकाईयों पर वीडियों फिल्म तैयार की जा रही है। वीडियों कैसेट द्वारा पाठ कक्षा में प्रदर्शित किये जाते है। ये छात्रों को अत्याधिक प्रभावित करते है। चूंकि इनका निर्माण आदर्श परिस्थितियों में उच्च शिक्षक के सहयोग से किया जाता है।

10- jfM;k &

सामाजिक अध्ययन के पाठों का प्रसारण उपयोगी एवं लाभकारी है। यात्रा विवरण, मौसम संबंधी जानकारी आदि सरलता से समझ में आती है। रेडियों मात्र श्रव्य होने के कारण अधिक प्रभावशाली नहीं हो पाये है।

11- ikB;iqLrd &

शिक्षक और विद्यार्थी दोनों के लिए पाठयपुस्तकें आवश्यक हैं वह अध्यापन के स्तर को निश्चित करती है। पुस्तक का आकार, प्रकार, छपाई, सुन्दर और आकर्षक होना चाहिए। पाठ्यपुस्तिका में विषयवस्तु का क्रमिक विकास होना चाहिए।

पाठ्यपुस्तकों का उद्देश्य स्पष्ट होना चाहिए ताकि बालक उनका लाभ उठा सके। भाषा सरल सुबोध हो, वर्णन पूरे सजीव हो, शैली आकर्षक हो, मनोवैज्ञानिक संगठन हो, लाभप्रद सामग्री के रूप में यथास्थान चित्र, मानचित्र, रेखाचित्र, सूची आदि हो। पढ़ाए हुए पाठ और तथ्यों को समझने और विस्तृत करने में पाठ्यपुस्तकें सहायक होनी चाहिए। पाठ्यपुस्तक से प्राप्त ज्ञान के मूल्यांकन हेतु ज्ञान अवबोध एवं प्रयोग पर आधारित प्रश्न आवश्यक हैं साथ ही प्रश्नों के तीन रूप तथा वस्तुनिष्ठ लघुउत्तरीय एवं निबंधात्मक प्रश्नों का समावेश हो।

12- odZcqd &

पाठ्यपुस्तक के पूरक के रूप में वर्क बुक का होना आवश्यक है। कार्यपुस्तिका के माध्यम से बालक के प्राप्त ज्ञान का दृढ़ीकरण होता है। वर्कबुक मूल्यांकन का सशक्त माध्यम है। अतः वर्कबुक तैयार करते समय मूल्यांकन के उद्देश्यों को तथा प्रश्नों के प्रकारों का ध्यान में रखना आवश्यक है।

13- vU; &

एलबम, गाइड पुस्तिकाएं, पोस्टल टिकिट, विज्ञापन आदि अनेक उपकरणों का उपयोग शिक्षक अपनी सुविधानुसार अध्यापन को सजीव बनाने के लिए कर सकते है।

14- lpuk iV &

सूचना पट कक्षा अथवा विद्यालय की सर्वकालीन पत्रिका के रूप में होना चाहिए, जिसमें वह छात्रों को उससे संबंधित प्रत्यक्ष जानकारी प्रदान कर सके, साथ ही ज्ञान के प्रति छात्रों की जिज्ञासा एवं रूचि को जाग्रत कर सके। सूचना पट छात्रों का एक टोली के रूप में कार्य करने के लिए प्रदान करते हैं और कक्षा का वातावरण समृद्ध होता है।

सामाजिक अध्ययन का अध्यापन सूचना पट का प्रयोग निम्नलिखित बातों के लिए कर सकता है:–

1. सामाजिक तथ्यों से संबंधित प्रमुख सूचनाओं को अंकित करना।
2. पत्र पत्रिकाओं की कतरन चिपकाने के लिए।
3. आकर्षक चित्र एवं कारटून लगाने के लिए (संकलित व स्वनिर्मित)।
4. ग्राफ एवं चार्ट चिपकाने के लिए।
5. छात्रों का रचनात्मक कार्यों को प्रदर्शित करने के लिए।
6. प्रदर्शन का भार प्रायः छात्रों को दिया जावे।

10-19 lkeqnkf;d lk/kuksa dk mi;ksx &

बालक का जीवन उनके सामाजिक वातावरण में बीतता है। परिवार, अड़ोस–पड़ोस, गांव उनके जीवन से गुथा रहता है। सामाजिक वातावरण में कई प्रकार के समूह, समितियां, संस्थाएं आदि होती हैं। समाज में तरह–तरह की नीति प्रथाएं, चलन व्यवहार, उत्सव, त्यौहार आदि प्रचलित रहते है। इनका उपयोग शिक्षक व्यावहारिकता प्रदान कर समुचित ढंग से कर सकता है।

स्थानीय साधनों से शिक्षक सरल और आनन्दमयी होता है। छात्र खेल–खेल में ज्ञान प्राप्त कर पर्यावरण का उपयोग लेते हैं।

10-20 i;koj.k dk mi;ksx &

अध्यापन को रूचिकर और जीवंत बनाने के लिए कक्षा में प्रसंगानुसार सहायक सामग्री का प्रदर्शन आवश्यक है। छात्राध्यापक जो आगामी समय में शिक्षकीय कार्य हेतु अपनी–अपनी शालाओं में जब आये तब उनमें यह पुष्टि होना चाहिए कि अध्यापन में पर्यावरण का उपयोग कैसे करें?

10-21 lgk;d lkexzh dk fuekZ.k &

चित्र, रेखाचित्र, मॉडल, टी.वी., का प्रयोग कैसे करें? सैद्धांतिक ज्ञान के साथ ही व्यावहारिक कार्य का अनुभव होना आवश्यक है। अतः प्रत्येक विषय की इकाई के अनुसार छात्राध्यापकों से सहायक सामग्री निर्मित कराई जाना आवश्यक है।

अध्यापन अभ्यास के पाठों के साथ स्वनिर्मित अथवा संकलित सहायक सामग्री की अनिवार्यता हो इससे उनमें संकलन एवं निर्माण की दृष्टि विकसित होगी।

इकाई वार तथा प्रसंगानुसार चित्र नमूने, माडल, रेखाचित्र, नक्शे, मार्गदर्शक के मार्गदर्शन में तैयार करवाए जावे। भूगोल के अध्यापन में आने वाली इकाईयों के लिए स्थानीय उपज मिट्टी, चट्टान आदि संकलन करवाया जाना आवश्यक है।

सहायक सामग्रियों का निर्माण निर्धारित मापदण्डों पर इसका पूर्व निरीक्षण कर लिया जाना चाहिए।

10-22 lkekftd foKku d f'k{k.k gsrq ikB ;kstuk rS;kj djuk &

प्रसिद्ध शिक्षा विचारक रूसों ने शिक्षण को बाल प्रकृति के अनुरूप बनाने का प्रतिपादन किया है। पेस्टालाजी ने रूसों के विचारों से प्रभावित होकर इन्द्रियों द्वारा ज्ञान अर्जन करने की बात कही तथा इसका आधार शिक्षक को माना। स्टेज ने इस बात को आगे बढ़ाते हुए अपने विद्यालय में सभी विषयों का क्रमबद्ध पक्षों में शिक्षण किया। जर्मन शिक्षक हरबर्ट ने पेस्टालाजी से प्रेरित होकर रूचि के सिद्धांत पर बल दिया तथा शिक्षक को मनोवैज्ञानिक रूप दिया। उसने शिक्षण की नई प्रणाली का प्रतिपादन किया जो हरबर्ट की पंचपदी प्रणाली नाम से विख्यात है। हरबर्ट के प्राथमिक पदों को उसके शिष्यों ने तथा अनुयायियों ने परिष्कृत किया जिलर तथा राइन द्वारा हरबर्ट की पंचपदी प्रणाली अंतिम रूप से विकसित हुई है। इनका रूप निम्नानुसार है :–

1. प्रस्तावना, उद्देश्य कथन
2. प्रस्तुतीकरण
3. तुलना
4. सामान्यीकरण एवं
5. प्रयोग

हरबर्ट की प्रणाली के आधार पर योजना का स्वरूप निम्नानुसार किया जा सकता है। शिक्षकों को चाहिए कि वे अध्यापन के विषयांश के अनुरूप अपनी पाठ योजना निर्माण करे। पाठ योजना सावधानीपूर्वक बनानी चाहिए। पाठ योजना बनाकर ही अध्यापन किया जावे तथा निर्मित योजना के अनुसार अध्यापन से हो, इस बात का आग्रह होना चाहिए।

iLrkouk &

प्रस्तावना के माध्यम से शिक्षक बालकों को नये पाठ का परिचय कराता है, नवीन ज्ञान को नये पाठ में दिये जाना है को पूर्व ज्ञान से जोड़ना आवश्यक है। इसके लिए बालकों से प्रारंभ में कुछ प्रशन किये जा सकते है। प्रस्तावना के विषय में प्रसिद्ध विद्वान वास्टन लिखते है कि शिक्षक को बहुत ही संक्षेप में बालकों के पूर्व ज्ञान को जाग्रत करना चाहिए जिससे वे प्रस्तुत पाठ के लिए शीघ्र ही तैयार हो जाये। बालकों की स्थिति में अपने को डालकर शीघ्रता से पाठ आरंभ कर देना कुशल शिक्षक का चिन्ह है। यह जानता है कि छात्र कहां है और कहां पहुंचने के लिए उन्हें प्रयत्न करना चाहिए, अच्छे अध्यापक विषयांश के अनुसार प्रभावशाली प्रस्तावना के लिए उचित प्रविधिका चयन करते है यथा कथन, प्रश्नोत्तर कहानी, उद्धरण, प्रयोग, प्रदर्शन आदि।

10-23 mnn'; dFku &

प्रस्तावना के अन्त में बालक यह समझ सकता है कि उसे पढ़ाया जाने वाला पाठ किन उद्देश्यों पर आधारित है। शिक्षक को यह चाहिए कि वह छात्रों को पाठ के उद्देश्य स्पष्ट कर दें ऐसा करने से वे नये पाठ के लिए तैयार हो जाते है। उद्देश्य कथन स्पष्ट सरल शब्दों में कर्तवाच्य होना चाहिए तथा आइए आज हम..................का अध्ययन करेंगे।

iLrqrhdj.k &

प्रस्तुतीकरण में बालक के सामने विषयांश उपस्थित किया जाता है। इस पद में बालकों को नया ज्ञान देने की योजना तथा प्रयास किए जाते है। इस प्रक्रिया में बालक के पूर्व ज्ञान का ध्यान रखना आवश्यक है। उद्देश्य कथन के प्रश्चात बालक का ध्यान नये पाठ की ओर लग जाता है। इस बिन्दु पर अध्यापन भी नई विषयवस्तु प्रस्तुत करता रहता है। नवीन ज्ञान प्रस्तुत करने की यह अवस्था रहती है। नये ज्ञान के प्रस्तुतीकरण में अध्यापक को चयन तथा विभाजन के सिद्धांत को अपनाना चाहिए। सुविधा के लिए पूर्व पाठ का विभाजन दो–तीन उपइकाईयों में करना चाहिए किंतु इसे क्रमबद्ध रीति से करें। अध्यापन विधि में विषय सामग्री के सोपान क्रमशः रहे तथा प्रत्येक के अंत में आगे के सोपान का संकेत मिले।

विषयांश के अनुकूल समुचित शिक्षण विधि का प्रयोग करना चाहिए। सभी उप इकाईयों को पढ़ाने के बाद उन पर आधारित बोध प्रश्न करने चाहिए।

यह ध्यान रहे कि विषयवस्तु का विस्तार सहायक सामग्री के माध्यम से किया जाये। उपरोक्त पदों के अतिरिक्त तुलना सामान्यीकरण एवं प्रयोग का भी प्रतिपादन हरबर्ट के पदों के अन्तिम रूप में मिलता है।

यह ध्यान रहे कि विषयवस्तु का विस्तार सहायक सामग्री के माध्यम से किया जाये। उपरोक्त पदों के अतिरिक्त तुलना सामान्यीकरण एवं प्रयोग का भी प्रतिपादन हरबर्ट के पदों के अन्तिम रूप में मिलता है।

पाठ योजना निर्धारित प्रारूप पर पाठ पढ़ाने से पूर्व तैयार करना चाहिए।

पाठ योजना के विभिन्न उपागम निम्नानुसार है –

1. डदुशी तथा किलपैट्रिक उपागम।
2. मैरिसन उपागम।
3. मूल्यांकन उपागम।
4. अमेरिकन उपागम।
5. ब्रिटिश उपागम।
6. भारतीय उपागम एवं
7. सूक्ष्म उपागम।

उपरोक्त समय में भारतीय उपागम में शिक्षण के उद्देश्यों, मूल्यांकन तथा शिक्षण अधिगम परिस्थितियों पर अधिक बल दिया जाता है। इस दृष्टि से एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा पाठ योजना के प्रारूप निर्माण किये गये है।

सामान्य रूप से दैनिक पाठ योजना बनाने का अधिक महत्व है। शिक्षक अपनी कक्षा में पाठ्यपुस्तक पढ़ाना चाहता है, उसे वह छोटी–छोटी इकाईयों में विभक्त करता है। सामान्यतः 40 मिनट के कालखण्ड में पाठपूर्ण हो इतनी पाठ्यवस्तु एक पाठ में होना चाहिए। छात्रों की समस्त क्रियाओं का उल्लेख भी योजना में होना चाहिए।

5

lkekftd foKku esa ewY;kadu] CyfiaV iz'u i= fuek.k vkn'kZ mRrj] fo'ys"k.k] dfBu vax'k ,oa mipkjkRed f'k{k.k &

जिस प्रकार एक डाक्टर रोगी को दवा देता है उसकी चिकित्सा, देखभाल करता है, उसे स्वस्थ करने का प्रयास करता है, उसी प्रकार शिक्षक अपने अध्यापन कौशल के प्रयोग से बालकों में शिक्षा के द्वारा व्यवहार परिवर्तन करने का प्रयास करता है। इस प्रक्रिया में यह देखना आवश्यक है कि शिक्षक का अध्यापन अथवा डॉक्टर द्वारा की जाने वाली चिकित्सा कितनी प्रभावी, असरदार, सफल अथवा असफल रही है। प्रत्येक प्रक्रिया का मूल्यांकन होना आवश्यक है। मूल्यांकन शैक्षिक प्रक्रिया का एक आवश्यक अंग है। शिक्षक अपने बालकों में व्यवहार परिवर्तन का मूल्यांकन विभिन्न पद्धतियों से करता है। मूल्यांकन से समस्त क्रियाएं अर्थपूर्ण होती है। हम जान सकते है कि हमारे प्रयास कितने सफल रहें, जिससे हम भविष्य के लिए सतर्क रह सकते हैं वह एक सतत प्रक्रिया है।

10-24 ewY;kadu dk vFkZ ,oa ifjHkk"kk &

मूल्यांकन केवल ज्ञान की जांच नहीं है, किन्तु इसका अर्थ व्यापक है। मूल्यांकन में व्यक्तित्व संबंधी परिवर्तनों एवं शैक्षिक कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्यों पर बल दिया जाता है। इससे पाठ्यवस्तु की निष्पत्ति के अलावा बालकों की रूचि, वृत्ति, उनके आदर्श, उनके सोचने का ढंग काम करने की आदतें तथा व्यक्तिगत एवं सामाजिक अनुकूलता भी निहित है।

10-25 ifjHkk"kk &

मूल्यांकन का अर्थ स्पष्ट होने के लिए हमें कुछ परिभाषाएं जानना आवश्यक है।

tEl ,e-yh-& मूल्यांकन विद्यालय कक्षा तथा स्वयं के द्वारा निर्धारित शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त करने के संबंध में छात्र की प्रगति की जांच है। मूल्यांकन का मुख्य प्रयोजन छात्रों की सीखने की

प्रक्रिया को अग्रसर एवं निर्देशन करना है। इस प्रकार मूल्यांकन एवं नकारात्मक प्रक्रिया न होकर सकारात्मक प्रक्रिया है।

eQkr& मूल्यांकन निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया छात्रों की औपचारिक शैक्षिक उपलब्धि से अधिक संबंधित है। वह व्यक्ति के विकास में अधिक रूचि रखता है। यह व्यक्ति के विकास को उसकी भावनाओं विचार तथा क्रियाओं से संबंधित, वांछित, व्यवहार परिवर्तनों के रूप में करता है।

oLy& मूल्यांकन एक समावेशित धारणा है, जो इच्छित परिणामों के गुण, महत्व तथा प्रभावशीलता का निर्णय करने के लिए समस्त प्रकार के प्रयासों एवं साधनों की ओर संकेत करता है। यह वस्तुगण प्रमाण एवं आत्मगत निरीक्षण का मिश्रण है, यह संपूर्ण तथा अंतिम अनुमान है। यह नीतियों के रूप परिवर्तनों एवं भावी कार्यक्रम के लिये महत्वपूर्ण तथा आवश्यक मार्गदर्शक है।

10-26 eY;kdu dh fo'k"krk,a &

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर मूल्यांकन की निम्न विशेषताएं स्पष्ट होती है :–

1. यह एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है।
2. यह शिक्षा पद्धति का अभिन्न अंग है जिसका निकट का संबधं शिक्षा के उद्देश्यों से है।
3. मूल्यांकन में छात्रों के विषय में सामगी एकत्रित करने के समस्त साधन सम्मिलित रहते है।
4. मूल्यांकन में निर्देशित उपलब्धि के साथ–साथ उसे उन्नत बनाना भी निहित है।

10-27 eY;kdu ,oa ekiu &

मूल्यांकन प्रक्रिया के छात्रों को उपलब्धि के विषय में निर्णय दिया जा सकता है। उपलब्धि कितनी और कैसी हुई यह भी जानना आवश्यक है। निर्णय देते समय उपलब्धि का स्तर जानना अनिवार्य है। मापन संबंध योग्यता अथवा गुण के विषय में यह ज्ञात करने से है कि उस योग्यता अथवा गुण की कितनी मात्रा मौजूद है। इसके आगे यह भी जानना जरूरी है कि योग्यता अथवा गुण की कितनी मात्रा मौजूद है। इसके आगे यह भी जानना जरूरी है कि योग्यता अथवा गुण की मात्रा पाई गई वह पर्याप्त एवं समुचित मात्रा में है या नहीं। मूल्यांकन में मापन तथा मूल्य निर्धारण दोनों ही का समावेश होता है। मापक का स्वरूप गुणात्मक अथवा संख्यात्मक हो सकता है। करालेनजर के शब्दों में– मापन नियमानुसार वस्तुओं या घटनाओं की संख्या प्रदान करता है। वेलरो कहते है मापन मूल्यांकन का वह भाग है जो प्रतिशत, मात्रा, अंकों, मध्यमान तथा औसत आदि के द्वारा व्यक्त किया जाता है।

मूल्यांकन के लिए मान अनिवार्य है उसके अभाव में मूल्यांकन वैज्ञानिक रीति से नहीं हो सकता है। मापन का संबधं गणित की विशेष शाखा से है। जिसे सांख्यकीय (स्टेटिस्टिक्स) कहते हैं।

10-28 eY;kdu dk mnns';

1. बालकों ने योग्यताओं, कुशलताओं, वृत्तियों, समझदारी आदि को अपने स्वयं में किस सीमा तक ग्रहण किया है इसी की जांच करना।
2. बालकों की सफलता, विफलता, बाधाएं तथा कठिनाईयों का समुचित निर्धारण करना।
3. मूल्यांकन बालकों को उचित, शीर्षक एवं व्यावसायिक मार्गदर्शन देने में सहायक होता है।
4. शैक्षिक कार्यक्रम शिक्षण विधियों आदि की उपयुक्ता की जांच करना।
5. पाठ्यक्रम सुधार में सहायक।
6. शिक्षकों की सफलता एवं कुशलता का माप करने में उपयुक्त।

शैक्षिक मूल्यांकन से शैक्षिक उद्देश्य किस सीमा तक प्राप्त किये गये यह जाना जा सकता है। उससे छात्रों के व्यक्तित्व की पहचान भी होती है।

10-29 lkekftd foKku rFkk eY;kdu i)fr &

सामाजिक विज्ञान के स्वरूप के विषय में यह धारणा दी जा सकती है कि यह एक विषय न होकर एक क्षेत्र जैसा है। उसका स्वरूप व्यापक है। यह मानव के वर्तमान तथा दैनिक जीवन संबंधों को स्पष्ट करता है। सामाजिक विज्ञान के अध्ययन से बालकों में व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन सफल बनाने की दृष्टि से कुछ विशेष गुणों का होना तथा उनका विकास होना आवश्यक है। उनमें योग्यता, समझदारी, व्यावहारिकता, कुशलता, सामाजिकता, नागरिकता, चिन्तन, तर्क, निर्णय, अनुमान, साहस, परिपक्वता आदि का अन्तर्भाव संभव हो यह सामाजिक विज्ञान के अध्ययन का प्रयोजन है। सामाजिक विज्ञान की कठिन विषयवस्तु का मूल्यांकन इस आधार पर करने हेतु विभिन्न प्रविधियों का प्रयोग किया जा सकता है।

10-30 eY;kdu izfof/k;k ¼i)fr;k½ &

मूल्यांकन प्रक्रिया के तीन सोपान है –

1. उद्देश्यों का निर्धारण।
2. निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु अध्ययन अध्यापन क्रियाओं का निर्धारण।
3. मूल्यांकन की प्रविधियों का चयन एवं निर्माण।

यहां एक तीसरा सोपान मूल्यांकन प्रविधियों की चर्चा करेंगे। मूल्यांकन हेतु शिक्षक को उचित प्रविधियों का चयन करना चाहिए। प्रविधि ऐसी हो, जिससे बालकों को वांछित व्यवहारों के संबंध में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष प्रमाण मिल सके। यदि पूर्व तैयार शुदा (बने–बनाये) परीक्षण उपकरण उपुयक्त न हो तो नवीन प्रविधि की खोज करनी चाहिए तथा इसके लिए सुविधा प्रदान करना चाहिए। प्रविधि की रचना में किन शैक्षिक उद्देश्यों का मूल्यांकन वांछित है इस बात का ध्यान रखना चाहिए, अपनायी जाने वाली प्रविधि सरल हो एवं उसे यदि अन्य व्यक्ति न भी अपनाया हो, एक से ही निष्कर्ष निकले इन बातों का

ध्यान रखना चाहिए। प्रविधियों में विश्वसनीयता, वैधता, प्रयोगशीलता, व्यापकता एवं मानवीकृत के गुण होना चाहिए। मूल्यांकन की प्रमुख प्रविधियों के विषय में हम संक्षेप में चर्चा करेंगे।

1- *fujh{k.k ifof/k &*

निरीक्षण प्रविधि के द्वारा छात्रों के विभिन्न प्रकार के व्यवहार के संबंध में प्रमाण उपलब्ध किया जा सकते है। छात्रों के व्यवहार, संवेगात्मक एवं बौद्धिक परिपक्वता आदि निरीक्षण प्रविधि द्वारा प्रदान किये जाते है। इसके लिए निरीक्षण तालिकाएं कथनों, प्रश्नों आदि के रूप में तैयार की जा सकती है।

2- *Øe fu/kkj.k eku ¼jfVax Ldsy½ &*

इसके द्वारा हम बालक की किसी विशेष क्षेत्र की कुशलताओं की जांच उस क्षेत्र में उसके व्यवहार की प्रगति को मापन कर सकते है। विभिन्न मात्रओं में विभिन्न विशेषताओं अथवा परिस्थितियों के मूल्यांकन के लिए यह प्रविधि उपयुक्त है। क्रम निर्धारण मान प्रविधि में उन गुणों अथवा विशेषताओं का निरीक्षण शाला जीवन में किया जा सकता है ऐसी विशेषताओं का मूल्यांकन क्रम निर्धारण माप प्रविधि के द्वारा किया जाना चाहिए।

3- *iM+rky lwph ¼pSd fyLV½ &*

व्यक्तिगत सूचना तथा प्रयोग उपयुक्त है। मूलतः पड़ताल सूची वह पद्धति है जिसके माध्यम से यह अभिलिखित किया जा सकता है कि कोई विशेषता किसी छात्र में विद्यमान है अथवा नहीं है। इसका संबंध गुण विशेष की हां अथवा न से है। मात्रा जानने हेतु इसका उपयोग श्रेयष्कर नहीं है।

4- *?kVukor ¼,usdMkVy fjdkMZl½ &*

छात्रों के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं का अभिलेख निरीक्षण के लिए मूल्यवान है, इस वृत में शिक्षक छात्र के जीवन के कुछ महत्वपूर्ण प्रसंगों का यथार्थ वर्णन संक्षेप में करना है। वृंत में दिनांक तथा समय का उल्लेख होता है। ऐसे प्रमाणित घटनावृंत वास्तव में विश्वसनीय तथा वैधानिक होते हैं। किंतु घटनावृंत का निर्माण अधिक समय लेने वाला कार्य है। इसमें पक्षपात की संभावना एवं पूर्वाग्रह का होना आदि सीमायें है।

छात्रों का दैनन्दिनी (डायरियों) का समावेश अभिलेख में किया जा सकता है। साबित अभिलेख पत्र, जिसमें सतत् मूल्यांकन संभव हो भी महत्वपूर्ण है।

5- *lektfefr ¼lkf'kvkehVjh½ &*

समाज के विभिन्न समूहों में किसी छात्र विशेष की स्थिति उनके प्रति अनुकूलता आकर्षक चाहें आदि बातों का मूल्यांकन करने में समाजमिति का प्रयोग उपयुक्त है। समाज के समूह के चयन का अध्ययन इस प्रविधि द्वारा संभव है। इसका उपयोग कक्षा समूहों के निर्माण में किसी छात्र के सामाजिक सामंजस्य में सुधार लाने में तथा छात्र में सामाजिक संबंधों का मूल्यांकन करने में किया जा सकता है।

6- i'ukoyh &

छात्रों से उनकी रूचियां एवं अभिवृत्तियां आदि के विकास के बारे में सूचनाएं प्राप्त करने के लिए प्रश्नावली महत्वपूर्ण तथा उपयुक्त प्रविधि मानी गई है। लिखित प्रश्नों के सूची निर्माण कर उसे छात्रों के उसके उत्तर देने के निर्देशों के साथ दिया जाता है। प्रश्नों की संरचना कुछ प्रश्न सूचक उत्तरों के एक खण्ड में तथा दूसरे बिना सूचक उत्तरों के जिन्हें छात्र अपने विचार से स्वतंत्रापूर्वक इस प्रकार से हो जिसमें कुछ हल कर सकते है। प्रश्नावली संक्षिप्त एवं स्पष्ट होनी चाहिए।

7- lk{kkRdkj &

साक्षात्कार प्रविधि का विशिष्ट गुणवत्ता के कारण इसका व्यापक उपयोग किया जाता है। साक्षात्कार में प्रत्यक्ष संबंध स्थापित किए सहयोग का वातावरण बनता हैं और छात्र की रूचियों, दृष्टिकोण आदि में हुए परिवर्तनों एवं उनकी व्यक्तिगत विशेषताओं की जांच सरलता से की जा सकती है। साक्षात्कार के समय कुछ पूर्व नियोजित प्रश्न किए जाते है तथा कुछ प्रश्न औपचारिकेत्तर स्वरूप के होते हैं जिससे साक्षात्कार में पर्याप्त लोच का गुण आ जाता है। छात्र खुलकर अपनी बात बता सकते है। साक्षात्कार लेने वाले शिक्षक को साक्षरता तंत्र से भली भांति परिचित होना आवश्यक है।

8- ijh{kk ifof/k &

परीक्षा का अभिप्राय तोलने से है। परीक्षा का उपयोग छात्र के ज्ञान की जांच के लिये किया जाता है। छात्रों की परीक्षा किसी बाह्‌य एजेंसी संस्था या व्यक्ति से करवायी जाती है। स्वयं अध्यापकगण भी परीक्षा लेते है। परीक्षा में मूल्यांकन प्रविधि का स्वरूप ऐसा होता है कि छात्र ने जो ज्ञान प्राप्त किया है उसे प्रश्नों के उत्तरों का आधार मानकर उत्तरों के या परीक्षा कार्य की गुणवत्ता के अनुसार उसे संख्या रूप अथवा संकेत रूप देकर श्रेणीबद्ध किया जाता है। सामान्य रूप से परीक्षा प्रणाली में छात्रों को अंकों के आधार पर श्रेणी दी जाती है जो उसके मूल्यांकन स्तर का सूचक होता है।

10-31 ijh{kk ifof/k d fofHkUu :i &

1- ekSf[kd ijh{kk &

लेखन की योग्यता पाने के पूर्व स्तर की कक्षाओं में इसी का प्रयोग होता है। पढ़ने की योग्यता उच्चारण की शुद्धता तथा लिखित परीक्षा की पूर्ति के लिये मौखिक परीक्षा ली जाती है। इससे बालकों के व्यक्तिगत गुण दोषों की जानकारी प्राप्त होती है।

2- ik;kfxd ijh{kk &

छात्र कुछ प्रयोगात्मक विषयों का अध्ययन करता है इसमें प्रायोगिक कार्य होते है। सैद्धांतिक ज्ञान के साथ–साथ छात्रों में प्रयोग करने की क्षमता तथा कुशलता अपेक्षित है। उसकी जांच प्रायोगिक परीक्षा द्वारा की जाती है। विज्ञान, हस्तकला, चित्रकला, कृषि आदि विषयों में प्रायोगिक परीक्षा आवश्यक है।

3- fyf[kr ijh{kk &

सामान्य विद्यालयों में लिखित परीक्षा का प्रचलन अधिक है। इसके अन्तर्गत कार्य समर्पण (असाइनमेंट) प्रतिवेदन लिखना, लिखित उत्तर देना आदि हैं। लिखित परीक्षा का आधार प्रश्न पत्र होता है जो वर्तमान में परीक्षा प्रणाली का प्रमुख उपकरण है। प्रश्न पत्रों में विविध प्रकार के प्रश्न विभिन्न उद्‌देश्य पूर्ति हेतु दिये जाते हैं। प्रश्न पत्रों में सीमा समय तथा विस्तार निर्धारित किया जाता है। प्रश्नों के अंक आवंटित किये जाते है। लिखित परीक्षा निबंधात्मक तथा वस्तुनिष्ठ स्वरूप की होती है। निबंधात्मक परीक्षा में बालक को प्रश्नों के उत्तर निर्धारित समय सीमा में तथा विस्तार से देना चाहिए, निबंध के रूप में योग्यता, सुलेख, शैली, भाषा आदि बातें प्रमुख है। इसमें आत्मगत तत्व (सब्जेक्टिव एलिमेंटस) की प्रधानता होना बड़ा दोष है।

4- oLrqfu"B tkp &

वस्तुनिष्ठ जांच का उपयोग बालक का विषय ज्ञान, सत्यासत्य, तथ्य ज्ञान, निर्णय बुद्धि आदि के मापने के लिए किया जाता है। इसमें बालक को विस्तार से उत्तर नहीं लिखना होता है। इस जांच में समय कम लगता है तथा मूल्यांकन सरल होता है।

Cyfii V %&

ब्लूप्रिंट की तुलना एक घर की विस्तृत योजना से की जा सकती है जो कमरों की संख्या को कमरों के आकार खिड़कियों की स्थिति, दरवाजों की स्थिति आदि को विस्तृत रूप से दर्शाता है। एक अच्छे घर के निर्माण के लिए समस्त ऐसी सुसंगत जानकारी आवश्यक होती है।

इसी प्रकार से, प्रश्न पत्र की परिकल्पना में लिए गए नीतिगत विनिश्चय को मेट्रिक्स के माध्यम से कार्रवाई में बदला जाता है, जो ब्लूप्रिंट (परिशिष्ट दो में दिया गया है) के नाम से जाना जाता है। ब्लूप्रिंट में बांए हाथ के खड़े कालम में पाठ्यक्रम की मुख्य इकाईयों को सूचीबद्ध किया जाता है। शीर्ष पंक्ति में अनुदेशीय उद्देश्य अर्थात ज्ञान, समझ, प्रयोग (उपयोग), दक्षता सूचीबद्ध रहती है। इन दो आयोमों के अतिरिक्त प्रश्नों के प्रकार के रूप में दूसरा आयाम जोड़ा जाता है अर्थात वस्तुनिष्ठ प्रकार, संक्षिप्त उत्तर प्रकार, संक्षिप्त या बड़ें उत्तर।

ब्लूप्रिंट से प्रश्न पत्र का वास्तविक खाका (ले–आउट) प्रकट होता है। इसी क्रम में, प्रश्न पत्र बनाने वाला ब्लूप्रिंट तैयार करते समय निश्चिय करता है कि विभिन्न अनुदेशीय वस्तुनिष्ठों के अधीन प्रश्न सेट किए जाना है, पाठ्यक्रम सारांश की स्केल के पश्चात, पेपर बनाने वाला निश्चय करता है कि किस इकाई से किस प्रकार का प्रश्न बनया जा सकता है।

दोनों पेरामीटर्स को मिलाकर, अर्थात वातुनिष्ठ और किसी चयनित इकाई में सारांश बिन्दु, पेपर बनाने वाला, विभिन्न प्रकार के प्रश्नों के लिए एक समुचित स्थिति को परिभाषित करता है। इन प्रश्नों को इकाईयों के समक्ष खड़े कालम में उनके अंको के साथ उपदर्शित किया जाता है। उदाहरण के लिए यदि ज्ञान और एल.ए. के अन्तर्गत कालम में 5(1) लिखा है तो इसका तात्पर्य है कि यह एक लम्बे उत्तर का प्रश्न है जिसमें 5 अंक है। यदि 5(1) के बजाए 10(2) लिखा है तो यह उपदर्शित होगा कि दो प्रश्न है और प्रत्येक के 5 अंक है। डिजाइन में यथा विनिश्चित प्रश्नों की कुल संख्या की पूर्ति ब्लूप्रिंट के विभिन्न सेल्स में ऐसी रीति में हो जाती है कि किसी ब्लूप्रिंट के अधिकता सेल्प भरा जाएं। इकाई वार कुल अंक ब्लूप्रिंट के दांए हाथ के कालम में प्रदर्शित होते है। लम्बवत कॉलम और समानान्तर पंक्तियों का मिलान प्रश्न पत्र की डिजाईन में आवंटित वजन (महत्व से होना चाहिए) यदि कोई प्रश्न प्रश्न दो उद्देश्यों अर्थात ज्ञान और दक्षता या समझ की जांच कर रहा हो और तब प्रश्न के अंक संबंधित सेल्स में पृथक रूप से किये जाने होते है किन्तु उनके ऊपर एक अस्थिर चिन्ह लगाना होता है। ऐसे प्रश्नों की संख्या कि केवल एक स्थान पर ही गणना की जाएगी। उदाहरण के लिए यदि किसी पांच अंको वाले प्रश्न के तीन अंक ज्ञान और दो अंक दक्षता के लिये है तब इसे 3(1) और 2(–) क रूप में क्रमशः के और एस के कालम के अधीन लिखा जाना चाहिए। इसी प्रकार यदि किसी आंतरिक विकल्प में कोई प्रश्न दिया जाता है तो उसे दुहरे तारे (′′) के रूप में उपदर्शित करे। डिजाईन की परिसीमा के भीतर अधिक से अधिक संभव सेल्स भरने का प्रयत्न करे। ब्लूप्रिंट में जितने अधिक प्रश्न भरे होगे उतना ही संतुलित प्रश्न पत्र होगा।

i'u i= ,o vkn'k mRrj fuek.k %&

प्रश्न पत्र लिखने के पश्चात उन्हें पुनः देखने, उपांतरित करने और अंतिम रूप देने की आवश्यकता होती है। सर्वप्रथम, सामान्य अनुदेशों को स्पष्ट रूप से लिखिए जिससे छात्र में उसके समक्ष यह स्पष्ट हो सके की कार्य का आकार क्या है यह निर्देश जितने स्पष्ट होंगे छात्रों को उतनी ही

सुविधा होगी। यह इस पर भी निर्भर करेगा कि प्रश्न पत्र का विषय क्या है। प्रत्येक प्रश्न या प्रश्न समूह से पहले यदि कोई विशेष निर्देश है तो उसे प्रश्न से पहले लिखा जाना चाहिए। यथोचित मानदण्ड के अनुसार प्रश्नों को एकत्रित करने के अनेक मार्ग है। ये प्रश्नों के रूप में अनुदेशात्मक उद्देश्यों, विषयवस्तु इकाई, कठिनाई स्तर या परीक्षा में प्रशासन की सुविधा के अनुसार हो सकते है। एक प्रश्न पत्र में प्रश्नों की क्रमबद्धता ऐसी होना चाहिए कि इससे परीक्षकों तथा मूल्यांकन प्रक्रिया को सुविधा प्राप्त हो।

ekfdZx Ldhe %&

अतः परीक्षक विभिन्नता को नियंत्रित करने के क्रम में प्रथम स्थान पर यह आवश्यक है कि चिन्हित और समझने योग्य प्रश्नों को बनाया जाए। जिससे कि विशिष्ट उत्तरों का मार्ग प्रशस्त हो सके दूसरे, एक विस्तृत मार्किंग स्कीम से मार्किंग में विभिन्नता कम करने में सहायता प्राप्त होती है। एक अच्छी मार्किंग स्कीम के कुछ गुण निम्नानुसार है–

लम्बे उत्तर प्रश्नों के संबंध में या निबंध जैसे प्रश्नों के संबंध में उत्तरों की अपेक्षित बाह्य रेखा द्वारा –

1. पूर्ण होना चाहिए और प्रश्न बनाने वाले द्वारा यथा अपेक्षित मुख्य क्षेत्र। बिन्दु को कवर करना चाहिए।
2. स्पष्ट रूप से प्रत्येक अपेक्षित बिन्दु या बाह्य रेखांकित मुख्य क्षेत्रों को उपदर्शित होना चाहिए।
3. इस बाबत निदेशन देना चाहिए कि क्या समस्त बिन्दुओं में एक पूर्ण और सही उत्तर की गणना की जाएगा।
4. प्रत्येक अपेक्षित बिन्दु पर के लिए अंको का ब्रेक–अप उपदर्शित होना चाहिए। अपेक्षित बिन्दुओं पर वितरित अंक ऐसे होना चाहिए कि प्रश्न के लिए रखे गए कुल अंक से मिलान में हो। कुछ परिस्थितियों में, विषय–वस्तु के अतिरिक्त, उत्तर की अन्य विशेषताएं भी महत्वपूर्ण रूप से महत्वपूर्ण रहती है। विशेषकर लम्बे प्रश्नों में। इसमें तार्किक पहुंच सामंजस्यता, अभिव्यक्ति, प्रस्तुति का तरीका भी सम्मिलित है। कुछ अंक उत्तरों की सम्पूर्ण ऐसी गुणवत्ता के लिए अलग से रखना चाहिए जिन्हें अन्यथा नहीं रखा गया है।
5. यदि कोई प्रश्न कुछ दूसरे बिन्दुओं को रखे हुए है जो एक औसत विद्यार्थी की समझ से परे हैं तो एक ऐसा प्रबंध करना चाहिए कि परीक्षक ऐसे आपवादिक उत्तरों को स्वीकार कर सके और उसे यथोचित रूप से पुरस्कृत कर सका।
6. संक्षिप्त उत्तर प्रश्नों के संबंध में एक पूर्ण उत्तर जहां कही आवश्यक हो वहां अंक के ब्रेक–अप के साथ अपेक्षित मूल्य अंक उपलब्ध कराना चाहिए।
7. इन लाइनों पर तैयार की गई एक विस्तृत मार्किंग स्कीम से विश्वसनीयता और वस्तुनिष्ठता में वृद्धि होती है तथा प्रश्नों की गुणवत्ता में सुधार होता है। परिशिष्ट चार में मार्किंग स्कीम के प्रोफार्मा की बाहय रेखा दी गई है।

iz'u i= fo'ys'k.k%&

प्रश्न पत्र तैयार करने के पश्चात, यह जानना वांछनीय है कि क्या प्रश्न पत्र को ब्लूप्रिंट और डिजाइन के अनुरूप तैयार किया गया है, जैसा कि उपर उल्लेखित किया जा चुका है कि किसी घर का नक्शा। ब्लूप्रिंट से प्रश्न पत्र के महत्वपूर्ण विवरण परिलक्षित होते है। तैयार प्रश्न पत्र और डिजाइन के बीच सहमति की डिग्री को जानने के अनुक्रम में पेपर सेटर को पुनः प्रत्येक प्रश्नों को उन वस्तुनिष्ठ के संदर्भ में जिसका यह परीक्षण करता है। उन विशिष्ट दक्षता के जिसकी यह माफ करता है, वह इकाई जिसमें से यह है, प्रश्नों के प्रकार, प्रत्याशित उत्तर की लम्बाई उत्तर देने में एक औसत विद्यार्थी द्वारा लगाया गया समय एवं कठिनाई स्तर इस विधि से प्रश्न पत्र में यदि कोई असंतुलन होगा तो वह स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो सकेगा एवं प्रश्न पत्र में आवश्यक सुधार अनुशिमनकर्ता द्वारा भी किये जा सकेगे।

bdkbl vk/kkfjr i'u &

प्रश्न 1. सामाजिक विज्ञान की प्रमुख विशेषता लिखिए।
प्रश्न 2. पाठ्यक्रम एवं पाठ्य विवरण में संक्षेप में अंतर लिखिए।

प्रश्न 3. सामाजिक विज्ञान के अध्यापन हेतु अपनायी जाने वाली किसी एक विधि का नाम लिखिए।
प्रश्न 4. श्यामपट का पाठ पढ़ाते समय क्या उपयोग किया जा सकता है?

प्रश्न 5. मूल्यांकन की प्रमुख दो प्रविधिों के नाम लिखिए।

vH;kl i'u

Nk= dk uke& fo"k;&

Nk= dk iath;u Ø - d|y ikIrkd&

eY;kdudrk d gLrk{kj

uke ,o irk&

ukV& निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखकर आंतरिक मूल्यांकन के समय सम्बंधित संस्था में प्रस्तुत करें। इन्हें मण्डल कार्यालय में भेजने की आवश्यकता नहीं है।

प्रश्न 1. प्रो. ह्वटिंगटन ने मानव भूगोल का विषय क्षेत्र कितने भागों में विभाजित किया है? नाम भी लिखे।

उत्तर–

प्रश्न 2. मानव भूगोल का पितामह किस भूगोलवेत्ता को कहा जाता है और क्यों?

उत्तर–

प्रश्न 3. मौसम व जलवायु का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंतर (केवल एक बिन्दु) लिखे।

उत्तर–

प्रश्न 4. जलवायु को प्रभावित करने वाले सर्वप्रथम चार कारक बतलाइये।

उत्तर–

प्रश्न 5. एशिया महाद्वीप का अक्षांशीय व देशान्तरीय विस्तार कितना है?

उत्तर–

प्रश्न 6. एशिया महाद्वीप की मुख्य फसलें कौन–कौन सी है?

उत्तर–

प्रश्न 7. हड़प्पा सभ्यता को नगर सभ्यता क्यों कहते है?

उत्तर–

प्रश्न 8. उत्तर भारत के प्रमुख राजवंशों के बारे में संक्षिप्त लेख लिखिये?

उत्तर–

प्रश्न 9. मुगल बादशाल अकबर की उपलब्धियां संक्षिप्त में लिखिए?

उत्तर–

प्रश्न 10. शिवाजी के शासन प्रबंध की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए?
उत्तर–

प्रश्न 11. 1857 की क्रांति से चर्बी वाले कारतूसों का क्या संबंध था?
उत्तर–

प्रश्न 12. बंगाल विभाजन के पीछे अंग्रेजों का क्या उद्देश्य था?
उत्तर–

प्रश्न 13. भारतीय संविधान की विशेषताएं लिखिए।
उत्तर–

प्रश्न 14. राष्ट्रपति पद के लिए निर्धारित योग्यताएं क्या है?
उत्तर–

प्रश्न 15. परिवार संस्था की व्यख्या कीजिए।
उत्तर–

प्रश्न 16. नागरिकों के अधिकारों को संक्षेप में समझाइये।
उत्तर–

प्रश्न 17. राष्ट्रीय एकीकरण में कौन–कौन से बाधक तत्व है?
उत्तर–

प्रश्न 18. राष्ट्रीय एकीकरण को बनाये रखने वाले तत्व कौन–कौन से है।
उत्तर–

प्रश्न 19. हरबर्ट के अनुसार पाठ योजना का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–

प्रश्न 20. परीक्षा प्रविधि का स्वरूप क्या है? उसके विभिन्न रूपों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

उत्तर–

l=xr dk;l ¼dkbl ikp½

1. निकट समय में घटित भूकंप एवं ज्वालामुखी से प्रभावित मानव जीवन का विवरण देना एवं मानचित्र पर प्रदर्शन करना।
2. अपने आस पास फैली हुई ऐतिहासिक विरासत म.प्र. के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम एवं राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेने वाले क्रांतिकारियों की जानकारी एकत्रित करना।
3. क्षेत्र भ्रमण कर भौगोलिक विवरण लिखना।
4. पुरातात्विक महत्व की वस्तुएं स्थानों की सूचीकरण एवं मानचित्र प्रदर्शन करना।
5. किसी एक स्थानीय पर्यावरणीय समस्या का सर्वेक्षण– संकलित आंकड़ों का लेखा चित्र एवं मानचित्रों सहित सारणीयण एवं विशलेषण।
6. पंचायती राज पर एक कम्प्यूटर पाठ योजना तैयार कर प्रदर्शन प्रक्रिया समझाना।
7. मानव अधिकार पर एक रेडियो वाक्य तैयार करना।
8. किसी शाला की एक कक्षा (विषय– सामाजिक विज्ञान) के परीक्षाफल का सांख्यिकीय विशलेषण करना।
9. सामाजिक विज्ञान की मूल्यांकित उत्तर पुस्तिका एवं प्रशन पत्र का विशलेषण करना।
10. सामाजिक विज्ञान का ब्लूप्रिंट आधारित प्रश्न पत्र का निर्माण करना।

lnHkl xUFk &

सामाजिक अध्ययन एवं उसका शिक्षण – आर.ए. शर्मा

सामाजिक अध्ययन एवं उसका शिक्षण – ए.सी. अग्रवाल

सामाजिक अध्ययन एवं उसका शिक्षण – आर.पी. सिंह

सामाजिक अध्ययन एवं उसका शिक्षण – भाटिया एवं नारंग

सामाजिक अध्ययन एवं उसका शिक्षण – संत संघी

सामाजिक अध्ययन एवं उसका शिक्षण – एन.आर. सक्सेना

सामाजिक अध्ययन एवं उसका शिक्षण – बी.के. मिश्रा

सामाजिक विज्ञान का शिक्षण – डॉ. गुरूसरनदास त्यागी

मूल्यांकन प्रक्रिया – राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल

& & & &